आगम-व्याकरण-न्याय-ज्योतिष आदि विविध विषय मर्मज्ञ

जैनाचार्य श्री घासीलाल जी महाराज प्रणीत

प्राकृत चिन्तामणि

[लघु सिद्धान्त कौमुदी-दीपिका समन्वित]

संप्रेरक

श्यामयोगी तपस्वी खानदेश केशरी पंडितरत्न

मुनिश्री कन्हैयालाल जी महाराज

प्रकाशक

आचार्य श्री घासीलाल जी महाराज साहित्य प्रकाशन समिति

इन्दौर

प्रस्तावना

आगमवेत्ता परम पूज्य पं० मुनि घासीलालजी महाराज स्थानकवासी जैन समाज के एक ऐसे मनीषी संत हुए हैं, जिन्हें कई शताब्दियों तक विस्मृत करना संभव नहीं होगा। उनका जन्म मेवाड़ के बनोल ग्राम में (१८८४ ई०) हुआ, दीक्षा १६०१ ई० में जैनाचार्य श्री जवाहरलालजी (१८७५-१६४३ ई०) ने दी तथा ३ जनवरी १६७३ को उनका निधन हुआ। वे ८८ वर्ष जिये। उनका यह विश्ववन्द्य जीवन-काल न केवल जैन समाज के लिए वरन् संपूर्ण भारतीय वाङ्मय के लिए ऐतिहासिक सिद्ध हुआ। १६०१ ई० में जब उन्होंने मुनि-दीक्षा ग्रहण की तब जैन साधुओं के लिए संस्कृत का अध्ययन निषिद्ध था। परम्परानुसार उन्हें संस्कृत पढ़ने की अनुमति नहीं थी. किन्तु जैनाचार्य श्रीजवाहरलालजी ने उन्हें न सिर्फ संस्कृत पढ़ने की अनुमति प्रदान की, अपितु उन्हें संस्कृत भाषा और साहित्य का एक पारंगत विद्वान बनाने में भी गहन रुचि ली, फलस्वरूप उन्होंने न केवल संस्कृत का गहन अध्ययन किया बल्कि उस पर इतना अधिकार प्राप्त कर लिया कि आगे चलकर उनमें विपुल साहित्य का निर्माण भी किया। वे न सिर्फ एक सूत्रकार/व्याख्याकार ही थे अपितु शब्द-शिल्पी भी थे अर्थात् कारयित्री (सृजनधर्मी) प्रतिभा के धनी भी थे। उन्होंने जैन समाज में नवक्रान्ति के सूत्रधार लौंकाशाह पर एक सफल महा-काव्य लिखा है। स्तोत्रों और स्तुतियों का तो कोई हिसाब ही नहीं है। वे महाकवि थे, मनीषी साहित्यकार थे।

उनके सम्पूर्ण साहित्य को हम आठ वर्गों में संयोजित कर सकते हैं—आगम साहित्य, उपांग साहित्य, मूल साहित्य (व्याख्या), छेद-साहित्य, न्याय-साहित्य, व्याकरण, कोश और काव्य। उनका अधिकांश-साहित्य अभी प्रकाशन की प्रतीक्षा में है। यह सुखद और मंगलमय है कि इन्दौर स्थित पूज्य श्री घासीलालजी महाराज साहित्य प्रकाशन समिति ने उनके इस साहित्य को प्रकाशित करने की एक व्यापक योजना तैयार की है। मुझे विश्वास है इसके द्वारा परम पूज्य प्रातः स्मरणीय पं. घासीलालजी महाराज की मनीषा का अमृत-पान हम कर सकेंगे।

फिलहाल उनके तीन ग्रन्थों के प्रकाशन का दायित्व समिति ने अपने कंधों पर लिया है; ये हैं—'प्राकृत चिन्तामणि', 'प्राकृत कौमुदी' (पाइय कोमुई) तथा 'श्री नामार्थोदयसागर कोश'। उक्त तीनों

ग्रन्थ न केवल जैन साहित्य की बल्कि विश्व-साहित्य की बहुमूल्य धरोहर हैं। हमें विश्वास करना चाहिए कि इनके प्रकाशन से हिन्दी भाषा के अध्ययन-अनुसंधान के नये द्वार तो खुलेंगे ही, साथ ही संस्कृत-साहित्य भी समृद्ध होगा। 'नानार्थोदयसागर कोश' एक तरह का पर्यायकोश है, जिसमें शब्दों की नाना विवक्षाओं (अर्थछवियों) पर बहुत गहराई से प्रकाश डाला गया है। अंग्रेजी में तो इस तरह के कोश-संपादन की परम्परा है किन्तु संस्कृत के माध्यम से हिन्दी जगत् में इसका अवतरण एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। इस कोश से हिन्दी की भाषाशास्त्रीय संपदा अवश्य समृद्ध होगी।

इस ग्रन्थत्रयी की शृंखला में से सर्वप्रथम प्रकाशित हो रहा है 'प्राकृत चिन्तामणि', जिसके कुल मिलाकर १०८ पृष्ठ हैं; किन्तु ये सब गागर में सागर हैं। टाइप छोटा है किन्तु इस बात की पूरी सावधानी रखी गई है कि यह भाषा और मुद्रण की दृष्टि से पूर्णतया निर्दोष हो। उक्त ग्रन्थ में प्राकृत भाषा (पृष्ठ १-६६), शौरसेनी भाषा (६७-७०), मागधी भाषा (७१-७३), पैशाची भाषा (७३-७५), तथा अपभ्रंश भाषा (७७-८९) की संरचना पर विचार किया गया है। यह काम ५९८ सूत्रों में संपन्न हुआ है। व्यवस्था इस प्रकार है—सूत्र, कौमुदी, और दीपिका। सूत्र और कौमुदी (अर्थ-विवृति) संस्कृत में हैं; किन्तु दीपिका में संबंधित सूत्र या सूत्रों के सरल हिन्दी में अनुवाद दे दिये गये हैं। इस तरह 'प्राकृत चिन्तामणि' संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषा-भाषियों के लिए उपयोगी बन गयी है।

वस्तुतः आज हिन्दी और संस्कृत के जानकार तो उपलब्ध हैं; किन्तु 'प्राकृत चिन्तामणि' में जिन लोकभाषाओं के व्याकरण को प्रतिपादित किया गया है, उनके जानकार प्राप्य नहीं हैं। जहाँ तक जैन वाङ्मय का प्रश्न है, उसकी गहराइयों में उतरने के लिए प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची और अपभ्रंश भाषाओं का गहन अध्ययन आवश्यक है। इन्हें जाने बिना अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है। वस्तुतः इस ग्रन्थ के प्रकाशन से जैन साहित्य के अध्ययन-अनुसंधान के नये क्षितिज खुलेंगे और प्राकृत के अध्ययन का मार्ग प्रशस्त होगा।

हम तपस्वी ध्यानयोगी मुनि श्री कन्हैयालालजी महाराज के कृतज्ञ हैं जिन्होंने इतनी अमूल्य अप्रकाशित निधि को प्रकाशित करने का अवसर प्रदान किया।

मुझे विश्वास है कि पूज्य श्री घासीलालजी महाराज साहित्य प्रकाशन समिति, इन्दौर निकट भविष्य में ही उनके संपूर्ण वाङ्मय के निर्दोष प्रकाशन में सफल होगी।

दीपावली १९८७

—नेमीचन्द जैन

संपादक 'तीर्थंकर', इन्दौर

अनुक्रमणिका

अथाधिकारप्रकरणम् १
संज्ञाप्रकरणम् १
परिभाषाप्रकरणम् २
लिंगव्यवस्था २
सन्धिप्रकरणम् २
अथान्त्यहल्विकारप्रकरणम् ३
अथचन्द्रविधिः ३
अथाजादेशादिप्रकरणम् ४
अथसाज्झलाजादेशप्रकरणम् १२
अथासंयुक्तादिहलादेशप्रकरणम् १३
असंयुक्ताघनादिहलादेश १५
असंयुक्तानादिहलादेश १५
अथकवर्गादेशः १५
अथ चवर्गादेशः १६
अथटवर्गादेशः १६
अथतवर्गादेशः १६
अथपवर्गादेशः १७
अथयणादेशः १८
अथशषसहादेशः १९
अथासंयुक्तानादिव्यंजनलुप्प्रकरणम् १९
अथ साज्झलुप्प्रकारणम् १९
अथनिपातप्रकरणम् २०
अनसंयुक्तहलादेशः २०
अथसंयुक्तावयवलुप्प्रकरणम् २५
अथद्वित्वप्रकरणम् २६
अथागमप्रकरणम् २७
अथव्यत्ययप्रकरणम् २८
अथतद्धितप्रकरणम् २९
अथाव्ययप्रकरणम् ३०
अथसुबन्तप्रकरणम् ३०
तत्रपुल्लिंगाःसामान्य शब्दाः ३०
आकारान्ताः पु० शब्दाः ३२
अथ-इदुदन्ताः पुं० शब्दाः ३२
इदुदन्ताः सा. पुं० शब्दा ३३
अथ ऋदन्ताः ३३
अथाजन्त स्त्रीलिंग प्रकरणम् ३५
अथा इदुदन्ताः स्त्रीलिंग शब्दाः ३५
अथ ईदन्ताः ३६
अथ ऊदन्ताः ३६
अथ ऋदन्ताः ३६
अथ नपुंसक प्रकरणम् ३६
अथ इदुदन्ताः ३७
अथ ऋदन्ता नपुंसकलिंगाः ३९
अथसुबन्तविशेषशब्दाः ३७
अन्नन्त पुल्लिंग आत्मन् शब्दाः ३७
अथहलन्तस्त्रीलिंग विशेष शब्दाः ३९

अथहलन्त नपुंसकलिंग विशेष शब्दाः	३९
अथसर्वनामप्रकरणम्	३९
अथ यच्छब्दः	४०
अथ तच्छब्दः	४१
एतच्छब्दः	४२
किम् शब्दः	४३
अदश्शब्दः	४३
अथयुष्मदस्मत्प्रकरणम्	४३
अथसंख्यावाचकद्वि शब्दाः	४६
संख्यावाचक त्रिशब्दाः	४६
संख्यावाचक चतुःशब्दाः	४६
अथसर्वनामस्त्रीलिंगप्रकरणम्	४७
अथनपुंसकेसर्वादिशब्दाः	४८
अथविभक्त्यन्तादेशप्रकरणम्	४८
अथस्त्रीप्रत्ययविधिः	४९
अथोत्सराद्धं तिङन्तप्रकरणम्	४९
तिङन्तप्रकरणम्	४९
अथण्यन्तप्रक्रिया	५५
अथभावकर्मप्रक्रिया	५५
अथधात्ववयवादेशागमाः	५८
अथधात्वादेशाः	६०
अथ ण्यन्त धात्वादेशाः	६३
अथकृदन्तप्रक्रिया	६४
॥प्राकृत भाषा समाप्त॥	
शौरसेनी भाषा	६७-७०
अथशौरसेनीभाषायामादेशविधिः	६७
आख्यातप्रकरणम्	६९
अथतिङन्तप्रक्रिया	७०
अथकृदन्तप्रक्रिया	७०
मागधी भाषा	७१-७२
अथपैशाचीभाषा	७३-७५
अथ चूलिका पैशाची प्रारभ्यते	७६
अथापभ्रंश प्रकरणम्	७७-८९
अपभ्रंशे अधिकारविधिः	७७
अपभ्रंशे अजादेशः	७७
अपभ्रंशे सुबन्तेसामान्यविधिः	७७
अथ स्त्रीलिंगशब्दाः	७८
अथ नपुंसकलिंगाः	७९
अथसर्वनाम पुल्लिंगा	७९
अथ स्त्रीलिंगा सर्वादयः	८०
अथ नपुंसके सर्वादयः	८१
अपभ्रंशे सर्वादौ युष्मदस्मत्प्रकरणे युष्मच्छब्दः	८१
अपभ्रंशे सर्वादौ युष्मदस्मत्प्रकरणे अस्मच्छब्दः	८१
अथ तिङन्तप्रकरणम्	८२
अथ धात्वादेशाः	८३
अथगुरुवर्णस्य लघूच्चारणप्रकरणम्	८३
अथादेश प्रकरणम्	८३
अथाव्ययप्रकरणम्	८५
अथस्वार्थिकाः प्रत्ययाः	८७
अथलिंगव्यवस्था	८८
प्राकृत चिन्तामणिस्थ सूत्र सूची	९०-१००
शौर सेनी भाषा सूत्राणि	१०१
मागधी भाषा सूत्राणि	१०१
पैशाची भाषा सूत्राणि	१०२
अथापभ्रंशभाषा सूत्राणि	१०३
ग्रन्थकर्ता प्रशस्तिः	११५

॥ श्रीः ॥

॥ मंगलाचरणम् ॥

देवाहिदेवं जिणरायरायं—गुणायरं य गणिरायरायं ।
पाइयसत्थस्स पवेसणट्ठं—पणम्म चिंतामणि मा कहेमि ॥१॥

छाया—देवाधिदेवं जिनराजराजं गुणाकरं च गणिराजराजम् ।
प्राकृतशास्त्रस्य प्रवेशार्थं प्रणम्य चिन्तामणि मा कथयामि ॥१॥

[अथाधिकारप्रकरणम्]

सूत्र—[1]

(१) अथ प्राकृतम् । १, १, १ ।
(२) सिद्धिः स्याद्वावलोकाच्च । १, १, २ ।
(३) अनुक्तमन्यव्याकरणवत् । १, १, ३ ।

कौमुदी—

आशास्त्रसमाप्तेरिमेऽधिकाराः । प्रकृतिः संस्कृतम् । तत्र भवं तत आगतं वा । तद्द्विविधम् । तत्समं तद्भवं च । तद्भवमपि द्विविधं सिद्ध-साध्यसंस्कृत भेदात् । आद्य—द्रव्यं = दव्वं । सर्वतः = सव्वओ । द्वितीयं—वृक्ष—ङसि = वच्छाओ इत्यादि । प्राकृते प्रकृति प्रत्यय लिङ्ग कारक समाससंज्ञादयः संस्कृतवद् भवन्ति । स्ववर्ग्यासंयुक्तौङञौ, प्लुतविसर्गौ, ऋॠऌए औ शषाः चतुर्थीविभक्तिः द्विवचनं चैते न भवन्ति । क्वचिद् ऐ, औ, चतुर्थ्या एकवचनं च भवन्ति । तच्च यथास्थानं दर्शयिष्यते ।

दीपिका—

अथेति । शास्त्रसमाप्तिपर्यन्त प्राकृत आदि का अधिकार है । प्राकृत में प्रकृति प्रत्यय लिङ्ग कारक तथा समाससंज्ञा आदि संस्कृततुल्य होता है । स्ववर्गीय से असंयुक्त ङञ् प्लुत-विसर्ग ऋॠ ऌ ए औ श—ष चतुर्थी विभक्ति, सर्वत्र द्विवचन प्राकृत में नहीं होते हैं । कहीं ऐ औ तथा चतुर्थी के एक वचन होते हैं, यथास्थान उदाहरण मिलेंगे । शेष स्पष्ट है । अनुक्त अन्य व्याकरणवत् होता है ।

(४) बहुलम् । १, १, ४ ।
कौ० अयमप्यधिकारस्तथैव । तेनाऽत्र प्रायः सर्वमेव कार्यं क्वचित्स्यात् क्वचिन्न, क्वचिद्वा क्वचिदन्यदेवेति यथास्थानं वक्ष्यामः ।

(५) आर्षम् । १, १, ५ ।
कौ० अयमपि तथा । आर्षे सर्वेविधयो विकल्प्यन्ते । तदपि अग्रे दर्शयिष्यते । इत्याधिकार प्रकरणम् ।

[संज्ञाप्रकरणम्]

(६) आद्विद्वितीयौकिखी । १, १, ६ ।
कौ० शब्देषु प्रथम द्वितीयौ वर्णौ क्रमात्किखि संज्ञकौस्तः ।
दी० शब्दों में प्रथम तथा द्वितीय वर्ण क्रम से कि तथा खि संज्ञक होता है ।

(७) संयुक्तं स्किः । १, १, ७ ।
कौ० संयुक्ताहलः स्किसंज्ञकाः स्युः । द्व्यथम् ।

(८) चन्द्रोऽनुस्वारः । १, १, ८ ।
कौ० अनुस्वारश्चन्द्र संज्ञः स्यात् ।

(९) इकुपलब्धः शास्त्रे । १, १, ९ ।
कौ० शास्त्रमात्रे य उपलभ्यते नतु प्रयोगे स इत्स्यात् ।

(१०) लुप् तस्य । १, १, १० ।
कौ० इत्संज्ञकस्य लुप् स्यात् ।

---

१. क्रम—सर्वप्रथम सूत्र, फिर संस्कृत में कौमुदी तथा हिन्दी में दीपिका इस प्रकार क्रम सर्वत्र समझना चाहिए ।

(११) उपलब्धाऽदर्शनं लुप् । १, १, ११ ।
कौ० उपलब्धस्यादर्शनं लुप् स्यात् ।

(१२) वानिवर्तकं चित् । १, १, १२ ।
कौ० चित् विकल्पस्य निवर्तकं स्यात् ।

(१३) सानुनासिकं ञित् । १, १, १३ ।
कौ० ञित्कार्यं सानुनासिकोच्चारं स्यात् ।

॥ परिभाषा प्रकरणम् ॥

(७) दीर्घो ङिति । १, १, १४ ।
कौ० ङिति परे पूर्वदीर्घो भवति । 'जश्शसोर्दुलुप्' (३, १, ४) जिणा ।

(८) ठितोद्वित्वम् । १, १, १५ ।
कौ० ठकारेत्संज्ञकस्य कार्यस्य द्वित्वं स्यात् । मिठ् सठाव स्त्रियाम्' (३, १, ६) जिणम्मि, जिणस्स ।

(१०) सुब्वद् समासे परस्परं दीर्घह्रस्वौ । १, १, १६ ।
कौ० समासे परस्परमचां दीर्घह्रस्वौ बहुलं स्तः । अन्तर्वेदिः—अन्तावेई । क्वचिन्न । जुवइजणो । क्वचिद्विकल्पः । वारिमई वारीमई । दीर्घस्य= ह्रस्वः शिला-स्खलितं=सिलाखलिअं । क्वचिद्वा गोरिहरिं गोरीहरिं ।

बी० समेति । समास में परस्पर दीर्घ को ह्रस्व, ह्रस्व को दीर्घ होता है । अन्तर—वेदि—सु=१, १, २८ रेफ= लुप् प्र० सू० त=ता ३, ३, १, १, २६, ३, १, २५= अन्तावेई । कहीं पर नहीं होता है=जुवइ=जणो इत्यादि ।

[लिङ्ग व्यवस्था]

(११) पुंसि स्नान्तशरत्तरणिप्रावृड्वामादि ।
१, १, १७ ।

कौ० दामादिभिन्नाः सान्तनान्ताः शरत् तरणि प्रावृषश्चैते पुंसि प्रयुज्यन्ते । स्नान्तं च क्लीवमेव नतुस्त्रीलिङ्गम् । तेनाप्सरसाशीषादीनां न पुंस्त्वम् । तमस्–तमो । जन्मन्–जम्मो । सरओ । एसो तरणी । पाउसो । दामादेस्तु दामं सिरं इत्यादि । 'बाबच-नादिलोचनार्थाः' 'क्लीवे गुणादिः' 'स्त्रियामञ्ज-ल्यादीमान्तो' 'बाहोरात्' (१, १, १८-२१) इत्येतानि प्रा० कौ० द्रष्टव्यानि ।

बी० दामादिभिन्न सान्त-नान्त-शरत्-तरणि तथा प्रावृष शब्द पुंल्लिग में प्रयुक्त होते हैं । तरणि—पुंस्त्रीलिङ्ग पुंल्लिग में ही होगा ।

[सन्धिप्रकरण]

(१२) वा सन्धिरपदे । १, १, २२ ।
कौ० प्राकृते पदयोः संधिर्वास्यात् । अपदे इति निषे-धात् पदयोरिति लभ्यते । व्यासर्षिः =वा–सेसो । वास इसी विसमायवो, विसम आयवो । अपदे इति किम् । कपिः कवि र्वा=कई । बाहुलकात्क्व-चिदेके पदेऽपि । करिष्यसि, काही काहिइ कर्मइ ।

बी० वेति । प्राकृत में दो पदों में सन्धि विकल्प से होती है । व्यास-ऋषि-सु=२, ३, ६८ व्या=वास=१, ३, ३६, ४, ३६ ऋषि-इसि-प्र० सू० वै, सन्धि=३, १, २५ स्यादिकार्य=वासेसी, वासइसी । विषम-आतप=प्र० सू० दीर्घ-विकल्प=१, ४, ३६ ष=स २, २, १, ३ त=य ३, १, १३,=विसमायवो (=पो २, १, ४१) पक्षे विसमआयवो । कृ—स्य—ति=३, ३, १. २७-४, ५= काहि—इ=प्र० सू० वा—सन्धि=काही— काहिइ ।

(१३) य्वो र्न यण् । १, १, २३ ।
कौ० इवुतो र्यण् न स्यात् । दहि-एत्थ । महु-एत्थ ।

बी० य्वोरिति । इ-तथा उ को यण् नहीं होता है । दधि-अत्र, मधु-अत्र २, १, ७ ध=ह, १, २, २३-२, ४, १७ अत्र—एत्थ=दहि—एत्थ, महु—एत्थ यहाँ क्रम से इ= य, उ=व नहीं होता है ।

(१४) एङोऽचि । १, १, २४ ।
कौ० एदेतोरचिपरे न सन्धिः । देवीए-एत्थ । देवो एत्थ ।

बी० एङोऽचीति । एकार तथा ओकार को सन्धि नहीं होती है । देवीटा=३, १, ३१=देवीए-एत्थ देव-सु= ३, १, १३=देवो—एत्थ प्र० सू० सन्धि निषेध से ए—ओ को अय्—अव् नहीं होता है ।

(१५) तिङोऽचः । १, १, २५ ।
कौ० अचि तिङामचः सन्धिर्नस्यात् । होइ-इह-(भवतीह गा अत्र न दीर्घः)

दी० तिङोऽच इति । अच् से पूर्व तिङ के अच् को सन्धि नहीं होती है । भ—ति=४, १, २, ३, ३, १=होद—इह=दीर्घ नहीं ।

(१६) शेषे । १, १, २६ ।

कौ० हलोलुपि सत्यवशिष्यमाणोऽचिपरे न सन्धिः । रजनीचरः=रयणीअरो । बाहुलकात्कुम्भकारादीनां वा । कुम्भारो कुम्भआरो । चक्रवाकशातवाहनयोः सन्धिरेव । चक्काओ । सालाहणो । एतत्प्रतिषेधादेव समासेऽपः सन्धौ पृथक्पदत्वम् ।

दी० शेष इति । हल्-लुप् होने पर शेष अच् से पूर्व अच् को लुप् होता है । रजनीचर--सु---२, १, ३२ नां=णी २, २, १, न् लु प्=अ—प्र. सू. असंधि=रथ (=ज २, २,१, ३) णी–अरो । बाहुलकात्—कुम्भकार–सु=२, २, १ का=आ प्र० सू० वा असंधि=कुम्भारो कुम्भआरो । चक्र-वाक्-सु=२, ३, ६६. ७५ क=क्क २, २, १. वा =आ चक्काओ । शातवाहन-सु=१, ४, ३६, २, १, २३ शात=साल २, ३, २, १ वा=आ=सालाहणो । यहाँ पर सन्धि नित्य है ।

(१७) लुप् । १, १, २७ ।

कौ० अचोऽचि बहुलं लुप्स्यात् । तिअसीसो ।

॥ इति सन्धि प्रकरणम् ॥

दी० लुबिति । अच् से पूर्व अच् को बहुल प्रकार से लुप् होता है । २, ३, ६६ त्रि–ति २, २, १, १, १. २६, १, ४. ३६=दश=तिअस=ईस=तिअसीसो ।

[अथान्त्यहल्विकार प्रकरण]

(१८) हलोऽन्त्यस्या श्रदुदो । १, १, २८ ।

कौ० अन्त्यहलोलुप् स्यात् । तावत्=ताव । (श्रदुदोर्न) सद्धा । उग्गयो । समासे तु उभयम् । सभिक्खु । सज्जणो । नाऽभ्यन्तरस्त्व 'उपरौदलुप्' (१, १, ३०, ३१) अन्तरङ्ग । अन्ताउवरि ।

दी० हल इति । अन्त्यहल् को लुप् होता है । श्रद तथा उद् में नहीं । १, ४, ३६, २२, ६६ थ=स=सद्धा । २, ३, ६७ उद्ग=उग्ग–२, २, १, ३ त=य–सु=उग्गयो । समास में उभय । सद्-भिक्षु-सु=प्र० सू० स० द्—लुप २, ३, ६, ७६ क्षु=क्खु ३, १, २५=स—भिक्खु । सद्-जन—सु=२, ३, ६७. ७५ द्ज=ज्ज=सज्जणो ।

(१९) आस्त्रियाम विद्युतः । १, १, ३३ ।

कौ० लुबपवादः । स्त्रियामन्त्यहलः स्थाने आत्स्यात् । संपआ । बाहुलकाद्यश्रुतिः=संपया । विद्युतोन, विज्जू । 'रान्सेरा' ३४ । गिर=गिरा । 'क्षुत्ककुभोर्हः' ३५ । छुहा । ककुहा । 'वा धनुषि' धणुहो धणू । 'आयुरप्सरसोः सः' ३७ । आयुसो आयू । अच्छरसा अच्छरआ । 'दिक्प्रावृषोः सच्' ३८ दिसा । पाउसो । 'वा सदाशिषः' ३९ । आसीसा आसीआ । इत्यादि प्रा० कौ० द्र० ॥ आजपवादः ।

दी० आजिति । स्त्रीलिंग में अन्त्यहल को आ होता है विद्युत शब्द में नहीं । सपद्—लुप्—बाधकर–आ=संपआ २,२,३ संपया । विद्युत–सु=१, १, २८ त्=लुप् २, ३, २१. ७५ ३१. २५=विज्जू । २, ४. २४ स्वार्थेल—टाप् =विज्जुला ।

(२०) शरदादेरत् । १, १, ४० ।

कौ० अन्त्यहलोऽत्स्यात् । सरओ । भिसओ ।

दी० शरेति । शरदादि के अन्त्यहल को अ होता है । शरत्=आ—बाधकर प्र० सू० अ १, १, १७ पुंस्त्व २, १, १३ स्वा० का०=सरओ । भिस=ष १, ४, ३६ क्=भिसओ ।

[अथ चन्द्रविधिः]

(२१) मश्चन्द्र च् । १, १, ४२ ।

कौ० अन्त्यमस्य चन्द्रः स्यात् । जलं । बाहुलकादनन्त्यस्यापि । वणम्मि=वणंमि । 'अचि वा' ऋषभमजितं च वन्दे=उसभमजिअं उसभं अजिअं च वन्दे । इत्यन्त्यहल्विकारविधिः ।

दी० मश्चेति । अन्त्य म को अनुस्वार होता है । जल—अम् =३, १, ३ म्—प्र० सू० चन्द्र=जलं । वण (=न २, १, ३२)–ङि=३, १, ६, १, १, १३ म्मि–बाहुलक-अनन्त्य म=चन्द्र=वणंमि । १, ३, ४५, ४, ३६ ऋषभ=उसभ-म् (=अम्) अजिअ (=त) म्=१, १, ४२ वा चन्द्र=उसभमजिअं पक्ष उसभं अजिअ ।

(२२) हल्यमो वर्गान्त्यस्य चित् । १, १, ४५ ।

कौ० हलिपरे वर्गान्त्यानां ङञणनानां चन्द्रो नित्यं स्यान्नतु मस्य। अङ्कः=अंको। 'दर्शनादिष्वचः' दसणं। वयंसो। अवरि इत्यादि। क्वचिच्छन्दः पूत्तो देवंनाग सुवण्ण। 'क्त्वासुपोर्णासूभ्याम्' जिणाणं, ण। काऊणं ण। जिणे सुं, सु। "लुप् तस्यकास्यादौ" कासं कंसं। मासं मंसं इत्यादि। "तदन्त्योवर्गे" पङ्को पंको अञ्जली अंजलीत्यादि। "विंशत्यादौ त्या दलुप् च" विंशति=वीसा। त्रिंशत्=तीसा इत्यादि।

। इत्यनुस्वार प्रकरणम् ।

दी० हलीति। हल् से पूर्व म-भिन्न वर्गान्त्य को अनुस्वार होता है। उ० स्पष्ट है।

[अथाजादेशादि प्रकरणम्]

(२३) आदेः । १, २, १ । इत्यधिकृत्य

(२४) अव्ययत्यदादेस्तदचो वा लुप् । १, २, २ ।

कौ० आभ्यां परयोरनयो रेवादेरचो वा लुप स्यात्। जइमा, जइइमा। अम्हेत्थ अम्हे एत्थ। 'अरण्यालाब्वोः (१, २, ३) रण्णं अरण्णं। लाऊ अलाऊ।

दी० अव्ययेति। अव्यय तथा त्यदादि से पर अव्यय तथा त्यदादि के अच् को लुप् विकल्प से होता है। यदि १, ४, २८ य=ज २, २, १ दि=इ=जइ—इमा। जइमा। अम्हे-एत्थ। लुपि=अम्हेत्थ। अरण्य-सु=१, २, ३ आदि—अ=लुप् २, ३, ६८. ७५ ण्य=ण्ण ३, १, २६ सु=म् १, १, ४२ नम्=रण्णं, पक्षे अरण्णं। अलाबू-सु=प्र० सू० अ—लुप् २, २, १ ब—लुप् १, १, २६ असंधि ३, १, ११ सु=लुप्=लाऊ, अलाऊ।

(२५) पदादपेः । १, २, ४ ।

कौ० आदेरचो वा लुप्। किं पि। किमवि। केण वि। केणावि। पदात्किम् अपि गच्छसि।

दी० पदादिति। पद से पर अपि के अकार को विकल्प में लुप् हो जाता है।

(२६) इतेश्चित् । १, २, ५ ।

कौ० पदात्परस्य-इतेरादे रचो नित्यं लुप् स्यात्। किंति। "अचस्तः" (१, २, ६) लुबपवादः। तहत्ति। 'तेरितौवाक्यादौ' १, २, ४३ इअ जिणवयणं।

दी० पद से पर इति के आदि अच् को नित्य लुप् होता है। किं (=किम्) प्र० सू० इति=ति=किंति। तथा—इति=१, २, ३३, २, १, ७ था=ह १, २, ६ इति=त्ति=तहत्ति। इति जिन वचनं १, २, ४३ ति-इ-अ, २, १, ३२ न=ण २, २, १, ६=इअ जिणवयणं।

(२७) दीर्घोलुप्तयवरशषिशषि । १, २, ७ ।

कौ० शषसाः शर् इति पाणिनीये। येन शरा संयुक्ता-याद्या लुप्तास्तस्मिन्शरि परे आदेरचो दीर्घः स्यात् पश्यति=पासइ। विश्वासः=वीसासो इत्यादि। "दक्षिणे हे" (१, २, ८) दाहिणो। हे इति किम्। दक्खिणो।

दी० दीर्घेति। जिन श=ष—स के संयुक्त य—व—र श—ष—स लुप्त हुए हैं उन शेष श-ष-स से पूर्व आदि स्वर को दीर्घ होता है। कश्यप-विश्वास-विश्राम-शिष्य इत्यादि में २, ३, ६८, ६६ य—व—र—लुप्—प्र० सू० दीर्घ १, ४, ३६ श-ष-स २, १, ४१ प—स ३, १, १३ स्वादिकार्य=कासवो वीसासो विसामो सीसो इत्यादि। दक्षिण—सु=२, ३, ६४ क्ष=ह १, २, ८ द=दा ३, १, १२ सु=ओड्=दाहिणो। हलाभावे—२, ३, ६. ७६ क्ष=क्ख=दक्खिणो।

(२८) वा समृद्ध्यादौ । १, २, ९ ।

कौ० आदेरचो वा दीर्घः। सामिद्धी समिद्धी। समृद्धि प्रसिद्धि प्रकट प्रतिपद् प्रसुप्त प्रतिसिद्धि, सदृक्ष मनस्विन मनस्विनी अभिजाति प्ररोह प्रवासिन् प्रतिस्पर्द्धिन् इति समृद्ध्यादिः।

दी० वेति। समृद्ध्यादि में आदि अच् को दीर्घ होता है। समृद्धि—सु प्र० सू० आ—दीर्घ १, ३, २९ ऋ=इ ३, १, २५ सु-हलुप्=सामिद्धी। पक्षे समिद्धी। मनस्विन्—मनस्विनी 'दर्शनादिष्वचः' २२ नं २, १. ३१ णत्व १, १. २८ न् लुप्=प्र०सू० दीर्घ=माणंसि (=स्वि—२, ३, ६६) णी। माणंसिणी। माणंसी मणंसी। इत्यादि।

(२९) मृदङ्गावावस्येच्च । १, २, १० ।

कौ० आदेरस्य स्थाने नित्यमिच्स्यात्। मिइङ्गो मुइङ्गो। सिविणो सिमिणो। आर्ष-सुमिणो। मृदङ्ग स्वप्न इषत् वेतस कृपण उत्तम मरिच व्यलीक व्यजन दत्त इत्यादि। दिण्णं। बाहुलकादणत्वे न

स्यात्। दत्तं। वा पक्व ललाटाङ्गार वेतसे। ११। पिक्कं पक्कं [इङ्गालो अङ्गारो] णिडालं णडालं वेडिसो वेअसो। 'सेः सप्तपर्णे'। (२, १, १२) छत्तिवण्णो छत्तवण्णो। 'चित्कतममध्यमे' (१, २, १३) कइमो मज्झिमो।

दी० अतइति। मृदङ्गादि में आदि अ के स्थान में इत्व नित्य होता है। मृदङ्ग—१, ३, ३७ मृ=मि—मु—प्र० सू० द=दि, २, २, १, ११, २६. ३, १, १३=मिइङ्गो मुइङ्गो। स्वप्न=२, ३, ६६ स्व—स=सि २, ३, ८६ प्न=पिन २, १, ३२, ४२ विण २, १, ५१ वै० म० सिविणो सिमिणो। दत्त=२, ३, ३४. ७५ त=ण्ण= दि=दिण्णं। णत्वाभावे दत्तं। पक्वं=वै. इत्व, २, ३, ६६. ७५ क्व=क्क=पिक्कं पक्कं। ललाटं=१, ४, ३१ आदि ल=ण—वै. इत्व २. १, १७ट=ड वेतस—त=ति =२, १, १८ डि=वेडिसो पक्षे २, २, १,=वेअसो २, ४, ३ व्यत्यय=णिडालं णडालं। २, १, ४७ र=ल= इङ्गालो। पक्षे अङ्गारो॥ सप्तपर्ण=१, ४, ३५ स=छ २, १, ४२ प=व २, ३, ६७. ६६. ७६. ७५ प्त=त्त, र्ण=ण्ण 'सेः' १, २, १२ त=वै. इत्व=त्ति—त= छत्तिवण्णो छत्त०। कतमो—मध्यमो—त—ध्य—इत्व, २, २, १, १, २६ लुप्—असंधि=कइमो। २, ३, २४. ७६ ध्य=ज्झ=मज्झिमो।

(३०) प्रथमे प—थोरुत्। १, २, १६।

कौ० प्रथमे प-थोरस्यक्रमादक्रमाच्चोत्वं वा स्यात्। पुढमं पढुमं पुढुमं पढमं। 'ध्वनिसास्नास्तावक-योषित्' १, २, १८ झुणी। सुण्हा। थुवयो। 'विष्वगवयवे वः' १, २, १६। वीसुं। गउओ।

दी० प्रथम शब्द में प—तथा थ में अ—को क्रम तथा अक्रम से उत्व विकल्प से होता है। २, १, २८ थ=ढ= पुढमं ४। ध्वनि—२, ३, १५ ध्व=झ १, २, १८ झु ३२ ण—३, १, २५=झुणी। २, ३, ३६=सास्ना= सुण्हा। २, ३, १८ स्ता=आ=उ २, ३, ४२ स्तु=थु= २, ३, १, ३ क=य=स्वादिकार्य=थुवयो। २, ३, ६६ ष्व=ष्—लुप् १, २, ७ दीर्घ=१, २, १६ उत्व=वीसु १, १, २८ कलुप् १, १, ४६ सु=सुं=वीसुं। गवय—

१, २, १६ व—अ=उ, २, २, १ य्—लुप् १, १, २६ असंधि—स्वादिकार्य=गउओ।

(३१) सर्वज्ञादौ णेः। १, २, २०।

कौ० 'ज्ञम्नोः' (२, ३, ३६) इतिणत्वे णकाराकारस्य नित्यमुत्वं स्यात्। सव्वण्णू अहिण्णू। आगमण्णू इत्यादि। यत्र णत्वे सत्युत्वं दृश्यते स सर्वज्ञादिः। तेन प्राज्ञः पण्णो इत्यादौ न। णे इति किम्। सव्व-ज्जो अहिज्जो।

दी० सर्वेति। सर्वज्ञादि में अ—को उत्व होता है। सर्वज्ञ—अभिज्ञ—आगमज्ञ—२, १. ७ भि=हि, २, ३, ६६. ७५ र्व=व्व—२, ३, ३६. ७५ ज्ञ=ण्ण=प्र० सू० उत्व २, १, २५, स्वादिकार्य=सव्वण्णू अहिण्णू आगमण्णू। जहाँ ज्ञ को णत्व होने पर उत्व दीखता हो वह सर्वज्ञादि है। अतः प्राज्ञ १, २, ३६ ह्रस्व—२, ३, ६६ र—लुप्=पण्णो इत्यादि। २, ३, ७१ ज्ञ—ज्—ञ्=लुप् ७५ द्वित्व= सव्वज्जो इत्यादि में णत्वाभाव में उत्व नहीं होता है।

(३२) कन्दुकादावेच्। १, २, २३।

कौ० आदेरेवर्णस्य नित्यमेव स्यात्। गेन्दुअं। सेज्जा। कन्दुक, शय्या, सौन्दर्य, ग्राह्य, अत्र इत्यादि। 'चे ब्रह्मचर्ये' १, २, २४। बम्भचेरं। 'सेरन्तर्पश्चात्कर्म पुराकर्माश्चर्यपारावते' (१, २, २६) णत्वं वा। अन्ते आरो पच्छेकम्मं पच्छाकम्मं। पुरे, रा कम्मं। अच्छेरं, अच्छरिअं। पारे, रावयो।

दी० कन्दुकादि में आदि अवर्ण को नित्य एत्व होता है। कन्दुकं—प्र० सू० आदि—अ=ए १, ४, १४ क=ग, क—लुप्=गेन्दुअं। शय्या=१, ४, ३६ श=स २, ३, २०.७५ य्या=ज्जा—एत्व=सेज्जा। शेषं स्वयं समझलें।

(३३) पद्मेम्म्योत्। १, २, २६।

कौ० द्विरुक्ते मकारे परे आदेरस्य नित्यमोत्वं स्यात्। पोम्मं। 'छद्म पद्मे' (२, ३, ६७) त्यादिना—उत्वे तु पउमं। 'सेः परस्परनमस्कारे' (१, २, ३१) परोप्परं। नमोक्कारो। 'स्को ह्रस्वः' (१, २, ३६) इति ह्रस्वेतु एसो पंच नमुक्कारो। अर्पो वा (१, २, ३२) ओप्पिअं अप्पिअं।

दी० द्विरुक्त म्म से पूर्व पद्म शब्द में आदि अ—को ओ होता है। पद्मं=२, ३, ६७. ७५ द्म=म्म—प्र० सू० पा=पो=पोम्मं। २, ३, ९६. २, २, १, पउम। २, ३, ६५, ७५ स्प=प्प, स्क=क्क १, २, ३१ र=रो, म=मो=परोप्परं नमोक्कारो। अर्पितं=१, २, २२ ओप्पिअं। अप्पिअं।

(३४) आतोऽव्ययचामरादिघञन्तेऽत् । १, २, ३३ ।

कौ० एव्वादेरातः स्थानेऽत्वं वा स्यात्। अहव, अहवा। चमरो चामरो। चामर, उत्खात कालक (कुमार नाराच ह्लालिक बलाका प्राकृत तालवृन्त खादिर ब्राह्मण पूर्वाह्ण) स्थापि तेत्यादि चामरादिः। घञन्ते। पवहो। पवाहो क्वचिन्न। राग=रायो भागः=भायो।

दी० आत इति। अव्यय—चामरादि तथा घञन्त में आदि आकार को अत विकल्प से होता है।

(३५) चन्द्रेऽत् कांस्यादौ । १, २, ३४ ।

कौ० आदेरातो नित्यमत्वं स्यादनुस्वारे सति। कंसं मंसं इत्यादि। चन्द्रे किम्। कासं मासं। कांस्य मांस पांसु पांसन कांसिक वांसिकेत्यादि कांस्यादिः। 'श्यामाक महाराष्ट्र म्होः (१, २, ३५) सामयो। मरहट्ठं मरहट्ठो।

दी० चन्द्र इति। कांस्यादि में आदि आ को अ नित्य होता है, अनुस्वार लुप् होने पर नहीं होता है। कांस्यं=मासं=१, १, ४८ चन्द्र—लुप्=मासं, २, ३, ६८ य—लुप्=कासं। लुपो भावे प्र० सू० आ—अ=कंसं मंसं। श्यामाकं=श्या=२, ३, ६८, १, ४, ६६ सा—प्रा० सू० मा=म २, १, ३, क—य=सामयो। मरहट्ठं २, ४, १६ द०)।

(३६) वा सदादावित् । १, २, ३६ ।

कौ० आदेरात इत्वं वा स्यात्। सइ सया। निसिअरो निसायरो। कुप्पिसो कुप्पासो। बाहुलकात् 'चिरस्को' (१, ३, १८) इत्योत्वं न प्रवर्तते।

दी० वेति। सदादि में आदि आकार के स्थान में इकार विकल्प से होता है। सदा—प्र० सू० वै० आ=इ २, २, १, १, १, २६ द् लुप् असन्धि=सइ, पक्ष में २, २, १, ३ दा=या=सया। निशाचर १, ४, ३६ शा=सा प्र० सू० सि० २, २, १, स्व=लुप् असंधि=निसिअरो। पक्ष यश्रुति निसायरो। कुर्पास २, ३, ६९. ७५ र्पा=प्पा वै० ४२८=२, १, १३ सु=ओह=कुप्पिसो कुप्पासो। बहुलाधिकार से अथवा लाक्षणिक होने से १, ३, १८ उ=को ओ नहीं होता है।

(३७) चेऽजिचाचार्ये । १, २, ३७ ।

कौ० आचार्यस्थे चाकारे आतः स्थानेऽजिचौस्तः। आइरियो, आयरियो।

दी० आचार्य शब्दस्थ चा में आ को अ तथा इ नित्य होते हैं। आचार्य—सु २, ३, ८७ र्य=रिय प्र० सू० चा=आ अ—इ—२, २, १, ३ च् लुप्—य—३, १, १३ सु=ओह्=आइरियो, आयरियो।

(३८) स्त्यानखल्वाटयोरीत् । १, २, ३८ ।

कौ० अनयोरात ईत्वं स्यान्नित्यम्। ठीणं थीणं थिण्णं। 'खल्लीडो'। संखायं इति तु 'संस्त्योद्ध्मोः संखोद्धमौ' (४, ४, १०) इति संखादेशोक्ते प्रत्यये सिद्ध्यति॥

दी० स्त्यानेति। स्त्यान तथा खल्वाट में आ को ई होता है। स्त्यान-सु=२, १, ३२, न=ण २, ३, ३६ स्त्या=ठा=प्र० सू० ठी=३, १, २६, १, १, ४२, सु=म-चन्द्र=ठीणं। ठत्वाबाभावे २, ३, ४२, ६८ थीणं २, ३, ७६ थीण्णं १, ३, ३९ ह्रस्व=थिण्ण। खल्वाट-सु=२, ३, ६६. ७५ ल्वा=ल्ला=प्र० सू० ल्ली २, १ १७ ट=ड ३, १, १३=खल्लीडो।

(३९) स्कौह्रस्वः । १, २, ३९ ।

कौ० यथादर्शनं स्कौपरदीर्घो ह्रस्वो भवति। कव्वं मुणिन्दो जिणिन्दो।

दी० स्काविति। संयुक्त से पूर्वदीर्घ यथादर्शन ह्रस्व होता है। काव्य—सु, मुनीन्द्र-नरेन्द्र-सु, प्र० सू० २, १, ३२ न=ण २, ३, ६८. ७५ व्य=व्व=३, १, २४.१३ स्वा० का=कव्वं, मुणिन्दो।

एदितो वा । १, २, ४० ।

कौ० स्कौपरे आदेरित एत्वं वा। पिण्डं, पेण्डं। सिन्दूरं, सेन्दूरं। क्वचिन्न। चिन्ता।

बी० संयुक्त से पूर्व इ को ए विकल्प से होता है।

(४०) अत्पथि पृथिवी प्रतिश्रुन्मूषिक विभीतको । १, २, ४२ ।

कौ० एध्वादेरितः (१, २, ४३) स्थानेअत्वं स्यान्नित्यम्। पहा (=पथिन्) पुहवी पुढवी। पडंसुआ। मूसओ, वहेडयो। 'तेरितौ वाकादौ' इअ सियावायो।

बी० अदिति। पथ्यादि में इ—को अत्व नित्य होता है। पथिन्—सु=१, १, २८ थन्-लुप् प्र० सू० थि=थ=२, १७ ह० ३, १, १३=पहो। पृथिवी २, १, २६ थ=वै० ढ० पक्षे २, १, ७ ह—प्र० सू० इ=अ=१, ३, ३३ पृ=पु=पुढवी, पुहवी। प्रतिश्रुत्=प्र० सू० ति=त १, १, ३३, त=आ २, १, १८ त=ड १, १, ६४ डं २, ३, ६६ र—लुप् १, ४, ३, ६ श्रु-सु पडंसुआ। मुष (=ष)—सु १, ४, ३६, २, २, १, ३, ३, १, १३=मूसयो। विभीतक—सु=१, ३, ८, २, १, ७ भी=हे १८ त=ड २, २, १, ३, क=य ३, १, १३=वहेडयो इति। स्याद्वादः=१, २, ४३ ति=त २, २, १, ११, २६ इअ, २, ३, ८७, १, १, २८ स्वाद=सिया २, २, १, ३ द=य ३, १, १३ सु=ओइ=इअ, सियावायो।

(४१) वा हरिद्रेङ्गुदशिथिले। १, २, ४५।

कौ० एध्वादेरितोऽत्वं वा स्यात्। हलद्दी, हलद्दा। हलिद्दी हलिद्दा। अङ्गुअं इंगुअं। सढिलं सिढिलं। णिम्मायं णिम्मिअंमिति तु निर्मात निर्मिताभ्यामेव सिद्ध्यति।

बी० वेति। हरिद्र इङ्गुद तथा शिथिल में आदि इकार को विकल्प से अ होता है। हरिद्रा=प्र० सू० वै० रि—इ=अ २, १, ४७ र—ल २, ३, ६६, ७५ द्र=द्द ३, १, ३५ वै० ङीप्=३, १, ११ स्वाविकार्यं=हलद्दी ४। इङ्गुद—सु=२, २, १, १, १, २६ लुप् असंधि ३, १, २६, १, १, ४२ स्वा० का० प्र० सू० अ=अङ्गुअ। पक्षे इङ्गुअं। सिढि (=शिथि १, ४, ३६, २, १, २८) लं (=थु ३, १, २६, १, १, ४२) प्र० सू० सि=सढिलं। निर्मित-निर्मित-सु-२, ३, ६६, ७५ र्म=म्म २, २, १, ३, त्-लुप् य श्रुति १, ४, २३ नि=वै० णि ३, १, २६, १, १, ४२ स्वा० का०=णि (नि) म्मायं, णि (नि) म्मिअं। अत सूत्र में ग्रहण नहीं किया है।

(४२) लुपिसिंहनिरोश्चन्द्ररेफयोरीच् । १, २, ४६।

कौ० सिंहे चन्द्रस्य निरिरेफस्य लुपि सति-इतः स्थाने ईच्स्यात्। सीहो मियाणं सलिलाणगंगा' (सू० कृ० १, ६, २१) णीघोसो। लुपीति किम्। सिंघो। णिग्घोसो। नीसरइ (=निस्सर) नीसासो (=निस्वास) 'दीघो' १, २, ७ इत्येव सिद्धम्। हे जिह्वायाम्। १, २, ४७। जीहा हे किम्। जिब्भा।

बी० लुपीति। सिंह में अनुस्वार तथा निर् में र् को लुप् होने पर इ के स्थान में ई नित्य होता है। सिंह-सु=१, १, ४८ चन्द्र=लुप प्र० सू० सि=सी ३, १, १३ सु=ओइ=सीहो। निर्घोष—सु=१, १, २६ रेफ-लुप् प्र० सू० नि=नी=१, ४, २३ वै० णी ३६ ष=स, सु=ओइ=णीघोसो। लुपे-असति=२, १, ५३ ह=घ=सिंघो। २, ३, ६६.७६ र्घो=ग्घो=णिग्घो। जिह्वा—सु=२, ३, ६६ ह्वा=हा=१, २, ४७ जि=जी=३, १, ११ सु—लुप्=जीहा। २, ३, ४७, ह्व=भ=७६ ब्भ=जिब्भा।

(४३) अद्वायुधिष्ठिरे। १, २, ४८।

कौ० आदेरित उत्वं वा स्यात्। जहुट्ठिलो, जहिट्ठिलो॥ "द्विन्योः" १, २, ४९। इत उत्वं बहुलं स्यात्। क्वचिन्नित्यम् दुविहो दुरेहो। क्वचिद्वा। दुउणो बिउणो। क्वचिन्न। द्विजः=दिओ। द्विरदः=दिरओ। निमग्नः=णुमन्नो। क्वचिन्न। निवडइ।

बी० युधिष्ठिर में आदि इ को उ विकल्प से होता है। युधिष्ठिर—सु=प्र० सू० धि=धु=वि० २, १, ७ हु १, ३, २२, ४, २८ यु=ज २, ३, ६७, ७६ ष्ठि=ट्ठि २, १, ४७ र=ल ३, १, १३=जहुट्ठिलो। पक्षे जहिट्ठिलो। द्वि—नि—में इ को उ—बहुल प्रकार से होता है। अतः क्वचिन्नित्य=द्विविध—द्विरेफ—सु—इ—उ २, ३, ६६ व—लुप् २, १, ७ ह ३, १, १३=दुविहो। दुरेहो। द्विगुण—सु—उ वि० बु २, १, १, १, ३६ दुउणो २, ३, ६७ द्=लुप्=विउणो। क्वचित् नहीं। द्विजः-द्विरद—सु=व्—लुप्, ज्—लुप्, द=य=दिओ। दिरओ। निमग्न—सु—नि=नु=१, ४, २३ णु २, ३, ६७, ७५ ग्न=म=सु=ओइ=णु (नु) मन्नो।

क्वचित् नहीं निपतु (=त् ३, ४, ११, ३० अक) ३, ३, १, सि=इ=नि २, १, ४, प=व निवडइ।

(४४) **इक्षु प्रवासिनोश्चित्** । १, २, ५०।

कौ० अनयोरितोनित्यमुत्वं स्यात्। उच्छू। पावासु। पवासू।

दी० इक्षिवति। इक्षु तथा प्रवासिन् शब्दों में इ को उ विकल्प से होता है। इक्षु—सु—प्र० सू० इ—उ २, ३, १८ क्ष=छः ७६ च्छ ३, १, २५, १, १, १२ सु=द्लुप्—दीर्घ=उच्छू। प्रवासिन्—सु १, १, २८ न् लुप्—प्र० सू० इ—उ १, २, ६ अ—आ २, ३, ६६ र—लुप्—द्लुप्—दीर्घ—पावासु—पवासु।

(४५) **ओच्च द्विधा कृञ् द्विवचने** । १, २, ५१।

कौ० अनयोरित ओत्वं चादुत्वं च नित्यं स्तः। द्विधा क्रियते=दोहाकिज्जइ दुहाकिज्जइ। दोवयणं दुवयणं। 'ना निर्झरे वा' १, २, ५२। ओज्झरो निज्झरो।

दी० कृ धातु के योग में द्विधा शब्द में तथा द्विवचन शब्द में इ को ओ तथा उ होता है। द्विधाकिज्जइ (=कृ—य—ते ३, ३, १ ते=इ ३, ४, ४८ य=इज्ज १, १, २७ कृ—ऋ—लुप् प्र० सू० द्वि=इ=ओ—उ २, ३, ६९ व्—लुप्=दु—हाकिज्जइ। बाहुलकात्क्वचित्केवल में भी होता है, यथा—दुहा—वि स सु र बहु सत्थो द्विवचनं—(=३, १, २६, १, १, ४१ सु=य—चन्द्र प्र० सू० इ=ओ—उ=२, १, ३२ न=ण २, २, १, ३ च=य=दोवयणं दुवयणं। निर्झर—सु=न—सहित इ=नि को वै० ओ २, ३, ६६, ७६ र्झ=ज्झ=स्वा० का०=ओज्झरो निज्झरो।

(४६) **हरीतकी कश्मीरयोरीतोऽजाची** । १, ३, १।

कौ० अनयोरीतः स्थाने क्रमाद जाचौ स्तः। हरडई। कम्हारो। "गभीरादावित्" (१, ३, २)। गहिरं। 'वा पानीयादौ' (१, ३, ३) पाणियं। 'जीर्णेउत्' (१, ३, ४) जुण्णाणि मुणीयां इहलो आदीणि सत्तभयाइं। जिण्णो अ अट्ठविहो जाइकुलाइमयो। 'ह्यूत्तीर्थे' १, ३, ५। तूहं। होत्येव। तित्थं। 'वाहीनविहीनयोः' हूणं विहूणं।

दी० हरीति। हरीतकी तथा कश्मीर में आदि ई को क्रम से अ—आ नित्य होता है। हरीतकी—सु=प्र० सू० री=र २, १, १८ त=ड २, २, १, १, १, २६ की—ई, असंधि ३, १, ११ सुलुप्=हरडई। कश्मीर—सु=प्र० सू०—आ २, ३, ५०, ५३ श्म=म्म—म्ह, ३, १, १, १३ स्वा० का०=कम्मारो=कम्हारो। गभीरादि में आदि ई को इ=२, १, ७ ह=गहिरं। पानीयादि में विकल्प=२, १, ३२ न=ण २, २, १, १, १, २६=पाणिअं पाणीअं। जीर्ण में विकल्प से उ=जीर्ण—जस् २, २, ६९, ७५ र्ण=ण्ण ३, १, २७ जस्=णिद् १, १, १२ दीर्घ=जुण्णाणि। पक्षे १, २, ३९ ह्रस्व ३, १, १३ स्वा० का० जिण्णो। तीर्थे में ह्परे ऊ=ध्व २, ३, ६४ र्थ=वै० ह, ती=तू ३, १, २६ स्वा० तूहं। ह्त्वाभाव में १, २, ३९ ह्रस्व २, ३, ६९, ७६ र्थ=त्थ=तित्थं। हीन तथा विहीन में विकल्प—२, १, ३२ णत्व=हूणं विहूणं।

(४७) **नीडपीठयोरेत्** । १, ३, ७।

कौ० एत्वं वा। नेडं नीडं पेढं पीढं। "कीदृशेदृशापीड विभीत-केस्वेच्" १: ३, ८। एषु नित्यम्। केरिसो इत्यादि।

दी० नीड तथा पीठ में ई को विकल्प से ए होता है। २, १, १७, ठ=ढ। शेषं स्पष्टम्। कीदृश—ईदृश—आपीड—विभीतक में नित्य=१, ३, ४३ ऋ=रि० १, ४, ३६ श=स ३, १, १३ स्वा०=केरिसो, एरिसो। २, १, १५, ३६ ड=ल प=म आमेलो २, १, ४१ ए=वे=आवेडो वहेडयो ४० सू० ह०।

(४८) **उतोऽन्मुकुरादौ** । १, ३, ९।

कौ० आदेरुतोऽत्वं नित्यं स्यात्। मउरं। मुकुलं=मउलं। 'वागुरुकोपरौ' गरुअं गुरुअं। अवरिं उवरिं। 'आज्विद्रुते' चित्वान्नित्यम्। विद्दाओ तिविहो गव्वो मुणीणं। विद्रुतस्त्रिविधो गर्वो मुनीनाम्।

दी० उतइति। मुकुरादिगण में उ को नित्य अ होता है। मुकुर—मुकुल—सु=प्र० सू० उ=अ २, २, १, १, १, २६ क—लुप्—असंधि ३, १, २६ स्वा०=मउरं, मउलं ॥ ९ ॥ गुरुक—उपरि में विकल्प=गरुअं गुरुअं।

२, १, ४१ प=व १, १, ४६ रि=रि=अवरि उवरि ॥१०॥ विद्रुत में ... २, ३, ६६ ... २, १, १, १, २६ त्—लुप्—असंधि ३, १, १, १३ स्वा० विद्दाओ ॥११॥

(४९) रः पुरुष भ्रुकुटाविच् । १, ३, १२ ।

कौ० रेफ संबन्धिन उत इत्वं नित्यं स्यात् । विजिअ कसाओ चिअ (=एव) पुरिसो । भिउडी । 'ईच्छुते' । ३ । छीअं ।

दी० रः इति । पुरुष—भ्रुकुटि शब्दों में रेफ सम्बन्धी उ को इ नित्य होता है । पुरुष=सु=प्र० सु० रु=रि १, ४, ३६ ष=स० स्वा० का० पुरिसो । भ्रुकुटी—प० सु० भ्रु—भ्रि २, ३, ६६ र—लुप् २, २, १, १, २६—क—लुप् असंधि २, १, १७ ट=ड=भिउडी ॥१२॥

क्षुतं=में उ=ई २, ३, १८ क्ष=छ, त—लुप्—असंधि=छीअं ॥१३॥

(५०) त्सच्छोरुत्वनुत्सन्नोत्साहे । १, ३, १४ ।

कौ० त्सच्छयो : परयो सदेरुत ऊत्वं स्यान्नित्यम् । उत्सवः=ऊसवो । उवता:शकायस्मात्स उच्छुकः=ऊसुओ अनुत्सन्नोत्साहे इति किम् । उच्छओ उच्छाहो । १४ । वा मुसल सुभगयोः । १५ । मूसलं मुसलं । सूहवो सुहवो ॥ दुर्रिर्लुपि । १६ । र—पि—ऊत्वं वा । दुर्भगः=दूहवो ॥ १६ ॥

दी० त्सच्छोरिति । त्सतथच्छ से पूर्व उ को ऊ होता है उत्सन्न तथा उत्साह में नहीं होता है । उत्सव-सु-उच्छु (=उद्—शु) क-सु=प्र०सु० उ=ऊ २, ३, ६७ त्स=च्छ=द्—च्=लुप् ३, १, १३ स्वा० ऊसवो ऊसुओ (=क २,२, १) उत्सन्न-उत्साह-सु=में २, ३, २०, ७६ त्स=च्छ=त्-ष्=स्वा०का०=उच्छन्नो उच्छाहो ।१४। मुसलं सुभगं—सु=में ऊ विकल्प २, १, ७. ११ भग=हव ३, १, १३, २६ स्वा० मूसलं, मुसलं, सूहवो, सुहवो वत्वाभावे २, २, १, ३=ग=यो=सुहयो । १५ । दुर् उपसर्ग में रेफ=लुप् होने पर उ=ऊ विकल्प होता है । दुर्भग=सु=१, १, २६ र्—लुप् प्र० सु० दु=दू २, १, ११ ग=व ७ भ=ह ३, १, १३ स्वा० दूहवो । ऊत्वाभावे २, २, १, ३ ग=य=दुहयो ॥१६॥

(५१) ओच्च्कौ । १, ३, १७ ।

कौ० आदेरुतः स्थाने नित्य मोच् स्यात् संयुक्ते परे । तोण्डं मोण्डं । १७ । वा कुतूहले ह्रस्वश्चोतः । १८ । कोउहल्लं—कोऊहलं कुऊहलं । १८ ।

दी० ओजिति । आदि उ को ओ होता है संयुक्त पर में होने पर । तुण्डं=तोण्डं । कुतूहल से उ=ऊ विकल्प, तथा तू में ऊ को ह्रस्व । २, २, १, १, १, २६ त—लुप्—असंधि= कोऊहलं कोउहलं । पक्षे कुऊहलं । १, ४, ६ कुतू—उतू=ओ=कोहलं ।

(५२) अवूतः सूक्ष्म दुकूले लश्चाद्विः । १, ३, १९ ।

कौ० ऊतोऽत्वं वा स्यात् । सण्हं सुण्हं । आर्षे सुहुमं । दुअल्लं दुऊलं । आर्षे दुगुल्लं ॥ ईदुदव्यूढे । २१ । ईर्त्वं वा । उव्वीढं अव्वूढं ।

दी० अवूत इति । सूक्ष्म—दुकूल में ऊ को अ होता है । विकल्प से तथा अत्व होने पर ल को द्वित्व होता है । सूक्ष्म—सु=प्र० सु० ऊ=अ २, ३, ३६, क्ष्म=ण्ह ३, १, २६ स्वा=सण्हं । पक्षे १, २, ३६ ह्रस्व=सुण्हं । २, ३, ४०, ३ सुहुमं । उदव्यूढ—सु=२१ सु० ऊ=ई २, ३, ६७, ६८, ७५, द्व्य=व्व० स्वा० का०=उव्वीढं पक्षे उव्वूढं ।

(५३) वातूलकण्डूयहनूमत्यूच् । १, ३, २२ ।

कौ० ऊत उत्वं स्यान्नित्यम् । वाउलो । कण्डुअउ । हणुमन्तो । वा मधूके । २३ । उत्वं वा । महुअं महूअं । इदेतो नूपुरे । २४ निअरं नेउरं । पक्षे । नूउरं ।

दी० वेति । वातूलादि में ऊ को उ नित्य होता है । वातूल-सु=प्र० सु० तू=तु २, २, १, १, १, २६—लुप्—असंधि ३, १, १, ३=स्वा०=वाउलो । हनू=मन्त—(=मत् ३, ४, १३) सु=२, १, ३२ नू=णू, स्वादि०=प्र० सु० ऊ=उ=हणुमन्तो । कण्डूय-इ (=ति—ते ३, ३, १) प्र० सु० ऊ=उ—२, २, १, ११, २६ य=लुप्—असंधि=कण्डुअइ । मधूक—सु=ऊ=वै० उ २, १, ७ ६० क—लुप्—असंधि, स्वा०=३, १, २६=महुअं महूअं । २४ । नूपुर में ऊ=वै० इ—ए—प्—लुप् असंधि स्वा० निउरं, नेउरं । पक्ष में नूउरं ।

(५४) ओत्स्थूतूणे । १, ३, २५ ।

कौ० अनयोरूत ओत्वं वा स्यात् । थोणा, थूणा, तोणं, तूणं । 'चित्कूर्पर तूणीर कूष्माण्डी गुडूची मूल्य स्थूल ताम्बूले । ।२६। नित्य भूत: =ओत्वं स्यात् । कोप्परं. तोणीरं, कोहण्डी, कोहली, गलोई मोल्लं, थोरं, तम्बोलं ।

दी० ओदिति । स्थूणा तथा तूण में ऊ को ओ विकल्प से होता है । स्थूणा—प्र० सू० ऊ=ओ २, ३, ६७ स्—लुप् =थोणा । पक्षे थूणा । एवं तोणं तूणं । २५ । कूर्परादि में ऊ को नित्य ओ होता है कूर्पर—र्=प्र० सू० ऊ= ओ २, ३, ६६. ७५=र्प=प्प. स्वादि० =कोप्पर । तूणीरं=तोणीरं । कूष्माण्डी—प्र० सू०=कू=को १, २, ३६. २, ३, ६५. ६१ . ७५ ष्माण्डी=हल्ली= कोहली. लत्वाभावे=कोहण्डी । गुडूची—प्र० सू० डू= डो २, १, १७ ड=ल १, ३, ६ गु=ग २, २, १, च्— लुप् १, १. २६ असंधि=गलोई । मूल्य—सु=प्र० सू० मू=मो २, ३, ६८ . ७५ ल्य=ल्ल, स्वादिकार्यं= मोल्लं । स्थूलं—स्थू=२, ३, ६७—सु—लुप् प्र० सू० ऊ=ओ २, १, ५० ल=र थोरं । ताम्बूलं १, २, ३६ ता=त प्र० सू० ऊ=ओ=तम्बोलं ।२६।

(५५) ऋतोऽत् । १, ३, २७ ।

कौ० आदेर्ऋतोऽत्वं स्यान्नित्यम् । कयं । दिहा कियं (=द्विधाकृतमिति ऋष्यादित्वात् । घयं । २७ । आद्वा कृशा मृदुत्व मृदुके । २८ । कासा किसा । माउक्क माउत्तणं । माउक्कं, मउअं ।

दी० ऋत इति । आदि ऋ को अ नित्य होता है । कृत- घृत—तृण—सु—प्र० सू० ऋ=अ २, २, १, ३ तं=य ३, १, २६ स्वादि० =कयं घयं तणं । द्विधाकृत—ऋष्यादि पाठाद् कृ=ऋ=इ=कियं, २, १, ७ ध=ह् २, ३, ६६ व्—लुप्=दिहाकयं । कृशा=२८ सू० ऋ=वै० आ, पक्षे २६ इ=१, ४, ३६ श=स=कासा, किसा । मृदुत्व—सु—मृदुक—सु—प्र० सू० मृ=वै० मा पक्षे २७ म २, २, १, १, १, २६ दु=द—लुप्—असंधि २, ३, ९ त्व=क ७४ द्वित्व स्वादि० माउक्कं । अत्वे २, ४, २० त्व=तण=मउत्तणं । मृदुक=२, ३, ७६ क —द्वित्व, पक्षेऽद्वित्वे २, २, १, १, १, २६ क्—लुप् असंधि माउक्कं मउअं । २८ ।

(५६) ऋष्यादाविच् । १, ३, २९ ।

कौ० ऋष्यादिगणे आदेर्ऋतोनित्यमित्वं स्यात् । ऋषि: =इसी । कृपा=किवा । इत्यादि । २९ । वाधृष्ट मृत्युशृङ्गमसृण मृगांके । ३० । धिट्ठो घट्ठो । मिच्चू मच्चू । सिङ्ग सङ्ग । मसिणं मसणं मिअंको । मयंको । ३० । अभिवृत्तवृन्दारके वृषभे- लुत्: । ३१ । निवुत्तं निअत्तं । वुन्दारयो वन्दारयो । उसह वसहो । ३२ ।

दी० ऋष्येति । ऋष्यादि में आदि ऋ को इ नित्य होता है । ऋषि—सु=प्र० सू० ऋ=इ १, ८, ३६=३, १, २५=इसी । कृपा—प्र० सू० कृ=कि २, १, ४१ प= व किवा । २६ । धृष्टादि में विकल्प से ऋ=इ पक्षे २७ अ=धिष्ट=२, ३, २८ . ७६ ष्ट=ट्ठ ३, १, १३ स्वादि० =धिट्ठो-घट्ठो । सि—म—त्यु २, ३, १४ . ७५ त्यु=च्चू ३, १, २५ स्वादि० =मिच्चू मच्चू । शि—स= १, ४, ३६ स=सिंग संग । मसि—म, णं । मि -म— ग=२, २, १---लु ५, असंधि=मिअंको, ३, य=मयङ्को । ।३०। निवृत्त—सु=वृ=३१ वु—३७ व २, २, १ . व—लुप्, असंधि स्वादि० =निअत्तं, निवुत्तं । वृन्दारक— सु-वृ=वु—व=२, २, १, ३ क=य, स्वादि० = वुन्दारयो वन्दारयो । वृषभ—सु—वृ उ, व=ष=स, २, १, ७, भ=ह स्वादि० =उसहो, वसहो ।

(५७) ऋज्वादावुच् । १, ३, ३३ ।

कौ० आदेर्ऋत उत् स्यात् । ऋजु: =उज्जू । ऋतु: =उऊ । इत्यादि । । ३३ । गौणे । ३४ । पिउहरं । इदुतौमातरि । ३५ । माइ, उहरं । क्वचिदगौणेऽपि । ३६ । माईणं (=मातृणाम्) ।

दी० ऋज्वेति । ऋजु आदि में आदि ऋ को उ होता है । ऋजु:—ऋतु—सु=प्र० सू० ऋ=उ २, ३, ८० जु= ज्जु, स्वादि० —उज्जू । २, २, १, १, १, २६=उऊ । पितृ---गृह— ३४ ऋ=उ २, २, १९ गृह=घर २, १, ७ घ=ह=पिउहरं । मातृ—हरं, (—गृह) ३५, ऋ=इ —उ त्—लुप्—असंधि=माइहरं, माउहरं । मातृ--- आम्=३६ ऋ=इ, ३, १, १० आम्=णद् १, १, २२ पूर्वं दीर्घ=त—लुप् असंधि=माईण. १, १, ४७ चन्द्र= माईण ।

(५८) पृथग्वृष्टिवृष्ट नप्तृकमृदंगे । १, ३, ३७ ।

कौ० पृथगादिषु स्थाने इदुतौ स्तः । पिहं, पुहं, पिहू, पुहं । **विट्ठी, वुट्ठी । विट्ठो, वुट्ठो । नत्तिओ-नत्तुओ । मिइङ्गो मुइङ्गो । ३७ । बृहस्पतौ वा । ३८ । इदुतौ बास्तः । विहप्फइ, वुहप्फई । पक्षे बहप्फई । ३८ । इजेद्वौवृन्ते । ३९ । विण्टं, वेण्टं, वोण्टं । मृष्युजोचः । । ४० । मृषावादः=मुसावायो, मूसावायो, मोसावायो । ऋपोऽरिदृप्ते । । ४१ । दरिओ । आहते दृढिः । ४२ । आढिओ ।**

कौ० पृथगिति । पृथग् वृष्टि वृष्ट नप्तृक तथा मृदङ्ग में ऋको इ तथा उ होता है । पृथक्—१, १, २८ क्—लुप्—२, १, ७, ८ वें. थ=ह—ध—३, १, २६ स्वादि०=पिहु पुहं पिध पुधं । वृष्टि—सु—वृष्ट—सु=प्र. सु. इ—उ २, ३, ३८, ७६ ष्ट—ट्ठ ३, १, १३, २५ स्वा० विट्ठी वुट्ठी विट्ठो वुट्ठो । नप्तृक—सु. प्र. सू. इ—उ २, ३, ६७. ७५ प्त=त्त २, १, १ क=लुप् १, १, २६ असंधि=नत्तिओ, नत्तुओ । मृदङ्ग—सु=प्र. सु. इ उ. द्—लुप् असंधि=१, २, १० अ=इ=३, १, १३ स्वा०=मिइङ्गो मुइङ्गो । ३७ । बृहस्पति—सु=ऋ—इ उ—वि० २, ३, ४६, ७६ स्प=प्फ २, २, १, १, १, २६ त्—लुप्—असंधि=३, १, २५ स्वा०=विहप्फई वुहप्फइ । पक्षे १, ३, २७ ऋ=अ=बहप्फई । ३८ । वृन्त—सु=ऋ—इ—ए—ओ, २, ३, ३७ न्त=ण्ट, ३, १, २६ स्वा०=विण्टं वेण्टं वोण्टं । ३९ । मृषावाद—सु=ऋ—उ, ऊ, ओ १, ४, ३६ ष=स २, २, १, ३, द=य स्वा० मुसावायो, मूसावायो मोसावायो । ४० । दृप्त—सु=ऋप्=अरि २, २, १, १, १, २६, ३, १, १३=दरिओ । यतु 'दृप्तेऽरिप्ता' इति सूत्रं, दरिओ इति रूपं च (१, २, ८८) त्रिविक्रमेण कृतं तच्चिन्त्यमेव । दरिओ इति रूपासिद्धेः । दरीति रूपापत्तेश्च । ४० ॥ आहृत—सु=हृ=ढि, त—लुप्—असंधि स्वा०=अढिओ ॥४२॥

(५९) दृशि क्विन्टक्सेरिः ।१, ३, ४३ ।

कौ० 'त्यदादिषु' 'क्सश्च' (पा०सू०वा० ३, २, ६०) इतिविहिता ये क्विन-कन्-क्सास्तदन्ते दृशधातौ ह स्थाने रिः स्यात् । सरी, सरिसो । सरिच्छो । ४३ । केवलस्य । ४४ । रिद्धी, रिच्छो ॥ ऋषि, ऋण, ऋजु, ऋतु ऋषभे वा । ४५ । रिसी, इसी । रिणं अणं । रिज्जू अज्जू । रिऊ उऊ॥ रिसहो उसहो । ४५ ।

कौ० दृशीति । ३, २, ६० पा० सू० वा० से विहित क्विनादिप्रत्ययान्त—दृशधातु में ह के स्थान में रि आदेश होता है ।

सदृश्, श, क्स—सु=प्र. सु. ह=रि, १, १, २८ श्—लुप्, १, ४, ३६ श=स=, २, ३, १८. ७६ क्ष=च्छ, ३, १, २६, १३ स्वा०=सरी । सरिसो सरिच्छो ।४३। ऋक्ष—ऋद्धि—सु—ऋ=रि, क्ष=च्छ, स्वा०=रिच्छो रिद्धी । ४४ । ऋषि—ऋण—ऋजु—ऋतु—ऋषभ—सु=४५ ऋ=रि: १, ४, ३६ ष=स २, १, ७ भ=ह २, ३, ८० ज=ज्ज, २, २, १, १, १, २६ त् लुप् असंधि ३, १, २५, २६, १३—स्वा०=रिसी, ण, ज्जू ऊ सहो । पक्षे १, ३, २७, २६, ३३ ऋ=अ, इ, उ=अणं । इसी । उज्जू, उऊ, उसहो ।

(६०) इल्लिचक्लृन्नक्लृप्तेलृतः । १, ३, ४६ ।

कौ० स्पष्टम् । किलिन्नो । किलित्तो । (=प्त २, ३, ६७. ७५) ॥ ३, १, १३ सु=ओड् ।

(६१) इदेतो वा चपेटा वेदनाकेसरे देवरे

। १, ३, ४७ ।

कौ० चपेटादिष्वेत इत्वं वा स्यात् । चविडा चवेडा । विवेअणा । कि, केसरं । दिअ, देवरो ॥ ४७ ॥ उत्स्तेने । ४८ । थूणो थेणो ।

कौ० इदेत इति । चपेटादि में ए को इ विकल्प से होता है । चपेटा—२, १, १५, १७, ४१, ट=ल, ड, व=प्र. सू. वें० ए=इ=चवि, वेलाढा । वेदना देवर—सु=२, २, १, द्—लुप् १, १, २६ असंधि २, १, ३२ न=ण, ३, १, ११, १३, स्वा० वि—वे—अणा । दिअरो देवरो । ॥ ४७ ॥ स्तेन—सु=२, ३, ४२ स्ते=थे, न=ण, स्वा०=ए=ऊ=थू, थेणा ॥४८॥

(६२) एजेतः । १, ३, ४९ ।

कौ० आदेरैतो नित्यमत्वं स्यात् । केलासो । वैरादिपाठात्कइलासो । वेज्जो । बाहुलकात्क्वचिन्न । कैतवं = कैअवं । ४९ । सैन्धवशनैश्चरयोरित् । सिन्धवं । सणिच्छरो । ५० । सैन्ये वा । सिन्नं सेन्नं । । ५१ । दैन्यादौ चाइच । दइन्नं । दैत्यः = दइच्चो । चात् सैन्ये = सइन्नं । ५२ । वादेववैरादौ । । दइवं देवं । दइव्वं, दिव्वं । वइरं वेरं इत्यादि । ५५ । धैर्ये ईच् । ५५ । धीरं हरइ विसायो । ५५ ।

वी० एजिति । आदि ऐं को ए नित्य होता है । कैलास—वैद्य—सु = प्र० सु० ऐं = ए २, ३, २१, ७५ य = ज्ज ३, १, १३ स्वा० = वेज्जो केलासो । १, २, ३९ ह्रस्व विज्जो । वैरादित्वात् = ऐ = अइ = कइलासो । ४९ । सैन्धव—शनैश्चर—सु = ऐं = इ २, १, २६ स्वा० = सिन्धवं । १, ४, ३६ श = स २, १, ३२ न = ण २, ३, २०, ७६ श्च = च्छ ३, १, १३ स्वा० स—णिच्छरो । ५० । सैन्य—सु = ऐ = इ—ए २, ३, ६८, ७५ न्य = न्न, स्वादि = सि, सेन्नं । ५१ । दैन्य—दैत्य—सु = ऐ = अइच्, न्य = न्न, स्वादि = दइन्नं । २, ३, १४, ७५ त्य च्च, स्वा० = दइच्चो । सैन्यं = सइन्नं । ५२ । दैवं, वैरादि में विकल्प से ऐ = अइ = वइरं, वेरं । दइवं देवं, २, ३, ७९ व = व्व = दइव्वं । ५३ । धैर्य—सु = ऐ = ई २, ३, ५५ र्य = र्यं० र—स्वा० = धीरं । रत्वाभावे १, २, ३९ ई—ह्रस्व २, ३, २७, ७५ र्य = ज्ज = धिज्जं । ५५ ।

(६३) वाऽन्योन्यातोद्यप्रकोष्ठमनोहरसरोरुहशिरोवेदना—स्वदोतस्तकोवश्च । १, ३, ५६ ।

कौ० एष्वोतः स्थानेऽत्वं वा सतिचात्वे तकयोश्चवः स्यात् । अन्नन्नं, अन्नुन्नं । आवज्जं आउज्जं । पवट्ठो पउट्ठो । मणहरं मणोहरं । सररुहं सरोरुहं । सिरविअणा सिरोविअणा । ५६ । गव्यउआ अजाद्वः । गौ = गव गाओ गाई । ५७ । ऊत्सोच्छ्वासेछ्वसः । सूसासो । ५८ ।

वी० वेति । अन्योन्यादि में ओ के स्थान में अ विकल्प से होता है । तथा आतोद्य- -प्रकोष्ठ में—त—क को व होता है । अन्योन्य—सु = प्र. सु. ओ = उ, १, २, ३९ अ, न्य २, ३, ६८, ७५ अ—२, १, २६ स्वा० = अन्नन्नं, अन्नुन्नं । आतोद्य प्रकोष्ठ—सु = तो–को वँ, व०—पक्षे ह्रस्व, क्र द्—२, २, १ लुप् असंधि, २, ३, २१, य = ज = ६८ ष्ठ = ठ ७५, ७६ ज्ज, ट्ठ, स्वा० = आवज्जं आउज्जं । पवट्ठं पउट्ठं । २, ३, ६८ रे—लुप् ॥ २, ३, ३२ न = ण = मण, णोहरं । १, ४, ३६ शि = सिर, रो १, ३, ४७ वि, वेअणा । ५६ । गो—सु = में ओ = अउ, आ अ, आइ, ३, १, १३, २५ स्वा० = गऊ) गाओ, गाई ॥ ५७ ॥ सोच्छ्वास—सु = २, ३, ६७, ६६ च् — व्—लुप् । ओ = ऊ छ = स ३, १, १३ स्वा० = सूसासो ॥ ५८ ॥

(६४) औत् । १, ३, ६४ ।

कौ० आदरौत स्थाने ओत्वं स्यात् । कोमुई कोसम्बी । नौः = नावा । ५९ । आद्गौरवे । ६० । गारवं । अउमौनादौच । ६१ । मौनं = मउणं । पौरं = पउरं इत्यादि । चात् गौरवं = गउरवं ॥ उच्च वा कौक्षेयके । ६२ । कुच्छेअयं । चात्–अउ = कउच्छेअयं । पक्षे । कोच्छेअयं । विकल्प सामर्थ्याच्च ह्रस्वः । उच्सौन्दर्यादौ । । ६३ । चित्वान्नित्यम् । सुन्दरं । वीर्यतुल्यत्वात् सुन्दरियं । इत्यजादेश विधि प्रकरणम् ।

वी० औदिति । आदि औ के स्थान में ओ होता है । कौमुदी—कौस (= शा १, २, ३६, ४, ३६) म्बी—सु = प्र. सु. औ = ओ २, २, १, द्—लुप्—असंधि ३, १, ११ सु—लुप् = कोमुई कोसम्बी । ६४ । कौक्षेयकं—सु = ६२. औ = उ, अउ २, ३, १८, ७६ क्ष = च्छ—२, २, १, ३ य्—लुप् क = य, ३, १, २६ स्वा० = कु, कउ, कोच्छे अयं ॥ सौन्दर्य, सु = ६३ सौ = सु १, २, २३ न्द = न्दे २, ३, ५५, ८७ र्य = र, रिय = सुन्दरं, रियं । अन्य स्पष्ट है । । अजादेश प्रकरण समाप्त ।

[अथ साज्झलाजादेश प्रकरणम्]

(६५) उमो निषण्णे वा साज्झलाऽचः । १, ४, १ ।

कौ० निषण्णो परेण साज्झलाऽदेरचः = इषेत्यस्य स्थाने उम आदेशो वा स्यात् । णुमण्णो, णिमण्णो । १ । कदलविचकिलयोरेत् । २ । केलं कयलं । लिङ्गविशिष्ट परिभाषया केली कयली । वइल्लं

विअइल्लं ।। खे: कर्णिकारे । ३ । कण्णेरो कण्णिआरो ।। स्थविरायस्कारत्रयोदशादौ चित् । ४ । थेरो । एक्कारो । तेरह तेवीसा इत्यादि । ऐदथौवा । ५ । ऐ वीर ! तुमं चेअमे सरणं । अयिवीर ! त्वमेव मे शरणम् ।

टी० अम इति । निषण्ण शब्द में पर सस्वर व्यंजन सहित आदि इ=इष के स्थान में उम आदेश विकल्प से होता है । निषण्ण—सु=१, ४, २३ न=ण. प्र० सू० इष=उम, ३, १, १३ सु=ओड्=णुमण्णो निसण्णो । १ । कदल—विचकिल—सु=२ सू० अद= इच्=ए. स्वा० =केलं वेइल्लं (=ल=२, ३, ८०) पक्षे २, २, १, ३ द=ये=कयलं । २, २, १ कि=इ=विइइल्लं । स्थविर—सु—२, ३, ४२ स्थ=घ अवि=ए, स्वा० का-थेरो । अयस्कारो=अय=ए २, ३, ६७. ७५ स्का=क्का=एक्कारो । त्रयोदस=२, ३, ६६ र— लुप् प्र० सू० अयो=ए २, १, २२, ५१ दश= रह=तेरह । त्रयोविंशतिः १, १, ५२ तेवीसा ।

(६६) लवणमयूरमयूखोलूखलोदूखलकुतूहलचतुर्थ-चतुर्दश चतुर्गुणचतुर्वारसुकुमारेष्वोत् । १, ४, ६ ।

कौ० एषु परेण साज्झलाऽदेरच: ओद्वा स्यात् । लोणं लवणं इत्यादि । अपावेतेषु । ७ । ओसरइ अवसरइ । ओआसो अवयासो । ओवणं उअवणं । ऊदप्यूपे । ८ । उपाध्याय: ऊज्झायो उज्झाओ उवज्झाओ । इति साज्झलादेश प्रकरणम् ।

टी० लवणादि ग्यारह शब्दों में परवर्ती सस्वर व्यंजन सहित आदि अच् को ओ विकल्प से होता है । लवणं= अव=ओ लोणं, लवणं । मो (=अयू) रो, मयूरो । मयूख—सु=अयू=ओ २, १, ७ ख=ह=मोहो मयूहो । अलु=उदू=ओ० खं=ह=२, ३, ७५, ७६ खल= ओहलं । पक्षे ओक्खलं, उखहलं । दू—२, २, १—ऊ= उऊहलं । कुतूहलं । कुऊहल—१, ३, १८ द । चतुर्दश चतुर्गुण चतुर्वार चतुर्थ=(र्थी) प्र० सू० चतुः=चो २, ३, ६६ . ७५, ७६=चोत्थो (त्थी) । चोग्गुणो । चोव्वारो २, ३, ५१ दश=दह=चोद्दह । पक्षे । २, २, १, १, २६= चउत्थो चउग्गुणो चउद्दहो चउव्वारो । सुकुमार—सु= २, १, ४७ र—ल, सुकु=सो स्वा० सोमालो=सुकुमालो । । ६ । अप—सृ…ति=७ सू० अप=वै० ओ ३, ३, १ ति=३३, ४, २५ सृ=सर=ओसरइ । पक्षे २, १, ४१ प=व अवसरइ । अव=ओ २, २, १ का=आ १, ४, ३६ श=स—ओआसो । पक्षे २, २, १, ३ का=या= अवयासो । उ=ओ—वणं । २, २, १ त—लुप्=उअ । ७ । उपाध्याय उप को ऊ, अथवा ओ=२, ३, २४. ७६ ध्य=ज्झ=ऊज्झायो ओज्झायो । पक्षे उवज्झायो ।

इति साज्झलादेश प्रकरणम् ।।

।। अथासंयुक्तादिहलादेश प्रकरणम् ।।

(६७) हलोऽस्केरायावत: । १, ४, १२ ।

कौ० यावदि (प्रा० २, २, १०) त्यादि सूत्रयावद-यमधिकार: । तस्मादित: परमस्के रसंयुक्तायादेहे-लोवक्ष्यमाणं कार्यं स्यात् ।

टी० हल इति । २, २, १० सूत्र तक हलोऽस्के: का अधि-कार होने वक्ष्यमाणकार्य असंयुक्त—आदि हल के स्थान मे होगा ।

(६८) कीलकर्परेख: कुब्जेत्व पुष्पे । १, ४, १३ ।

कौ० एष्वादेरसंयुक्तस्य हल: स्थाने ख: स्यात् । खीलो । खप्परो । खुज्जो । पुष्पेतु-बन्धेउं कुज्ज पसूणं (=बद्धवा कुब्जप्रसूनम्) । १३ । कसित कासित योरार्थे । १४ । खसिअं खासिअं । लोकेतु कसिअं । कन्दुकेग: । १५ । झडिलो जडिलो गन्दुअं । जातौकिराते च: । १५ । चिलाओ । कामरूपिणितु-नमिमो हरकिराये । झोवा जटिले । १६ । चच्छो तुच्छे । १७ । चुच्छं छुच्छं । तूवर तगर त्रसरेटच् । १८ । टूवरो टोवरो टगरो । दंशदहोर्ड: । १९ । डसई डहइ । धो दीप्यतौ । २२ । धिप्पइ दिप्पइ णाणदीवो ।

टी० कील—कर्पर में तथा पुष्प भिन्न कुब्ज में आदि हल को ख होता है । कर्पर—सु=प्र० सू० क=ख २, ३, ६६ . ७५ र्प=प्प ३, १, १३ स्वा०=खप्परो । कुब्ज =खुज्जो । पुष्प अर्थ में कुज्जो । कसित—कासित—सु =क=ख २, २, १ स—लुप् ३, १, २६ ख, खासिअं ।

गेन्दुअं १, २, २३ द्र. । किरातः=कि=चि २, १, ४७ रा=ला २, २, १३ य ३, १, १३=चिलाओ। जटिल =सु=ज=वैं० झ २, १, १७ टि=डि, स्वा०= झडिलो, जडिलो। तुच्छं=तु=वा—चु—छु=चुच्छं छुच्छं। तूवर-तगर त्रसर—सु=त=ट ३, १, १३= टूवरो टगरो २, ३, ६७ र—लुप्=टसरो। दंश्—ति दह्—ति=३, ३, १, नि—३, ३, ४, ३० अक् १, १, ४८ चन्द्र—वा—लुप्=१, ४, ३६ श=स=डसइ डंसइ। डहइ। दीप्—अ (३, ४, ३०) ते=द=ध वि० ३, ३, १ ते=इ ४, २, १ प=प्प ४, २, ३६ ह्रस्व= धि, दिप्पइ।

(६९) नोणः। १, ४, २३।

कौ० पदादेर स्केर्नस्य णत्वं वा स्यात्। णरो नरो। णई नई। लण्हौ निम्बनापितयोः। २४। लि, निम्बौ। ण्हा, नाविओ। फच् पाटि वनस परिखा परिघ रहस पारिभद्रे। २५। ण्यन्ते पाटिधातौ पनसादौ चास्केरादेर्हलः स्थाने नित्यं फः स्यात्। पाटयति= फालेइ फाडेइ। फणसो। वः प्रभूतमन्मथे। २६। वहुत्तं वम्महो। भोबिसिन्याम्। २७। भिसिणी।

बी० न इति। पदादि में असंयुक्त आदि नकार को विकल्प से ण होता है। नए—सु, नदी—सु=प्र० सू० वैं० ण= द—लुप् ३, १, १२, २५ स्वा०=णरो नरो णई नई। निम्ब—नापित—सु=नि=लि, ना=ण्हा=लिम्बो २, २, १, ४१=ण्हाविओ। पक्षे निम्बो नाविओ। पट् —णि—ति=प्र० सू० प=फ २, १, १५, १७ ट=ल, (३, ३, १ ति=इ, ११ णि=अ १६ फ=फा २१ अ=ए=फालेडेइ। पनस—परिखा—परिघ—सु० प= फ २, १, ७ ख=घ=ह् ३२ न=ण ३, १, ११, १३ स्वा०=फणसो फलिहा फलिहो। पारिभद्र=सु=२, १, ७ भ=ह्=४७ रि=लि २, ३, ६६, ७५ द्र=द्द, १=क, स्वा०=पालिहद्दो। परुष—सु=प=फ ष=स =फरुसो। २। प्रभूत—मन्मथ—सु=२, ३, ६६ प्र= प=प्र० सू० व, २, १, ७ भ=थ ह २, ३, ८० त=त ३, १, २६ स्वा०=वहुत्तं। आदि म=व २, ३, ५०, ७५ न्म=म्म, स्वा०=वम्महो। भि=वि २, १, ३२ भ=विसिणी।

(७०) योजः। १, ४, २८।

कौ० पदादेरस्केर्यकारस्य स्थाने जः स्यात्। यमः। जमो। बाहुलकात्क्वचिदनादेरपि। संयमः, संजमो। तोऽर्थवाचि युष्मदि। २९। युष्मदीयः=तुम्हेकेरो। अर्थवाचिनि तु जुम्हदम्हपयरणं। लोयष्टौ। ३०। लट्ठी। णोल्ललाटे। ३१। णिडालं णडालं॥ वा लाङ्गल-लाङ्गूल लाहललोहले। ३२। णङ्गलं णाङ्गूलं णाहलो णोहलो। पक्षे। लङ्ग, ङ्गूलं, ला, लोहलो। भो विह्वले मे। ३३। भिब्भलो। विब्भलो इत्येव। विहलो। छः शिरायाम्। ३४। छिरा सिरा। षट्सुधा-शावशमीसप्तपर्णे छच्। ३५। षष्ठः=छट्ठो। छुहा छावो। छमी, छत्तिवण्णो। आदेरित निवृत्तम्।

। इत्यसंयुक्तादि हलादेश प्रकरणम्।

बी० योज इति। पद के आदि संयुक्त यकार के स्थान में ज आदेश होता है। यम—यशस् (१, १, १७) वापुंस्त्व २८ स्—लुप् १, ४, ३६ श=स प्र० सू० य=ज ३, १, १३ स्वा०=जमो जसो। बहुलाधिकारात् संज (=य) मो संजो (=यो) गो। क्वचित् अन्यदेव—आर्ष य—लुप्= यथाजातं=२, १, ७ था=हा २, २, १, ३ त=य= अहाजायं। १, २, ३६, २, ३, ६८, ७६ अहक्खायं (= अहक्खायं)। २८। युष्मदीयः=युष्मद्—छ १, १, २८ द् लुप्, यु=तु २, ३, ५३ ष्म=म्ह, ४, ५, छ=केर ३, १, १३ स्वा०=तुम्हकेरो। अथवाची=युष्मद्—स्मत्प्र- करणं=२८ यु=जुम्हदायरणं (=प्र० २, ३, ६६ क— २, २, १, ३)। यष्टि—सु=य=ल २, ३, २७, ७६ ष्टि=ट्ठि ३, १, २५ स्वा० लट्ठी। णिडालं—१, २, १०, ११ टी० द्र०। लाङ्ग, ङ्गूल—सु=१, २, ३६ ला=ल=णङ्ग, ङ्गूलं। ला, लोहल—सु=ल=ण= णाहलो, णोहलो। विह्वल—सु २, ३, ४८, ७६ ह्व=ब्भ १, ४, ३३ वि=भि, स्वा०=भिब्भलो, पक्षे—विब्भलो— ह्व=भ—अभाव में २, ३, ६६ व्—लुप्=विहलो। षष्ठः—सुधा शावः शमी—सप्तपर्ण—सु=प्र० ३५ सू० आदि=छ, २, ३, ६७, ७५ ष्ठ=ट्ठ, २, १, ७, धा= हा ४१ प=३, १, ११, १३ स्वा०=छट्ठो=छुहा छावो छमी। छत्तिवण्णो १, २, १२ द्र.। शिरा—सु ३४ शि= की वै. छि, पक्षे १, ४, ३६ सि=छिरा सिरा। आदेः की निवृत्ति हुई।

॥ अथ संयुक्ता घनादिहलादेश ॥

(७१) सर्वत्रशषोः सः । १, ४, ३६ ।

कौ० सर्वत्र=आदावनादावना दौवा वर्तमानयोः शषोः स्थाने सः स्यात् । श । सद्दोकुसो । ष । सण्डो निहसो (=निकषो) शेषः सेसो विसेसो । इत्यसंयुक्ताद्यनादि हलादेश प्रकरणम् ।

बी० सर्वेति । सर्वत्र=आदि अथवा अनादि में स्थित=श—ष को स होता है । शब्द—षण्ड—निकष—शेष—विशेष—सु प्र० सू० श=ष=स २, १, ६ क=ह, २, ३, ६९, ७५ ह=द ३, १, १३ स्वा०=सद्दो सण्डो निहसो सेसो विसेसो ।

॥ अथासंयुक्तानादिहलादेश प्रकरणम् ॥

(७२) अचोऽकैरायावतः । २, १, १ ।

कौ० अधिकारोऽयं 'यावदि (२, २, १०) स्यादि सूत्र यावत् हलाऽस्ते रितिवर्तते एव । तस्मादितः परं वक्ष्यमानां कार्यं प्रायाकानं परस्यास्यं संयुक्तानादेर्हलः स्थाने स्यात् । इतः परमलोपः प्रायोर्त्ति-मलुवपवादाः स्युरिति ।

बी० अच इति । २, २, १० सूत्र तक अचोऽके: अधिकार है, अतः अग्रिम कार्य प्रायः असंयुक्त—अनादि हल् के स्थान में होगा ।

॥ अथ कवर्गादेशः ॥

(७३) कोगो मदकलमरकते । २, १, २ ।

कौ० अचः परयोरनयोरनादेरस्के: कस्य गः स्यात् । मयगलो । मरगयं । लुवपवादः । वा स्यानकवास्यादौ । २, १, ३ । ठाणगवासी । तित्थगरो । लोगस्सुज्जोअगरा इत्यादि । पक्षे यथाप्राप्तं लुवादि । ठाणयवासीत्यादि । भह्रो शीकरे । ४ । सीभ-हरो । सीअरो । मच्चन्द्रिकायाम् । ५ । चन्द्रिमा । हश्चिकुर निकषस्फटिके । १६ । चिहुरो निहसो फलिहो ।

बी० क इति । अच् से पर अनादि—असंयुक्त क के स्थान में ग होता है । मदकल—मरकत—सु=प्र० सू० क=ग २, २, १. ३ द=त=य ३, १, १३, २६ स्वा०=मयगलो, मरगयं । स्थानकवासिन्—तीर्थकर सु=१, १, २८ मृ—लुप् १, १, ३१ ती=ति प्र० सू० क=वैं० ग २, १, ३२, न=ण ४, ३, ३६ स्था=ठा ६६. ७६ र्थ=त्थ ३, १, २५. १३ स्वा०=ठाण गवासी, तित्थगरो । लोकस्योद्योतकर जस्=प्र० ३ सू० क=वैं० ग १, २, ३६ स्यो=स्सु ३, ३, ९१. ६८. ७५ द्यो=ज्जो स्यु=स्सु २, २, १, व्—लुप् १, १, २६ असधि ३, १, ४ जस्=लुप् १, १, १ २, पूर्वदीर्घ=लोगस्सुज्जोअगरा । पक्षे २, २, १, ३ क=य=ठाणयवासीत्यादि । शीकर—सु=१, ४, ३६ शी=प्र० ४ सू० क=भ—ह=सीभरो सीहरो । २, २, १ क=लुप्=सीअरो । चन्द्रिका=का=मा २, ३, ६६ र—लुप् चन्द्रिमा । चिकुर निकष स्फटिक—सु—छ क=ह १, ४, ३६ ष=स २, ३, ६७ स्फ=फ २, १, १४ टि=लि ३, १, १३ सु=ओड्=चिहुरो निहसो फलिहो । ६ ।

(७४) खघथधभाम । २, १, ७ ।

कौ० असंयुक्तानादीनामचः परेषां खादीनां स्थाने प्रायो हः स्यात् । साहा मेहो रेहो । महू, सुहं । अस्केरित्येव । मुख्यः=मुक्खो । अकेरित्येव । गज्जन्ते खे मेहा । प्रायइत्येव । सरिसवखला । पलयघणो, जिणधम्मो पणट्ठभयो । ७ । घोवा पृथकि । ८ । भागिनी पुन्नागे गो मच् । ९ । भामिणी पुन्नामाइं । लश्छागे । । १० । छालो । वः सुभग दुर्भगयोरुत्वे । ११ । सूहवो दूहवो । उत्वे किम् । सुहयो दुहयो । **इति कवर्गादेशः ।**

बी० खवेति । अच् से पर असंयुक्त अनादि खघथधभ के स्थान में प्रायः ह् आदेश होता है । शाखा, मेघ, रथ, मधु, शुभ—सु=१, ४, ३६ श=स प्र० सू० ख, घ—थ ध भ=ह ३, १, ११. १३. २६ स्वा०=साहा । आदि । मुख्य—सु=२, २, ६९. ७६ ख्य=क्ख=मुक्खो, खे यहाँ संयुक्तादि में नहीं प्रायः होता है अतः प्रलयघन—सर्षपखल, जिनधर्म प्रनष्टभय मे नहीं होता है २, ३, ६६ प्र० प ७५ र्म=म्म २८. ७६. ष्ट=ट्ठ ८५ र्ष=रिष १, ४, ३६ ष=स २, १, ३२, ४१ प=व ३२ न=ण=स्वा०=सरिसव खलो इत्यादि । ७ । पृथक—पिध १, ३, ३७ इ० । भगिनी—६ सू० ग=म २, ३, ३२ न=ण भामिणी । पुन्नाग—जस्=ग=म ३, १, २७

जप् = इं = जुआमाइं । छाग—सु = ग = ल, स्वा० = छालो (ली = गी) सुहओ दूहवो १, ३, १४-१५-१६ द्र० ।

॥ अथ चवर्गादेशः ॥

(७५) वासल्लौखचित पिसाचयोश्चः । २, १, १२ ।

कौ० क्रमादयनयोश्चस्य सल्लौवा स्तः । खचिअं खइओ पिसल्लो पिसाओ ।

दी० वेति । खचित तथा पिशाच में चकार को क्रम से स तथा ल्ल आदेश होता है । खचित—पिशाच—सु = १२—चि = सि, च = ल्ल स्वा० = खसिओ (= त २, २, १, १, १, २६) १, ८, ३६ शा = शा—रि १, २, ३९ सा = स = पिसल्लो । पक्षे खइओ पिसाओ ।

॥ अथ टवर्गादेशः ॥

(७६) कैटभ शकट सटा सुटोर्ढच् । २, १, १३ ।

कौ० अचोऽस्केरेकेरेषु टोः टवर्गस्य ल्लो नित्यं स्यात् । केढवो । सयढो । सढा । स्फटिकाङ्कोठयोर्ल्लंल्लौ । १४ । फलिहो । अङ्कोल्लो । लावा पाटि चपेटा वेणु-वडिशादौ । १५ । फालेइ, फाडेइ । चविला चविडा वेलू वेणू । वलिसो वडिसो आमेलो आवेडो पिठरेहो-रश्चडः । २, १, १६ । पिहडो पिढरो । २, १, १६ ।

दी० कैटभेति । कैटभ शकट तथा सटा में असंयुक्तानादि ट को ढ होता है । कैटभ—सु = १, ३, ४६ कै = के प्र० १३ ट = ढ २, १, ४० भ = व, स्वा० = केढवो । शकट—सटा—सु = ट = ढ, श = स क = य, स्वा० = सयढो सढा । फलिहो ३, १, ६, द्र० । अङ्कोठ—सु = ठ = ल्ल, स्वा० = अङ्कोल्लो । पाटयति = फालेइ—१, ४, २३, २५ द्र० । चपेटा = चविला, डा १, ३, ४७ द्र० । वेणु—सु = णु = लु = ३, १, २५ स्वा० = वेलू । पक्षे—वेणू । वडिश—सु—डि = वा—ल, स्वा० = वलिसो (= श —) वडिसो । आमेलो १, ३, ८ द्र० । पिठर—सु = १६, ठ = ह, र = ड स्वा० = पिहडो । १७ ठ = ढ = पिढरो । १, ३, १६ ।

(७७) टठडां डढलाश्चित् । २, १, १७ ।

कौ० अचः परेषामसंयुक्तानादीनां टठडां स्थाने क्रमेण डढलाः स्युश्चित्त्वान्न विकल्पः । घटः = घडो । मठः = मढो । गरुडो = गरुलो । अचः परस्यैव । घण्टा । वैकुण्ठो कुण्डं = कोंडं । अस्केरित्येव । खट्वा = खट्टा । तिष्ठति = चिट्ठइ । खड्ग = खग्गो । अकेरेव । टक्को । ठाइ । डिम्भो । क्वचिन्न अटइ । ३१ ।

। इति टवर्गादेशः ।

दी० टठडामिति । अच् से पर असंयुक्तानादि ट—ठ—ड—को क्रम से ड—ढ—ल होते हैं । उदाहरण स्पष्ट हैं ।

॥ अथ तवर्गादेशः ॥

(७८) प्रत्यादौ डस्तोरप्रतिज्ञादावित्वे तु वेतसे । २, १, १८ ।

कौ० प्रत्यादिष्वचोऽस्केरके स्तवर्गस्य डः स्यान्नतु प्रतिज्ञादौ । प्रतिहारः = पडिहारो । प्रभृति = पहुडि । प्रतिज्ञादौ तु न । १९ । पइण्णा पइट्ठेत्यादि । इत्वेतु वेतसे—वेडिसो । अनित्वे—वेअसो । गर्भितेणः । १९ । गब्भिणो । वाऽतिमुक्तके । २० । अणिउंतयं अइमुंतयं । रुदिते सदेर्ण्णच् । २१ । रुण्णं । २, १, २१ ।

दी० प्रत्येति । प्रत्यादि में अच् से पर अनादि असंयुक्त तवर्ग के स्थान में ड होता है । प्रतिज्ञा में नहीं । वेतस में इत्व होने पर होता है । प्रतिहार—सु—प्रभृति—२, ३, ६९ प्र = प, प्र० सू० ति = डि स्वा० = पडिहारो । १, ३, ३३, २, १, ७ भृ = हु प्र० सू० ति = डि = पहुडि ॥ प्रतिज्ञा प्रतिष्ठा—सु = प्र = प, २, २, १, १, २६ ति = इ २, ३, २८, ७५ ष्ठा = ट्ठा ३६, ७४ ज्ञा = ण्णा ३, १, ११ सु = लुप् = पइण्णा पइट्ठा । इत्यादि । वेडिसो १, २, ११ द्र० । गर्भित—सु = त = ण २, ३, ६९, ७६ र्भि = ब्भि, स्वा० = गब्भिणो । अतिमुक्तक—सु = ति = वा—ण २, २, ५ मु = वा—उं २, ३, ६७ क्त = त, २, २, १, ३ क = य ३, १, २६ स्वा० = अणिउंतयं । णत्वाभावे—अइमुत्तयं । २० । रुदित—सु = दित = ण्ण—स्वा० = रुण्णं । २१ ।

(७९) रःसप्तत्याद्यावतरौकदल्याम् । २, १, २२ ।

**कौ० स्पष्टम् । सत्तरी, सत्तरह तेरह गग्गरं । करली । तरौतु कयली केली । २२ । प्रदीपिदोहदातसीशात-वाहनेलः । । २३ । पलीवेइ । दोहलो । अलसी । सालाहणो । वा पलितनितम्बकदम्बे । २४ । पलिअं पलिअं । णि (नि) लम्बो णि, नियम्बो । कलम्बो कयम्बो । २४ । ले पीतेयः । पीव, अलं पीअं । भरत-वसतौहः । २६ । भरहो भरयो । वसही वसई । ककुद

कातरवितस्तिमातुलिङ्गे चित् ।२७। कउहं, काहलो, विहत्थी, माहुलिङ्गं । २७ । ढो निषेधप्रथममेथिशिथिर शिथिले । २८ । णि, निसढो पढमो मेढी सिढिलो । २८ । वौषध पृथ्वीनिशीथे । २६ । ओसढं ओसहं । पुढवी पुहवी । णि, निसीढो णि, निसीहो । ।२६। कदनवैदूर्ये डः ।३०। कडणं । कयणं । वेडुज्जं वेरुलिअं । ३० । दो सप्तकदर्थिते । ३१ । कवट्टियो ।२, १, ३१ ।

दी० रः सप्तेति । सप्ततयादि तथा जरवाची कदली शब्दों में तवर्ग को र होता है । सप्तति सु सप्तदश = गद्गद—सु = कदली—सु = प्र० सू० ति = द = र २, ३, ६७, ७५ प्त = त, द्ग = ग्ग २, १, ५१ श = ह् ३, १, २५, ३६ स्वा० = सत्तरी सत्तरह गग्गरं करली । केली, तेरह १, ४, २, ४ द्र० । प्रदीप् = णि—ति = २, ३, ६६ प = प० प्र० सू० दी = ली ३, ३, १, ति = इ ११ णि = अ २१ ए = २, १, ४१ पे = वे = पेवीवेइ । शातवाहन—सु = त = ल १, ४, ३६ शा = सा २, १, ३२ न = ण २, २, १ वा = आ १, १, २२ संधि = स्वा० सालाहणो । प्रायोऽलुपि-सालवाहणो । पलित-कदम्ब-नितम्ब-सु = त = द २४ ल, पक्षे २, २, १, ३ य, स्वा० पलियं णि, (= नि १, ४, २३) लम्बो णियम्बो । कल, यम्बो । पलिलं २, ४, २३ टी० २४ द्र० । भरत-वसति—सु = २६ त = ह पक्षे २, २, १, ३, त = य ति = इ स्वा० = भरहो, यो । वसही, ई । ककुद = कातर—वितस्ति—मातुलिङ्ग—सु = २७ द = त = ह् २, २, १, १, २६ कु = उ = स्वा० = कउहं । २, १, ४७ र = ल = काहलो । २, ३, ४२, ७६ स्त = त्थ, स्वा० = विहत्थी । माहुलिङ्गं । निषेध—प्रथम—मेथि—शिथिर = शिथिल—सु २८ ध = थ = ढ, स्वा० कार्य १, ४, २३, ३६ नि = सा० णि, ष = श = स २, १, ४७ र = ल = णि, निसढो मेढी—सिढिलो । पढमो १, २, १६ द्र. । औषध—पृथिवी—निशीथ—सु = २६ ध = थ = वा—ढ २, १, ७ ह् १, ३, ३४ औ = ओ ४, २३ नि = णि ३६ ष—श = ह् स्वा० = ओसढं, हं । णि, निसीढो, हो । पुढवी—१, २, ४२ द्र. । कदन—वैदूर्य—सु = ३० द = ड २, १, ३२ न = ण १, ३, ४६ वै = वे २, ३, २१, ७५ र्य = ज्ज, स्वा० = कडणं वेडुज्जं । पक्षे २, २, १, ३ द = य = कयणं । २, २, २४ वेरुलिअं । कदर्थित—सु = ३१ द = व २, ३, २६, ७५ र्थि = ट्टि २, २, १, ३ त = य, स्वा० = व कट्टियो ॥ २, १, ३१ ॥

(८०) नरय णः । २, १, ३२ ।

कौ० अचोऽस्केरकेर्नस्य णत्वं स्यात् । वअनं वदनं वा = वयणं । (= व = द २, २, १, ३)

। इति तवर्गादेशः ।

॥ अथ पवर्गादेशः ॥

(८१) पोः पापर्द्धौ रः । २, १, ३३ ।

कौ० पोः पवर्गस्य रः स्यात् । पारद्धी । यभो कवचे । । ३४ । कमन्धो कमन्धो । कवन्धो इति (त्रि० व्या० १, ३, ६२) ॥ शवरे मच् : ३५ । समरो । वा नीपापीडे । ३६ । नोमो, वो । आमेलो, आवेडो ।

दी० पोरिति । पापर्द्धि से अच् से पर असंयुक्तानादि पवर्ग को रेफ होता है । पापर्द्धि—सु = प्र० सू० प = र —२, १, २५ पारद्धी । कबन्ध—सु = ३४ व = म—य, त्रि० व्या. वें—स्वा० = क य, म, वें—न्धो । शवर—सु—३५ व = म, १, ४, ३६ श = स, स्वा० = समरो । नीप—सु = ३६ प = म, पक्षे २, १, ४१ व १, ४, २३ (= नी = वा = णी = णीमो वो । आमेलो १, ३, ८ द. ।)

(८२) फो भहौ । २, १, ३७ ।

कौ० अचोऽस्केरकेः फस्य त बहुलं भहौ ना स्तः । क्वचिद्भः । रेफः = रेभः । क्वचित्तु हः मुत्ताहलं । क्वचिद्द्वयम् । मभलं महलं । क्वचिन्न । कसरणफणी । अचः परस्यैव । गुम्फइ । अस्केरे वा । पुप्फं । अकेरेव । फणी । ३७ । विषमभ्रमरयोर्ढसौ । ३८ । विसढो विसमो । भसलो भमरो । मोऽभिमन्यौव: । ३६ । अहिवन्नू अहिमन्नू ॥ कैटभे चित् । ४० । केढवो ।

दी० फाइति । अच् से पर असंयुक्तानादि फ के स्थान में भ—ह आदेश बहुल प्रकार से होता है । रेफ—सि (= शि) फा—सु—भ—स्वा० = रेभो सिभा । मुक्ताफलं (= सु ३, १, १, ४२) फ—भ ह् २, २, १, ३ का = या ३, १, २५, २६ स्वा० = सभरी, सहरी । सेभालिया, सेहालिया । सभलं सहलं । क्वचिन्न । कृष्णफणिन्—१, १, २८ न्—लुप् २, ३, ११ ष्ण = पिण १, ४, ३६ पि = सि—स्वा० = कसणफणी ।

अभिमन्यु—सु=३६ म=व २, १, ७ भि=हि २, ३, ६८, ७५. न्यु=न्नु=३, १, २५ स्वा०=अहिमन्नू पक्षे अहिमन्नू। विषम—म(=अ २, ३, ६८) मर—सु ३८ क्रम से म=ढ=स—वा १, ४, ३६ ष—स—३, १, १३ सु—ओड्=विसढो, मो। भसलो (=र २, १, ४७)। (=भमरो) केढवो २, १, ७ टी. १३ द्र० १ २, १, ४०॥

(८३) प्रायः पवयोः । २, १, ४१ ।

कौ० अचोऽसंयुक्तानधोः पवयो वंःस्यात् । कविलं । सव (—ब) लो । अचः परस्यैव । कंपइ । स्केनं । अप्पमत्तो । केनं । पढइ । प्रायइत्युक्तं नहि । कपि= कई । रिपुः=रिऊ ।

॥ इति पवर्गादेशः ॥

टी० प्राय इति । अच् से असंयुक्त—अनादि—प त पाव के स्थान मे व होता है। कपिल—शवल—सु=प्र० सू० प=व=व १, ४, ३६ श=स, स्वा०=कविलं सवलो। कंप—ते—३, २, १ ते=इ=कंपइ यहाँ अच् मे पर नहीं है। अप्र० मत्त—सु २, ३, ६६, ७५ प्र=प्प= स्वा०—अप्पमत्तो में संयुक्त प्प को नहीं होता। पठ्—ति=२, १, १७ ठ=ढ=३, ४, ३० मध्ये अक्=पढइ में आदि प को नहीं होता है। प्रायः कथन से कपि-कवि-रिपु—आदि में २, २, १ प=लुप् १, १, २६ असंधि--स्वा०=कईरिऊ।

॥ पवर्ग का आदेश समाप्त।

॥ अथ यणादेश ॥

(८४) वा कृद्यतीयानीयेयणो ज्जः खेरुत्तरीये

। २, १, ४२ ।

कौ०कृद्यतीयानीषु प्रत्ययेषु यणः स्थाने ज्जादेशो वा खेरुत्तरीये। कृत्ये। पेज्जा। पेआ। द्वितीयः= बिइज्जो बीओ। करणीयं=करणिज्जं। करणीअं। उत्तरिज्ज उत्तरिअं। छायाया मधुतो हः। ४३। छाही छाया। घुतोतु मुहच्छाया। कतिपये हद्-ववौ। ४४। कइवाहं कइअवं। वेरभेर किरौडः ।४५। वेडो (भीरुः-शरभः करभो मण्डूको दुन्दि-भि वा) भेरो भेडो। किडी=(किरि) खराहो सूषि-कोगर्तोभिव्यर्वो वा। केः करवीरे। ४६। कणवीरो।

टी० वेति। कृद्—य, तीय तथा अनीय में यण् के स्थान में ज्ज आदेश होता है। उत्तरीय में द्वितीय यण को होता है। पेया—द्वितीय—करणीय—उत्तरीय—सु=प्र० सू० य=ज्ज ३, १, ११, १२, २६ स्वा=१, २, ३६ ती, णी, री ह्रस्व २, ३, ६७ द्वि=वि २, २, १ ति इ १, १, २६ असंधि पेज्जा, बिइज्जो करणिज्ज उत्तरिज्जं। वा संधि १, १, २२ क्वचिदेकपदऽपि=वि—इय=बीय= य—लुप् बीओ २, २, १, य—लुप् १, १, २६ असंधि= करणीअं उत्तरीअं पेआ। ४२। छाया—सु=४३ या= हा ३, १, ३५ हा=वा—ही=३, १, ११ सु—लुप्= छाही छाया। घुतो—मुखच्छाया २, १, ७ ख=मुहच्छाया में या=हा नहीं होता है। ४३। कतिपय—सु=४४ य=हद् १, १, १२ दीर्घ=२, १, ४१ प=व २, २, १ ति—लुप्=असंधि कइवाहं। यं=वं. यं=लुप् असंधि= कइअवं। ४४। वेर—भेर—किरि—सु=४५ र—ड, स्वा०=वेडो भडो किडो। ४५। करवीरः ४६ कर= क ण. स्वा०=कणवीरो। ४६।

(८५) लो वरुणादौ । २, १, ४७ ।

कौ० अचोऽस्केरकेर्यणो लः स्यात्। वलुणो कलुणो हलिद्दीत्यादि। वा वठर जठर निष्ठुरे। वढरो, लो जढलरं। नि, णुट्ठुलो, रो। ४८। भ्रमर चर-णयोः सत्वपादयोश्चित्। ४९। भसलो। चलणो। सत्वपादयोः किम्। स्थूलेरः। ५०। थोरं। थूल-भद्दो इतितु वरुणादित्वे स्थूरस्य स्यात्। मो वा नीवीस्वप्ने। ५१। नीमी नीवी। सिमिणो सिविणो। २, १, ५१। **। इति यणादेशः।**

टी० लोइति। वरुणादि में असंयुक्तामादि यण् को ल होता है। करुण—वरुण—हरिद्रा—सु—प्र० सू० र—ल= २, ३, ६६, ७५ द्रा=द्दा ३, १, ३५ द्दा=वा=द्दी= स्वा०=कलुणो वलुणो हलिद्दी, द्दा। ४७। वठर—जठर—नि—ष्ठु—सु=४८ र—वा—ल २, १, १७ ठ=ढ— स्वा=वढलोरो। जढलं, रं। २, ३, ६७, ७६ ष्ठु= ट्ठु=१, ४, २३ नि—वा=णि=णि, णिट्ठुलो, रो। ४८। भसलो। २, १, ३८ द्र.। चरण—सु—र= ल= चलणो। अन्यत्र चरणकरणं। अलत्वे भमरो। ४९। स्थूल—थोरं १, ३, २६ द्र.। ५०। नीवी—सु—५१

वी=वा—मी=मीमी वी। सिम्मिणी १, २, १० द्र०। ५१। ॥ यणादेश समाप्त ॥

॥ अथ शषसह्रादेशः ॥

(८६) दशादिवसपाषाण प्रत्यूषे शरोहः। २, १, ५२।

कौ० एष्वचोऽस्क्यकीनां शषसांवाहः स्यात्। दह, दस वाजइधम्मो। दिवहो, सो। पाहाणो पासाणो। पच्चूहो, सो। ५२। स्नुषायां ण्हः। ५३। सुण्हा सुसा। ५३। चन्द्राच्चह्नोधः। २, १, ५४। संघारो संहारो। सिंघो सीहो। चादचः। दाहो दोषो। २, १, ५४॥ ॥ इति शलादेशः ॥

॥ अथासंयुक्तानादि व्यंजन लुप् प्रकरणम् ॥

(८७) प्रायोलुप् कचतपगजदयवाम्। २, २, १।

कौ० अचः परेषामवस्क्यकीनां कादीनां प्रायो लुप् स्यात्। क तित्थयरो। च। सई। त। समिद्धी। पारिऊ। ग। मयङ्को। ज। गजः। गयो। द। गदा=गया। दयालू। व। वडवानलः=वलयाणलो। अचः इत्येव। संकरो कंचणं अंतरं कंपो संगमो धणंजयो संवदं। कैर्न। कुलं जलणी तवो परो गयो जलो दया वेरा। स्केर्न। अर्क=अक्को। चर्चा=चच्चा। धूर्तः धुत्तो। विप्र=विप्पो। सर्गः=सग्गो। अर्जुनः=अज्जुणो। उद्दमो। सव्वं। प्राय इत्येव। सुकुसुमं सचावं सुतारं सपावं लोगस्सुज्जोअगरा (विभाषयके)॥ नावर्णात्परः। २। शवहो सावो। आलिकम्। विऊलं। २। यश्रवणोऽवर्णः। ३। तित्थयरो जलयरो इत्यादि। अवर्णादित्येव। देअरो। क्वचित्स्यात्। पिवति=पियइ॥

टी० प्राय इति। अच् से पर असंयुक्त=अनादि—क च त प ग ज द य व को प्राय लुप् होता है। तित्थयरो इत्यादि। १। अवर्ण से पर प को लुप् नहीं होता है। सवहो इत्यादि। अवर्ण से पर शेष अवर्ण को यश्रवण होता है। तित्थयरो इत्यादि। शेष उदाहरण स्पष्ट हैं।

(८८) मोजित्कामुक चामुण्डा यमुनासु। २, २, ४।

कौ० एष्वचोऽस्केरकेर्मोलुप् जित्स्यात्। जित्वाच्चोकारः सानुनासिकः। काउँओ चाउँण्डा जउँणा। अतिमुक्तके वा। ५। अणिउँतयं अइमुंतयं। ५।

॥ इति असंयुक्तानादि व्यंजनलुप् प्रकरणम् ॥

टी० मोजिदिति। कामुकादि में म को जिदलुप् होता है। जित्वाद उकार सानुनासिक होता है। अतिमुक्तक में विकल्प से होता है। अणिअतयं २, १, २० द्र.। शेष स्पष्ट है।

॥ अथ साज्झलुप्प प्रकरणम् ॥

(८९) साचोर्गकोरागत प्राकार व्याकरणे। । २, २, ६।

कौ० वालुबित्यनुवर्तते। जिन्तु साचो हलोलुविधानात्। एष्वचः पर्योरचासहितयोर्गकोर्वालुप्। आयो आगयो। पारो पायारो वारणं वायरणं। जोदनुजभाजनराजकुले। ७। दणुवहो दणुअवहो। भायणं भाणं। राउलं रायउलं। ७। यो हृदय किसलय कालायसे। ८। हियं हिययं। किसलयं किसलं। कालासं कालायसं। ८। दो दुर्गा देवी पादपीठ पादपतनो दुम्बरे। ६। दुग्गावी दुग्गाएवी। पावीढं पायवीढं। पावडणं पायवडणं उम्बरो उउम्बरो। ६। यावदावर्तमानानट जीवित तावद्देव कुल प्रावारके—वः। १०। कस्सवेवमेवे। जाजाव। अत्तमाणो आवत्तमाणो। अडो अवडो। जीअं जीविअं। ताताव। देउलं देवउलं। पारयो पावारयो। एमेव एवमेव। केरित्युक्तेनान्त्यस्य। २, २, १०॥ अचोऽकेरस्केरिति निवृत्तम्।

। इति लुप् प्रकरणम्।

टी० साचोगिति। वालुप् की अनुवृत्ति है। परन्तु अच् सहित हल् विधान सामर्थ्य से जत् की नहो होती है। आगतादि में अच् पर असयुक्तादिग—तथा क को विकल्प से लुप होता है। आगत—प्रकार—व्याकरण—सु—प्र० सु० ग—क=लुप्—२, २, १, ३ त=क=य ३, १, १३, २६ स्वा०=आया आगयो पारो पायारो २, ३, ६८ प्रा—व्या—पा—का=वारणं वायरणं। ६। दनुअवध—भाजन—राजकुल—सु=मे ७ सू—ज=लुप् २, १, ७ ध=ह् न=ण स्वा०=दणुवहो भाणं राउलं।

पक्षे २, २, १, लुप् ३, म दणुवहो भायणं रायउलं । ७ । हृदय—किसलय—कालायस—सु=८ सू० य=लुप् १, ३, २६ हृ=हि=स्वा०=हिअं किसलं कालासं । पक्ष हिययं किसलयं कालायसं । ८ । दुर्गा—देवी पादपीठ पादपतन—उदुम्बर—सु=६ दे=द=लुप् २, ३, ६६, ७५ र्गा=ग्गा=दुग्गावी । २, १, १७, ४१ प=व ठ=ढ पावीढं । २, १, १८ त=ड=पावडण । उम्बरो । पक्षे २, २, १, दलुप् असंधि=दुग्गाएवी उअम्बरो । २, २, १, ३६=व—पायवीढं पायवडणं । ९ । यावत्—आवर्तमान—अवट—जीवित—तावत्—देवकुल—प्रावारक—सु=१० सू० व=लुप्—या=१, २८ त्—लुप् १, ४, २८ या=जा १, २, ३६ ह्रस्व २, ३, ६६, ७६ र्त=त्तः प्रा=प, २, २, १, त=ड कु=उ ३, क=य=जावता अत्तमाणो डडो (=ट २, १, १७) जीओ देउलं पारयो । पक्ष—जाव—ताव आवत्तमाणो देवउलं पावारयो । एवमेव—आदि व=लुप् एमेवा पक्ष एवमेव । २, २, १० ।

॥ इति सामसलुप प्रकरणम् ।

॥ अथ निपात प्रकरणम् ॥

(९०) धृति दुहितृ भगिनी वनितानां दिहि धुआ बहिणी विलयाः । २, २, १४ ।

कौ० धृति प्रभृतीनां स्थाने दिह्यादयो वा स्युः । दिही धिई । धुआ दुहिआ । बहिणी भइणी । विलया वणिआ । घरोगृहस्यापतौ । १५ । देवघरं । अपतौ-विति किम् । गहवई । बृहस्पतौ बृहोभयः । २, २, ११ ।

बौ० धृतीति । धृति को दिही, दुहितृ को धुआ भगिनी को बहिणी, वनिता को विलया आदेश होता है । देव—गृह सु=गृह घरं ३, १, २ स्वा०=का देवघरं । अपतौ क्यों ? गृहपति—सु में नहीं होता है—२, १, ४२ पति=प=ब २, २, १ ति=इ ३, १, २६ स्वा०=गृहवई १, ३, २७ गृ=ग=गहवई । बृहस्पति- सु=प्र० सू० बृह=भयसेष २, ३, ६७, ७५ स्प=स्स् ति=ई पूर्ववत्=भयस्सई ।

(९१) मातृपितुः स्वसुश्छसिअे । २, २, २० ।

कौ० आभ्यां परस्य स्वसृशब्दस्यैतावादेशौस्तः । माउच्छा माउसिआ पिउच्छा, सिआ ।

बौ० मात्विति । मातृ—पितृ—स्वसृ=प्र० सू० च्छा—सिया=१, ३, ३३ तृ=ऋ=उ २, २, १ त् लुप् १, १, २६ असन्धि=माउच्छा माउसिआ पिउच्छा पिउसिआ ।

(९२) दाढा दंष्ट्रायाः । २, २, २१ ॥

कौ० दंष्ट्रायाः दाढा स्यात् । दंष्ट्रा=दाढा । वा वृक्ष पूर्वयो रुक्ख पुरिमौ । २, २, २३ । अनयोरेतौ क्रमाद् वास्तः । वृ=रुक्खो वच्छो । पूर्वं=पुरिमो पुव्वो । क्षिप्तवैदूर्ययोश्छूढ वेरुलिअे । २, २, २४ । छूढ खित्त । वेरुलिअं वेडुज्जं ।

बौ० वेति । वृक्ष को रुक्ख पूर्व को पुरिम आदेश विकल्प से होता है । वृक्ष—सु=१, ३, २७ वृ=व=पूर्व—सु प्र० सू० वृक्ष=रुक्ख पूर्व=पुरिम, पक्षे १, ३, ३१ पू=पु=२, ३६, ७६ क्ष=क्ख ।

॥ अथ संयुक्त हलादेशः ॥

(९३) स्केः । २, ३, १ ।

कौ० अधिकारोऽयमायादय परिसमाप्तेः । तस्मादितः परं करिष्यमाणं कार्यं स्केः=संयुक्तस्य हलः संबंधि-स्यात् ।

(९४) वादष्टरुग्णमृदुत्वमुक्तशक्तकः । २, ३, २ ।

कौ० एषु स्केः को वा स्यात् । डक्को, डट्ठो । लुक्को, लुग्गो । माउक्कं, माउत्तणं । मुक्को मुत्तो । सक्को सत्तो । २ । 'खस्तीक्ष्णशुष्के-स्कन्देतुकेः । ३ । तिक्खं तिण्हं । सुक्खं सुक्कं । खन्दो कन्दो । ३ । स्फेटिकादौ । ७ । खोडओ । खेडयो । ७ । संज्ञायां-ष्कस्कोः । ८ । णि, निक्खं । खन्धो । संज्ञायां किम् । णिक्कम्पो णमुक्कारो । ८ । क्षस्यक्वापिछजावपि लक्खणं । झीणं झिज्जइ । ९ । वारक्तशुल्कयोगङ्गौ । १० । रग्गो, त्तो । सुंगं, क्क । १० । शृङ्खले । ११ । ङ्कुच् । ११ । सङ्कलं । २, ३, ११ ।

बौ० वादष्टेति । दष्टादि में संयुक्त को विकल्प से क होता है । दष्ट—रुग्ण—मृदुत्व—मुक्त—शक्त—सु=प्र० सू० ष्ट—ग्ण—त्व—क्त=क=२, ३, ७५ क्क १, ४, २० द=डा—ड स्वा० डक्को । २, १, ४७ रु=लु=लुक्को । १, ३, २८ मृ=मा २, २, १, १, १, २६ दु=पु असंधि=माउक्कं । मुक्को । १, ४, ३६ सक्को । पक्षे २, ३, २८, ७५ ष्ट=ट्ठ, ६७, ७५

क्त=त=हस्तो मुत्तो सत्तो। ४, ४, ३५ निपातन, रुग्णो=लुग्गो। २, ४, २० त्व=वा- त्तण २, ३, ६६,७५ त=मातृत्तणं—मातुत्तं। २। तीक्ष्ण=शुष्क- -सु= १, २, २६ एसी=ति, ४, ३६ शु=सु प्र० सू० ष्ण=क्क=ख=२, ३, ७६ क्ख ३, १, २६ स्वा०=तिक्खं सुक्खं। पक्षे २, ३, ३६ क्ष्ण=ण्ह=तिण्हं। ६७, ७५ ष्क=ष्क=क्क=सुक्क। स्कन्द-सु ३, स्क=ख=३, १, १३ =खन्द। पक्षे २, ३, ६७ स्क=कन्दो। ३। स्फेटिक—क्षेटक—सु=७ स्फे=क्षे=खे २, १, १७ टि=डि २, २, १, ३ क=अ, य—स्वा०=खेडिओ, यो। ७। निष्क—स्कन्ध—सु=८ ष्क=स्क=ख= २, ३, ७६ —क्ख १,४,३६ नि=वा-णि—स्वा०=णि, निक्खो। खन्धो। ८। असंज्ञा में निष्कम्प=सु=२, ३, ६७, ७५=ष्क=क्क=णि—क्कम्पो। णमुक्कारो १, २, ३१ ८. । ८। लक्षण—सु=२, ३, ६, ७६ क्ष=क्ख=स्वा०=लक्खणं। क्वचित्=छ=झ=क्षी=खी=छी=छीणं। झीणं क्षीणं। क्षी—य—ते=झी ३, ४, ४८ य=इज्ज १, १, २७ खी—ई लुप् ते=३, ३, १=इ=झिज्जइ। रक्त—शुल्क—सु=१०=क्त=ग=२, ३, ७५ गा=रग्गो। ल्क=ङ्ग=सु=सु=सुङ्गं। पक्षे २, ३, ६६, ७५=रत्तो सुक्कं। १०। शृङ्खल—सु=११ ङ्ख=ङ्ख स्वा० १, ३, २७, ४, ३६ शृ=स=सङ्कलं॥ २३, ११॥

(६५) चश्चत्वरकृत्तौ। २, ३, १२।

कौ० अनयोः स्के: नित्यं च: स्यात्। चच्चरं। किच्चा। १२। त्योऽचैत्ये। १३। सत्यं=सच्चं। चैत्येतु=चइत्तं चेइयं।

बी० चइति। चत्वरकृत्ति में त्व—त्ति को नित्य च होता है। चत्वर कृति-सु=त्व=त्ति=च=२, ३, ७५ च्च-३, १, २५, ३६ स्वा०=१, ३, २६ कृ=कि=चच्चरं। किच्ची। १२। सत्य—कृत्य—भृत्य—सु=त्य=च्च=भृ=इ—स्वा०=सच्चं किच्चं भिच्चो। चैत्य में १, ३, ५३ ऐ=अइ २, ३, ६८, ७५ त्य=त्त स्वा०=चइत्तं। ८७। त्य=तिय १, ३, ४६ चै=चे २, ३, २ ति=इ १, १, २६=चेइयं। आर्षे चीवन्दणं। १३।

(६६) प्रायस्त्व थ्व द्व ध्वां च छ ज झाः। २, ३, १४।

कौ० त्वादीनां प्रायश्चादयः क्रमात्स्युः। णच्चा। पिच्छी। विज्जं। बुज्झा साध्वसं=सज्झसं। १४। क्ष्योरुत्सवोत्सुक सामर्थ्ये छः। १७। रिच्छो, च्छं। रिक्खो, खं। उच्छवो ऊसवो। उच्छुओ ऊसुओ। सामच्छं, त्थं। १६।

बी० प्राय इति। त्वादि को क्रम से चादि होता है। ज्ञात्वा १, ३, २६ ह्रस्व २, ३, ३६ ज्ञ=ण १४, ७५ त्व=च्च=णच्चा। पृथ्वी—१, ३, २६, ३३, पृ=पि—पु २, ३, ६५ थ्वी=धुवी वा पक्षे १४, ७५ च्छी २, १, ७ थु=हु=पि, पुहुवी, पिच्छी। विद्वस्—सु=१, १, १६—वा- -क्लीबत्व २८ स्—सु-(२, ३, १४, ७५ द्व=ज्ज ३, १, १३, २६ स्वा०=विज्जो विज्जं। बु (=बु २, १, ४१) ध्वा=२, ३, १४, ७६ ज्झा=बुज्झा। साध्वस —सु=१, २, ३६ ह्रस्व. ध्व=ज्झ—स्वा०=सज्झसं। १४। ऋक्ष—उत्सव—उत्सुक—सामर्थ्य—सु=२, ३, १६, ७६ क्ष=त्स=र्थ्य=च्छ १, ३, ४८ ऋ=रि, वा- -क्लीबत्व—स्वा०=रिच्छो, च्छं। सामच्छं। पक्षे २, ३, ६, ६८, ६६, ७६ क्ष=क्ख, र्थ्य=त्थ=रिक्खो, खं। सामत्थं। उच्छवो उच्छुओ (=क—लुप्—असंधि)। ऊसवो ऊसुओ १, ३, १४ द्वः।

(६७) लक्ष्म्यादौचित्। २, ३, १७।

कौ० लक्ष्म्यादौस्केनित्यं छः स्यात्। खफयोरपवादः। लच्छी। स्पृहा=छिहा। आर्षे-इक्खू खीरं सारिक्खमित्यादि। १७। क्षमाक्षणयोरिलामह्योः। १८। छमा छणो। इलामह्यो=खमा खणो।१८। ह्रस्वाद्-निश्चलेत्सप्सथ्यश्चाम्। १६। मच्छरो अच्छरा मिच्छा पच्छिमो। निच्छलेतु-णि, निच्चलो।

बी० लक्ष्मेति। लक्ष्म्यादि में नित्य छ होता है। लक्ष्मी—स्पृहा—सु=प्र०सू० क्ष्म्=स्प=छ २,३,७६ च्छ—स्वा०=लच्छी छिहा। आर्ष में इक्षु—सादृक्ष—क्षीर—२, ३, ६ क्षु—क्ष=क्ख—क्ख, क्षी=खी, १, ३, ४३ ह=रि=स्वा०=इक्खू, सारिक्खं। खीरं। १७। १८। मत्सर—मिथ्या—पश्चिम—सु=१६ छ=च्छ—स्वा० मच्छरो आदि। अच्छरा १, १, ३६ द्र.। निश्चल—

सु = १, ४, २३, २, ३, ६७, ७५, ३, १, १३ = णि, निक्खलो । १६ ।

(९८) जोऽध्यर्घाम् । २, ३, २० ।

कौ० सेज्जा । सावज्जं । अज्जो । २० । पञ्जआदध्वाभिमन्यौ । २१ । अहिमज्जू, ज्जू, वण्णू, मन्नू । २१ । झोध्वजे । २२ । झयो धयो । २२ । ध्यह्योश्चित् । २३ । झाणं । गुज्झं । सज्झसमितितु 'प्रायस्त्वध्वद्ध्वा । २, ३, १४ मित्येव सिद्धम् । इन्धौझा । २४ । समिज्झाइ ।

वी० जोऽध्येति । य—ध—र्य—को ज होता है । सेज्जा १, २, २३ द्र. । सावद्य—सार्य—सु = १, २, ३६ आ = अ—प्र० सू० ज = २, ३, ७५ ज्ज—स्वा० = सावज्जं अज्जो । २० । अभिमन्यु—सु = प्र० सू० न्यु = ज्ज—ज = ७५ ज्ज २, १, ७ भि = ह्रि ३६ म = वा—व पक्षे २, ३, ६८, ७५ न्यु = न्नु—२, १, २५ स्वा० = अहिमज्जू, वज्जू, अहिवज्जू, मज्जू, पक्षे—अहिमन्नू, मन्नू । २१ । ध्वज—सु = ध्व = ग, २, २, १, ३ ज = य = स्वा० = झयो, धयो । ध्य—ह्य को नित्य झ होता है । ध्यान = २, १, ३२ न = ण = झाणं । गुह्य = २, ३, ७५—म = ज्झ = गुज्झं । सज्झसं २, ३, १४ द्र. । सम्—इन्ध्—इ (= ति—३, ३, १) न्ध् = झा = ३, ३, ७५ ज्झा ३, ४, ३१ आ—अ = समिज्झाअइ, क्रु । २, ३, २४ ।

(९९) टोऽवार्त्ताद्यौ र्तः । २, ३, २५ ।

कौ० वार्तादिभिन्नेर्तस्य टः स्यात् । केवट्टो । वार्तादौ तु-वत्ता-कित्ती । २५ । वृत्तप्रवृत्तपत्तनमृत्तिकाकदर्थितोष्टेष्टासंदष्टे । २६ । वट्टं, पयट्टं, पट्टणं, मट्टिया, कवट्टिओ, अट्टो, इट्टा, संदट्टो । उष्टेष्टासंदष्टेषु ठापवादः ।

वी० टोऽवेति । वार्तादिभिन्न शब्दों में र्त को ट होता है । के (= कै—१, ३, ४६) वर्त—सु = प्र० सू० ७५ र्त = ट्ट ३, १, १३, सु = ओ = केवट्टो । वार्तादि में नो—वार्ता—कीर्ति—सु = १, २, ३६ ह्रस्व २, ३, ६६ र्त = त्त ३, १, ११, २५ स्वा० = वत्ता कित्ती । २५ । वृ—वृ = १, २, २७ न, म, २, ३, ७५ त्त = र्थ = ष्ट = ष्ट—ट्ट स्वा० = वट्टं । प्र (= प्रव २, २, १, ३३ ६६) वुं । पट्टणं (न) = २, १, ३२ मट्टिआ (= का) कवट्टियो २, १, ३१ द्र. । उट्टो इट्टा संदट्टो । २६ ।

(१००) ष्टस्य ठः । २, ३, २७ ।

कौ० मुट्ठी । लट्ठी । दिट्ठी । २७ । अस्थिविसंस्थलार्थेऽधने । २८ । अट्ठी । विसंठुलं । अट्ठो (ऽयोजनम्) । धने तु अत्थो । (धनम्) । २८ । वा चतुर्थस्त्यध्ने । २९ । चउट्ठो, त्थो । ठी, थीणं ।

वी० ष्टस्येति । ष्ट को ठ होता है । मुष्टि—दृष्टि—सु = प्र० सू० ष्ट = ठ = ७६ ट्ठ ३, १, २५ स्वा० = १, ३, २६ दृ = दि = दिट्ठी मुट्ठी । लट्ठी १, ४, २८ टी० ३० द्र० । अस्थि—(१, १, १८ ना पुंस्त्व) अर्थ—सु = प्र० सू० स्थि = र्थ = ७६ ट्ठ विसंस्थुल—सु = प्र० सू० स्थु = ठु ३, १, १३, २५, २६ स्वा० = अट्ठो अट्ठी विसंठुलं । धनवाची—अर्थ—सु = २, ३, ६६ र्थ = त्थ—स्वा० = अत्थो । २८ । चतुर्थ—सु—२६, ७६ र्थ = ट्ठ, अन्य १, ४, ६ द्र. । ठीणं १, २, ३८ द्र० । २, ३, २९ ।

(१०१) गर्तवितर्दिच्छर्दिसम्मर्दमर्दित कपर्दे स्वेर्डश्च् वा तु गर्दभे । २, ३, ३० ।

कौ० एषु द्वितीयस्य स्केर्नित्यं डः स्यात् । गर्तटापवादः । गड्डो । विअड्डीत्यादि । गर्दभे तु वा—गद्दहो गड्डहो । ३० । मूर्द्धार्ध-श्रद्धर्द्धौढोवा । ३१ । मुण्ढा अड्ढं सड्ढा रिड्ढो इड्ढी । पक्षे मुद्धा अद्धं सद्धा रिद्धी इद्धी । ३१ । वृद्ध वृद्धि दग्धविदग्धे चित् । ३२ । वुड्ढो वुड्ढी डड्ढो विअड्ढो । ३२ ।

वी० गर्तेति । गर्तादि में द्वितीय संयुक्त को ड होता है । गर्दभ में विकल्प से होता है । गर्त—वितर्दि—छर्दि—विच्छर्दि—सम्मर्द—मर्दित—कपर्द—सु = में द्विः संयुक्त को प्र० सू० डः ७५ ड्ड स्वा० कार्य = गड्डो । विअ (= त २, २, १, १, १, २६) ड्डी । छड्डी, विच्छड्डी, सम्मड्डो, कव (= २, १, ४१, प) ड्डी । गर्दभ—सु = माड्ड पक्षे २, ३, ६७, ७५ द्द २, १, ७ ह—स्वा० = गड्डहो गद्दहो । ३० । मूर्द्धन्—अर्ध—श्रद्धा—ऋद्धि—सु = ३१ ढ = ड्ढ—स्वा० = अड्ढं । स (= श्र २, ३, ६६, १, ४, ३६) सड्ढा । १, ३, २६, ४४ ऋ = इ—रि = इड्ढी रिड्ढी । १, १, ४६, ५०, २, ३६ मुण्ढा । पक्षे २, ३, ६६ मुद्धा । अद्धं श्रद्धा इद्धी रिद्धी । ३१ । वृद्ध—वृद्धि—दग्ध—विदग्ध—सु = ३२, ७६ = द्ध = ग्ध = ड्ढा—स्वा० = १, ३, ३३ वृ = वु = वुड्ढो वुड्ढी ।

१, ४, २० टवृद्ध=द=वा ह=डड्ढो—वड्ढो। विम (=द २, २, १ लुग्—असंधि) वुड्ढो। ३१।

(१०२) दत्तपञ्चदशपञ्चाशज्ज्ञते णः ॥ २, ३, ३४ ॥

कौ० एषु स्केनित्यं णः स्यात् दिण्णं, पण्णरह, पण्णासा। ३४। ज्ञम्नयोः। ३५। णाणं। पज्जुण्णं। ३५। पटोवृन्ते। विण्टं। ३६। ण्डः-कन्दरिकाभि-भिन्दिपाले। ३७। कण्डलिया। भिण्डिवालो। २, ३, ३७।

वी० दत्तेति। दत्तादि त्रय में संयुक्त को ण होता है। दिण्णं १, २, १० द्र०। पञ्चदश=पञ्चाशत्=प्र० सू० ञ्च=ण=७५ द्वित्व २, १, २२, ५२ दश=रह=पण्णारह। १, १, ३३ त्=आ—दीर्घ ४, ३६ शा=सा=पण्णसा। ज्ञानं—प्रद्युम्नो=प्र० सू० ज्ञ=ण २, १, ३२ नं=णं=णाणं। प (=प्र २, ३, ६६) ज्जु (=द्यु २१, ७५) म्न=३५ ७५ ण्ण—स्वा०=पज्जुण्णो। विण्टं १, ३, ३७ टी० ३६ द्र०। कण्ड (=न्द ३७) लि (=२, १, ४७ रि) २, २, १ का=आ—१, १, २६=कण्डलिआ। भिन्दिपाल—सु ३७ न्दि=ण्डि २, १, ४१ पा=वा—स्वा०=भिण्डिवालो। ३७।

(१०३) क्ष्णश्लक्ष्णस्नह्णह्नाण्ह। २, ३, ३८।

कौ० क्ष्णतिण्हं सण्हं, (स्न) पण्हो। वेण्हू (स्न) जोण्हा। वह्नि=वण्ही। पूर्वाह्णः=पुव्वण्हो। ३६। सूक्ष्मे क्ष्म क्ष्णोर्ण्हं ह्रौ। ३६। सण्हं सुण्हं सुहुमं। ३६।

वी० क्ष्णति। क्ष्णादि को ण्ह होता है। तिण्हं २, ३, २, ३, टी० द्र०। श्लक्ष्ण—प्रश्न—विष्णु—ज्योत्स्ना—पूर्वाह्ण—वह्नि—सु=प्र० सू० क्ष्णादि=ण्ह २, ३, ६८ ज्यो=जो ६६ प्र=प, श्ल=श (१, ४, ३६=स) १, २, ३६ ह्रस्व २, ३, ६६. ७५ र्व=व्व—स्वा०=सण्हं पण्हो वि. वे (१, २, ४०) ण्हू, जाण्हा, पुव्वण्हो वण्ही। ३६। सूक्ष्म—सुण्हं १, ३, १६ द्र०। २, ३, ४०।

(१०४) स्तश्चित्। २, ३, ४१।

कौ० स्तस्थो नित्यं स्यात्। हत्थो थुई। थोवास्त-वोत्साहे थेरोइस्च। ४०। थवो तवो। उत्थारो उच्छाहो। मन्युचिह्नयोर्वान्तिन्धो। ४२। मन्तू मन्तू। इन्धं चिण्हं। ४२।

वी० स्तश्चिदिति। स्त को थ नित्य होता है। स्तुति—हस्त—सु=स्वा०=प्र० सू० स्त=थ—७६ त्थ=२, २, १ ति=ई=थुई, हत्थो। स्तव—उत्साह—सु=प्र० सू० स्त=थ—ह=र—स्वा०=थवो, ७६ थ=त्थ=उत्थारो। पक्षे २, ३, ६७ स्त=त=तवो। उच्छाहो १, ३, १४ द्र०। ४०। मन्यु=चिह्न=सु=४२ न्यु=न्तु, ह्न=न्ध—स्वा०=मन्तू २, २, १ प्रायः अनादि च्=लुप्=इन्धं। पक्षे—२, ३, ३८ ह्न=ण्ह, ६८. ७५ न्य=ण=मन्तू चिण्हं। ४२।

(१०५) पो भस्मात्मनि। २, ३, ४३।

कौ० अनयोः स्केर्वापिः। भप्पो भस्सो। नान्तत्वा-त्पुंस्त्वम्। अप्पा अप्पाणो, अत्ता। ४२। कमड्मो-ऽचित्। ४४। रुप्पिणी। रुक्मी—रुम्मी (त्रि० व्या० १, ४, ४३) (हैं. रुच्मी ८, २, ५२) इत्यपि। ड्य। कुम्पलं। भीष्मष्प—ष्पांफः। ४५। भिप्फो। शष्पः=सप्फो। स्पन्दः फन्दो। ४५। स्वेर्वाश्लेष्मणि। ४६। सेफो। सिलिम्हो। ह्लो व्भः। ४७। जिह्वा=जि-ब्भा जीहा। विह्वलः=भिब्भलो विब्भलो विहलो। उर्ध्वं उड्ढं। ग्मोमः। ४८। जुग्गं तिग्गं ग्मोमच्। ४६। जम्मो (नान्तत्वात्पुंस्त्वम्)। बम्महो। ४६। स्वेर्वाम्भः कश्मीरश्लेष्मब्राह्मणब्रह्मचर्ये। ५०। कम्मारो। कम्हारो। सिलिम्भो सिलिम्हो। बम्भण बम्हणो। बम्भचरे बम्हचरें। ५०। आम्रताम्रे म्बच्। ५१। अम्बं तम्बं। अम्बिरं, तम्बिरं चेति देश्यौ।

वी० पो भस्मेति। भस्मन् तथा आत्मन् में संयुक्त को प विकल्प से होता है। भस्मन् (१, १, १७ पुंस्त्व)—आत्मन्—१, १, २८=न्=लुप् २, ३, ६ आ=अ प्र० सू०=स्म=त्म=प=७५ प्प—३, १, १३ सु=ओ=भप्पो अ ३, १, ४२, ५७ आत्मन्=अन्=आ—आण ३, १, ११, १३ सु—लुप्=ओड् अप्पो, अप्पाणो। पक्षे २, ३, ६७, ६८, ७५ भस्सो अत्ता। ४३। रुक्मिणी—२, ३, ४४, ७५ क्मि=प्पि=रुप्पिणी। रुक्मी=क्म—च्म=रुम्मी रुच्मी। ४४। कुड्मल—ड्म=प=१, १, ४६, ५० कुम्पलं कुंपलं। ४४। भीष्म—सु १, २, ३६ ह्रस्व २, ३, ४५, ७६ ष्म=प्फ—स्वा०=भिप्फो। शष्प—स्पन्द—१, ४, ३६ श=स,=सप्फो फन्दो। ४५।

श्लेष्मन्—सु १, २, २८ न्—लुप् २, ३, ४६ ष्म=फ ६६ श्ले=शे=से=सेण्हो। फत्वाभावे—५० ष्म, नद-भावे २, ३, ५३ म्ह, ८८ श्ले=शिले १, २, ३६ ह्रस्व ४, ३६ शि=सि=सिलिम्भो, म्हो। ४६। जिह्वा—१, २, ४७ द्र०। विह्वल—१, ४, २८ टी० ३३ द्र०। उर्ध्व=४७.७६ ध्म, पक्षे में ६६, ७६ द्ध=पुब्भं उद्ध। । ४७। युग्म—तीग्म—सु—१, २, ३६, ४३३ ती= ति, यु=जु २, ३, ४८, ७५ ग्म=म्म स्वा०=जुग्मं तिग्मं ६८, ७५ ग्ग=जुग्गं तिग्गं। ४८। जन्मन्—सु=१, १, १७ पुंस्त्व २८ न्=लुप् ४६, ७५ न्म= म्म—३, १, १३ सु=ओइ=जम्मो। वम्महो १, ४, २३ टी० २६ द्र०। ४६। कम्मारो १, ३, १ द्र०। श्लेष्म २, ३, ४६ द्र०। ब्राह्मण=ब्रह्मचर्य—सु=१, २, ३६, ५० ह्म=म्म पक्षे ५२ म्ह ५४ र्य=र १, २, २४ च=चे ३६ ब्रा=ब २, १, ४१ ब=व स्वा०=बम्भणो बम्हणो बम्भचेरं बम्हचेरं। ५०। आम्र—ताम्र—सु= ५१ म्र=म्ब १, २, ३६ ह्रस्व=अम्बं तम्बं २, ३, ५१।

(१०६) म्हच् पक्ष्म श्म ष्म स्म ह्मामरश्मिस्मरे।

। २, ३, ५२।

कौ० क्ष्मादीनांम्हच् स्यान्नतुरश्मिस्मरयोः। पम्हं। कम्भारो। गिम्हो। विम्हयो। बह्मणो। रश्मि स्मरे तु=रस्सी। सरः। रोदमाहं। ५३। दसारो। र्ये स्तूर्ये शौण्डीर्ये सौन्दर्ये ब्रह्मचर्ये धैर्ये तु वा। ५४। तूरं सोण्डीरं सुन्देरं बम्भ, म्ह चेरं। धीरं धिज्जं। सूर-सूर्ययोः संस्कृतयोरेव=सूरं सुय्यं इति रूपेस्तः। ५४। एतः पर्यन्ते। ५५। पेरन्तो। एत्वाभावे—पज्जन्तो। ५५।

वी० म्हजिति। पक्ष्मन् में क्ष्म तथा रश्मिस्मरस्य मे भिन्न-श्म—ष्म—स्म—ह्म को म्ह नित्य होता है। पक्ष्मन्—दामादिनिषेध से पुंस्त्वाभाव १, १, २८ न्—लुप् प्र०सू० क्ष्म=म्ह—स्वा०=पम्हं। कम्भारो, बम्हणो २, ३, ४३ टी० ५० द्र०। गि (=ग्री २, ३, ६६, १, २, ३६) ष्म—विस्मय—सु=प्र० सू० ष्म=स्म=म्ह ३, १, १३ स्वा०=गिम्हो विम्हो। रश्मि—स्मर—सु में २, ३, ६८ म्—लुप्=सरो। शि=सि=स्वा०=रस्सी। ५२। दशार्ह—सु=५३ र्ह=र, शा=सा—स्वा०=दसारो। ५३। बम्भचेरं २, ३, ४३ टी० द्र०। धीरं १, ३, ४६ टी०—५५ द्र०। सुन्देरं १, ३, ६४ टी०—६३ द्र०। तूर्य—सौ (=सौ १, ३, ६४, ४, ३६) ण्डीर्य—सु प्र० सू० ५४ र्य=र ३, १, २६ स्वा०=तूरं सोण्डीरं। २, ३, ५४। पर्यन्त—सु=१, २, २५ प—पे २, ३, ५५ र्य= स्वा०=पेरन्तऽएत्वाभावे २, ३, २१, ७५ र्य=ज्ज= पज्जन्तो।

(१०७) आश्चर्येऽतोऽररिअरी अरिज्जाश्च

। २, ३, ५६।

कौ० आश्चर्येऽतः परस्यर्यस्य स्थाने 'अर, रिअ, रीअ, रिज्ज' इत्येते चत्वार एकाराच्च परस्य तु रः आदेशाः स्युः। अच्छअरं। अच्छारिअं अच्छरीअं अच्छरिज्जं अच्छेरं। ५६। पर्यस्तसौकुमार्येल:-स्तस्तु टो वा। ५७। पल्लट्टं त्थं। सोअमल्लं। ५७।

वी० आश्चर्येति। आश्चर्य में अकार से परार्य को अर, रीअ रिज्ज तथा ए से पर र्य को र होता है। आश्चर्य—सु=१, २, ३६ ह्रस्व=२, ३, २०, ७६ श्च=च्छ १, २, २६ वा—ए=च्छे—च्छ प्र० सू० अर, रिअ रीअ, रिज्ज, र=अच्छअरं, ४, अच्छेरं। ५६।

पर्यस्त—सौकुमार्य—सु=१, २, ३६ मा=म २, ३, ५७, र्य=ल=७५ स्त—स्त=ट्ट, १, ३, ६, ६४ सौकु=सोक २, २, १, १, १, २६ कु=उ स्वा० कार्ये पल्लट्टं। सोअमल्लं। ५७।

(१०८) ह्लोल्हच्। २, ३, ६१।

कौ० पल्हायो कल्हारं। ६१। वनस्पति बृहस्पतौ सो वा। ६२। वणस्सई, प्फई। बहु-स्सई बहुप्फई भय-स्सई भयप्फई। ६२। तीर्थं दीर्घ दुःख दक्षिण-वाष्पे हः। ६३। तूहं तित्थं। दीग्धं दिग्घं। दुहं दुक्खं। दाहिणो दक्खिणो। वाष्पे व्यवस्थितविभाषात्वादश्रुणि एवहः वाहो-नेत्रजलं अन्यत्र बप्फो उष्मा। ६३। चिल्कुष्माण्डी कार्षापणे कः। ६४। कोहल्ली कोहण्डा। का, कोहावणो। इति संयुक्तादेशः।

वी० ह्लोल्हजिति। प्रह्लाद—कह्लार—सु=प्र० सू० ह्ला=ल्हा २, २, १३ द=य ३, १, १३, २६ स्वा०

=पहलायो कल्हारे । ६१ । वनस्पति बृहस्पति—सु—६३, ७५ स्प=स्स पक्षे=४६ ष्फ=ति=२, २, १, २, १, २६ इ ३, १, २५ स्वा०=२, १, ३२ न—ण १, ३, २७ बृ=व=वणस्स, प्फेई । वहस्स, प्फई । २, २, ११ भयस्सई, प्फई—विह० १, ३, ३७, टी० ३८ द्र० । ६२ । तुहं १, ३, १, टी० ५ । वाहिणो १, २, ७ टी० ८ द्र० । दीर्घ—२, ४, ३० स्वार्थे—र दुःख—सु=प्र० सू० ह ३, १, २६=दीहरो, दीहो दुहं । पक्षे १, २, ३६ ह्रस्व २, ३, ६७, ६६, ७५, ७६=दिग्घ दुक्ख । वाष्प—सु =ह्रस्व, ष्प=ह, ४६, ७६ प्फवा हो (अश्रु) वप्फो (उष्मा) । कुश्माण्डी—सु=१, २, २५ टी० २६ द्र० । कार्षापण—सु=र्षा—हा २, १, ४१ प=व १, २, ३३ का—वा—क=कहावणो काहावणो ।

। संयुक्तादेश प्रकरण समाप्त ।

[अथ संयुक्तावयवलुप् प्रकरणम्]

निष्प्रभनिस्पृहपरस्परस्तम्बसमस्तेषसोर्लुप्

। २, ३, ६५ ।

कौ० षषयोरपवादः । एषु स्केरेकषेशयोःषसोर्लुप् स्यात् । णिप्पहो, णिप्पिहो, परोप्परं, तम्बो, समत्तो ।

कौ० निष्प्रभेति । निष्प्रभादि में संयुक्तावयव—षकार तथा सकार का लुप् होता है । २, ३, ४६ व ४६ क का अपवाद है । (णिर=नि १, ४, २३ वि०) प्रभ—निस्पृहभेन—निस्पृह—परस्पर—स्तम्ब—समस्त—सु—प्र. सू. स्त=ष्प=स्प=ष्—स्—लुप् २, ३, ६६, ७५ प्र० प्प २, १, ७ भ=ह=स्वा=णि, णिप्पहो । १, ३, २६ स्ह—इ=णि, णिप्पिहो । परोप्परं १, २, २६ टी० ३१ द्र० । एवं तम्बो समत्तो ।

कटतपगडद्=कं=पशरामूर्ध्वमद्रे । २, ३, ६६ ।

कौ० संयुक्तेषूर्ध्वं स्थितानामेषांलुप् स्यान्नतु द्रे । का । भुत्तं । ट । छप्पयो । त । उप्पायो वा । गुत्ती । ग । दुद्धं । ड । खग्गो । द । मोग्गरो=ᅟ। ख । दुक्खं । ᅟप । अन्तप्पायो ।श। णिच्चलं । ष । गोट्ठी । स । नेहो । देतु समुद्दो चन्द्रोमद्द इत्यादि । धात्री-चन्द्रतुल्येरः (२, ३, ७२) इतिलुपोऽभावे प्राप्तस्य द-लुपोनिवर्तकोऽद्रे इति निषेधः ।

कौ० कटेति । संयुक्तवर्णों में ऊर्ध्वस्थित कादि का लुप् होता है । द्र में नहीं होता है । भुक्त—षट्पद—उत्पात—गुप्ति—दुग्ध—खड्ग—मद्गर—दु=ख—अन्त=पात—निश्चल—गोष्ठी—स्नेह—सु=प्र० सू० क—ट—त—प—ग—ड—द—ᅟक ᅟप—श—ष—स=लुप् ७५ द्वित्व ७६ पूर्ववर्ण —(३, १, १३, २५, २६)=स्वादिकार्य—भुत्तं । १, ४, ३५ ष=छ=२, २, १, २, द=य=छप्पयो उप्पायो अन्तप्पायो । इत्यादि । द्र में २, ३, ७२ से र लुप् ७५ द्वित्व=समुद्दो चंदो मन्द । लुपोऽभावे अद्रनिषेधसेद्—लुप्=समुद्दो चन्द्रो मन्दं ।

नमयाश्मश्रुश्मशानेऽधः । २, ३, ६७ ।

कौ० संयुक्तेष्वधः स्थितानां नमयां लुप् श्मश्रुश्मशाने योर्न । न । नग्गो । म । रस्सी । या । कुड्डं तिविहं सल्लं । श्मश्रुश्मशानयोस्तु मासू मंसू मस्सू । मसाणं ।

कौ० नमयामिति । संयुक्त में अधःस्थित न म य को लुप् होता है । श्म श्रु तथा श्मशान में नहीं होता है । नग्न—कुड्य—सु=प्र० सू० न—म=लुप् ७५ द्वित्व—सु=प्र० सू० न=म=लुप् ७५ द्वित्व, स्वा०=नग्गो कुड्डं रश्मि—रस्सी—२, ३, ५२ द्र० ।

रलवामुभयेषामन्द्रे । २, ३, ६८ ।

कौ० संयुक्तेषूर्ध्वाधिस्थितानां र—ल—वां लुप् स्यान्नतुचन्द्रे । अत्त झाणं । सुक्कझाणं । सद्दो । अधः । गेहो पिक्कं सण्हं । अत्तं रुद्दं तहा धम्मं सुक्कं झाणं चउव्विहं । तत्थ मोत्तूण वे अज्जे घेत्तव्वे चरमे दुवं । १ ।

आर्तं रौद्रं तथा धर्मं शुक्लं ध्यानं चतुर्विधम् । तत्र मुक्त्वा द्वे आद्ये ग्रहीतव्येचरमे द्वे । १ । अचेन्द्रे इति निषेधसामर्थ्यादिह 'धात्रीचन्द्रोपमेरः' इति विकल्पो न प्रवर्तते । चन्द्रं । (समूह०) ।

कौ० रलेति । संयुक्त में ऊर्ध्वाधः स्थित र—ल—व को लुप् होता है । चन्द्र शब्द में नहीं । आर्त—रौद्र धर्म—शुक्ल स (=श १, ४, २६) रुद=सु—प्र० सू० र—ल—व—लुप् ७५, ७६=१, २, २६ ह्रस्व—स्वा०=अत्तं रुद्दं धम्मं सुक्कं । एवं सर्वम् ।

मध्याह्न सर्वज्ञोपमयोर विज्ञाने ह्ञोर्वा । २, ३, ७० ।

कौ० मध्याह्न ह्स्य विज्ञाने भिन्न सर्वज्ञ तुल्ये च ञस्य वा लुग् । मज्झण्णो मज्झण्हो । सव्वज्जो सव्वण्णू । विज्ञाने तु विण्णाणं ।

। इति लुप्प्रकरणम् ।

वी० मध्येति । मध्याह्न में ह् तथा सर्वज्ञ तुल्य में ञ को विकल्प से लुग् होता है । मध्याह्न—सु०—प्र० सू० १, २, ३६ ह्रस्व— ह्न—ह्—वा० लुप् २, १, ३२ न=ण २, ३, ७४ ण्ण, २, ४, ७५ ध्य=ज्झ ३, १, १, ११ स्वा०—मज्झण्णो । पक्षे २, ३, २८ ह्न=ण्ह= मज्झण्हो । सव्वण्णू १, २, २० द्र० । विज्ञानं— २, १, ३२ न=णं २, ३, ३५, ७४ ज्ञा=ण्णा=विण्णाणं । यहाँ अलुप् नहीं । । लुप्प्रकरण समाप्त ।

[अथद्वित्व प्रकरणम्]

द्वित्वमदीर्घा दयोचोऽका वस्वयोः शेषादेशयोरह्रोः । २, ३, ७४ ।

कौ० अनादौ स्थितयोरदीर्घादचः परयोरसंयुक्तयोः शेषादेशयोर्द्वित्वंस्यान्नतु ह्स्य । भुत्तं छप्पयो । रग्गो भिक्खू । दीर्घात्तु कासवो पासं । अचः किम् । कंसं । वयंसो । अह्रोरिति किम् । विह्लो कहावणो धीरं तूरं सोण्डीरं सुन्देरं बम्हचेरं अच्छेरं पेरन्तं इत्यादौ रेफस्य न द्वित्वं दसारो अदीर्घादिति निषेधात् । अकाविति किम् । स्तम्भः=खम्भो । स्तम्बः= तम्बो । अस्कोरिति किम् । चन्द्रः=चन्दो । मन्युः । =मन्तू ।

वी० दित्वमिति । अदीर्घ अच् से पर अनादि—असंयुक्त ह भिन्न शेष तथा आदेश को द्वित्व होता है । भिक्षु=सु =२, ३, ७५ क्षु=क्खु=स्वा०=भिक्खू । १० रग्गो । ६७ । भुत्तं छप्पयो इत्यादि द्र० । अदीर्घात् क्यों ? काश्यप—सु=२, ३, ६७ श्य—य—लुप् १, २, ७ दीर्घ ४, ३६ श=स २, १, ४१ प=व ३, १, १३ सु= ओङ् कासवो, पार्श्वं—सु,=२, ३, ६८ र्श्व—लुप् श=स ३, १, २६ स्वा०=पासं यहाँ दीर्घ से पर स को तथा धीरं, तूरं अच्छेरं पेरन्तं दसारं आदि में रेफ को द्वित्व नहीं होता है । अचः क्यों ? कांस्य—सु—वयस्य—सु १, १, ४६ य=यं २, १ कां—कं २, ३, ६७ स्य—स अनुस्वार से पर है अच् से पर नहीं होने से द्वित्व स्वा०=कंसं वयंसो । अको क्यों ? खम्भो तम्बो २, ३, ४, ६५ में आदि ख—त को द्वित्व नहीं होता है । असंयुक्तयोः क्यों ? चन्दो मन्तू में संयुक्त न्द न्त को द्वित्वाभाव के लिये है । २, ३, ४३, ७१ द्र० । अह्रोः क्यों ? विह्लो कहावणो में ह को अद्वित्वार्थ । १, ४, ३३, २, ३, ६४ द्र० ।

युग्माभ्यां प्राक्पूर्वौ । २, ३, ७५ ।

कौ० द्वित्व प्रसंगे वर्गस्य युग्माभ्यां=प्रथम द्वितीयाभ्यां पूर्वं क्रमात्पूर्वौ प्रथम द्वितीयौ स्तः । शेष । वग्घो । आदेश भिक्खू । समासे । वद्धप्फलं । हर-क्खन्दा । मुकादौ-नक्खा नहा । प्रभूतादौ-ओक्खलं । द्वित्व प्रसंगे सत्येव । ख्यातः खायो स्तम्भः= खम्भो ।

वी० युग्मेति । द्वित्व प्रसंग में कवर्गादि के द्वितीय से पूर्व में प्रथम तथा चतुर्थ से पूर्व तृतीय होता है । व्याख्यान— व्याघ्र—सु—१, २, ३६ ह्रस्व २, ३, ६७, ६८ य्—र =लुप् शेष ख—क्ख, घ=ग्घ—३, १, १३, २६ स्वा०=वग्घो, वक्खा—णं (=व २, १, २२) भिक्खू (२, ३, ६) में आदेश । अशेषानादेशे वद्ध—फलं २, ३, ७७ द्वित्व प्रसंगे— फ=वद्धप्फलं । आदेशे— हरस्कन्दौ— २, ३, ३, प्र० सू० स्क=क्ख २, २, ४० ओ=जस् ३, १, ४ द्लुप् १, १, २ दीर्घ=हरक्खन्दा । नख—जस् =७८ द्वित्व प्र० प्रकृत सू० ख—क्ख पक्षे २, १, ७ ह— —१, १, १८ वचनादि पुंस्त्व, स्वा०—नक्खा नहा । ओक्खलं १, ४, ६ द्र० । ७४ ।

अशेषानादेशयोश्च समासे । २, ३, ७७ ।

कौ० चात् शेषादेशयोश्च द्वित्वं वा स्यात् । सपिवासो सप्पिवासो । वद्धफलं वद्धप्फलं शेषे । कुसुमप्प (=प्र) यरो कुसुमपयरो । आदेशे । हर-क्खन्दा । देवत्थुई देवथुई । आणालक्ख, खम्भो । २, ४, १ द्र ।

वी० समास में अशेष—अनादेश तथा शेष—आदेश को विकल्प से द्वित्व होता है । देवस्तुति—सु=२, ३, ४२

स्त=थ—प्र० सू० थ=त्थ २, ३, १, १, १, २६ ति=इ ३, १, २५ स्वा०=देवत्थुई देवथुई । शेष स्पष्ट है ।

मूकादौ । २, ३, ७८ । (सेवादौ है—८, २, ९९)

कौ० मूकादिषु यथादर्शनं मनादौ हलो वा द्वित्वं स्यात् मुक्को मुओ । सेव्वा सेवा । अम्हकेरं ।

बी० मूकेति । मूकादि (सेवादि) में यथादर्शन (अनादि) हल् को द्वित्व विकल्प से होता है । मूक—सु—प्र० सू० क=द्वित्व १, ४, ३६ ह्रस्व पक्ष में २, ३, १, १, १, २६ क्—लुप्—असंधि=मुक्को मुओ । अस्मद्—२, ४, ५ केर—प्र० सू० क=क्के १, १, २८ द—लुप् २, ३, ५३ स्म=म्ह—स्वा०=अम्हकेरं ।

प्रभूतादौ चित् । २, ३, ७९ ।

(तैलादौ है—८, २, ९८)

कौ० चित्वान्नित्यं द्वित्वं स्यात् । पहु (=प्रभू) त्तं । **तेल्लं ॥ न धृष्टद्युम्नेण:** ॥ २, ३, ८० । धट्ठज्जुणो ॥

॥ इति द्वित्व प्रकरणम् ।

बी० प्रभूतेति । प्रभूतानि (तैलादि) में यथादर्शन हल् को द्वित्व नित्य होता है । प्रभूत—तैल—सु=प्र० सू० त=ल=द्वित्व १, २, ३८ ह्रस्व, ३, ४९ ऐ—ए, २, १, ७ ऊ=उ, ३, ६६ प्र=प ३, १, २६ स्वा०=पहुत्तं तेल्लं । ७९ । धृष्टद्युम्न—सु=१, ३, २७ धृ=ध २, ३, २८, ७५ ष्ट=ट्ठ २१, ७४ द्यु=ज्जु ३६ म्न=ण ८० । द्वित्व निषेध ३, १,१३ सु=ओड्=धट्ठज्जुणो । ८० ।

॥ द्वित्व प्रकरण समाप्त ।

[अथागम प्रकरणम्]

क्ष्माश्लाघारत्नेऽन्त्यहल: । २, ३, ८२ ।

कौ० प्रागदित्यनुवर्तते । एषु स्केरन्त्यहल: पूर्वमकारागम: स्यात् । छमा । सलाहा । रयणं । वाऽग्नौ । ८३ । अगणी अग्गी ॥

बी० क्ष्मेति । क्ष्मा—श्लाघा—रत्न—सु=प्र० सू० क्ष्मा=क्षमा—श्ला=शला—त्न=तन—२, ३, १८ क्ष=छ, १, ४, ३६ श=स २, १, ३२ न=ण २, २, १, ३ त=य ३, १, ११, १३ स्वा०=छमा सलाहा रयणं । ८२ । अग्नि—सु=प्र० सू० ग्नि=गनि, पक्षे २, ३, ६७, ७४ ग्नि=३, १, २५ सु=द्लुप् १, १, १४ दीर्घ=अगणी (=नी २, १, ३२) अग्गी ।

र्शर्षतप्तवज्र क्रियास्वित् । २, ३, ८४ ।

कौ० र्शर्षयोस्तप्तादिषु च स्केरन्त्य हल: प्रागिद् वा स्यात् । र्श । **दरिसणं दंसणं । र्ष । वरिसं वासं । तविओ तत्तो । वन्दामि अज्जवइरं । वज्जं । किरिया । हयंनाणं कियाहीणं ॥**

श्रीह्रीर्हं दिष्टया कृत्स्न हर्षामर्षपरामर्शे चित्

। २, ३, ८५ ॥

कौ० चित्वान्नित्यमित । सिरी । हिरी । हं । वरिहो अरिहो । दिट्ठिया । कसिणा । हरिसो । अमरिसो । परामरिसो ।

बी० र्शेति । र्श—र्ष तथा तप्तादि में अन्त्य हल् से पूर्व इकार होता है । दर्शन—आदर्श—सु=प्र० सू० र्श=रि=श १, १, ३६ श=स २१, ३२ न=ण २, २, १३ द=य ३, १, १३, २६=आयरिसो दरिसणं । पक्षे १, १ ४ द् यं—दं २, ३, ६८, र्स=स=भायसो दंसणं । वर्ष—सु=प्र०सू० र्ष=रिप पक्षे २, ३, ३८ र्ष=प १, २, ७ व=वा १, ४, ३६ ष=स ३, १, २६ स्वा०=वरिसं वासं । तप्त—वज्र—क्रिया—सु=प्र० सू० प्त=पित, ज्र=जिर, क्रि=किरि पक्षे २, ३, ६६, ६८, ७४, ७५ प्त=त्त, ज्र=ज्ज क्रि=कि—स्वा०=२, १, ४१ पि=वि २, २, १, त—अ—जि—३, १, १, २६ असंधि=तविओ वइरं किरिया, पक्षे तत्तो वज्जं किया । ८४ । श्री—ह्री—अर्हं—हर्ष—अमर्ष—परामर्श—कृत्स्न—दिष्टया—सु=प्र० सू० से र्—न्—य् से पूर्व इ—१, ३, २७ कृ=क ४, ३२—स्न=स, २, ३, ७८, ७५ ष्टि=ट्ठि ६६ रिस=सि बाहुलकादद्वित्वं—स्वा०=सिरी, हिरीत्यादि । ८५ ।

ध्यात्स्याच्चैत्यभव्यवीर्यतुल्ये । २, ३, ८६ ।

कौ० एषु स्केर्यात्प्राङ नित्यमित् स्यात् । स्याद्वाद: =सियावायो । चेइयं । भवियो । वीर्यतुल्येषु । वीरियं वरियं चोरियं इत्यादि । ८६ । **नादक्लमतुल्ये** । ८७ । **क्लेश:=किलेसो । सिलेसो सिलिम्हो । क्लमतुल्येतु-क्लम:=कमो । क्लीव:=कीवो** । ८७ । **नात्स्वप्ने** । ८८ । **सिमिणो सिविणो ।**

आर्षे सुमिणो । ८८ । उत्सूक्ष्मलक्ष्णेमात् । ९२ । सुहुमं । सुरुग्घं (नगरं) । ९२ । पृथ्व्या वा । ९५ । पिहुवी पुहुवी पिच्छी । ९५ । छद्म पद्म द्वार-मूर्खे । ९६ । छउमं, छम्मं, पउमं, पोम्मं । द्वारं = दुवारं, वारं दारं देरं मुरुक्खो, मुक्खो । ९६ । अजिचौचार्हति । ९७ । अर्हन् = अरहन्तो अरिहन्तो अरुहन्तो । २, २, ९७ । इत्यागम प्रकरण समाप्तम् ।

दी० यादिति । स्यादादि में संयुक्त य से पूर्व में नित्य इ होता है । स्याद्—वाद्—चैत्य— भव्य—वीर्य—चर्य—चौर्य—सु = प्र० सू० य से पूर्व इ १, १, २८ द्—लुप् २, २, १, ३ ई = य ३, १, १३ सु = सियावायो भविियो । १, ३, ४९ चै = चे ६४ चौ = चो २, २, १, १, २६ ति = इ, असंधि = ३, १, २६, स्वा० = चेइयं वीरियं चोरियं । ८६ । क्लेस—(= श) श्लेष—सु = प्र० सू० क्ले किले—स्वा० = किलेसो । सिलेसो । सिलिम्हो २, ३, ४३ टी० ४६ द्र० । क्लमतुल्य में नहीं होता है । अत: क्लम—क्लीब—सु = २, ३, ६८, ३, १, १३ = कमो कीबो । ८७ । सिमिणो १, २, १० द्र० । सुहुमं १, ३, १६ द्र० सुग्घ्न—सु = ९२ सू० घ्न = सुरु २, ३, ६७, ७५ घ्न = ग्घ—स्वा० = सुरुग्घं । ९२ । पिहुवी २, ३, १४ द्र० । २, ३, १४ द्र० । ९५ । पउमं १, २, २९ द्र० । छद्म—१, १, २८ म् लुप् प्र० सू० द्म = दुम २, २, १, दु = उ—असंधि ३, १, २६ स्वा० = छउमं । पक्षे २, ३, ६६, ७४ दम = म्मं = छम्मं । द्वारं = प्र० सू० द्वा—दुवारं । पक्षे २, ३, ६९ (द्विव्यादौ यथादर्शनम्) द—लुप् = वारं, व—लुप् दारं, १, २, २५ वा—ए—देरं । मूर्ख—सु = १, २, ३९ मू = मु—प्र० सू० र्ख = रुख २, २, ७९, ७५ ख = क्ख, पक्षे ६८, ७५ र्ख = क्ख—३, १, सु = ओ = मुरुक्खो, मुक्खो । ९६ । अर्हत्— सु = ३३, १३ ४१ अर्हन्त प्र० सू० र्ह = र् रि, रु ह—स्वा० = अरहन्तो अरिहन्तो अरुहन्तो ।

॥ इत्यागम प्रकरण समाप्त ।

[अथ व्यत्यय प्रकरणम्]

व्यत्ययोह्ह—हर-लन-चलां ह्लवमहाराष्ट्रालाना चलपुरेषु । २, ४, १ ।

कौ० द्रहो । आर्षेतु हरए महापुण्डरिए (= ह्रदे = हरदे) मरहट्ठ । आणालक्ख, खम्भो । अलचपुरं । १ । वाराणसीकरेण्वांरणो: । २ । वाणारसी । कणेरू ।

वी० व्यत्येति । ह्रद—महाराष्ट्र—आलान (स्तम्भे) अचलपुर—सु = १, २, ३५, ३९ ह्रा = ह्र = प्र० सू०, रह: ह्र = द्र० । लन = नल, चल = लच—३, १, १३, २६ स्वा० = द्रहो । आर्षे—१, १, ५ बाहुलकात्—ह्रद = हरद = २, २, १, १, २६ द = अ ३, १, १, १४ ङि = एङ् = हरए । २, ३, २८, ६८, ७५ ष्ट = ट्ठ १, १, १८ वा० पुंस्त्व—स्वा०—मरहट्ठं, ट्ठो । २, १, ३२ ना = णा (स्तम्भ = स्तं = २, ३, ४ स्त = ७७ वा = क्ख = आणालक्ख, खम्भो । अलचपुरं । वाराणसी—करेणु—सु = प्र० सू० र—ण = ण—र ३, १, ११, २५ स्वा० = वाराणसी । कणेरू । २, ४, २ ।

ह्य-ल्ह-ल्ड-रलांह्यलह्युकललाट हरितालेषु वा । २, ४, ३ ।

कौ० एषामेषु वा व्यत्ययः स्यात् । सह्यं = सटह = सज्झं । गुटह गुज्झं । घस्यह्त्वेव्यत्ययः । हलुअं लहुअं । णिडालं णडाल । णोललाटे (१, ४, २१) इत्यादेर्णत्व विधानाद्वितीयस्य व्यत्ययः । हरिआलो हलिआरो । १३ । निवहदर्वीकरणयोर्वहकरो । ४ । णि, निवहो णि, निवहो । (समूह) दव्वीरयोदव्वीअरो (सर्प—) । ४ । ॥ इति व्यत्यय प्रकरणम्

वो० ह्येति । ह्यादि में ह्यादि को विकल्प से व्यत्यय होता है । सह्य—गुह्य—लह्व (= घु २, १, ७) क—हरिताल—सु = प्र० सू० ह्य—ह्य = य्ह पक्षे २, ३, २, ३७, ७५ ज्झ, ल—ह = ह्ल, रल = लर ३, १, १३, २६ स्वा० = क = ता = २, २, १, १, १, २६ लुप्—असंधि = अ—आ = गुय्हं गुज्झं इत्यादि । णिडालं १, २, १० टी० ११ द्र० । ३ । णि (= नि १, ४, २३ वा०) वह—दव्वी (= र्वा २, ३, ६८, ७४) कर—सु = प्र० सू० वह = हव, कर = रक = ३, १, १३ सु = ओ = णि, नि—हवो, वहो । दव्वीरयो (= क—२, २, १, ३) दव्वीअ (= क २, २, १, १, २६) रो । २४ ।

॥ इति व्यत्यय प्रकरण समाप्त ।

[अथ तद्धित प्रकरणम्]

इदमर्थे केरच । २, ४, ५ ।

कौ० इदमर्थीय प्रत्ययस्य स्थाने करेच्स्यात् । तुम्ह केरो । अम्हकेरो । बाहुलकात्क्वचिन्न । मदीय पक्खो । पाणिणीयं । ५ । युष्मदस्मदोरणोडेच्चय: । ८ । यौष्माकं = तुम्हेच्चयं । आस्माक = अम्हेच्चयं । । ८ । आत्मनोणय: । ७ । आत्मीयम् = अप्पणयं । ७ ।

वी० इदेति । इदमर्थीय प्रत्यय के स्थान में केरच् आदेश होता है । अस्मद् = छ = प्र० सू० केर—सु = १, १, २८ दलुप् २, ३, ५९ स्म = म्ह ३, १, १३ सु = ओइ् = अम्हकेरो । तुम्हकेरो १, ४, २८ टी० २९ द्र० । तु (= यु = १, ४, २९) ष्मद् = अस्मद्—अण् = प्र० सू० डेच्चय —सु = अद्—लुप् २, ३, ५२ ष्म = स्म = म्ह—स्वा० = तुम्हेच्चयो अम्हेच्चयो । ८ । आत्मन्—छ = प्र० सू० णय—सु = १, १, २८ न्—लुप् २, ३९ आ = अ २, ३, ४३, ७४ त्म = प्प — स्वा० = अप्पणयं । ७ ।

मतुपो मामणाल्वालेल्लोल्लेरेत्तेन्तमन्तवन्ता: । २, ४, १३ ।

कौ० मतुप: स्थाने यथा प्रयोगमेकादशादेशामादय: स्यु: । मा । हणुमा । मण । धणामणो । आलू । दयालू । आल । रसालो । इल्ला । सोहिल्लो । उल्ल । विआरुल्लो । इर । गव्विरो । इत्त । कव्व-इत्तो । इन्त । कथावान् = कहइन्तो । मन्त । पुण्ण-मन्तो । वन्त । धणवन्तो । मतुप इति किम् । धनी = धणी । अर्थी = आथी ।

वी० मतुप इति । मतुप् के स्थान में प्रयोगानुसार मा मण: इत्यादि ग्यारह आदेश होते हैं । हनु—मत् = प्र० सू० मा २, १, ३२ नु = हणुमा—सु = ३, १, ११ सु = सु—लुप् = हणुमा । एवं धण (= न) मत् = मण = सु = ३, १, १३ सु = ओइ् = धण—मणो । दया—मत् = आलु—दीर्घ ३, १, २५ स्वा० = दयालु । रस—आल—सु = रसालो । शोभा—इल्ला १, ४, ३६, भो = सो २, १, ७ भा = हा = १, १, २७ आ—लुप् = सोहिल्ला —सु = ओइ् = सोहिल्लो । विकार—मत् = उल्ल—सु = २, २, १, १, १, २६, ७२—अ—लुप् स्वा० = विआरु-ल्लो । गर्व—मत् = इर १, १, २७ र्व—अ—लुप् २, ३, ६८, ७४ स्वा० = गव्विरो । काव्य—मत्—इत्त —सु—१, ४, ३९ ह्रस्व २, ३, ६७, ७५ व्य = व्व, १, १, २३ अपदे असंधि, स्वा० = कव्वइत्तो । कथा—इन्त—सु = था = हा १, १, १६, हा = ह = कह-इन्तो । पुण्य—मत् = मन्त = सु = २, ३, ६८, ७४ ण्य = ण्ण = पुण्णमन्तो । भक्ति—मत् = वन्त— सु = २, ३, ६६, ७४ क्ति = त्ति = भत्तिमन्तो । १३ ।

त्रलोहहित्था: । २, ४, १७ ।

कौ० त्रल: स्थाने हादय: स्यु: । यत्र = जह जहि जत्थ । १८ । वातसो दोत्तो । १९ । सव्व (= र्व—२, ३, ६८, ७४) दो, सव्वत्तो । पक्षे सव्वओ (= त: ३, १, १३, २, २, १, १, १, २६)

डिमात्तणौ त्वस्य । २, ४, २१ ।

कौ० त्वप्रत्ययस्य डिमात्तणौ वा स्त: । पीणिमा । पीणेत्तणं । पक्षे पीणत्तं । त्वस्येति किम् । पीनता = पीणया । शौ० पीणदा ।

वी० डिमेति । त्व के स्थान में डिमा—त्तण दो आदेश होते हैं । पीन—त्व = डिमा—त्तण—सु = २, १, ३२ न = ण डित्वाट्टिलोप—३, १, ११, २६ स्वा० = पीणिमा । पीणत्तणं । पक्षे २, ३, ६८, ७४ त्व = त्त = पीणत्तं । पीनता = २, १, १, ३ पीणया ५, १, १ ता = दा = पीणदा ।

वा स्वार्थेकश्च । २, ४, २३ ।

कौ० स्वार्थे क: चाद् डिल्लच् डुल्लच् इत्येते त्रय: प्रत्याया: वा स्यु: । चन्द्र: चन्दयो । हिययर्य । द्विर-पि स्यात् । बहुअयं । बहु । ककारोच्चारणं पैशाच्यां श्रवणार्थम् । वदनकं = वतनकं । निर्जितकषाय: = णिज्जियकसापिल्लो । मुखं = मुहुल्लं । पक्षे—चन्दो, हिययं, णिज्जियकसायो, मुहं । २३ । विद्युदन्धपीत-पत्रात्ल्ल । २४ । विज्जुला विज्जू । अन्धलो, अन्धो । पीवलं, पीअलं, पीअं । पत्तलं पत्तं । २४ । डियंशनैस । २७ । सणियं । इयंचवामनाक: । २८ । मणियं

मणयं मणा । डलियोमिश्रात् । २९ । मीसालियं । २९ । दीर्घा द्रः । ३० । दीहरो दीहो । २, ४. ३० ।

। इति तद्धिताः ।

दी० वेति । स्वार्थ में नाम से पर तथा चकार से ल्लि— डुल्ल ये तीन प्रत्यय विकल्प से होते हैं । चन्द्र—क—सु. हि (=हु १. ३, २९) य (=व २. २, १, ३) प—क— सू=क=य २, ३, ७२ न्द्र=न्द १, १३. ६६ स्वा० = चन्दयो चन्दो —हिययं । दो बार भी होता है—बहु— क—... —उ=बहु-[?] । बहु । ... भाषा के लिये है । वदन —कं=वतनक ५, २, १९ द्र. । निर्जितकषायः=ल्लि—मुख—डुल्ल—सु=१, ४, २३ नि=णि ३६ ष=स २, १, ७ स=ह, २, २, १, ३ त=य ३, ६८. ७४ जि=जि=णिज्जियकसायिल्लो मुहुल्लं । पक्षे णि····यो मुहं । २३ । विद्युत—१, १, ३३ अन्ध—पत्त (=त्र २, ३, ६८. ७४)—पीत—प्र० सू० ल—सु=स्वा० अन्धो, लो । पत्तो लो । पीत=२, १, २५ त=वा—व पक्षे २, २, १, १, १, २६ अ=पीयलं पीअलं पीअं । २४ । स (=श—१, ४, ३६) नैस=डियं —ऐस्—ओर=सणियं । मनाक् —२८ वा—डयं—डियं —आक् लोप, पक्ष में १, १, २८ क्—लुप् २, १, ३२ न =ण=मण, णियं—मणा । २८ । मीस (=मिश्र २, ३, ६८, १, २, ७, ४, ३६) डालिय—ठी. लुर्=स्वा० = मीसालियं मीसं । दीहरो २, ३, ६३ द्र० । ३० ।

॥ तद्धित सम्पूर्ण ।

[अथाऽव्यय प्रकरणम्]

अव्ययम् । २, ४, ३२ ।

कौ० अधिकारोऽयमापाद समाप्ति यावत् । तेनेतः परं वक्ष्यमाणा अव्यय संज्ञा स्युः ।

प्रश्नविमर्शयोः किणोमणे । २, ४, ३३ ।

कौ० क्रमादनयोरर्थयोरेतौ प्रयुज्यते । किणो तिण्णि-वि गुत्ताओ करेसि । किम् तिस्रोऽपि गुप्तीः करोषि ! मणे अयंमुणी । किंस्विन्मुनिः । ३३ ।

निश्चयनिर्धारणयो वले । २, ४, ३५ ।

कौ० वले ठाणगवासी मुणी । स्थानकवासी मुनिरेव । निर्धारणे । सव्वाणं साहूणं ठाणगवासी साहूकम्म-दलने सूरो । सर्वेषां साधूनां स्थानकवासी एव कर्म दलने शूरः ।

केवले णवर णवरं । २, ४, ४६ ।

कौ० जिणवयणं सुण । णवरं सदोरयमुहवत्थियं-गेण्हसि । केवलं सोदरक मुख वस्त्रिकां गृह्णासि ।

स्वयमोऽर्थेऽप्पणाऽप्पणो । २, ४, ७०, ६७ ।

कौ० अप्पणाणइकल्लाणं कुणइ जणो । स्वयमेव कल्याणं करोति जनः । अप्पणो चेअ मुणीकसायं छड्डइ । स्वयमेव मुनिः कषायं मुञ्चति ।

एवार्थे णइच्च चिअचेअ । २, ४, ५४ ।

कौ० मुणी चिअ धम्मं मुणइ । मुनिरेव धर्मं जानाति । एवं णइच्च चेअ इत्येते प्रयोज्याः ।

इर किर हिर किलार्थे । २, ४, ६८ ।

कौ० सो जाणइ इर सियावायरहस्सं । स जानाति किल स्याद्वादरहस्यम् । एवं किर हिर । पक्षे किल ।

सिद्धा इवार्थे पिव मिव व व्व विअ विव । २, ४, ७० ।

॥ इत्यव्यय प्रकरणम् ।

[अथ सुबन्त प्रकरणम्]

॥ तत्र पुंलिङ्गाः सामान्य शब्दाः ॥

आहृणात् सुपोनाम्नः । ३, १, १ ।

कौ० 'ह्णं' (३, २, ३२) मिति सूत्रं यावदय-मधिकारः । तेन इतः परं वक्ष्यमाण कार्यं नाम्नः परस्य सुपो विभक्ति विपरिणम्य सुपिपेर नाम्नश्च-स्यादिति बोध्यम् । तत्रादौ—जिन—सु=इति स्थितौ—

दी० आण्हादिति । ३, २, ३२ सूत्र तक अधिकार होने से आगे होने वाला कार्य नाम से पर सुप् तथा विभक्ति विपरिणाम से सुप् से पूर्व नाम का सम्बन्धी होगा । यह जानना ।

बिद् विसर्गस्य चाक्लीवे ऽत्वार्थे । ३, १, १३ ।

कौ० अतः परस्य विसर्गस्य सोश्च रोद् स्यात्

नतु क्लीबे । डित्वाट्टिलोपः । एवमग्रेऽपि । वानिवर्तकं चित् । १, १, १२ । सर्वतः=सव्वओ । जिणो । आर्षे जिणे । क्लीबे तु हेमाण ! ।

दी० चिदिति । अकार से विसर्ग तथा सु के स्थान में डित् तथा चित् ओ होता है । डित्व होने से टिलोप होता है । चित्व से आ की निवृत्ति होती है । सर्वं (=सव्वं २, ३, ६८, ७४) तः (=तस्) प्र० सू० तः=तो २, २, १, त—लुप् १, १, २६ असंधि=सव्वओ । जिण (=न २, १, ३२)—सु=प्र० सू० ओ (ड्)=जिणो । आर्ष में—(एङ्=जिणे) हे णाण ३, १, २६ द्र० ।

अशसोर्क्लुप् । ३, १, ४ ।

कौ० नाम्नः परयोर्जश्शसो क्लुप् स्यात् । दित्वात्पूर्वदीर्घः । द्विवचने बहुवचनम् । ३, २, ४० इति द्वित्वे बहुत्वे च जसि जिणा । सम्बोधने–हे जिण–सु=इति स्थितौ—

दी० जसिति । नाम से पर जस् तथा शस् को दित् लुप् होता है । जिन—औ=३, २, ४० जस्=प्र० सू० लुप् १, १, १४ दीर्घ=जिणा । जिनौ जिनाः इत्यर्थः ।

वा क्लुओडौ । ३, १, ४१ ।

कौ० नाम्नः परस्य संबुद्धेः सोः स्थाने 'अक्लीवादि (२, १, २५) ति' 'चिड्विसर्गस्यचे' (३, १, १३) ति च प्राप्तावेतौ वास्तः । पक्षे सोर्लुप् । ३, १, ११ । इति लुप् । हे जिण । जसि—हे जिणा ।

दी० नाम से पर सु को क्लुप् तथा ओड् विकल्प से होते हैं । जिण—सु=प्र० सू० वा—ओड्—पक्षे लुप्=हे जिणो हे जिण । जसि पूर्ववत् ।

अमोमच् । ३, १, ३ ।

कौ० नाम्नः परस्यामो मच् स्यात् । मश्चन्द्रन् । १, १, ४२ । चन्द्रोऽनुस्वारः । १, १, ८ । जिणं ।

दी० नाम से पर अम् के स्थान में मच् होता है । जिण—अम्—१, १, ४२ चन्द्र=जिणं ।

वाऽदुदोत्तोभ्यसृशसोरेत् । ३, १, १७ ।

कौ० दु—दो—त्तो इत्येतान् वर्जयित्वाभ्यसादेशे शसादेशे च दलुपि परे नाम्नोऽतः स्थाने एत्वं वा स्यात् । जिणे जिणा ।

दी० दु—दो—त्तो भिन्न भ्यसादेश तथा शसादेश से पूर्व अ—को ए विकल्प से होता है । जिण—शस्—३, १, ४ दलुप् प्र० सू० वा—ण—णे—जिणे । पक्षे जिणा ।

टाथा डेणजातस्तु णः । ३, १, १७ ।

कौ० अतः परस्याष्टायाडेणच् स्यादादन्तात्पुंसस्तु णः । जिणेण जिणेणं ।

दी० अत से पर टा के स्थान में डित् तथा चित् एण तथा आदन्त पुंलिंग से पर टा को ण होता है । जिण—टा=प्र० सू० एण—टिलोप=१, १, ४७ वा० चन्द्र=जिणेणं जिणेण ।

हिहिंहिँभिसः । ३, १, ५ ।

कौ० नाम्नः परस्य भिसः स्थाने एते त्रयः स्युः ।

भिस्सुपि चित् । ३, २, ३७ ।

कौ० भिस्सुपोः परयोरतः स्थाने नित्यमेत्वं स्यात् । जिणेहि, हिं, हिँ ।

दी० नाम से पर भिस् के स्थान में हि, हिं, हिँ ये तीन आदेश होते हैं । जिण—भिस्=प्र० सू० हि—हिं—हिँ—ण=णे=जिणेहि ३ ।

सर्वत्र चतुर्थ्यन्ते । ३, २, ३७ ।

कौ० प्राकृते सर्वत्र चतुर्थ्यन्ते षष्ठ्यन्तं प्रयुज्यते । वाङसन्तं तादर्थ्यङन्ते । ३, २, ३८ । जिणस्स । जिणाण, णं । जिणस्स जिणाय वा । जिनार्थमित्यर्थः ।

दी० सर्वेति । प्राकृत में सर्वत्र चतुर्थ्यन्त के स्थान में षष्ठ्यन्त प्रयुक्त होता है एवं तादर्थ्यङन्त के स्थान में विकल्प से षष्ठी के एकवचनान्त प्रयुक्त होता है । प्रक्रिया षष्ठी में द्र० ।

अणो त्तो पञ्चम्यामचोर्दीर्घः । ३, १, ८ ।

कौ० 'णोत्तो' इत्येतौत्यक्त्वा पंचम्यादेशेषु नाम्नोऽचोदीर्घः स्यात् । अणो त्तो इति किम् । मुणिणो जिणत्तो ।

दी० अणोत्तो इति । णो तथा त्तो वर्ज पंचम्यादेश से पूर्व नाम के अच् को दीर्घ होता है ।

ङिङस्योरेड्दलुपौ । ३, १, १४ ।

कौ० वेत्यनुवर्त्य । अतः परयोङिङसोः स्थाने क्रमोदड्दलुपौ वास्तः । जिणा । पक्षे—

पञ्चम्या हिः । ३, १, १५ ।

कौ० अतः परस्याः पञ्चम्याङसेर्भ्यसश्चहिर्वा स्यात् । जिणाहि-पक्षे—

बी० ङीति । अत् से पर ङि को एड् तथा ङसि को दलुप् एवं पंचमीङसि—भ्यस् को ही विकल्प से होते हैं। जिण—ङसि—प्र० सू० दलुप् पक्ष में हि—३, १, ८ दीर्घ—जिणा, जिणाहि ।

हिन्तोदुदोत्तोङसेः । ३, १, ६ ।

कौ० नाम्नः परस्यङसेरेते चत्वारः स्युः । जिणाहिन्तो, जिणाउ, जिणाओ जिणत्तो ।

बी० नाम से पर ङसि के स्थान में दु—दो—हिन्तो—त्तो ये चार आदेश होते हैं। जिण—ङस्=प्र० सू० दु—दो—हिन्तो त्तो, ८ सू० दीर्घ—जिणाउ, ओ, हिन्तो । अणोत्तो निषेध से दीर्घाभाव—जिणत्तो । मुणिणो २, १, २३ द० ।

सुन्तो चभ्यसः । ३, १, ७ ।

कौ० नाम्नः परस्य पंचम्याभ्यसः स्थाने सुन्तो चादुदो हिन्तो त्तो इति में पंचादेशः स्युः । जिणेहि, जिणाहि, जिणेसुन्तो जिणासुन्तो । जिणेहिन्तो जिणाहिन्तो जिणाउ जिणाओ जिणत्तो ।

बी० सुन्तो इति । नाम से पर पञ्चमी भ्यस् के स्थान में सुन्तो आदि पांच आदेश होते हैं। जिण—भ्यस्—१५ वा—हि—पक्षे प्र० सू० सुन्तो—हिन्तो उ—ओ (दु—दो) त्तो—१७ सू० वा० अ—ए पक्ष में ८ दीर्घ—जिणे, णा—हि । जिणे, णा हिन्तो । जिणे, णा—सुन्तो । अदुदोत्तो निषेध से एत्वा भाव=जिणाउ, ओ । अत्तो त्तो निषेध से—जिणत्तो ।

ङिङसोर्मिङ्सठौ । ३, १, ९ ।

कौ० नाम्नः परयो ङिङसोः क्रमान्मिड्सठौ स्तः । जिणस्स ।

बी० ङीति । नाम से पर ङि तथा ङस् को क्रम से मिड् तथा सठ् होता है। जिण—ङस्—प्र० सू० स (ठ्)—१, १, १५ स्स—जिणस्स ।

णदामः । ३, १, ११ ।

कौ० नाम्नः परस्याऽऽमः स्थाने दित्-णः स्यात् । जिणाण जिणाणं ङौ-जिणे जिणम्मि । आर्षे ङेः सिः सपूर्वचन्द्रः । ३, १, १० । जिणंसि । सुपि–जिणेसु जिणेसुं । एवं वीरगणधरगौतमादयोऽदन्ताः ।

बी० णदेति । नाम से पर आम् के स्थान मे ण (द्) आदेश होता है। जिण—आम्=प्र० सू० ण (द) १, १, १४ दीर्घ—जिणाण । ४७ णं=जिणाणं । जिण—ङि—३, १, १० जिणंसि ३, १, १४ वा—ए (ड्) टिलोप—पक्षे ९ मिड् १, १, १२ द्वित्व—जिणे जिणम्मि । जिण—सु (प्) =३, १, १८ ण=णे १, १, ४७ वा=चन्द्र=जिणेसु, जिणेसुं । एवं वीर गणधर गौतमादि । अदन्तों के रूप जिनवत् होते हैं।

[आकारान्ताः पुं. शब्दाः]

कौ० गोपा=गोवा—गोवा । हे गोवा २ । अमि—गोवां । शसि—गोवा । टाआङेण जातस्तु णः ३, १, १६ । गोवाण, णं । भिसि गोवाहि, हिं हिँ । ङसौ—गोवाहिन्तो, उ, ओ, त्तो गोवत्तो । अदन्तत्वा भावान्न हि दलुपौ । भ्यसि—गोवा—सुन्तो, हिन्तो—उ त्तो । अदन्तत्वादेव नैत्वम् । ङे ङसोः—गोवस्स । भ्यसामोः—गोवाण, णं ङौ—गोवामि । सुपि—गोवासु गोवासुं । एवं विश्वपा हाहादयोऽपि ।

॥ इत्याकारान्ताः ।

बी० गोपा—२, १, ४१ पा=वा=गोवा—सु—जस्—शस्=३, १, ११, ४ लुप्=गोपा ३, संबोधन—गोवा २ । गोवा—अम=३, १, ३ म (त्)=१, १, ४२= गोवां । गोवा—टा=३, १, १६ ण १, १, ४७ वा—चन्द्र=गोवा—ण णं । गोवा—भिस्=३, १, ५= गोवा—हि, हिं, हिँ । गोवा—ङसि—३, १, ६ हिन्तो, उ, ओ त्तो, गोवा—हिन्तो, उ, ओ, १, २, ३९ ह्रस्व= गोवत्तो । भ्यस्=सुन्तो, हिन्तो उ, ओ, तो=गोवा सुन्तो ५ । ङे=ङस्=३, १, ९, १, १, १५=स्स=१, २, २९=गोवस्स । भ्यस्=आम्=३, १, १० ण णं=

गोवाण, णं । ङि—३, १, ६, १, १, १५, १, २, ३६= गोवम्मि । गोवासु, सुं । एवं वीसवा (=विश्वपा—२, ३, ६८, १, २, ७, ४, ३६, २, १, ४१) हा हा इत्यादि के रूप गोवावत् ।

[अथ—इदुदन्ताः पुंशब्दाः]

अक्लीबात्सो दलुप् । ३, १, २५ ।

कौ० इदुदन्तादनपुंसकात्सोर्दलुप् । मुणी । हे मुणी, हे मुणि ।

ही० अक्लीति । इदन्त तथा उदन्त क्लीब से पर सु को दित् लुप् होता है। मुणि—(=मुनि २, १, ३२)—सु= दलुप्=१, १, १४ दीर्घ=मुणी । हे मुणि—सु ४१ दलुप्—विकल्प, पक्षे ११ लुप्=हे मुणी, मुणि ।

पुंसो जसो डउ डओऽवोऽप्यलस्तु । ३, १, २१ ।

कौ० पुंलिङ्गादिदुदन्तात् परस्य जसो डितो—अउ, अओ, उदन्तात्तुऽवोऽपि वा स्युः । मुणउ मुणओ । पक्षे—

शसस्चणो । ३, १, २२ ।

कौ० उक्ताज्जश्शसोः स्थाने वा णो स्यात् । मुणिणो । पक्षे—दलुप् । मुणी । अमि—मुणिं । शसि—मुणिणो—मुणी ।

ही० पुंसइति । इदुदन्त पुंल्लिंग से पर जस् को डउ; डओ, उदन्त से डवो भी होते हैं, एवं जस्—शस् को णो विकल्प से होता है । मुणि—जस्=प्र० सू० डउ डओ टिलोप=मुणउ, ओ । पक्ष में २२ णो=मुणिणो पक्षे ३, १, ४, १, १, १४=मुणी । सम्बोधन में जसवत् । मुणि—अम्=३, मच् १, १, ४२=मुणिं । मुणिणो मुणी । जसवत् ।

टाया णाच् । ३, १, २४ ।

कौ० पुंक्लीबादिदुदन्तात्परस्याष्टाया णाच् स्यात् । मुणिणा ।

ही० टेति । इदुदन्त पुंनपुंसक से पर टा को णा आदेश होता है । मुणि—टा=प्र० सू० णा=मुणिणा ।

इदुतोदीर्घः । ३, १, १६ ।

कौ० भिस्सुपोः परयोरिदुतो नित्यं दीर्घः । मुणीहि, हिं, हिँ । क्वचिन्न । दिअ भूमिसु दाण जलोल्लिआइं । द्विज भूमिषु दान जलोल्लितानि । क्वचिद्वा । भ्रमिषु=भमिसु भमीसु ।

ही० इदुत इति । भिस् तथा सुप् से पूर्व इकारोकार प्रत्येक को दीर्घ होता है । मुणिभिस्=३, १, ५ हि, हिं, हिँ प्र० सू० दीर्घ=मुणी—हि ३ । कहीं नहीं तथा कहीं विकल्प अ. सं. टी. द्र. ।

क्लीबाच्च ङसिङसोः । ३, १, २३ ।

कौ० इदुदन्तात् क्लीबात्पुंसश्च परयोर्ङसिङसो र्वा णो स्यात् । मुणिणो । पक्षे मुणीहिन्तो, उ, ओ, णितो । भ्यसि—मुणीसुन्तो ५ । ङ ङसोः—मुणिणो मुणिस्स । भ्यसामोः—मुणीण, णं । ङौ= मुणिम्मि । सुपि—मुणीसु, सुं । एवं यतिगिरिकिरिकव्यादयः । एवमेव मुनिवत् साधु वायु भान्वादयः । केवलं जसि—साहवो वायवो भाणवो इति ।

ही० क्लीबेति । इदुदन्त पुंल्लिङ्ग तथा नपुंसक से पर ङसि—ङस् के स्थान में विकल्प से णो होता है । मुणि—ङसि=प्र० सू० वा. णो अणोत्तो ३, १, ८ निषेध से अदीर्घ=मुणिणो । पक्ष में ६ हिन्तो, उ, अ, सो ।

[इदूदन्ताः सा पुंशब्दाः]

ईदूतोः क्विपः । ३, १, ३६ ।

कौ० क्विबन्तयो रीदूदन्तयो ह्रस्वः स्यात् । ग्रामणी—ग्रामणि, खलपू,—खलपु—गामणी खलपू इत्यादि मुनिवत्, साहूवच्च ।

ही० ईदूतोरिति । क्विप्प्रत्ययान्त ईदन्त तथा ऊदन्त को ह्रस्व होता है । ग्रामणी—खलपू—सु=प्र. सू. ह्रस्व= २, ३, ६८ ग्रा=गा स्वा.=गामणी खलपू । शेष मुनिवत् तथा साधुवत् ।

[अथ ऋदन्ताः]

कौ० कत्तृ (=तृं २, ३, ६८, ७४)—सु इति—स्थिते—

सावात् । ३, १, ५० ।

कौ० सौ परे ऋतः स्थाने आत्वं वा स्यात् । कत्ता । पक्षे 'सुप्यारच्' । ३, १, ४५ । कत्तारो । जसि—कत्तारा ।

दी० सावर्दिति । सु से पूर्व ऋ को आ विकल्प से होता है । पक्ष में सुप् से पूर्व आर नित्य होता है । कत्तृ—सु= प्र० सू० तृ—तार ३, १, ११, १२ सु=लुप् ओङ्—टिलोप=कत्ता, कत्तारो । कत्तार—जस् = ३, १, ४, १, १, १४ कत्तारा ।

ऋतोङः । ३, १, ४३ ।

कौ० ऋदन्तात्संबुद्धेः सोर्वाङः स्यात् । हे कत्त । पक्षे हे कत्तारो हे कत्तार । जसि—हे कत्तारा । शेषं जिनवत् ।

दी० ऋतङइति । ऋदन्त से पर संबुद्धि सु से स्थान में ङ होता है । ङित्वात् टिलोप होता है । हे कत्तृ—सु=प्र० सू० अ (ङ) टिलोप=हे कत्त । पक्षे हे कत्तार—सु=३, १, ४१ ओङ्, ११ सुलुप्=हे कत्तारो हे कत्तार । ३, १, ४ जस्=द्लुप्=हे कत्तारा ।

धाऽस्वमाम्युत्संज्ञायां यथादर्शनम् । ३, १, ४६ ।

कौ० सु–अम्–आम् वर्जितेषु सुप्सु परतः ऋतः स्थाने उत्वं वा स्यात् । कत्तउ कत्तओ कत्तवो कत्तुणो कत्तू इत्यादि साधुवत् । एवं हर्तृ भर्तृ दातृ धातृ प्रभृतयो यौगिकाः शब्दाः । येतु रुढाः पितृ मातृ भ्रातृ जामातृआदयस्तत्र विशेषः । पिआ । पक्षे—

दी० वेति । सु, अम्—आम् वर्ज सुप् से पूर्व ऋ के स्थान में उकार विकल्प से होता है । कर्तृ—जस् प्र. सू. तृ= तु ३, १, २१ जस्=डउ, डओ, डवो, २२ णो, ४ द्लुप्=कत्तउ कत्तओ कत्तवो कत्तुणो कत्तू इत्यादि साधुवत् । इस तरह हर्तृ भर्तृ आदि यौगिक का रूप कर्तृवत् । संज्ञावाची पितृ मातृ आदि का रूप में विशेष—सौ—पितृ—सु=३, १, ५० तृ=त २, २, १ आ ३, १, ११ सु लुप्=पिआ । पक्ष में ।

अरत्संज्ञायाम् । ३, १, ४८ ।

कौ० संज्ञायां ऋतः स्थाने सुपि परेऽरःस्यात् । आरजापवादः । पिअरो । पिअरा पिअरं पिअरे पिअरा इत्यादि जिनवत् । संबुद्धौ तु—

दी० अरेति । संज्ञा में ऋ के स्थान में सुप् पर नित्य अर आदेश होता है । पितृ=सु=प्र. सू. तृ=तर २, २, १, त=लुप् ३, १, १२ सु=ओङ्=पिअरो । पिअर—जस्=३, १, ४ द्लुप्=पिअरा इत्यादि जिनवत् ।

डरं संज्ञायाम् । ३, १, ४४ ।

कौ० ऋदन्तात्परस्याः संबुद्धेः सो डरं वा स्यात् । हे पिअरं । पक्षे 'ऋतोङ' हे पिअ । 'अरत्' हे पिअरो हे पिअर । क्वचित्तु संज्ञायां यथादर्शनं धाव स्वमामीत्युक्तेः जश्शस्ङसिङस्सुपिउणो । रायां–पिउणा । भिसि—पिऊहि, हिं हिँ । सुपि—पिऊसु पिऊसुं । पक्षे पिअरेत्यादि । अत्र सप्तम्येकवचने नास्त्युत्वम् ।

दी० डरमिति । ऋदन्त से संबुद्धि सु के स्थान में डित् अरं आदेश विकल्प से होता है । हे पितृ—सु=प्र० सू० अरं टिलोप ३, २, १, त=लुप्=हे पिअरं । पक्षे ३, १, ४३, ङ हे पिअ । पक्षे तृ=अर—त=लुप् ३, १, ४१ सु=ओङ् हे पिअरो । पक्षे ११ सुलुप्=हे पिअर । संज्ञा में यथा दर्शन ऋ को उ विकल्प से होता है । अतः पिउ—जस् शस्—ङसि ङस्=३, १, २१, २२ णो 'अणोत्तो' निषेध से ५ दीर्घ=पिउणो । पिउ—टा=३, १, २४ णा— पिउणा । पिउ—भिस्=३, १, ५, १६ पिऊहि, हिं हिँ । पिऊसु, सुं । सप्तमी—एकवचन ङि में उत्व नहीं होता है ।

[अथ जन्त स्त्रीलिंग प्रकरणम्]

कौ० दया सु इति स्थितौ सोर्लुप् (३, १, ११)= दया । दया—जसिति स्थितौ—

वास्त्रियामुदोदौ । ३, १, २६ ।

कौ० स्त्रियांवर्तमाना न्नाम्नः परयोर्जश्शसोः स्थाने प्रत्येकमुदोदौ वा स्तः । दित्वात्पूर्व दीर्घः । दया उ दयाओ । पक्षे जश्शकेद्लुप् (३, १, ४) । दित्वं तु मत्यादौ सफलम् ।

दी० स्त्रीलिंग नाम से पर जश् तथा शस् के स्थान में प्रत्येक उद् तथा ओद् ये दो आदेश विकल्प से होते हैं । दया—जस्=प्र० सू० जस्=उ (द्) ओ (द्)=दया उ, ओ । पक्ष में ३, १, ४ द्लुप्=दया ।

एङापः क्वचिदोऽपि । ३, १, ४३ ।

कौ० आबन्तात्संबुद्धेः सोरेङ् वा स्यात् । ङित्वादि-

लोपः। हे दये हे दया। जसि पूर्ववत्। क्वचिदो-ऽपि—अम्मो भणामि। भणिए। अम्ब। भणामि भणितान्। आप् इति किम्। हे माउच्छो।

वी० एड़ापि इति। आवन्त से पर संबुद्धि सु के स्थान में विकल्प से एड् होता है। कहीं पर ओड् भी। यथा—अम्ब सु—प्र० सू० सु—ओड् टिलोप २, ३, ६८, ७४ म्ब=म्म=अम्मो।। हे दया–सु—प्र०सू० एड्–टिलोप—हे दये पक्षे हे दया। आपः क्यों ? हे मातृष्वसृ—सु १, ४, ३५ ऋ=अ तु—ति—२, २, १ त्, लुप् २, २, २० ष्वसृ=च्छा ३, १, ११ सु—लुप्=हे माउच्छा।

अमिह्रस्वः। ३, १, ३८।

कौ० स्त्रियां दीर्घान्तस्य नाम्नो ह्रस्वः स्यादामि परे दयं। शसि जस्वत्।

वी० अमीति। दीर्घान्त स्त्रीलिङ्ग नामको अम् परे ह्रस्व होता है। दया–अम्—प्र० सू० या—य ३, १, ६ अम्—म्=१, १, ४२ चन्द्र=दयं।

टाङिङसां चित्। ३, १, ३२।

कौ० स्त्रियां नाम्नः परेषामेषां स्थानेऽदादि देदो नित्यं स्युः। दित्वाद्दीर्घः।

वी० टाङीति। स्त्रीलिंग नाम से पर टादि के स्थान में नित्य अ–आ–इ–ए ये चार आदेश होते हैं।

आश्चातः। ३, १, ३३।

कौ० आदन्तात्परेषांङसिङसामात्वं न स्यात्। दयाअ दयाइ, दयाए। दयाहि, हिं, हिँ।

वी० आदिति। आदन्त नाम से पर ङसि टाङि—ङस को आ नहीं होता है। दया—टा=सू० सू—अ—इ–ए=दया अ, इ, ए।

ङसेरदादिदेदः। ३, १, ३१।

कौ० स्त्रियांनाम्नः परस्य ङसे रेते वा स्युः। दया-अ, इ, ए। पक्षे यथाप्राप्तम्। दयाहिन्तो, उ, ओ, दयात्तो। भ्यसि—दयासुन्तो ५। ङिङसोष्टावत्। आमि—दयाण—सुपि दयासु। एवं माला शाला-दयोऽपि। ।इत्याकारान्ताः।।

वी० ङसोरिति। स्त्रीलिंग नाम से पर ङसि के स्थान में अद्, आद्, इद् तथा एद् ये चार आदेश विकल्प से होते हैं। दया—ङसि—प्र० सू० ङसि=अ—आ, इ, ए, पक्षे ३, १, ६ हिन्तो उ, ओ, त्तो=दयाअ, दयाइ, दयाए। दयाहिन्तो, दयाउ, दयाओ। १, २, ३९ ह्रस्व=दयत्तो। दया–भ्यस्=३, १, ७ सुन्तो हिन्तो–उ—ओ—त्तो=दयासुन्तो ५। ङि ङस् में टावत। दया—आम् ३, १, १० ण=दयाण, णं। दयासु। इसी तरह माला माला आदि रूप करना।

[अथ इदुदन्ताः स्त्रीलिङ्ग शब्दाः]

अक्लीबात्सोर्द्लुप्। ३, १, २५।

कौ० इदुदन्तादक्लीबा सोर्द्लुप् स्यात्। गुत्ती जश्शसोः–गुत्तीउ, गुत्तीओ, गुत्ती। हे गुत्ती, हे गुत्ति। हे गुत्ती, उ—ओ। अमि—गुत्तिं। टा—ङि—ङस्सु–गुत्तीअ, गुत्तीआ, गुत्तीइ, गुत्तीए। भिसि—गुत्तीहि, हिं, हिँ। ङसौ—टावत्। पक्षे गुत्तीहिन्तो, उ, ओ गुत्तित्तो। भ्यसि—गुत्ती सुन्तो इत्यादि। ङिङसोष्टावत्। आमिगुत्तीण णं। गुत्तीसु, सुं। एवं मतितत्तिनति वृद्धयादयः। धेन्वादि गुप्तिवत्।

। इतीदन्ताः।

वी० अक्लीति। इदुदन्त अक्लीब नाम से पर सु को द्लुप् होता है। गुप्ति २, ३, ६६, ७४ प्ति=त्ति=गुत्ति—सु=प्र० सू० द्लुप् १, १, १४ दीर्घ=गुत्ती। गुत्ति—जस्—शस्=३, १, २८ उद्—ओद्, दीर्घ=गुत्तीउ, ओ। पक्षे ३, १, ४ द्लुप् दीर्घ=गुत्ती। हे गुत्ति—सु—३, १, ४१ वा—द्लुप १, १, १४ दीर्घ पक्षे ३, १, १, ११ लुप्=हे गुत्ती हे गुत्ति। जसिपूर्ववत् गुत्ति—अम्=३, १, ३, ११, ४२=गुत्तिं। गुत्ति—टा—ङि—ङस्=३, १, ३, १, १, १, १४=गुत्तीअ ४। गुत्ति—भिस्=३, १, ५, १६=गुत्तीहि, हिं, हिँ। गुत्ति—ङसि=३, १, ३० वा—अद्, आद, इद्, एद्—१, १, १४ दीर्घ=गुत्तीअ, आ, इ, ए। पक्षे ३, १, ६, ८ गुत्तिहिन्तो, उ, ओ, गुत्तित्तो। गुत्ति—भ्यस्=३, १, ७, ८ गुत्तीसुन्तो ५। गुत्ति—आम्=३, १, १० णद्, दीर्घ=गुत्तीण, णं। गुत्तीसु, ३, १, १६ दीर्घ=गुत्तीसु, सुं। एवं मति आदि का रूप जानना। धेनु आदि का गुप्तिवत्।

[अथ—ईदन्ताः ।]

ईत सोश्चात् । ३, १, ३९ ।

कौ० स्त्रियामीदन्तात्परेषां सुजश्शसामाद् वा स्यात् । लक्ष्मी-- लच्छीआ ।

सम्बुद्धेः । ३, १, ४० ।

कौ० संबुद्ध्यन्तस्येदुतो ह्रस्वः स्यात् । हे लच्छि । जश्शसोः—लच्छीआ, लच्छीउ, लच्छीओ, लच्छी । अमि लच्छिं । शेषं बुद्धिवत् । एवं नदी, गौरी इत्यादयोऽपि । ॥ इति-ईदन्ताः ।

दी० संबुद्धेरिति । संबुद्ध्यन्त के इत् तथा उत् का ह्रस्व होता है । हे लच्छी सु—प्र० सू० क्ष्मी—च्छि २, १, ११ सु—हे लच्छि । लच्छी—जस्—शस् = ३, १, २९ आ २८ उ, ओ ४ इलुप् = लच्छीआ, उ, ओ । लच्छी— अम—३, १, ३८ क्ष्मी = च्छि ३ अम् = मच् = १, १, ४२ चन्द्र = लच्छिं । बाकी बुद्धिवत् । लच्छीवत् नदी गौरी आदि का रूप होता है ।

[अथ—ऊदन्ताः ।]

कौ० वधू—२, १, ७ ध = ह ४२ व = व = वहू = सु = वहू । हे वहु । जश्शसोः—वहूउ वहूओ वहू । शेषं लच्छीवत् । इत्यूदन्ता ।

दी० वधू—२, १, ७ धू = हू ४२ व = व—वहू—सु = सुप् = वहू । हे वहू—सु ३, १, ४० हू = हु सु = सुप् हे वहु । वहू—जस् शस् = ३, १, २८, ४८ वहू उ, ओ, वहू । शेष लच्छीवत् । ॥ इति ऊदन्ताः ।

[अथ—ऋदन्ताः ।]

मातरि जनन्यामाच् । ३, १, ४६ ।

कौ० चि० । जननी वाचके मातृशब्दे ऋतः स्थाने सुप्याच् स्यात् । मातृ-सु-जसित्यादि—प्र०सू० तृ = ता २, २, १, ३ ता = या = माया, मायाउ मायाओ माया इत्यादि दयावत् । वाऽस्वमि (३, १, ४८) त्युत्वेतु धेनुवत्—माउउ इत्यादि । सुपीत्येव । मातृ देवः = माइदेवो ।

दी० मातरीति । जननीवाची मातृ शब्द में ऋ को आ होता है सुप् परे । मातृ—सु जस् आदि आने पर प्र० सू० तृ = ता = २, २, १, ३ या ३, १, ११ सु = लुप् = माया । ३, १, २८, ४ मायाउ, मायाओ माया—इत्यादि दयावत् । ३, १, ४८ = तृ = तु = २, २, १, १, २६ उ—माउ—जस् = माऊउ माऊओ इत्यादि धेनुवत् । मातृ—देव—सु १, ३, ३५ तृ = ति = इ ३, १, १३ सु = ओइ = माइदेवो । यहाँ पर में सुप न होने से आ नहीं होता है ।

देवतायामरान् । ३, १, ४७ ।

कौ० देवतार्थ के मातरि ऋतः अरान् सुपि । मायरा—मायराउ, मायराओ मायरा इत्यादि दयावत् । नमोमारायणं (नमोमातृभ्यः) इदुतौ मातरी (१, ३, ३५) तीत्वे तु माईणं ।

दी० देवतेति । देवता वाची मातृ में सुप् से पूर्व ऋ को अरा आदेश होता है । प्रक्रिया दयावत् ।

। इति स्त्रीलिङ्ग प्रकरणम् ।

स्वस्त्रादेर्डाच् । ३, १, ३७ ।

कौ० स्त्रियांस्वस्रादेः डाच् प्रत्ययः स्यात् । डित्वाट्टिलोपः । स्वसृ = ससा दयावत् । एवं दुहितृ ननान्द्रादयः ।

दी० स्वस्रेति । स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान स्वस्रादि से पर डाच् प्रत्यय होता है । स्वसृ—डाच्—टिलोप = २, ३, ६८ स्व = स ससा = रूपसिद्धि दयावत् । एवं दुहितृ = दुहिया—ननान्द = ननान्दा इत्यादि ।

[अथ—नपुंसक प्रकरणम्]

क्लीबाबचोऽसम्बुद्धे र्मञ्लुपौ । ३, १, २६ ।

कौ० अजन्तात्क्लीबात्परस्य सोः स्थाने मो ञानुबन्धो लुप् चेत्येतौ स्तः संबुद्धेस्तु न । बाहुलकान्नादन्तात्लुप् । ज्ञानं = णाणं । हे णाण । अक्लीबे इत्युक्तेरोङ् न ।

दी० क्लीबेति अजन्त नपुंसक से पर असंबुद्धि सु को म तथा ञ इत्संज्ञक लुप् होता है । ज्ञान—सु = २, १, ३२ न = ण ३, ३६ ज्ञ = ण प्र० सू० सु = म् = १, १, ४२ चन्द्र = णाणं । हे णाण—सु ३, १, १३ में अक्लीबे निषेध से ओङ् नहीं किन्तु ११ से लुप् = हे णाण । बाहुलकात् अदन्त से लुप् नहीं होता है ।

जश्शसोर्दिर्दिंणिदः । ३, १, २७ ।

कौ० क्लीबादजन्तो ज्जश्शसो रेते दितः स्युः दित्वा-त्पूर्वं दीर्घः । णाणाइं णाणाइँ णाणाणि । पुनस्तद्वत् । शेषं जिनवत् । एवं धन—वन- फलादयः ।

॥ इत्यदन्ताः ।

बी० अजन्त नपुंसक से पर जस् शस के स्थान में दित, इं इँ तथाणि ये तीन आदेश होते हैं । णाण—जस्—शस्=प्र० सू० इं इँ, णि १, १, १४ दीर्घ=णाणाइं, णि । णाण—अम्—३, १, ३ म=चन्द्र=णाणं । णाण—शस्=जस्वत् । शेष जिनवत् । इसी तरह धन वन फलादि का रूप होता है । ॥इत्यदन्ताः ।

[अथ—इदुदन्ताः]

कौ० दहि, महु (=दधि, मधु २, १. ७)—सु=दहिं दहिँ । हे दहि । महुं महुँ । हे महु । जश्शसोः— दहीइं दहीइँ दहीणि महूइं महूइँ महूणि । अमि— दहिं महुं । शेषं मुनिवत् साधुवच्च । दहि महु इति सु सिद्ध संस्कृतात् । इतिवुदन्ताः ।

बी० दहि—महु—सु=३, १, २६, म्—७ लुप् १, १, ४२ चन्द्र, दहिं महुं १३ दहिँ महुँ । दहि महु रूप तो सिद्ध संस्कृत दधि मधु से होता है । हे दहि—महु—सु=३, १, ११ सु=लुप् हे दहि, महु । दहि—महु—जस्=शस्= ३, १, २७, १, १, १४ दहीइं, इँ णि । महूइं, इँ णि । दहि—महु—अम्=३, १, ३ म्=४२ चन्द्र=दहिं महुं । शेष मुनि तथा साधुवत् ।

[अथ—ऋदन्ता नपुंसकलिंगाः]

कौ० कर्तृ—कत्तारं, कत्ताराइं कत्ताराइँ कत्ताराणि । कत्तूइं कत्तूइँ कत्तूणि । हे कत्तार । हे कत्ताराइं, इँ, णि । शेषं पुंवत् ।

बी० कत्तृ—सु—३, १, ४५ तृ=तार २६ सु=म्= चन्द्र=कत्तारं । २७ जस्—शस्=दिं—दिँ णिद् १, १, १४ दीर्घ=कत्ताराइं, इँ, णि । ३, १, ४६ ऋ= उ=कत्तूइं, इँ, णि । हे कत्तार—सु=३, १, ११ लुप्=हे कत्तार । शेष पुल्लिंगवत् । । इति ऋदन्ताः ।

[अथ सुबन्ते विशेष शब्दाः]

कौ० हलन्तानां 'हलोऽन्त्यस्याशदुदी' (१, १, २८) इत्यन्त्यहलोलुप्यन्स्तत्वेन—रूपाण्युक्तप्रायाण्येव । तत्र विशेषा उच्यन्ते ।

राज्ञोऽनः । ३, १, ५२ ।

कौ० सौ परे आत्वं वा स्यात् । राया । पक्षे- -

बी० राज्ञ इति । सु से पूर्व राजन् सम्बन्धी अन् को आ विकल्प से होता है । राजन्— सु=प्र० सू० अन्=आ= २, २, १, ३ जा=या ३, १, ११ सु=लुप्=राया ।

आणोऽनः पुंसि राजवत्पक्षे । ३, १, ५६ ।

कौ० अन्नन्ते पुंस्यनः स्थाने आण आदेशो वा स्यात् पक्ष यथादर्शनं राजवत्कार्यं च । आणादेशे चादन्त-त्वाद् जिनवत् । 'चिद्विसर्गस्य—चाऽक्लीब (३, १, १३) इत्यादि कार्यं स्यात् । पक्षे 'राज्ञोऽनः' 'जश्श-स्ङसिङसांणोद्' 'टाया णा' (३, १, ५१, ५२, ५३) इति सूत्र त्रयीप्रवर्तते । 'जानो णोणा' 'अमामेण' 'भिस्भ्यसा' 'टाङसिङ्' (३, १, ५४—५७) इति चतुष्टयी आत्मन्नित्या दौ जनोऽभावान्नप्रवर्तते । रायाणो । पक्षेऽन्त्यलुपि—रायो ।

बी० अण इति । अन्नन्त पुल्लिंग में अन् के स्थान में आण आदेश विकल्प से होता है पक्ष में यथादर्शन राजवत्कार्य होता है । आणादेश पक्ष में अदन्त होने से= जिन शब्दवत् कार्य होता है । पक्ष में ३, १, ५१-५२- ५३ तीनों सूत्र लगते हैं ५४, ५५, ५६, ५७ चारों सूत्र जन के अभाव से नहीं लगते हैं । राजन्=प्र० सू० अन्= आण २, २, १ जा=या=रायाण—सु=३, १, १३ सु=ओइ=रायाणो इत्यादि सर्व रूप जिनवत् कर लेना । पक्ष में रायन् (=राजन्)—सु १, १, २८ न्=लुप्— सु=ओइ=रायो । हे राय—सु ३, १, ४१ वा—ओइ, पक्षे ११ सुलुप्=हे रायो, हे राय ।

जश्शसुसिङसां णोद् । ३, १, ५३ ।

कौ० राज्ञः परेषामेषां णोद्वा स्यात् ।

बी० जसिति । राजन् से पर जस्—ङसि,—ङस् के स्थान में दित् णो आदेश होता है । दित्वात् १, १, १४ पूर्वदीर्घ होता है ।

अनोणोऽङिष्वित् । ३, १, ५४ ।

कौ० राज्ञो जन.स्थाने इत्वं वा स्यादेषु परेषु । राइणो । तपरत्वान्न दीर्घः । रायाणो । रायाणा । राया । ४ ।

वी० जन इति । रा—णा—ङि से पूर्व राजन् के जन को विकल्प से इ होता है । राजन्—जस्=प्र० सू० णोद् जन=इ तपरत्वाद् 'तपरस्तत्कालस्य' (पा० १, १, ७०) अदीर्घ=राइणो । इत्वाभावे १, १, १४ दीर्घ=राया (=जा) णो । णोत्वाभावे आणेऽन्त्यलुपि—रायाणा राया इत्यादि जिनवत् ।

अमामेणं । ३, १, ५५ ।

कौ० अमाम्भ्यां सह राज्ञो जनः स्थाने इणं वा स्यात् । राइणं । रायाणं । रायं । ३ । शसि—राइणो, रायाणो, रायाणे, रायाणा, राए, राया । ६ ।

वी० अमेति । अम्—आम्—सहित राजन् के जन् के स्थान में विकल्प से इणं आदेश होता है । राजन्=अम्=प्र०सू० जन्=इणं=राइणं । पक्षे—रायाणं रायं जिनवत् । राजन्—शस=जसवत् राइणो, रायाणो । पक्षे ३, १, ४, १९ रायाणा, णे । राया, ए/६ रूप ।

टाया णा । ३, १, ५७ ।

कौ० राज्ञः परस्याष्टायाः स्थाने णा वा स्यात् ।

वी० टाया इति । राजन् से पर टा स्थान में णा वि० से होता है ।

टाङसिङसां—णाणोणोऽङण् । ३, १, ५८ ।

कौ० टाङसिङसा देश योर्णाणो इत्यनयोः परयो राज्ञो जनो वाऽण्स्यात् । ङित्वाट्टिलोपः । रण्णा । राइणा । रायणा । रायाणेण, णं राएण, णं । सप्त ।

वी० टेति । टादेश—णा—ङसिङसादेश—णो से पूर्व राजन् के जन् के स्थान में ङित् अण् आदेश विकल्प से होता है । राजन्—टा=प्र० सू० णा—ङण्—टिलोप्=रण्णा । पक्षे ३, १, ५४ जन्=इ=राइणा । इत्वाभावे १, १, २८, न्=लुप्=राय (=ज) णा । णत्वाभावे जिनवत् =रायाणेण राएण ।

भिस्भ्यसाम्सुप्स्वीत् । ३, १, ५६ ।

कौ० राज्ञो जनो भिसादि ष्वी द्वा स्यात् । राईहिं राईहिँ । पक्षे—रायाणेहि ३, एएहि ३=रूपाणि । ङसौ—ङणि—रण्णो । इत्वे—राइणो । उभयाभावे-रायाणो । णोत्वाभावे—रायाणा, रायेत्यादि जिनवत्—१२=१५ । भ्यसि—राईसुन्तो ५ । पक्षे रायाणेहि—६ राएहि—६=२३ । ङेङसोः—रण्णो, राइणो रायाणो रायाणस्स रायस्स । ५ । भ्यसामोः—राइणं । राईण, णं । रायाणाण, णं । रायाण, णं—७ । ङौ—राइम्मि । रायाणे, रायाणम्मि । [राए रायम्मि आर्षे—राइंसि, रायांसि रायाणंसि] । सुपि—राईसु, सुं । रायाणेसु, सुं । एएसु, सुं ।

वी० भिसिति । भिस्—भ्यस्—आम्—सुप् से पूर्व राजन् के जन् के स्थान में विकल्प से ईकार होता है । राजन्—भिस्=प्र० सू० जन्=ई, पक्षे ३, १, १९ जन्=आण, पक्षे १, १, २८ न्—लुप् ३, १, ५ भिस्=हि=हिं—हिँ=राई हि, हिं, हिँ—३ । राया (=जा ३, २, १, ३) णे=(ण ३, १, १६) हि, हिं, हिँ—३ । राएहि, हिं, हिँ—३,=९ । राजन्—ङसि=३, १, ५३ ङसि=णोद् ५८ जन्=ङण्, ५४ इ=रण्णो राइणो । पक्षे न्—लुप्—दीर्घ, जा=या=रायाणो । णोत्वाभावे ३, १, ६, ८, १५, १६ रायाणाहिन्तो ६ आणाभावे न लुपि रायाहिन्तो ६ जिनवत् । =१५ रूप होते हैं । राजन्—भ्यस् प्र० सू० जन्=ई=३, १, ७ सुन्तो आदि=राईसुन्तो, राईहिन्तो, राईउ, राईओ १, २, ३९ ह्रस्व=राइत्तो ५ । ईत्वाभावे आण तथा अन्त्यलुप् पक्ष में जिनशब्दवत् नौ नौ रूप कुल २३ रूप होते हैं । राजन्—ङस्=ङसिवत्=रण्णो राइणो रायाणो । जिनवत्=रायाणस्स रायस्स । राजन्—आम्=प्र० सू० जन्—ई ३, १, ११ आम्=णद् १, १, ४७ ण=णं=राईण राईणं । पक्षे जिनवत् रायाणाण रायाण । राजन्—ङि=३, १, ५५ जन्=इ ६ मिद्=१, १, १५ म्मि=राइम्मि । पक्षे जिनवत् रायाणो, णम्मि, राए रायम्मि । आर्षे—३, १, १० राइंसि रायाणंसि रायंसि । राजन्—सुप्=प्र० सू० ई १, १, ४७ वा० चन्द्र=राईसु राईसुं । पक्षे जिनवत् रायाणेसु, सुं । राएसु, सुं ।

। इति राजन् शब्दः ।

[अथ—अन्नन्त पुल्लिंग आत्मन् (अप्पाण—अप्प (न) शब्दः]

कौ० आत्मन्—'स्को ह्रस्व' १, २, ३६। 'पो भस्मात्मनि' 'द्वित्वमदीर्घ' (३, १, ४३, ७४)—अप्पन् शब्देन आणादेशे अप्पाणो अप्पाणा इत्यादि जिनवत्। पक्षे राजवद्भावे जनोऽभावात् 'जनोणोणेत्यादि ...' ... 'राज्ञोऽज' इत्यादि त्रिसूत्री प्रवृत्या सर्वं कार्यं राजवद् भवति। केवलमियान् विशेषष्टायाम्—

आत्मनष्टाया णिआ णइआ। ३, १, ६०।

कौ० एतावादेशौ वास्तः। अप्पणिआ अप्पणइआ। पक्षे अप्पणा, अप्पेण अप्पेणं। आणादेशे—अप्पाणेण अप्पाणेणं। शेषं सर्वत्र रायाण—रायवत् कार्यं सूहनीयम्। एवं ब्रह्मन् (बम्ह बम्हाण) मूर्द्धन् (मुद्ध मुद्धाण) अध्वन्—(अद्ध अद्धाण) तक्षन् (तक्खन्, तक्खाण) अक्षन् (अच्छ—उच्छाण) पूषन्—(पूस—पूसाण) ग्रावन्—(गाव गावाण) युवन्—(जुव जुवाण) सुकर्मन् (सुकम्म—सुकम्माण) इत्यादयोऽप्यात्मन्—(अप्प—अप्पाण) वत्। विशेषः प्राकृत कौमुद्यां द्रष्टव्यः। । इत्यात्मन् शब्दः।

बी० आत्मेति। आत्मन्=३, १, ५६ अन्=वा—आण पक्षे न्=१, १, २८ लुप् १, २, ३६=आ=अ ३, १, ४३. ७४ त=प्प=अप्पाण—का रायाणवत् रूप होता है। आणादेश भाव पक्ष में राजवद् भाव होने से ३, १, ५५-५८ इन चारों को छोड़कर ५२, ५३, ५४ इन तीनों सूत्र की प्रवृत्ति से राजवत्सर्वं कार्य होता है। केवल टा में इतना विशेष होता है कि—आत्मन् से पर टा को णिआ तथा णइआ ये दो आदेश विकल्प से होते हैं। आत्मन् (अप्प)—टा=प्र० सू० णिअ—णइआ=अप्पणिआ, अप्पणइआ। पक्ष में तथा सभी विभक्तियों में अप्प का राय (=राजन्) वत् अप्पाण का रायाण (=राजन) वत् रूप होता है। इसी तरह ब्रह्मन् मूर्द्धन् इत्यादि का रूप णिआ णइआ को छोड़कर आत्मन् शब्दवत् होता है। विशेष प्राकृत कौमुदी में देखें।

[अथ—हलन्त स्त्रीलिंग विशेष शब्दा]

कौ० स्त्रियामाजविद्युतः। १, १, ३३। दृषद्—दिसआ। दयावत्। विद्युत्=विज्जू। वचनादित्वेन वा पुंस्त्वात्साधुवत् स्वतः स्त्रीत्वा धेनुश्च। (एवं सरिद् संपद् प्रतिपद् इत्यादि)।

। इति स्त्रीलिंग विशेष शब्दाः।

बी० स्त्रियामिति। दृषद्—सु=१, १, २८ से प्राप्त लुप् को ३३ से बांधकर द्=आ २२ अपदे असंधि ३, २६ दृ=दि ४, ३६ ष=स ३, १, १२ सुलुप्=दिसआ। एवं सरित्—सरिआ, या। संपद्—संपआ—या। प्रतिपद्—पाडिवआ, या इत्यादि। १, २, ६ प्र०=वा=प्रा २, ३, ६८ र लुप् २, १, १८, ४१ तिप्=डिव बाहुलकात् २, २, ३ आ=या=पाडिवया पडिवया॥ १, १, १८ वा पुंस्त्व, तथा स्वतः स्त्रीत्व से साधुवत् एवं धेनुवत् रूप विद्युत् का होता है—विज्जू १, १, ३३ द्र०।

। इति स्त्री वि० श०।

[अथ—हलन्त नपुंसक लिंग विशेष शब्दा]

कौ० दामन्—दामं दामाइं, इँ, णि इत्यादि ज्ञानवत् पुंसीत्युक्तेरस्य न—आणादेश राजवद्भावौ। एवं नभस् शिरसित्यादयः। चक्षुषो लोचनार्थत्वाद्वा पुंस्त्वे साधुवत्। पक्षे मधुवच्च।

इति हलन्त नपुंसक विशेष शब्दाः।

बी० दामन्—सु=१, १, १७ अदामादिनिषेध से नान्त होने पर भी पुंस्त्व नहीं है। १, १, २८ न्—लुप् ३, १, २६ सु=म्=१, १, ४२ चन्द्र=दामं। ३, १, २७ जस्=शस=इं, इँ, णि १, १, १४ पूर्वदीर्घ=दामाइं, इँ, णि—३। शेष ज्ञानवत्। ३, १, ५६ में पुंसि कहने से आणादेश एवं राजवद्भाव नहीं होता है। एवं नभस् आदि का रूप अन्त्य लुप् करके ज्ञानवत्। १, १, १८ वा पुंस्त्व चक्षुष्=१, १, ८ ष्—लुप् ३, १, ६, ७५ क्ष=क्ख २५ स्वा० चक्खू इत्यादि साधुवत्। २६ सु=म् ७ लुप्=चक्खुं चक्खुं। । इत्यामधुवत्।

[अथ—सर्वनाम प्रकरणम्]

कौ० सर्व—सव्वो।

सर्वादेरतो जसो डेच् । ३, १, ६१ ।

कौ० अदन्तात्सर्वादेर्जसो डेच् स्यात् । डित्वा-ट्टिलोपः । चित्वान्नित्यम् । सव्वे । अत इत्येव । सव्वाओ रिद्धीओ ।

दी० सर्वेति । सर्व = २, ३, ६८, ७४ र्व = व्व = सव्व—सु = ३, १, १४ ओड्—टिलोप = सव्वो । अदन्त सर्वादि से पर जस् के स्थान में नित्य डे होता है । डित्वात् टिलोप होता है । सव्व—जस् = प्र० सू० डे—टि—लोप = सव्वे । अतः कथन से आदन्त सव्वा—जस् में प्र० सू० की अप्रवृत्ति ३, १, २८ वा० उ—ओ पक्षे द्लु ४ द्लुप् = सव्वाउ, ओ, सव्वा । १, ३, ४४ ऋ = रिद्धि—जस् = रिद्धि उ, ओ, ई ।

डेसिमामः । ३, १, ६४ ।

कौ० अदन्तात्सर्वादेराम: स्थाने डेसिमादेशो वा स्यात् । बाहुलकात् स्त्रियामपि सव्वेसि सव्वाण, णं सर्वेषां सर्वासां चेत्यर्थः ।

दी० डेसिमिति । अदन्त सर्वादि से पर आम के स्थान में विकल्प से डेसि आदेश होता है । बाहुलकात् स्त्रीलिंग में भी । सव्व—, सव्वा—आम्—प्र०सू० डेसि—टिलोप = सव्वेसि । पक्ष में ३, १, ११ णद १, १, १४ पूर्वदीर्घ, ४७ वा० चन्द्र = सव्वाण सव्वाणं ।

ङेर्म्मिस्सित्थाः । ३, १, ६२ ।

कौ० अदन्त सर्वादेः परस्य ङेः स्थाने नित्यमेतेत्रयः स्युः । सर्वस्मिन् = सव्वम्मि, सव्वस्सिं सव्वत्थ । आर्षे —सव्वंसि । अत इत्येव । अमुम्मि ।

दी० अदन्त सर्वादि से पर ङि के स्थान में ये म्मि—स्सि—त्थ तीन आदेश नित्य होते हैं । सव्व—ङि = सव्वम्मि स्सि, त्थ । ३, १, १० ङि = सि = सव्वंसि । अदन्तत्वा-भाव से अदस्—ङि = ३, १, ८७ अमु, ३, १, १, १५ ङि = म्मि = अमुम्मि ।

हिमनेतादिदन्तो वा कियत्तदश्चस्त्रियामपि

। ३, १, ६३ ।

कौ० एतदिदवर्जं सर्वादेरतो ङे हिं वा स्यात् कियत्तदश्चस्त्रियामपि । सव्वहिं । पक्षे उक्तमेव । शेषं जिनवत् । एवं विस्सा (वीसा) २, ३, ६८, १, २, ७ । दयः । इति सर्व शब्दः ।

दी० हिमिति । एतद्—इदम्—वर्जं—अदन्त सर्वादि से पर ङि को विकल्प से हिं आदेश होता है । सव्व—ङि = हिं पक्ष में प्र० सू० म्मि, स्सि, त्थ = सव्वहिं, म्मि, स्सि, त्थ, । कियत्तद् से स्त्रीलिंग में उदा० तत्रैव द्र० ।

। इति सर्व शब्दः ।

[अथ—यच्छब्दः ।]

यत्तदेतदिदंकिम्भ्योडिणा टायाः । ३, १, ७२ ।

कौ० एभ्योऽदन्तेभ्य स्टाया डिणा वा स्यात् । डित्वा ट्टिलोपः । येन = जिणा, जेण जेणं ।

दी० यदिति । अदन्त यद्—तद्—एतद्—इदम्—किम् से पर टा के स्थान में विकल्प से डिणा आदेश होता है । यद् = १, १, २८ द्—लुप् ४, २८ य = ज—टा = प्र० सू० डिणा, पक्षे ३, १, १७ डेणच्—टिलोप ४७ वा—ण—णं = जिणा । जेण, जेणं ।

म्हा ङसेः । ३, १, ६९ ।

कौ० यत्तत्किम्भ्योऽदन्तेभ्योङसे म्हा वा स्यात् । यस्मात् = जम्हा । पक्षे जाहीत्यादि ।

दी० म्हेति । अदन्त यत्तत्किम् से पर ङसि के स्थान में विकल्प से म्हा आदेश होता है । यद् = ज—ङसि = प्र० सू० म्हा = जम्हा । पक्षे ३, १, ६, ८, १५, १६ जा, जाहि, हिंतो, उ, ओ, जत्तो ।

यत्तत्किम्भ्योङसः । ३, १, ६६ ।

कौ० एभ्योऽदन्तेभ्योङस् सद्दा स्यात् । दित्वात्पूर्वं दीर्घः । सठोऽपवादः । पक्षे सोऽपि । यस्य = जास जस्स । बाहुलकादादन्तेभ्योऽपि । यस्याः = जास ।

दी० यदिति । अदन्त यद्—तद्—किम् से पर ङस के स्थान में विकल्प से सद् होता है । यद्—ज—ङस् = प्र० सू० सद् १, १, १४ दीर्घः—पक्षे ३, १, ६, २, १, १५ स्स = जास, जस्स । बाहुलकात्—जा—ङस् = जास । पक्षे सव्वावत् ।

काले इंरिआ हेह्लादः । ३, १, ६८ ।

कौ० कालेऽर्थे यत्तत्किम्भ्योङेःस्थाने इआ दिलौ हे, ला इत्येतौ चैते त्रयो वा स्युः । हिं म्मिं स्सिं त्थ नाम प वादः । पक्षे तेऽपि । यस्मिन्=जइआ जाहे जाला । पक्षे देशादौच जहिं, जम्मिं जस्सि जत्थ । आर्षे—जंसि । शेषं सर्ववत् । । इति यच्छब्दः ।

दी० काल इति । काल अर्थ में यत्तत्किम् से पर ङि के स्थान में इआ दित् हे—ला ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं । यद्—अ—ङि=प्र० सू० इआ, हेव्—लाद् १, १, १४ दीर्घ=जइआ जाहे जाला । पक्षे तथा देशादि अर्थ में जहिं म्मि, स्सि, त्थ । ३, १, १० सि=जंसि । शेष सर्व विभक्तियों में सर्ववत् । । इति यच्छब्दः ।

तच्छब्दे—सौ तवश्चाक्लोवेतः सन् । ३, १, ८७ ।

कौ० सौ परे तदेतदोस्तः सः स्यान्नित्यं नतु नपुंसके ।

दी० साविति । सु से पूर्व तद्—एतद्—के त को स नित्य होता है । नपुंसक नहीं ।

ओडतस्तदेत दोर्वा । ३, १, १३ ।

कौ० अदन्ताभ्यामाभ्यां सो रोड् वा स्यात् । सो जिणो । पक्षे स जिणो ।

दी० ओडिति । अदन्त तद्—एतद् से पर सु को ओड् विकल्प से होता है । तद्—त—सु प्र० सू० त=स, सु =वा—ओड् पक्षे ३, १, १२ लुप्=सो स (जिणो) ।

सुपि क्वचित्तदो णः । ३, १, ७३ ।

कौ० क्वचिल्लक्ष्यानुसारेण तदोणः स्याद्वा सुपि । णं सोअइ अ रहुवई । तं शोचते च रघुपतिः । स्त्रियामपि । इत्युन्नामि—अमुही णं ति अ डा । णेण भणियं । तेन भणितम् । भणिअ च णाए । तयेत्यर्थः । णेहिं णाहिं कयं । तेन ताभिर्वेत्यर्थः ।

दी० सुपिति । लक्ष्यानुसार सुप् से पूर्व तद् के स्थान में ण विकल्प से होता है । तद्—अम्—टा—भिस्=प्र० सू० तद्=ण ३, १, ३, ५, १७, १६ णं, णेण, णेहिं । स्त्रीलिङ्ग में भी प्रक्रिया तत्र द्र० । तद्—टा=३, १, ७२ =णिणा ।

ओस्तवः । ३, १, ७० ।

कौ० तदोङसेर्डो वा स्यात् । तस्मात्=तो तम्हा । पक्षे ताताहीत्यादि । यत्तत्किमोङसः । ३, १, ६६ । तास तस्स ।

दी० ओइति । तद् से पर ङसि को डो विकल्प से होता है । तद् ङसि—प्र० सू० डो—टिलोप=३, १, ६६ म्हा, पक्षे ३, १, ६, ८, १५, १६ तो, तम्हा, ताताहो, हिन्तो, उ, ओ, त्तो । त—ङस्=६६ सद् १, १, १४ दीर्घ= तास, ३, १, ६, १, १, १५ तस्स ।

तदेतदिदमांवाङ साम्यां से सिमौ । ३, १, ८३ ।

कौ० एषां स्थाने ङसा सह से आमा सह सि वा स्यात् से बम्भचेरं । तस्य तस्यावा ब्रह्मचर्यम् । सि चत्तारि झाणाणि । तेषां तासां वा चत्वारि ध्यानानि । कश्चिदामपितदिदमो से— आदेशं मन्यते ।

दी० तदिति । तद्—एतद्—इदम्—को ङस् के साथ से आम के साथ सि विकल्प से होता है । तद्—ङस्=सो से तद्—आम्=सि ।

तत्किमः सद् । ३, १, ६५ ।

कौ० आभ्यामामः सद्वा स्यात् । दित्वाद्दीर्घः । तेषां=तास तेसि सि ताण ताणं । ङौ—काले —तदा =तइआ, ताहे ताला । ताला जाअन्ति गुणा जाला सहि एहिं घेप्पन्ति तदा जायन्ते गुणा यदा सहृदयैर्गृह्यन्ते । पक्षे देशादौच—तहिं, म्मि, स्सि त्थ । आर्षे तंसि । शेषं सर्ववत् ।

। इति तच्छब्दः ।

दी० तद्=किम् से पर आम के स्थान में सद् विकल्प से होता है । दीत्वाद्दीर्घ होता है । तद्—त आम्=प्र० सू० आम्=वा—सद् १, १, १४ दीर्घ पक्षे ३, १, ८३ सि, ६४ डेसि, ११ णद—दीर्घ, पक्ष=तास, सि तेसि, ताण, ताणं । काल में तद्—ङि=३, १, ६८ तइआ ताहे, ताला । पक्षे तथा देशादि में ६३ तहि ६२ तम्मि, स्सि, त्थ । १० तंसि । **। इति तच्छब्दः ।**

एतदः सुनेणमिणमेसाङसिनात्वेत्तोएत्ताहे । ३,१,८४।

कौ० एतदः सुना सहैतदः स्थाने इमे वा स्युः । ङसिना तु सहैतो वास्तः । इणं इणमो एस वा जिणो

पक्षे एस, एसो । टायां—तिणा, तेण तेणं । एतस्मात्=एत्तो एताहे । पक्षे—एआ एआहि, हिन्तो । ङ्ङसोः—से एअस्स । भ्यसामोः सिं, ए एसिं, एआण, णं । एसादेशः स्त्री नपुंसकार्थः ।

टी० एतेति । सुसहित एतद् के स्थान में इणं—इणमो—एस ये तीन ङसि के साथ एत्तो, एताहे ये दो आदेश होते हैं विकल्प से । स्त्रीलिंग—नपुंसक के लिये है पुल्लिंग में वैकल्पिक प्रयोग सिद्ध है । एतद्- सु=प्र० सू० इणं, इणमो, एस, पक्षे २, १, २८ द्—लुप् ३, १, ८६ त=स १३ सु=वा—ओह्—टिलोप पक्षे ११ सुलुप्=एसो एस । एतद्—टा=३, १, ७२, १७ ङिणा—ङेणा=टिलोप २, २, १, त=लुप् १, १, २६ असंधि=एइणा । एएण ४७ एएणं । एतद्— ङसि=प्र० सू० एत्तो, एताहे । पक्षे जिनवत् । एतद्—ङस्=आम्=क्रम से ३, १, ८३ से, सिं । पक्षे ६ ङस् स्स (=सठ् १, १, १५) ६४ आम्=ङेसि, ६ पद्=दीर्घ=त्—लुप् असंधि=एअस्स । एएसिं एआण, एआण (=ण १, १, ४७) ।

अयम्मोयम्मी म्मिनैतदश्च । ३, १, ९७ ।

कौ० ङ्यादेशेनम्मिना सहैतददसोः स्थाने प्रत्येकमिमौ वा स्तः । अयम्मि । इयम्मि । पक्षे एआम्मि एस्सि एत्थ । आर्षे—एअंसि ।

टी० अयम्मीति । ङ्यादेशम्मि सहित एतद्—अदस् प्रत्येक के स्थान में अयम्मि तथा इयम्मि ये दो आदेश होते हैं । एतद्—ङि=३, १, ६२ म्मि प्र० सू० अयम्मि, इयम्मि । पक्षे एअ (=एतद्—२, २, १, १, १, २, ६, २८) ङि=३, १, ६२ म्मि, स्सि, त्थ=एआम्मि, एअस्सि । एअत्थ=एत्थ=त्थेन=एत्थ । ३, १, १० एअंसि । शेष रूप सर्ववत् ।

एत्थच्त्थेन । ३, १, ८५ ।

कौ० ङ्यादेशेनत्थेन सहैतदः स्थाने नित्यमेत्थ आदेशः स्यात् । एत्थ । शेषं सर्वं सर्ववत् ।

। इति पु० एतच्छब्दः ।

टी० ङ्यादेशत्थ सहित एतद् के स्थान में एत्थ आदेश नित्य होता है । एअ—त्थ=एत्थ । शेष सर्ववत् ।

पुंस्त्रियामयमिमिया सुना वा । ३, १, ७६ ।

कौ० सुना सहेदमः स्थाने पुंस्ययं स्त्रियामियं चादेशौ वा स्तः । अयं तित्थयरो । पक्षे—

टी० पुमिति । सुसहित इदम् के स्थान में पुल्लिंग अयम् तथा स्त्रीलिंग में इयं आदेश विकल्प से होते हैं । इदम्—सु=अयं ।

इम इदमः । ३, १, ७५ ।

कौ० सुपि परे इदमः स्थाने इमः स्यान्नित्यम् । इमो-गणहरो ।

टी० इमइति । सुप् से पूर्व इदम् के स्थान में इम आदेश होता है । इदम्—सु=प्र० सु० इदम्=इम ३, १, १४ सु=ओह्=इमो ।

अम्ङिभ्यामिणमिहौ । ३, १, ७८ ।

कौ० इदमः स्थानेऽमासहेणंङिना च सहेह चादेशौ वा स्तः । इण इमं चउव्विहं कसायं चयसु ।

टी० अमिति । इदम् को अम् के साथ इणं तथा ङि के साथ इह आदेश विकल्प से होता है । इदम्—अम्=प्र० सु—इणं । पक्षे इदम्=इम ३, १, ३ अम्=मं=चन्द्र=इमं ।

अम्शस्टाभिस्सु णः । ३, १, ८० ।

कौ० इदमो वा णः स्यादेषु । णं इण इमं मुणिं पेच्छ । शसि-णे णा इमे इमा । णिणा इमिणा णेण इमेण । भिसि—णेहि इमेहि ।

टी० अम्शासिति । अम्—शस्—टा—भिस् से पूर्व इदम् के स्थान में ण होता है । विकल्प से इदम्—अम्=प्र० सू० इदम्=ण, पक्षे २, १, ७५ इम ३, अम्=म्=(चन्द्र १, १, ४२) णं, इमं । ४, शस्=द्लुप् १८ वा=ए=णे, इमे १, १, १४ दीर्घ=णा इमा । ३, १, ७२ टा=ङिण, १७ ङेण=टिलोप=णेण, इमेण । ५, भिस्=हि, हिं, हिँ १९ ए=णेहि हिं, हिँ, इमेहि, हिं, हिँ ।

हिस्सास्सि सुप्स्वत् । ३, १, ७७ ।

कौ० एषु परेस्विदमोऽद्वा स्यात् । हिश्चात्रभिस्ङसिभ्यसादेशः । भिस्सुपिचित् । ३, १, १९ । इत्यत्वे—एहि । ङसौ—अत्वे दीर्घे च—आहि,

इमाहि । भ्यसि—एहि, आहि इमेहि, इमाहि । ङसि—से अस्स इमस्स । आमिसि इमेसि इमाण, णं ।

दी० हिस्सेति । भिस्ङसिभ्यसादेश—हिं, ङसादेश—स्स, भ्यासादेशसि सुप् से पूर्व इदम् को विकल्प से अत होता है । इदम्—हि (=भिस्—ङसि=भ्यस् ३, १, ५, १६) प्र० सू० इदम्=अ पक्षे ७५ इम १९ अ=ए=एहि, इमेहि । ८ दीर्घ=आहि, इमाहि । १८ वा एत् पक्षे दीर्घ=एहि आहि इमेहि, इमाहि । इदम्—ङस्=८३ से । ९ ङस्=स्स (=सद् १, १, १५) प्र० सू० इदम्=अ, पक्षे—७५ इम=अस्स, इमस्स । इदम्—आम्=८३ सि, पक्षे—७५ इम ६४ ङेसि पक्षे ११ णद् (१, १, १४) दीर्घ, ४७ चन्द्र)=इमेसि, इमाण, णं ।

नत्थः । ३, १, ७९ ।

कौ० ङेर्म्मिस्सित्था (३, १, ६२) इति प्राप्तस्त्थो-इदमोङेर्नस्यात् । इह, अस्सि, इमम्मि, इमस्सि (आर्षे इमंसि) सुपि—एसु, सुं । इदमेसु, सुं । शेषं सर्ववत् । ।। इति पु इदंशब्दः ।

दी० नेति । इदम् से पर ङि को ३, १, ६२ से प्राप्त त्थ नहीं होता है । इदम्—ङि=३, १, ७८ इह पक्षे ७७ अ ७५ इम ६२ म्मि, स्सि, ७९ त्थाभाव=अस्सि, इमम्मि, स्सि । १० इमंसि । सु अ—इम—सु (प्) १९ ए=एसु, इमेसु, १, १, ४७ एसुं इमेसुं ।

। इतीदंशब्दः ।

अतसोश्च किमः कत् । ३, १, ७४ ।

कौ० चात्सुपि । कुत्र=३, ४, १८ कह, हि, त्थ । १९ कुतः=कत्तो=कदो कयो । सुपि—को, के । कं के का । टा—किणा, केण, केणं । कस्मात्=कम्हा । पक्षे ।

दी०—अतेति । अल्—तस्—सुप् से पूर्व किम् को क आदेश होता है । किम्—क—सु=३, १, १४ सु—ओड्—को, अस्=६१ डे के ३, ४, १८ कं के का । ७२ टा=किणा १७ केण, किणं, णं । क—ङसि=६६ कम्हा । पक्षे—

किमो डिणो डिसौ । ३, १, ७१ ।

कौ० किमोङसेरेतौ वास्तः । किणो, कीस । प्रश्नेऽपि किणो प्रश्न० २, ४, ३४ इत्यव्ययपाठात् । पक्षे का काहीत्यादि । कस्य=कास, कस्स । केषां=कास केसि काण काणं । कदा=कइआ काहे काला । पक्षे देशादौ च कहि कम्मि कस्सि कत्थ (आर्षे कंसि) शेषं सर्ववत् । । इति किं शब्दः ।

दी० किमइति । किम से पर ङसि को डिणो तथा डीस डित्वाट्टिलोप होता है । किम्—ङसि=डिणो, डीस=किणो कीस पक्षे सर्ववत् । किम्—ङस्=३, २, ६६ सद (१, १, १४ दीर्घ) पक्षे ९, स्स (=सद्—१, १, १५) कास कस्स आम्=६५, आस (=सद् १, १, १४) ११, णद्—दीर्घ, चन्द्र=कास काण काणं । क ङि=कासे ३, १, ६८ कइआ, काला काहे (१, १, १४) । पक्षे देशादौ च—६३ हि=हि—कहि ६२ कम्मि, स्सि त्थ । १० कंसि । शेष सर्ववत् । । इति किं शब्दः ।

सुप्यमुरदसः । ३, १, ८७ ।

कौ० अदसोऽमुरादेशः स्यात्सुप्सुपरेषु । अमु जिणो । सौ विशेषः—

दी० सुप से पर अदस् को अमु आदेश होता है । अदस्—सु=प्र० सू० अमु, ३, १, २६, सु=दलुप्—दीर्घ=अमू ।

अह सुना स्त्रिलिंग्यां वा । ३, १, ८८ ।

कौ० लिंगत्रये सुना सार्द्धमदसः स्यानेऽहेत्या देशो वा स्यात् । अह पास जिणो । ङौ—अयम्मि, इयम्मि । अमुम्मि । आर्षे—अमुंसि । शेषं साधुवत् ।

। इत्यदस् शब्दः ।

दी० अहेति । पुंस्त्री नपुंसकों में सु-सहित अदद् को अह आदेश विकल्प से होता है । अदस्—सु=अह । पार्श्व=३, ३, ६८, १, ४, ३६=पास-जिणो । अदस्—ङि=३, १, ८९ अयम्मि, इयम्मि । पक्षे ९, ङि=म्मि (=मिठ —१, १, १५)=अमुम्मि । १० अमुंसि । शेष रूप साधुवत् । । इत्यदस्शब्दः ।

[अथ—युष्मदस्मत्प्रकरणम्]

सुना युष्मदस्तं तुं, तुह, तुमं तुवं । ३, २, १ ।

कौ० सुनासहितस्य—युष्मदः स्थाने तं, तुं, तुह, तुमं,

तुवं इमे पञ्चादेशाः स्युः । त्वमित्यर्थः । एवमग्रेऽपि विभक्त्या सह युष्मदादेशाः स्युः । इत्यूह्यम् ।

जसा भे तुम्होय्ह तुब्भ तुब्भे । ३, २, २ ।

कौ० युष्मद्—जस्=भे—तुम्हे—उय्हे—तुब्भ—तुब्भे । यूयम् ।

वाब्भोज्झम्हौ । ३, २, १४ ।

कौ० सर्वत्र युष्मदादेशेषु स्थितस्य ब्भस्य स्थाने ज्झ म्हौ वा स्तः । तुब्भ=तुज्झ तुम्ह । तुब्भे=तुज्झे तुम्हे—६

अमा तं तुं तुए तुमे तुमं तुह तुवं । ३, २, ३ ।

कौ० त्वां=(युष्मद्—आम्)=तं वन्दामि ।

शसा भेवो तुज्झोय्हे तुय्हे तुब्भे । ३, २, ४ ।

कौ० युष्मान् (=युष्मद्—शस्)=भेवो तुज्झे उय्ह तुय्हे तुब्भे=तुज्झे तुम्हे धम्म साहेमि । कथयामि ।

टा तइ तम् तुइ तुए तमइ तुमाइ तुमए तुमं तुमे ते दि दे भे । ३, २, ५ ।

कौ० युष्मद्—टा=तइ तए १३ पञ्च वि समिओ पालणिज्जा । पञ्चापि समित्यः पालनीयाः ।

भिसा भे उय्हेहिं उब्भेहिं उम्मेहिं तुय्हेहिं तुम्हेहिं । ३, २, ६ ।

कौ० युष्मद्—भिस्=भे उय्हेहिं तिण्णिवि गुत्तीओ रक्खणिज्जा । युष्माभिस्तिस्रोऽपि गुप्तयो रक्षणीयाः ।

ङसौ तइ तुह तुम तुव तुब्भाः । ३, २, ७ ।

कौ० ङसौ परे युष्मदः स्थाने एते आदेशाः स्युः । ङसेस्तु यथा प्राप्तम् । त्वत्=तईहिन्तो तईउ तईओ तइत्तो । तुहा तुहाहि तुहाहिन्तो तुहाउ तुहाओ तुहत्तो । एवं तुम तुव तुब्भ=तुज्झ तुम्हानाम् । मिलित्वा ४० रूपाणि ।

दी० ङसाविति । ङसि से पूर्व युष्मद के स्थान में तइ आदि सात-आदेश होते हैं । युष्मद्=ङसि=प्र० सू० युष्मद्=तइ-तुह तुम तुव-तुब्भ १४ ब्भ=ज्झ—म्ह=तुज्झ=तुम्ह—३, १६ हिन्तो, ३ ओ त्तो=दीर्घ=तईहिन्तो तईउ तईओ । अणोत्तो निषेध से दीर्घाभाव=तइत्तो । तुह—ङसि=१५ दलुप् १६ हि=दीर्घ=शेष तइवत=तुहा तुहाहि तुहाहिन्तो तुहाउ तुहाओ तुहत्तो । शेष तुहवत् ४० रूप होते हैं ।

ङसिना तुय्ह तहिन्तो तुब्भ । ३, २, ८ ।

कौ० ङसिना सह युष्मदस्त्रय आदेशाः स्युः । तय्ह तहिन्तो तुब्भ । वाब्भो ज्झम्हौ । तुज्झ तुम्ह=५=४०४५ ।

भ्यस्युम्होय्ह तु य्ह तुब्भाः । ३, २, ९ ।

कौ० भ्यसिपरे युष्मदः स्थाने इमे स्युः । भ्यसश्च यथा प्राप्तम् । उम्हेहि उम्हाहि उम्हेसुन्तो उम्हासुन्तो उम्हेहिन्तो उम्हाहिन्तो उम्हाउ उम्हाओ उम्हत्तो । एवं उय्हेहि ९ । तुय्हेहि ९ । तुब्भेहि ९ । तुज्झेहि ९ । तुम्हेहि ९=५४ ।

दी० भ्यसीति । भ्यस् से पूर्व युष्मद् के स्थान में उम्ह—उय्ह—तुय्ह—तुब्भ १४ ब्भ=ज्झ—म्ह=तुज्झ तुम्ह—३, १, १५ भ्यस=हि, ७ सुन्तो हिन्तो उ, ओ त्तो १९ से हि—सुन्तो-हिन्तो से पूर्व अ=आ=ए पक्षे तथा उ, ओ से पूर्व अ=आ=उम्हेहि उम्हाहि इत्यादि ५४ रूप होते हैं ।

ङसा दि दे इ ए तुं ते तइ तुम तुमे तुव तुह तुहं तुम्ह तुमो तुमाइ । ३, २, १० ।

कौ० युष्मद्—ङस्=दि—दे···तुमाइ १५ चारित्तं परमं विमलं अत्थि । तव चारित्रं परमं विमलमस्तीत्यर्थः ।

आमा भेवो तु तुमाण तुवाण तुहाणोम्हाणतुब्भ-तुब्भं तुब्भाणाः । ३, २, ११ ।

दी० आमेति । युष्मद्—आम्=भे—वो—१० । ब्भ=ज्झ—म्ह=१, १, ४७ ण=वा—ण=भे—वो—तु—तुमाण तुमाणं इत्यादि । २३ ।

ङिनातइ तए तुमे तुमाइ तुमाए । ३, २, १२ ।

दी० ङीति । युष्मद्—ङि=तइ तए तुमे तुमाइ तुमए ।

ङिसुपोस्तु तुम तुव तुह तुब्भाः । ३, २, १३ ।

कौ० ङिसुपोः परयोः युष्मदः स्थाने इमे स्युः । ङेस्तु यथा प्राप्तम् । त्वयि=तुम्मि तुवम्मि

तुमम्मि तुहम्मि तुज्झम्मि तुम्हम्मि तुब्भम्मि। ठिओ णाण दीवोघिप्पइ। त्वयि स्थितो ज्ञानदीपो दीप्यते। आर्षे तु सि तुमंसि इत्यादि ७। सुपि— तुसु तुसुं तुमेसु, सुं इत्यादि। सुप्येत्वं वेति मन्यमानस्य मते तुमसु इत्यादि। तुब्भे आत्वमिच्छति कश्चित्तन्मते तुब्भासु तुज्झासु तुम्हासु।

। इति युष्मच्छब्दः।

कौ० ङि सुपोरिति। ङि तथा सुप् से पर युष्मद् के स्थान में तु तुम आदि आदेश होते हैं। युष्मद्=ङि=३, १, ६ =१, १, १५=तुम्मि इत्यादि। तुंसि तुमंसि आदि ३, १, १०। युष्मद्—सु (प) प्र० सू० तु—तुम आदि=३, १, १८ अ=वा=ए तुसु तुमेसु १, १, ४७ वा चन्द्र= तुसुं तुमेसुं। एवं तुम तह तुब्भ १४ तुम्म तुम्ह का रूप। सुप् से पूर्व एत्व विकल्प से मानने वालों के मत में तुमसु, सुं इत्यादि को इ तुब्भ-तुज्झ-तुम्ह में आ विकल्प मानते हैं। ता तुब्भासु तुज्झासु तुम्हासु॥ इति युष्मच्छब्दः॥

सुनाऽऽइत्स्मदो हमहमहयमम्मि अम्हि हमयः। ३, २, १५।

कौ० सुना सार्द्धमस्मदः स्थाने हम्मियादि षडादेशाः स्युः। इत्यमहेऽपि विभक्त्या सार्द्धमस्मदादेशाः स्युरितिबोध्यम्। भणामि हं अहं अहयं अम्मि अम्हि म्मि सियावाय रहस्सं। भणाम्यहं स्याद्वादरहस्यम्।

जसा मे ऽम्हा ऽम्हे ऽम्हो मो वयं। ३, २, १६।

कौ० विहिमो मे अम्ह अम्हे अम्हो मो वयं कम्म बन्धाहिन्तो। बिभीमोवयं कर्मबन्धेभ्यः।

अमाऽहमम्हाम्मि मम्हुणं णे मि—मं ममं मिमं

। ३, २, १७।

कौ० भणभन्ते अहं अम्ह अम्मिमम्हं णं णे मि मं ममं मिमं धम्म रहस्सं। भण भगवन्। मां धर्मरहस्यम्।

शसा णेऽम्हेऽम्होऽम्हाः। ३, २, १८।

कौ० हे मुणिवर! णे अम्हे ऽम्हो अम्ह साहेसु धम्म मम्मं। अस्मान् कथय धर्ममर्म।

टा णे मि मे मइ मए ममाइ ममं ममए

। ३, २, १६।

कौ० णे मि मे……ममए वन्दिओ मुणी। मया वन्दितो मुनिः।

भिसा णे अम्ह अम्हाहि अम्हेहि अम्हे। ३, २, २०।

कौ० णे अम्ह…अम्हे किज्जइ भिक्खुपडिमा।
अस्माभिः क्रियते भिक्षु प्रतिमा।

ङसौ मइ मज्झ मम महाः। ३, २, २१।

कौ० ङसौ परेऽस्मदश्चत्वार इमे आदेशा स्युः। ङसेस्तु यथाप्राप्तम्। मई हिन्तो मई उममेओ मइत्तो। मज्झा मज्झाहि इत्यादि।

कौ० ङसाविति। ङसि से पूर्व अस्मद् के स्थान में मइ मज्झ मम मह ये चार आदेश होते हैं। अस्मद्— ङसि=३, १, ६, ८, १५, १६ ये युष्मद् वत् रूप जानना।

भ्यस्यम्ह ममौ। ३, २, २२।

कौ० भ्यसिपरेऽस्मदोऽम्ह ममौ स्तः। अम्हेसुन्तो अम्हासुन्तो इत्यादि ६। ममे सुन्तो इत्यादि ६। = १८।

कौ० भ्यसीति। भ्यस् से पूर्व अस्मद् को अम्ह—मम ये दो आदेश होते हैं। अस्मद्—भ्यस्=प्र० सू० अस्मद्—अम्ह —मम् ३, १, ७ सुन्तो, हिन्तो, उ, ओ, त्तो १५ हि, १८ वा—ए=अम्हे सुन्तो, अम्हेहिन्तो अम्हेहि पक्षे तथा उ, ओ में ८ दीर्घ अम्हासुन्तो, हिन्तो, हि, उ, ओ। अणो त्तो निषेध=अम्हत्तो। एवं ममे सुन्तो इत्यादि—१८

ङसाऽम्हाऽम्हं मइ मे मज्झ मज्झं महं महाः।

। ३, २, २३।

कौ० अम्ह….मह धम्मो च्चिउ सरणं। मम धर्म एव शरणम्।

आमा णे णोऽम्हेऽम्होऽम्हाम्हं मज्झ मज्झाणाम्हाण ममाण महाणाः। ३, २, २४।

कौ० णे—णो—अम्हे………महाण, महाणं पणट्ठो मोहो। अस्माकं प्रणष्टो मोहः। एकादशादेशाः।

ङिना मि मे मइ ममाइ मए। ३, २, २५।

कौ० मि…मए हवउ जिणधम्मो। मयि भवतु जिनधर्मः।

सप्तम्यां मज्झाम्हममहाः । ३, २, २६ ।

कौ० ङिसुपोरस्मदः स्थानेमज्झादय आदेशा स्युः । ङस्तुयथाप्राप्तम् । मज्झम्मि, अम्हम्मि ममम्मि महम्मि, ठिओ तवो । मयिस्थितं तपः । सुपि मज्झेसु मज्झेसुं । इत्यादि । इह हित्वेन मते मज्झसु इत्यादि । अम्हस्यात्व विकल्पमते—अम्हासु । इत्यस्मत् ।

। इति युष्मदस्मत्प्रकरणम् ।

वी० सप्तेति । ङि—सुप् से पूर्व अस्मद् को मज्झ अम्ह-मम मह ये चार आदेश होते हैं । अस्मद्—ङि = प्र० सू० मज्झ ४ ३, १, ९ म्मि (= मिठ् १, १, १५) = मज्झम्मि ४ । अस्मद्—सु (प्) = ३, १, १९ ए = मज्झेसु १, १, ४७ मज्झेसुं ।

[अथ संख्यावाचकशब्दाः]

द्वेर्वे दो दुवे वेण्णि दोण्णि । ३, २, २८ ।

कौ० जशशस्भ्यां सह द्वेरेते पञ्चादेशाः स्युः । वे दो दुवे वेण्णि दोण्णि, ह्रस्वे विण्णि दुण्णि मुणी अत्थि नवसु वा ।

वी० द्वेरिति । जस् शस् सहित द्वि के स्थान में ये आदि पाँच आदेश होते हैं । १, २, ३९ ह्रस्व विण्णि दुण्णि ।

भिसादौ वे दो । ३, २, २९ ।

कौ० भिस्भ्यसाम्सुप्सु द्वेरेतौ स्तः । वेहि, देहि, कयं । द्वाभ्यांकृतम् । भ्यसि—वे सुन्तो दो सुन्तो, वित्तो दत्तो ।

वी० भिसेति । भिस्—भ्यस्—आम्—सुप् से पूर्व द्वि को वे दो ये दो आदेश होते हैं । द्वि, भिस्—भ्यस् = द्वि—वे—दो ३, १, ५ भिस् = हि, हिं, हिँ = वेहि, दोहि, हि हिँ । ७ सुन्तो, हिन्तो उ, ओ, तो—वे सुन्तो दो सुन्तो ४ । १, २, ३९ ह्रस्व वित्तो दुत्तो ।

अविंशत्यादेः संख्याया आमोण्ह ण्हं । ३, २, ३२ ।

कौ० संख्यावाचकात्परस्यामो ण्ह ण्ह इत्येतौ स्तो न तु विंशत्यादेः । णदपवादः । वेण्ह वेण्हं । पञ्चण्ह, ण्हं, विंशत्यादेस्तु—वीसाणं तीसाण । सुपि वेसु वेसुं दोसु, दोसुं ।

। इति सर्वनामप्रकरणम् ।

वी० अविंशेति । विंशत्यादिभिन्न संख्यावाचक से पर आम् को ण्ह, ण्हं ये दो आदेश होते हैं । द्वि ओस् आम् = द्वि—वे—दो आम् = प्र० सू० ण्ह, ण्हं = वेण्ह दोण्ह १, २, ३९ विण्ह विण्हं दुण्ह दुण्हं । विंशति—आम् त्रिंशत्—आम्—१, १, ५२, १४ विंशति = वी त्रिंशत् = तीसत् ३३ त् = आ सन्धि ४, ३६ श = स २, ३, ६८ मी = ती ३, १, ११ णद् दीर्घ = वीसाण, तीसाण ।

जश्शसातिण्णि । ३, २, ३१ ।

कौ० जश्शस्भ्यां सह त्रेस्तिण्णि—आदेशः स्यात्लिङ्गत्रये । तिण्णि, मुणिणो, गुत्तोओ णाणाणि वा अत्थि पेच्छ वा ।

वी० जसिति । जस्—शस—सहित त्रि को तिण्णि आदेश होता है । त्रि—जस्—शस् = प्र० सू० तिण्णि ।

त्रेस्तिः । ३, २, ३० ।

कौ० भिसादौ परे त्रेस्तिः स्यात् । तीहित्यादिमुनिवत् । आमि-तिण्ह तिण्हं । सुपि—तीसु—तीसुं ।

। इति त्रिशब्दः ।

वी० त्रेरिति । भिस्—भ्यस्—आम्—सुप्—से पूर्व त्रि को ति आदेश होता है । त्रि = भिस्—भ्यस् = सुप् = प्र० सू० त्रि = ति = शेष मुनिवत् । ति—आम् = ३, २, ३२ ण्ह ण्हं = तिण्हं ।

जश्शस्भ्यां चतुरश्चउरो चत्तारि चत्तारो । ३, २, २७ ।

कौ० चउरो चत्तारि चत्तारो चिट्ठन्ति पेच्छ वा ।

वी० जसिति । जस्—शस् सहित चतुर के स्थान में चउरो चत्तारि चत्तारो ये तीन आदेश होते हैं ।

वा चतुरो भ्यसि च । ३, १, २१ ।

कौ० चतुरो रलुप्युकारस्य वा दीर्घः स्याःभिस्भ्यस्सुप्सु । चतुर्भिः = चऊहि चउहि । चतुर्भ्यः = चऊसुन्तो चउसुन्तो । चतुर्षु = चऊसु चउसु । आमि चउण्ह चउण्हं ।

। इति संख्यावाचकाः ।

वी० वेति । रलुप् होने पर भिस्—भ्यस्—सुप् से पूर्व चतुर के उ को विकल्प से दीर्घ होता है । चतुर—भिस्—भ्यस्

—सुप्=१, १, २८ र्=लुप्—प्र० सू० उ=ऊ—विकल्प २, २, १, त्—लुप् १, १, २६ असन्धि ३, ५, १, भिस्=हि, हिं, हिँ=चऊ हि, हिं, हिँ । चउहि । ७ । भ्यस्=सुन्तो आदि—चऊसुन्तो चउसुन्तो चऊसु १, १, ४७ सुं=सुं=चऊसुं चउसु, सुं । चण्ह (=चतुर) ३, २, ३२ आम्=ण्ह ण्हं=चउण्ह, ण्हं ।

। संख्यावाची समाप्त ।

[अथ सर्वनामस्त्रीलिंग प्रकरणम्]

कौ० सर्वा=सव्वा—सव्वाउ, सव्वाओ सव्वोरयादि दयावत् । आमि विशेषः—बाहुलकात्स्त्रियामपि—'ङेसिमामः' (३, १, ६३) सव्वेसिं । आर्षे सव्वासिं । एवं विश्वादयः । । इत्याबन्ताः ।

कौ० सर्वेति । २, ३, ६८, ७४ र्वा=व्वा=सव्वा—सु=३, ७, १२ लुप्=सव्वा । २६. जस्—शस्=उ, ओ पक्षे ४ द्लुप्=सव्वाउ सव्वाओ सव्वा । इत्यादि दयावत् । केवल बाहुलकात् स्त्रीलिंग में भी सव्वा—आम्—६४ ङेसिं=सव्वेसिं । एवं विश्वा आदि का रूप सर्वावत् ।

। आबान्त समाप्त ।

यत्तदिदमेतत्किमोऽस्वमामि । ३, १, ३७ ।

कौ० एभ्योऽस्वमामि सुपि स्त्रियां ङीप् वा स्यात् । यद्=तद्—एतद्=१, १, २८ द्—लुप् ४, २८ ज=त=एत=२, २, १, त्=लुप् (सुपरे) त=३, १, १, ८६ स) १, १, २६ असन्धि=एअ, ३, १, ७५ किम्=क ७६ इदम्=इम=स्त्रीत्वे (पाणि ४, १, ४, ६, १, १०१=टाप्—दीर्घ)=जा, ता, एआ, का, इमा, सु—अम्—आम् वर्जे सुपो विषये प्र० सू० वा—ई (=ङीप्) १, १, २७ पूर्वस्वरलुप्=जी, ती, एई, की, इमी । सर्वत्र—जी लच्छीवत् । जादयावत् । स्वमाम्सु—त्=जा, जं, जाण जाणं इत्यादि । ङसिङसाम्ङिषुतु विशेषाः ङसित । तथाहि—म्हा ङ सेः—जम्हा—तम्हा—कम्हा ।

कौ० यत्तदीति । सु—अम्—आम् वर्ज सुप् के विषय में यद्—तद्—इदम्—एतद्—किम् से पर स्त्रीलिंग में विकल्प से ङीप् प्रत्यय होता है । पक्ष में सर्वत्र टाप् । प्रक्रिया चिन्ता० द्र० । जी का लक्ष्मीवत् जा का दयावत् रूप होता है । केवल ङस्—आम्—ङि में विशेष है—तथाहि—३, १, ६६

सेसाठावीद्भ्यः । ३, १, ६७ ।

कौ० ईदन्तेभ्यो यत्तत्किभ्यः परस्य ङसः स्थाने से साठो वा स्तः । अदादिदेदामपवादः पक्षे सेऽपि । [illegible]म् । जीसे जीस्सा । बाहुलकात्स्त्रियामपि 'यत्तत्किमोङसः' (३, १, ६६) इति वा सद् । जीस जास । आमि जेसिं जाण । ङौ—'हिम्मनेः' । (३, १, ६३) इति हि=जीहि जाहि । शेष लक्ष्मीवत् दयावच्च । । इतियच्छब्दः ।

तच्छब्दे—ती, ता—सौ—सा । तदेतदिदमां वा ङसाम्भ्यां सेसिमौ (३, १, ८३) से सिं । सुपिवचित्तदोणः (३, १, ७३) वा=णं । तया=णाए । ताभिः=णाहि इत्यादि शेषं ती, ता जी, जावत् ।

। इति तच्छब्दः ।

एतच्छब्दे—सौ । एस इणं इणमोबुद्धौ एसा (३, १, ८४) । ङ साम्यां—क्रमात्सेसिं एतासां=सिं एएसिं । शेषं एई—लक्ष्मीवत् । एआ दयावत् ।

। इत्येतच्छब्दः ।

इदमः—सौ—इमिआ । अमि—इणं, णं । टा—णाअ, णाइ, णाए । भिसि—णाई ३, आहि ङसा=से । आमि—सिं इमेसिं । ङौ—इह । एतावान् विशेषः । अन्यत् इमा—दयावत् । इमी—लक्ष्मीवत् । इतीद शब्दः । किमः—का—दयावत् । की—लक्ष्मीवत् इयान् विशेषः—यत्तत्किमोङसः कस कास । सेसा ठावीद्भ्यः । कीस्सा किस्से । आमि—'ङेसिमाम' केसिं । 'तत्किमःसद्' कास । ङौ—कीहि ।

। इति किम् शब्दः ।

अदसः—'अहसुना वा' ३, १, ८८ । अह—गुत्ती । पक्षे—सुप्यमुरदसः (३, १, ८७) अमू पञ्च—विहा किरिया । शेषं धनुवत् । । इत्यदः शब्दः ।

कौ० सेसेति । ईदन्त यद्—तद् किम् से पर ङस् के स्थान में से तथा साठ् ये दो आदेश विकल्प से होते हैं । ३, १, ३२ से प्राप्त अद्—आद्—इद्—एद्—का अपवाद है

पक्ष में ऐ भी होते हैं। जी—ङस्=प्र० सू० से—स्सा (=साठ १, १, १५)=जीसे १, २, ३६ ह्रस्व=जिस्से। एवं तिस्सा तीसे, किस्सा कीसे। ३, १, ६६ जा—ङस=जास, एवं तास, कास। जी—जा—आम=६४ डेसिं=जेसिं, एवं तेसिं केसिं एएसिं इमेसिं। जी—जा—ङी=६३ हिं=जीहिं=जाहिं एवं तेसिं तीहिं, ताहिं कीहिं काहिं। बाकी रूप जी का लक्ष्मीवत्। जा का दयावत्। । इति यद्। तद्=ता—सु=३, १, ८६, १२=सा। एतं—एता—सु=एसा। ती—ता—ङस्—८३, से—ती—ता—आम्=सिं एवं—एई=एआ इमी इमा=ङसा—से आमा—सिं। ता—३, १, ७३ णा—तावयावत् ती—लक्ष्मीवत्। एई—एआ—लक्ष्मी—दयावत्। इदम—सु=स्त्री०—३, १, ७६=इमिआ। पक्षे ७५, १२=इमा। इदम्—अम्—ङि=७४ क्रम से=इणं, इह। इदम्—अम्—शस्—टा—भिस्=८० इदम्=ण—टाप्—दीर्घ=णा—इमावत्। अन्य—इमा दयावत् लक्ष्मीवत्। एवं की—लक्ष्मीवत् का—दयावत्॥ अदस्—सु=८८ अह, पक्षे ८७=असु—सु—१२=अमू। अमु—धेनुवत्।

। इति स्त्रीलिंगे सर्वादिशब्दाः ॥

[अथ नपुंसके सर्वादि शब्दः]

कौ० क्लीबाचोऽसंबुद्धेश्चन्द्रश्लुपौ (३, १, २७) इतिम्—सव्वं। जश्शसोर्दि—दिंञ्णिदः (३, १, २८) सव्वाइं सव्वाइँ सव्वाणि। संबुद्धावप्येवमेव। शेषं पुंवत्। एवं विश्वादयोऽपि। यद्—जं जाइं जाइँ जाणि। तद—त—सु=अक्लीबे इत्युक्तेः 'सोतद्श्चाक्लीबेतः सच्' ३, १, ८६। इति न सः। तं। ताइं ताइँ ताणि। एतद्—एस इणं इणमोसिरं पक्षे एअं। एआइ एआइँ एआणि। शेषं पुंवत्। अदस्—सु='अह सुना वा'। ३, १, ८६ अह चारिस'। पक्षेऽमि च अमुं। अमूइ अमूइँ अमूणि। शेषं पुंवत्।

बी० सव्व (=सर्व २, ३, ६८, ७५) सु—३, १, २८ सु—म्=(१, १, ४२)=सव्वं। सव्व—जस्—शस्=२८ दि दिं णि=सव्वाइं सव्वाइँ सव्वाणि। एवं विश्वादि का भी शेष पुल्लिंगवत्। यद्—१, १, २८, ४, २८ म—जं जाइं ३ सर्ववत्, बाकी पुंवत्। ३, १, ८६ में अक्लीबे निषेध से त=स नहीं होता है। तं ताइं ३ सर्ववत् शेष पुंवत्। एतद्—सु=३, १, ८४६ स, इणं इणमो पक्षे उक्त निषेधादसत्व—२, २, १, १, २६ त्—लुप्—असंधि=एअं, एआइं ३ सर्ववत्। शेषं पुंवत्। अदस्—सु=३, १, ८६ अह पक्षे—८८ अदसु=अमु=अमुं अमुइं ३ सर्ववत्। शेषं पुंवत्।

नित्यंक्लीबे स्वमेव मिण मिणमो। ३, १, ८१।

बी० इदम्—सु—अम्=प्र०सू० इदं इणं इणमो। इदम्—जस्=३, १, ७५ इदम्=इम=२८ जस्—शस—दिं—दिञ्—णिद्—१, १, १३, दिञ्—१४ दीर्घ सानुनासिक=इमाइं इमाइँ इमाणि। शेषं पुंवत्।

किंकिमः। ३, १ ८२।

कौ० नित्यं क्लीबे स्वमासह किमः किंस्यात्। किं। काइं काइँ काणि। शेषं पुंवत्।

। इति क्लीबे सर्वादयः।

बी० किमिति। क्लीब में सु=अम्—सहित किम् को नित्य किं आदेश होता है। किम—सु=अम्=प्र० सू० किं। किम्—जस्—शस्=३, १, ७४ किम्=क २८, १, १, १३, १४ काइं काइँ काणि। शेष पुंवत्।

। इति क्लीबे सर्वादिः।

[अथविभक्त्यन्तादेश प्रकरण]

सर्वत्र चतुर्थ्यन्ते। ३, २, ३७।

कौ० सर्वत्र प्राकृते चतुर्थ्यन्त षष्ठ्यन्तं प्रयुज्यते। नमो जिणस्य। णमोऽरिहन्ताणं।

वा तादर्थ्यङन्ते। ३, २, ३६।

कौ० तादर्थ्ये विहितो यो ङे तदन्ते ङसन्त वा स्यात्। जिणस्स जिणाय वा एसो णमुक्कारो। जिनार्थमित्यर्थः।

बहुवचनान्तं द्विवचनान्ते। ३, २।

कौ० स्पष्टम्। नमो जिनाभ्यां नमो जिणाणं। जिन गणधरौ स्तः। नमामि वा=जिण गणहरा अत्थि नमिमो वा। । इति विभक्त्यान्तादेशः।

[अथ स्त्री प्रत्ययविधिः]

अजातेः पुंसोवाङीप् । ३, १, ३४ ।

कौ० पुंल्लिगान्नाम्नः स्त्रियां वा ङीप् स्यात् । नीली नीला । सुप्पणही सुप्पणहा । जातेस्तु न । अजा = अया । अप्राप्त विभाषेयम् । तेन कुमारी गोरीत्यादौ न विकल्पः ।

टी० अजातेरिति । पुल्लिंग नाम से स्त्रीलिंग में विकल्प से ङीप् होता है । जातिवाचक से नहीं । नील—वा—ई (=ङीप्) १, १, २७ अ—लुप्—लू = ई—नील । पक्षे टाप् = नीला । शूर्पण—१, ४, ३६ शु—सु २, ३, ६८, ७४ र्प = प्प २, १, ७ ख = ह ङीप् —टाप् नीलवत् = सुप्पणही सुप्पणहा । अप्राप्तविभाषा होने से कुमारी गोरी-त्यादि विकल्प नहीं होता है । जाति में नहीं होता है २, २, १, ३ अजा = अया ।

प्रत्ययान्तात् । ३, १, ३५ ।

कौ० स्त्रियां वर्तमानात्—टिदादि प्रत्ययान्त नाम्नो विहितः 'टिड्ढाणञ्' पा. ४, १, १५ इत्यादि ङीप् प्राकृते वा स्यात् । साहणी साहणा ।

टी० प्रत्ययेति । स्त्रीलिंग में वर्तमान टिदादि प्रत्ययान्त नाम से विहित टिड्ढाणेत्यादि ङीप् प्राकृत से विकल्प से होता है । साधन—वा—ङीप् पक्षे टाप् = पूर्ववत् संधि २, १, ७ घ = ह ३२ न = ण = साहणी साहणा ।

छाया हरिद्राभ्याम् । ३, १, ३६ ।

कौ० वा ङीप् । छाही छाया । २, १, ४२ टी. ४३ द्र. । हलद्दी हलद्दा । १, २, ४५ द्र. ।

। इति स्त्री प्रत्यय विधिः ।

[अथोत्तरार्द्धे तिङन्त प्रकरणम्]

तिबादेरेकत्वे प्रथमस्ये येपौ । ३, ३, १ ।

कौ० तिबादीनां प्रथम पुरुषैकवचनस्य स्थाने इपेपौ स्तः । पकारौ 'इपेपौ' (५, २, ३०) इति, विशेषणार्थौ 'होहवहुवा भुवेः' ४, १, २१ हुवइ हुवए ।

टी० तिबेति । तिबादि के प्रथम पुरुष के एक वचन के स्थान इप् तथा एप् ये दो आदेश होते हैं । भू = ४, १, २ हुव् ३, ३, ३० अ (क) प्र० सू० ति = इ—ए = हुवइ हुवए ।

वा वर्तमान विध्यादिशतृषु । ३, ३, २१ ।

कौ० अत एत्वं स्यादेषु । हुवेइ । 'अतएव सयेपो' ३, ३, ७ इति नियमादेप्येत्वं नास्ति ।

टी० वेति । वर्तमान विध्यादि तथा शतृ से पूर्व अ को ए विकल्प से होता है । हुवेइ । अकार से ही एप् तथा से होता है । अतः एप् से पूर्व अ को ए नहीं किया है ।

बहुत्वेन्तिन्ते इरे । ३, ३, २ ।

कौ० तिबादेः प्रथमपुरुष बहुवचनस्य स्थाने इमे स्युः । हुवन्ति हुवेन्ति । हुवन्ते हुवेन्ते हुविरे हुवेइरे ।

टी० तिबादि के प्रथम पुरुष बहुवचन के स्थान न्ति न्ते इरे ये तीन आदेश होते हैं । हुव—अ—झि = प्र० सू० न्ति न्ते इरे, २६ अ—ए = हुवति हुवेन्ति । १, १, २७ अ—लुप् = हुविरे ।

मध्यमस्यैकत्वे । ३, ३, ३ ।

कौ० तिबादेर्मध्यमपुरुषैकवचनस्य सिसे इत्यादेशौ-स्तः । हुवसि हुवेसि हुवसे ।

टी० मध्येति । मध्यम पुरुष के एकवचन के स्थान में सि—से ये दो आदेश होते हैं । हुव्—अ—सिप् = प्र० सि—से = पूर्ववत् हुवसि हुवेसि । से से पूर्व अ—ए नहीं होता है । हुवसे ।

इत्थाहचौ बहुत्वे । ३, ३, ४ ।

कौ० तिबादेर्मध्यम बहुवचनस्य इत्थाहचौ स्तः । क्वचिदन्यत्रापि बाहुलकादित्था । यद्यत्ते रोचते = ज ज ते रोइत्था । 'हस्वेहहचो (५, १, ५) रित्यर्थं चकारः । हुवित्था हुवेत्था हुवइत्था हुवेइत्था । हुवह हुवेह ।

टी० इत्थेति । तिबादि के मध्यम पुरुष बहुवचन के स्थान में इत्था—हच् ये दो आदेश होते हैं । हुव्—अ = थ—प्र० सू० इत्था । ३, ३, २० अ—वा—ए = हुवेइत्था, पक्षे हुव—इत्था १, १, २७ अ—लुप्—हुवित्था २२ क्वचिदेक पदेऽपि संधि = हुवेत्था । एवं हुव्—अ—ह = हुवेह हुवह । क्वचित्—अन्यत्र० रुच्—ते = प्र० सू० इत्था ३, ४, २८ गुण २, २, १, च्—लुप् १, १, २२ अपदे असंधि = रोइत्था ।

मिरुत्तमस्यैकत्वे । ३, ३, ५ ।

कौ० तिबादेरुत्तमपुरुषैकवचनस्य स्थाने मिः स्यात् । बाहुलकात्क्वचिन्मेरिकारलुवपि । न मरं । न म्रियेत्यर्थः ।

दी० मिरित । तिबादि के उत्तम पुरुष के एकवचन के स्थान में मि आदेश होता है । कहीं बाहुलक से मिले इ का लुप् भी उ० सं० टि० द्र० ।

वा मौ । ३, ३, १७ ।

कौ० मौ परे धातोः परस्य अत वा स्यात् । हवामि । हवेमि हवमि । अतः किम् । होमि ।

दी० वेति । मि से पूर्व धातु से पर अ को विकल्प से आ होता है । हव्—अ—मिव्=प्र० मू० मि० प्र० सू० अ=आ—पक्षे ३, ३, २० ए=हवामि, हवेमि, हवमि ।

बहुत्वे मुमोमाः । ३, ३, ६ ।

कौ० तिबादेरुत्तम बहुवचनस्यैते त्रयः स्युः । एत्वे । हवेमु, हवेमो, हवेम पक्षे—

दी० बहिति । तिबादि के उत्तम पुरुष के बहुवचन को मु—मो—म ये तीन आदेश होते हैं । हव्—अ—मस्=प्र० सू० मु मो—म ३, ३, २१ अ=वा—ए=हवेमु, मो, म । पक्ष में—

मुमोमेष्विच्च । ३, ३, १८ ।

कौ० एष्वतइत्वमात्वं च वास्तः । हविमु, हविमो, हविम । हवामु हवामो हवाम । हवमु हवमो हविम । अतः किम् होमु ।

दी० मुमो इति । मु—मो—म से पूर्व अकार को विकल्प से इ तथा आ होता है । हव्—अ—मु—मो—म=प्र० सू० अ=इ—आ=हविमु, हवामु पक्षे हवमु । एवं हविमो इत्यादि । अतः क्यों ? होमु ठामु यहां नहीं हो ।

वर्तमान भविष्यतोश्च ज्जाज्जौ । ३, ३, २७ ।

कौ० सर्वपुरुषवचनेषु वर्तमानभविष्यद्विध्यादिषु विहितस्य प्रत्ययस्य स्थाने ज्जाज्जौ वा स्तः ।

दी० वर्तेति । सर्वपुरुष वचनों में वर्तमान भविष्य विध्यादि में विहित प्रत्यय के स्थान में ज्जा तथा ज्ज ये दो विकल्प से होते हैं ।

ज्ज ज्जा ज्जे ज्जहि ज्जसु षु चित् । ३, ३, २२ ।

कौ० एषु पञ्चसु परस्यत एत्वं नित्यं स्यात् । हवेज्जा, हवेज्ज । पक्षे हवइ हवन्ति इत्यादि ।

दी० ज्जज्जेति । ज्ज-ज्जा-ज्जे ज्जाहि-ज्जसु इन पांचों से पूर्व अ को ए नित्य होता है । हव्—अ—तिबादि=३७ ज्जा—ज्ज—प्र० सू० अ=ए=हवेज्जा हवेज्ज । पक्षे हवइ हवन्ति इत्यादि पूर्ववत् ।

वा विध्यादेर्ज्जादित् । ३, ३, २३ ।

कौ० विध्याद्यर्थविशाद् ज्जात्पर इकारो वा प्रयुज्यते । हवेज्जइ-हवेज्ज । भवतु भवे द्वेत्यर्थः । एवं सर्वपुरुष वचनेषु ।

दी० वेति । विध्याद्यर्थक प्रत्ययादेश ज्ज से पर विकल्प से इकार प्रयुक्त होता है । हव्—अ—तिबादि=३७ ज्ज—२२ अ—ए—प्र० सू० ज्ज—से पर इ=हवेज्जइ हवेज्ज ।

विध्यादावेकत्वे प्रथमादीनां बहुत्वे न्तु ह मो
। ३, ३, ३४ ।

कौ० विध्याद्यर्थकानां प्रथम मध्यमोत्तमानामेकवचनां स्थाने दु—सु—मु बहुवचनानां च न्तु—ह—मो इतीमे क्रमात्स्युः । दोदकारोऽत्र भाषार्थः । हवउ हवेउ । हवन्तु हवेन्तु ।

दी० विध्याद्यर्थ में विहित प्रथमादि के एकवचनों को दु—सु—मु बहुवचनों को न्तु—ह—मो आदेश क्रम से होते हैं । हव्—अ—तु=उ—अन्तु=न्तु=३, ३, २१ अ=वा ए हवेउ हवउ हवेन्तु हवन्तु ।

सोर्वा हिः । ३, ३, ३५ ।

कौ० पूर्वसूत्र विहितस्य सोः स्थाने हि र्वा स्यात् । हवहि हवेहि । पक्षे—

दी० सोरिति । पूर्वसूत्र से विहित सु के स्थान में हि विकल्प से होता है । हव्—अ—सु=प्र० सू० बा० हि ३, २, २१ अ=वा—ए=हवेहि पक्षे हवहि । हित्वाभावे—

अतो ज्जे ज्जहि ज्जसु लुपः । ३, ३, ३६ ।

कौ० अतः परस्य विध्याद्यर्थस्य सोरेते चत्वार आदेशा वा स्युः । ज्ज ज्जा ज्जे ज्जहि ज्जसु चित् (३, ३, २२) हवेज्जे हवेज्जहि हवेज्जसु हव । पक्षे

हुवेसु हुवसु । अतः किम् । होहि होसु । हुवेह हुवह । हुवेमु हुवमु । हुवेमो हुवमो ।

दी० अतइति । अत् से पर विध्याद्यर्थक सु के स्थान में ज्जे—ज्जहि—ज्जसु तथा लुप् ये चार आदेश विकल्प से होते हैं । हुव्–अ—पूर्वसूत्र से सु = प्र० सू० ज्जे ज्जहि—ज्जसु—लुप् ३, ३, २२ अ—ए = हुवेज्जे हुवेज्जहि हुवज्जसु, हुव । पक्षे २१ वा ए = हुवेसु हुवसु । अत् क्यों ? होहि होसु में नहीं होता है । हुव्—अ—मि = मु = हुवेमु हुवमु । एवं बहु० हुवेमो हुवमो । सर्वपुरुष वचनों में हुवेज्जा हुवेज्जइ हुवेज्ज पूर्ववत् । पक्षे हुवउ इत्यादि ।

भूतार्थेव्यञ्जनादी अत् । ३, ३, २४ ।

कौ० व्यञ्जनान्ताद्धातो परस्य भूतार्थ प्रत्ययस्य स्थाने नित्यमीअः स्यात् । हुवीअ । आदेशोऽयं सर्वपुरुषवचनेषु । इत्था—ईसु इत्यादेशावपि मन्यन्ते केचित्तन्मते हुवित्था हुविसु । द्रष्टव्या संक्षिप्त प्रा० रू० मालासु (चन्द्रोदय)

दी० भूतेति । व्यञ्जनान्त धातु से पर भूतार्थक प्रत्यय के स्थान में सर्व पुरुष वचनों में ईअ आदेश नित्य होता है । हुव—सिवादि = प्र० सू० ईअ = हुवीअ । कितने के मत में इत्था—ईसु ये दो आदेश होने पर हुवित्था हुविसु ।

भविष्यति हिरादिरिवादे रार्षेषु तु स्सः । ३, ३, २७ ।

कौ० भविष्यदर्थस्येवादेरादिरवयवो हिः स्यात् । आर्षे तु स्सः । हुविस्सइ हुवेस्सइ इत्यादि ।

दी० हेरिति । भविष्यत्काल में इवादि के आदि अवयव होता है । आर्ष में इवादि के आदि में स्स होता है । हुव्—अ—स्सइ, २० अ—इ—ए = हुविस्सइ हुवेस्सइ हुविस्सन्ति इत्यादि ।

भविष्यत्तव्यक्त्वातुम्ष्वेच्च । ३, ३, २० ।

कौ० भविष्यदर्थकप्रत्यये तव्यादौ च परेऽतः स्थाने नित्यमेदितौस्तः । हुविहिइ हुवेहिइ हुवेहिए हुविहिए । हुविहिन्ति हुवेहिन्ति । एवं न्ते—इरे । हुविहिसि, से, हुवेहिसि, से । हुविहित्था, ह, हुवेहित्था, ह ।

दी० भवीति । भविष्यदर्थक प्रत्यय तथा तव्य—क्त्वा—तुम् से पूर्व अ के स्थान में नित्य ए तथा इ ये दो आदेश होते हैं । हुव्—अ—प्र० सू० हिइ प्र० सू० अ० इ० ए = हुविहिइ हुवेहिइ इत्यादि ।

मेर्हिना स्सं । ३, ३, ३० ।

कौ० भविष्यति मेर्हिना सह स्सं वा स्यात् । हुविस्सं पक्षे—

दी० मेरिति । भविष्यत्काल में हि सहित मि को स्सं विकल्प से होता है । हुव्—अ इ ए हिमि = प्र० सू० स्सं = हुविस्सं हुवेस्सं । पक्षे—

हेरुत्तमस्य हा स्सा वा । ३, ३, २८ ।

कौ० भविष्यदुत्तम पुरुषस्य हेः स्थाने हा, स्सा च वा स्तः । हुविहामि हुवेहामि । हुविस्सामि हुवेस्सामि । पक्षे—हुविहिमि हुवेहिमि । अष्टौ रूपाणि मौ ।

दी० हेरिति । भविष्यत्काल उत्तम पुरुष के हि के स्थान में विकल्प से हा तथा स्सा ये दो आदेश होते हैं । हुव्—हि—मि = प्र० सू० हि = वा—हा, स्सा = ३, ३, २० अ—इ—ए = हुविहामि हुवेहामि हुविस्सामि हुवेस्सामि । पक्षे—हुविहिमि हुवेहिमि ।

मुमोमानां त्था स्सा । ३, ३, २६ ।

कौ० भविष्यत्येषामेतौ वा स्तः । हुविहित्था हुवेहित्था हुविहिस्सा हुवेहिस्सा । पक्षे—हुविहामु हुविस्सामु इत्यादि । हे हे हा—स्साऽन्या—देशे—हुविहिमु इत्यादि । द्वाविंशती रूपाणि मुमोमेषु । सर्वपुरुष-वचनेषु–हुविज्जा हुवेज्जा हुवेज्ज हुविज्ज ।

दी० भविष्यत्काल में मु—मो—म के स्थान में त्था स्सा ये दो आदेश विकल्प से होते हैं । पक्ष में हि को हा—स्सा—विकल्प पक्षे हि श्रवण । हुविहित्था हुविहिस्सा, एवं हुवेहित्था, स्सा । पक्षे—हुविहामु हुवेहामु हुविस्सामु हुविहिमु इत्यादि । हा—स्सा—४ । त्था—स्सा—१२ । हि—६ । = २२ रूप होते हैं मुमोम में । सर्वपुरुष वचनों में पूर्ववत् हुवेज्जा हुवेज्ज ।

क्रियातिपत्तौ । ३, ३, ३९ ।

कौ० क्रियातिपत्तौ सर्वपुरुष वचनेष्विवादे ज्जा ज्जौ वा स्तः । पक्षे—माणन्तौ । ३, ३, ४० हवेज्जा हवेज्ज । हवमाणो हवमाणा हवन्तो हवन्ता इत्यादि । आर्षे हवमाणे हवन्ते इत्यादि । यदि सुवृष्टिरभविष्यत्तदा सुभिक्षमभविष्यत्=जइ सुविट्ठी हवेज्जा तथा सुभिक्खं हवेज्ज । यदि शुक्ल ध्यानमभविष्यत्तदाकल्याणमभविष्यत्=जइ सुक्कज्झाणं हवेमाणं तया कल्लाणं हवेन्तं । एवं सर्वत्र हुवहसादयः ।

दी० क्रियेति । क्रियातिपत्ति अर्थात् कार्यकारणभावादि-अर्थ वाले इत्यादि के स्थान में विकल्प से ज्जा—ज्ज ये दो आदेश होते हैं। पक्ष में माण न्त ये दो आदेश भी होते हैं। हव् -अ—इत्यादि=प्र० सू० ज्जा—ज्ज ३, ३, ३० ए—पक्षे माण—न्त=सू—जस् आदि—३, १, १४, ४ स्वादि कार्य=हवेज्जा हवेज्ज । हवमाणो हवमाणा हवन्तो इत्यादि इसी तरह हुवन्त हुव्—हस् वेप् आदि के वर्तमान दि क्रियापत्ति पर्यन्त में रूप हुव् यत् होते हैं। भू=ो= होइ ।

अत एव सयेपौ । ३, ३, ७ ।

कौ० अदन्तादेव परौ स एपौ भवतो नान्यस्मादिति नात्र एव । अदन्तात्से एपावेव नतु ति—इपौ इति विपरीत नियम निषेधार्थमेवकारः । तेन हससि हसइ इत्याद्यपि ।

दी० अतइति । अदन्त हा से पर तथा एप् ये दो होते हैं। अदन्त भिन्न से नहीं अतः यहां एप् नहीं हुआ । से एप् ही अदन्त में होता है । सिइप् नहीं । इस प्रकार का नियम न हो अतः एवकार है । अतः हसइ हससि भी होता है ।

हुर्वापिति । ४, १, ३ ।

कौ० पिद्वर्जे प्रत्यये परे भू धातो हु र्वा स्यात् । हुन्ति हुन्ते इत्यादि । पक्षे होन्ति होन्ते होइरे । होमि । उक्त नियमाग्न से । होइत्था हुइत्था होह हुह । होमु होमो होम, हुम हुमो हुम । विध्यादिषु होउ । होन्तु, हुन्तु । होहि होमु । अनदन्तत्वात्—अतो ज्जे—३, ३, २६ इति न स्यात् । होह हुह । होमु होमो ।

दी० हुरिति । पिद्वर्ज प्रत्यय से पूर्व भू को हु विकल्प से होता । भू—हु—न्ति, न्ते—हुन्ति, न्ते पक्षे होन्ति इत्यादि ।

प्रागिवादेश्चाजन्तात् । ३, ३, ३८ ।

कौ० अजन्तादिवादेस्तत्पूर्वं च ज्जा ज्जौ वा स्तो वर्तमान भविष्यद्विध्यादिषु । वर्तमाने । होज्जाइ होज्जइ होज्जा होज्ज । पक्षे होइ । एवं सर्वत्र । विध्यादौ । होज्जाउ होज्जेउ होज्जउ होज्जा होज्ज होउ इत्यादि । भविष्यति होज्जाहिइ होज्जेहिइ होज्जा होज्ज पक्षे होउ इत्यादि ।

दी० प्रागिति । वर्तमान भविष्यत् तथा विध्यादि अर्थों में अजन्त धातु से पर इवाद्यादेशों के स्थान में तथा इवादि से पूर्व ज्जा तथा ज्ज ये दो विकल्प से होते हैं। हो—इ—प्र० सू० होज्जाइ होज्जेइ होज्जइ एवं होज्जा होज्ज पक्षे होइ एवं सर्ववचनों में समझना । विध्यादि में—हो—उ=होज्जाउ होज्जेउ होज्जउ होज्जउ होज्जा होज्ज पक्षे होउ एवं सर्व वचनों में । भविष्यत् काल में—हो—हिइ—होज्जाहिइ होज्जिहिइ होज्जेहिइ होज्जा होज्ज पक्षे होहिइ इत्यादि सर्ववचनों में समझना चाहिये ।

अनतोऽस्वो वा । ३, ४, ३१ ।

कौ० अदन्तवर्जाद जन्तात्परोऽकारागमो वा स्यात् । इत्याकारपक्षे होअइ होएइ होअए इत्यादि सर्वत्र हुववत् ।

दी० अनेति । अदन्त वर्ज अजन्त धातु से पर अकार आगम विकल्प से होता है । हो—अ—इ ३, ३, २१ अ—ए—हएइ होअइ इत्यादि सर्वत्र हुववत् ऊ करें पक्ष में होइ इत्यादि ।

अचः सी हो ही आः । ३, ३, २५ ।

कौ० अजन्ताद्धातोः परेषामिवाद्यादेशानां स्थाने इमे त्रयः स्युः भूते । होसी होही होहीअ । अभवत्, अभूत् अभूवेत्यादिरर्थः । आर्षे हो होत्था होसु । क्रियातिपत्तौ—होज्जा होज्ज होमाणो होन्तो इत्यादि ।

दी० अचइति । अजन्त धातु से पर इवाद्यादेश के स्थान

में सी—ही—हीअ ये तीन आदेश होते हैं। उदाहरण स्पष्ट है।

करेः कुणः। ४, १, ६।

कौ० कृञः कणो वा स्यात्। पक्षे 'उररः'। ३, ४, २५। ऋवर्णस्य स्थानेऽर स्यात्। कणइ करेइ इत्यादि।

दी० करेरिति। कृ धातु के स्थान में कुण आदेश विकल्प से होता है। पक्ष में ऋ को अर आदेश होता है। कृ=कुण्—अ—इ—ए ३, ३, २१ अ=वा—ए=कुणेइ कुणइ कुणए। पक्षे कृ=३, ४, २५ कर्—अ—इ—ए=करेइ करए करई इत्यादि हुवत्।

आच्कृञोऽतीतानागतयोश्च। ३, ४, ५।

कौ० भूतभविष्यतोस्तुमक्त्वा तव्येषु च कृञ धातो-रन्त्यस्य स्थाने आत्स्यात्। भूते। कासी काही काहीअ। भविष्यति। काहिइ काहिए। तुमादौ। काउं। काऊण। (३, ४, ४ टी० ५ द्र०) कायव्वय कृ=का—हिमि—इति स्थितौ—

दी० आजिति। भूत—भविष्यत्काल में तथा तुम्—क्त्वा—तव्य प्रत्यय से पूर्व कृ के ऋ को आ होता है। कृ भूतादि =३, ३, २५ सी—ही—हीअ, प्र० सू० कृ=का=कासी २। कृ—३, ३, १, १७ हिइ प्र० सू० कृ—का—काहिइ। कृ=का—हिमि इस अवस्था में—

कृदाभ्यां हं। ३, ३, २१।

कौ० कृ—दाभ्यां परस्य भविष्यदर्थस्य मेर्हिना सह हं वा स्यात्। काहं पक्षे काहामि कास्सामि काहिमि। दा—अत्वामचः। ३, ४, २६ देहि देन्ति। देउ देन्तु। दाहिइ। दा—हिमि=दाहं पक्षे दाहामि दास्सामि दाहिमीत्यादि। शेषं होवत्। कुण करयो र्हुवत्।

दी० कृ इति। कृ—दा—धातु से पर भविष्यत्काल में हिसहित मि को विकल्प से हं आदेश होता है। का—हिमि =प्र० सू० हं=काहं दा—हिमि=दाहं पक्षे ३, ३, २८ हि=हा—स्सा काहामि कास्सामि पक्षे काहिमि एवं दाहा, स्सा, हि, मि। वर्तमान में दा—इ, न्ति आदि विध्यादि में ३, ३, ३४ उ—न्तु आदि ३, ४, २६ दा=दे=इ देन्ति आदि, देउ देन्तु आदि भूते दासी दाही दाहीअ सर्वं होवत्। कुण—कर—हुवत्।

इवादौ गमि दृशि छिदि भिदि विदि रुविमुजिमुजि श्रावि श्रूणां गच्छ दच्छ छेच्छ भेच्छ वेच्छ रोच्छ मोच्छ मोच्छ वोच्छ सोच्छ हेश्चवा लुप्। ३, ३, ३२।

कौ० भविष्यति गमादीनां स्थाने गच्छादयः क्रमात्स्युः सति गच्छादौ हेश्च वा लुप्। गच्छिइ गच्छिहिइ गच्छिन्ति गच्छिहिन्ति, न्ते, इरे। गच्छिसि गच्छिहिसि गच्छित्था गच्छिहित्था गच्छिह गच्छिहिह। गच्छिस्सं गच्छिहामि गच्छिस्सामि गच्छिहिमि—गच्छिमु—मो—म, गच्छिहामु गच्छिस्सामु गच्छिहित्था गच्छिहिस्सा गच्छिहिमु मो —म। एवं दृशादीनामुदाहार्यम्। वर्तमानादौ धात्वादेशो वक्ष्यते।

दी० इवेति। इप् एप् इत्यादि से पूर्व गमादि दश धातुओं के स्थान में क्रम से गच्छादि दश आदेश होते हैं। गच्छादि होने पर हि को विकल्प से लुप् होता है। गम्—ति= ३, ३, १-२७ तिप्—आदि=हिइ हिए—आदि प्र० सू० गम्=गच्छ, हि—वा—लुप् ३, ३, २० च्छ—अ=इ —ए=गच्छिइ गच्छेइ, गच्छिहिइ गच्छेहिइ १, १, २७ अलुप्=गच्छित्था गच्छि, च्छे हित्था। ३, ३, २८—३० गच्छिस्सं इत्यादि। इसी तरह दृशादि का रूप होता है। वर्तमानादि में धात्वादेश प्रकरण में कहेंगे।

वाम्यन्तानां गच्छमादयः। ३, ३, ३३।

कौ० भविष्यति म्यन्तानां गमादीनां स्थाने क्रमाद् गच्छमित्यादयो वा स्युः। गच्छं दच्छं इत्यादि।

दी० वाम्येति भविष्यत्काल में म्यन्त=गम्—हिमि आदि के स्थान में क्रम से गच्छ इत्यादि आदेश होता है। गम् —हिमि=गच्छं। दृश—हिमि=दच्छं। छिद्—हिमि= छेच्छं इत्यादि।

तिङाऽस्तेरत्थि। ३, ३, ८।

कौ० स्पष्टम्। अत्थि जिणो। अत्थि जिणा। अस्ति सन्तीत्यर्थः।

दी० तिङेति। तिङ् सहित अस् के स्थान में अत्थि आदेश होता है। अस्—ति—न्ति—आदि—अत्थि।

सिना सिः । ३, ३, ९ ।

कौ० सिना सहास्तेः सिः स्यात् । सि तुमं । असि-त्वम् ।

दी० सिनेति । सि सहित अस् को सि होता है । आसि—सि ।

वा मिमो मैं म्हि म्हो म्हाः । ३, ३, १० ।

कौ० तिङादेशैरेतैः सहास्तेः स्थाने क्रमादेते वा स्युः । अहं म्हि । अहमस्मि । अम्हे म्हो, अम्हे म्ह । वयं स्मः ।

दी० वामिति । तिङादेश मि—मो—म सहित अस् के स्थान में क्रम से म्हि—म्हो—म्ह आदेश विकल्प से होते हैं । अस्मि—म्हि । स्म→म्हो म्ह । यद्यपि सिद्धावस्था से २, ३, ५३ से स्म→को म्ह करके म्हो म्ह बन सकता है तो भी विभक्ति विधि से ये साध्यावस्था मानी जाती अन्यथा—जिना—जिनेन जिनेसु आदि सिद्ध रूप से २, १, ३२ न→ण जिणा आदि हो सकता है । इसके लिये सूत्र व्यर्थ हो जायगा ।

तवन्तस्यास्ते राश्य हेसी । ३, ३, २६ ।

कौ० भूतार्थ प्रत्ययान्त स्यास्तेरिमौ स्तः । आसि सो ते तुमं तुम्हे अयं अम्हे वा । एवं—अहेसि ।

दी० तदेति । भूतार्थ प्रत्ययान्त अस् के स्थान में आसि तथा अहेसि ये दो आदेश सर्वपुरुष वचनों में होते हैं ।

॥ अथ ण्यन्त प्रक्रिया ॥

णेरचावचौ । ३, ३, ११ ।

कौ० णेरेतावादेशौस्त: । नित्वान्नित्यम् ।

कौ० णेरिति । णि के स्थान में अ (त्) आव (च) ये दो नित्य आदेश होते हैं ।

अजेऽलुप्युपान्त्य स्यात् आः । ३, ३, १६ ।

कौ० ण्यादेशेषु परेषूपान्त्यस्यातः स्थाने आ स्यात् । हासइ हसावइ हासए हसावए । 'वावर्तमाने' (३, ३, २१) त्यादिना—एत्वे- हासेइ हसावेइ आदि । विध्यादौ—हासउ हसावउ । भविष्यति—हासहिइ हसावहिइ । एत्वे-- हासेहिइ हसावेहिइ । इत्वे—हासिहिइ हसाविहिइ । क्रियातिपत्तौ—हासेज्जा—हासेज्ज इत्वे—हासिज्जा—ज्ज हसावेज्जा हसावेज्ज हसाविज्जा हसाविज्ज । माणन्तौ—हासमाणो हासेमाणो हसावमाणो हसावेमाणो हासेन्तो इत्यादि । भूते तु वक्ष्यते—

कौ० अजलुपोरिति । ण्यादेश—अच् तथा लुप् से पूर्व उपान्त्य अ को आ होता है । हस्—णि =पु० सू० अ—आव —हस =प्र० सू० हास—हसाव—ति ३, ३, १३—ए =हासइ हसावइ हासए हसावए । ३, ३, २१ अ—वा—ए =हासेइ हसावेइ 'अतएव—सयेपौ' इस नियम से ए—से पूर्व एत्व नहीं होता है । एवं हासेन्ति हसावेन्ति आदि । विध्यादि में हास—हसाव ३, ३, ३४ उ—न्तु आदि २१ वा—ए—हासेउ आदि । भविष्यत्काल में ३, २, १, ६, २७ हिइ २० इ—ए—हासिहिइ हासेहिइ हसाविहिइ हसावेहिइ इत्यादि । क्रियातिपत्ति में ३, ३, ३६, ४०, २२, ज्जा —ज्ज माण न्त २२ एत्व २, १, ३६ ह्रस्व= हासेज्जा हासिज्जा इत्यादि ।

एआवेचौ च भूते । ३, ३, १२ ।

कौ० भूतार्थे प्रत्यये विवक्षिते णेरतो चादचवचौ चेत्येते चत्वार आदेशाः स्युः । हाससी हासेसी हसावसी हसावेसा । एवं हासही हासहीअ इत्यादि । आर्षे—इत्था इंसु=हासित्था हासिंसु एवं—हासे हसाव—हसावे=हासेइत्थेत्यादि ।

कौ० एचेति । भूतार्थक की विवक्षा में णि के स्थान में ए—आवे चाद—अ- -आवए चार आदेश नित्य होते हैं । हस—णि=प्र० सू० अ—आव—ए—आवे ३, ३, १६, हस—हसे—हास—हासे २५ इत्यादि=सी, हो, हीअ= हाससी हासहीअ हासही । एवं हासेसीत्यादि । आर्षे इत्था—इंसु =हासित्था हासिंसु इत्यादि ।

वा भ्रमेराडः । ३, ३, १३ ।

कौ० भ्रमेः पास्य णेराडो वा स्यात् । भमाडइ भमाडेइ भामइ भामेइ भमावइ भमावेइ इत्यादि । भूते । भमाडसी पक्षे—भमसी भामेसी भमावसी भमावेसीत्यादि । ॥ इतिण्यन्त प्रक्रिया ।

कौ० वेति । भ्रमधातु से पर णि को आड विकल्प से होता है । भ्रम—णि=प्र सू. वा—आड— २, ३, ६८ भ्र =भ भमाड पक्ष में अ—आव—शेष प्रक्रिया हसवत् = भमाडेइ इत्यादि ।

[अथ भावकर्म प्रक्रिया]

वाव्वक् कर्मभावयो र्लुप्यकश्च । २, ४, ३३ ।

कौ० भावकर्मयोर्वर्तमानेभ्यश्चि जिहुस्तुश्रु धूपूलुभ्यः परोद्विरुक्तो वकारागमो वा स्यात्सत्यागमे यथासंभवं लुप्यकश्च । चीयते=चिव्वइ । जिव्वइ । हुव्वइ । थुव्वइ सुव्वइ धुव्वइ पुव्वइ लुव्वइ । पक्षे—

णकाँचीजिहू स्तु श्रु धू पू लुभ्यो ह्रस्वश्च। ३, ४, ३२। 'यकइज्जईओ' ३, ४, ४८। इत्युभयं स्यात्। चिणिज्जइ चिणीअइ इत्यादि। विध्यादौ चिव्वउ चिणिज्जउ चिणीअउ। श्रुते—चिव्वसी। लङ्यिकः सत्वात्—चिणिज्जइ चिणीअइ। भविष्यति—चिव्विहिइ। यकोऽसत्वात्—चिणिहिइ इत्यादि।

कौ० चेति भावकर्म अर्थ में स्थित चिआदि धातुओं से पर द्विरुक्त व आगम होता है और आगम होने पर यक् का लुप होता है। चि—यक्—इ=प्र सू. चिव्वइ। पक्ष में ३, ४, ३२ ण (क) ४८ यक्=इज्ज—ई आ=१, १, २७ ण—अ—लुप् चिणिज्जइ चिणीअइ। एवं जिव्वइ जिणिज्जइ आदि। २, ३, ४१ स्तु=थु ६८ श्रु=सु= १, ४, ३६ सु १, २, ३६ धू=लू=पू=थु—पु—लु= शेष कार्य चिवत्=थुव्वइ सुव्वइ धुव्वइ इत्यादि।

चेर्म्मक्। ३, ४, ३४।

कौ० कर्मभावयोश्चेः परोम्मागमो वा स्यात् सत्यागमे यथासंभवं लुग्यकश्च। चिम्मइ। पक्षे चिव्वइ आदि।

कौ० चोरिति। भावकर्म में चि धातु से पर म्म आगम होता है यक् का लुप् होता है। चि—यक्—इ=प्र.सू. चिम्मइ।

ग्रहव्याहृओर्घेप्पवाहिप्पौ। ३, ४, ३५।

कौ० उक्तार्थे क्रमादनयोरेता वा देशौ वा स्तो लुग्यकश्च। घेप्पइ गेण्हिज्जइ गेण्हीअइ। वाहिप्पइ वाहरिज्जइ।

कौ० कर्मभाव अर्थ में ग्रह को घेप्प व्याहृ को वाहिप्प आदेश विकल्प से होता है और यक् का लुप् होता है। उदाहरण—ग्रह—यक्—इ=घेप्पइ। पक्षे ४, ३, २४ ग्रह=गेण्ह ३, ४, ४८ यक्=इज्ज—ईअ=गेण्हिज्जइ गेण्हअइ। व्याहृ=यक्—इ=वाहिप्पइ। पक्षे ४, १, १४ व्याहृ=कोक्क—पोक्क, यक्—इज्ज ईअ=कोक्किज्जइ कोक्कीअइ। पक्षे—२, ३, ६७ व्या=वा=वा ३, ४, २५ हृ=हर=वाहरिज्जइ वाहरीअइ।

अर्ज्यारभ्योर्विढप्पाढप्पौ। ३, ४, ३६।

कौ० उक्तार्थेऽनयोः क्रमादेतौ वास्तः। लुग्यकश्च। विढप्पइ विढविज्जइ अज्जिज्जइ। आढप्पइ आढपीअइ आरम्भीअइ।

कौ० अर्ज्येति। कर्मभाव में अर्ज को विढप्प आरभ् को आढप्प विकल्प से होता है तथा यक्—लुप् होता है। अर्ज—य—इ=विढप्पइ पक्षे ४, १, ४५, ३, ४, ४८ विढविज्जइ—वीअइ। पक्षे २, ३, ६८, ७८ ज्=ज्ज= अज्जिज्जइ अज्जीअइ। आरभ्—य—इ=आढप्पइ। पक्षे—४, २, २७ आढविज्जइ आरम्भिज्जइ। अर्ज्यते—आरभ्यते इत्यर्थः।

स्पृशेश्छिप्पः। ३, ४, ३७।

कौ० उक्तार्थे स्पृशेश्छिप्पो वास्याद् लुग्यकश्च। छिप्पइ। पक्षे। छिविज्जइ फासइ इत्यादि।

कौ० स्पृशेरिति। कर्मभाव में स्पृश् को छिप्प विकल्प से होता है। तथा यक्—लुप् होता है। स्पृश—य—इ= छिप्पइ। पक्षे ४, ३, १५ छिविज्जइ छिविज्जइ फसिज्जइ फासिज्जइ।

ज्ञो णज्ज णप्प णव्वा। ३, ४, ३८।

कौ० उक्तार्थे ज्ञा धातोरेते वा स्यु लुग्यकश्च। णज्जइ णप्पइ णव्वइ। पक्षे जाणिज्जइ मुणी अइ।

कौ० ज्ञ इति। कर्मभाव में ज्ञा को णज्जादि विकल्प से होता है तथा यक् लुप्। ज्ञा—य—इ णज्जइ पक्षे ४, ३, ३८ जाणिज्जइ।

सिचि स्निहोः सिप्पश्च। ३, ४, ३९।

कौ० उक्तार्थेऽनयोः सिप्पः स्यात् लुग्यकश्च। सिप्पइ सिप्पेइ। सिच्यते। स्निह्यते वा।

कौ० सिचीति। सिच्—स्निह् को सिप्प तथा यक्—लुप् होता है। सिच्—स्निह्—य—इ=सिप्पइ ३, ३, २१ ए=सिप्पेइ।

वचिदृशोर्वुच्च दीसौ। ३, ३, ४०।

कौ० उक्तार्थेऽनयोः क्रमादेतौ स्तो लुग्यकश्च। वुच्चइ (उच्यते) दीसइ (दृश्यते)

कौ० वचीति। कर्मभाव में वच् को वुच्च दृश् को दीस, तथा यक्—लुप् होता है। वच्—य=इ=वुच्चइ। दृश्—य—इ=दीसइ।

वा द्वित्वं गमादेरन्त्यस्य । ३, ४, ४१ ।

कौ० उक्तार्थे गमादेरन्त्यस्य द्वित्वं वा लुग्यकश्च । गम्यते=गम्मइ गच्छिज्जइ गच्छीअइ । हस्सइ हसिज्जइ ।

वी० वेति । कर्मभाव में गमादि के अन्त्य को विकल्प से द्वित्व होता है तथा यक्—लुप् । गम्—य—इ=गम्मइ । पक्षे ३, ४, ६, ४८ गच्छिज्जइ गच्छीअइ । एवं हस्सइ हसिज्जइ भण्णइ भणिज्जइ इत्यादि ।

कृ हृ जॄ स्त्रामीरः । ३, ४, ४२ ।

कौ० एषामन्त्यस्यैरादेशो वा स्युदुक्तार्थे लुग्यकश्च । क्रियते । कीरइ करिज्जइ । ह्रियते । हीरइ हरीअइ । जीर्यते—जीरइ जरीअइ । तीर्यते—तीरइ, तरीअइ ।

वी० कृ ह्वीति । कर्मभाव में कृ—हृ—जॄ—तॄ के अन्त्य को ईर विकल्प से होता है । कृ—य—इ=कीरइ । पक्षे ३, ४, २५, ४८= करिज्जइ करीअइ । एवं हीरइ हरिज्जइ इत्यादि ।

दहेर्ज्झः । ३, ४, ४३ ।

कौ० उक्तार्थे दहेरस्य ज्झो वा स्याद्लुग्यकश्च । दह्यते=डज्झइ डहिज्जइ डहीअइ ।

वी० दहेर्गिति । कर्मभाव में दह् के अन्त्य को विकल्प से ज्झ होता है । तथा यक्—लुप् । दह—य—इ=प्र.सू. ह्=ज्झ १. ४, १९ द=ड=डज्झइ । पक्षे ३, ४, ४८ डहिज्जइ डहीअइ ।

अनूपसमोरुधः । ३, ४, ४४ ।

कौ० एभ्यः परस्य रुधोऽन्त्यस्य ज्झो वा स्यादुक्तेऽर्थे लुग्यकश्च अनुरुध्यते=अणुरुज्झइ उवरुज्झइ संरुज्झई । पक्षे अणुरुन्धिज्जइ अणुरुम्भिज्जइ इत्यादि ।

वी० अन्विति । अनु—उप—सम् से पर रुध के अन्त्य को ज्झ विकल्प से होता है । तथा यक्—लुप् । अनु=२, १, ३२ अणु ४२ उप=उव १, १, ४२ सम्—सं—रुध्=प्र.सू. रुज्झ—इ=अणुरुज्झइ उवरुज्झइ संरुज्झइ । पक्षे ३, ४, ६, १०, ४८ अणुरुज्झइ रुन्धिज्जइ रुम्भिज्जइ एवं उव—सं—रुज्झि—न्धि—म्भि—ज्जइ इत्यादि ।

बन्धोन्धः । ३, ४, ४५ ।

कौ० उक्तेऽर्थे बन्धोन्धो ज्झो वास्याद्लुग्यकश्च । बज्झइ । बन्धिज्जइ बन्धीअइ (बध्यते)

वी० बन्ध इति । कर्मभाव में बन्ध के अन्त्यन्ध को विकल्प से ज्झ होता है । बन्ध—य—इ=प्र.सू.—न्ध=ज्झ ३, १, ४२ ब=व= बज्झइ पक्षे ३, ४, ४८ बन्धिज्जइ बन्धीअइ ।

दुहवहरुधलिह वहांभोऽत उच्च । ३, ४, ४६ ।

कौ० एषामन्त्यस्य ब्भो वा स्यादुक्तेऽर्थे लुग्यकश्च-वहोऽतउत्व च । दुह्यते=दुब्भइ दुहिज्जइ । रुह्यते=रुब्भ रुहिज्जइ । रुध्यते=रुब्भइ रुन्धिज्जइ । लिह्यते=लिब्भइ लिहीअइ । उह्यते=वुब्भइ वहिज्जइ ।

वी० दुहेति । दुहादि के अन्त्य को ब्भ विकल्प से होता है तथा यक्—लुप् कर्मभाव में । दुह—य—इ=दुब्भइ इत्यादि ।

खनहनोर्म्मः । ३, ४, ४७ ।

कौ० उक्तेऽर्थेऽनयो रन्त्यस्यस्य म्मो वा स्याद्लुग्यकश्च । खन्यते=खम्मइ खणीअइ । हम्मइ हणिज्जइ ।

वी० खनेति । कर्मभाव में खन्—हन् के अन्त्य को म्म विकल्प से होता है । खम्=हन्—य—इ=खम्मइ हम्मइ । पक्षे २, १, ३२ न=ण ३, ४, ४८ खणिज्जइ हणिज्जइ खणीअइ हणीअइ ।

शेषादिज्जची अचो । ३, ४, ४८ ।

कौ० कर्मभाव विधौ क्यादिरुक्तस्तदन्यः शेषस्तस्माच्च्यादिवर्जाद्धातोः परस्य य को नित्यमेतावादेशौ स्तः । कर्मणि (पठ्यते) । पढिज्जइ पढीअइ । पठ्यताम्-पढीअउ पढिज्जउ । अपठयत=पढिज्जसी पढीअसी । भविष्यति क्रियातिपत्तौ च यकोऽसत्वात्कर्तृवद्रूपाणि स्युः । एवं भावे हस्यते=हसिज्जइ हसीअइ इत्यादि ।

वी० शेषादिति । कर्मभाव में च्यादि उक्त हो गया है अतः च्यादि से भिन्न धातुओं से पर यक् को नित्य इज्ज तथा

ई अ ये दो आदेश होते हैं। पठ (=ठ २, १, १७) य—इ—प्र. सू. य=इज्ज—ई अ=पढिज्जइ पढीअइ। पढिज्जन्ति पढीअन्तीत्यादि। लङ् लकार में यक् है अतः भूतकाल में पठ्—य=प्र.सू. इज्ज—ई अ ३, ३, २५ सी—हीअ= पढीअसी पढिज्जसीत्यादि। भविष्यत् तथा क्रियातिपत्ति में यक् नहीं होने से कर्तृवत् रूप होता है।

भावकर्मक्तेषु चलुपाविचौ। ३, ३, १५।

कौ० एषु णेः स्थाने चितौ लुप्—आवि—इत्यादेशौ स्तः। भावे। हास्यते=हासिज्जइ हसाविज्जइ आसीअइ हसावीअइ। कर्मणि। पाढिज्जई पढाविज्जइ पाढीअइ पढावीअइ।

। इतिभावकर्म प्र. कि.।

दी० भावेति। भाव—कर्म तथा क्त प्रत्यय पर में होने पर णे के स्थान में चित्=लुप् तथा आवि ये दो आदेश होते हैं। हस्—णि—यक्—इ—प्र.सू. णि=लुप् १६ हस्=हास्—यक्=इज्ज—ईअ=हासिज्जइ हासीअइ। एव णि—आवि—इज्ज—ईअ (यक्) १, १, २७ वि=इलुप्=हसाविज्जइ हसावीअइ।

[अथ धात्वावयवादेशागमाः]

गमयमासिषां च्छः। ३, ४, ६।

कौ० अन्त्यस्येत्यनुवर्त्य। एषामन्त्य स्यच्छः स्यात्। गच्छइ। जच्छइ। अच्छइ। भविष्यति। गच्छिइ।

दी० गमेति। गमादि के अन्त्य को च्छ आदेश होता है। गम्—यम्—आस्—इष्—प्र.सू. म्—स्—ष्=च्छ ३, ४, ३० अ—इ=गच्छइ १, २, ३६ आ=अ=अच्छइ ४, २८ य=ज=जेच्छइ इच्छइ।

नृतमदव्रजांच्चः। ३, ४, ७।

कौ० एषामन्त्यस्यच्चः स्यात्। नच्चइ मच्चइ वच्चइ।

दी० नृतेति। नृतादि के अन्त्य को च्च आदेश होता है। न (=नृ १, ३, २७) त् मद्, व (=व्र २, ३, ६८) ज्—प्र.सू. च्च्—अ—इ=नच्चइ मच्चइ वच्चइ।

गृध क्रुध रुध बुध युध सिध मुहां ज्झः। ३, ४, ९।

कौ० एषामन्त्यस्यज्झः स्यात्। गिज्झइ कुज्झइ रुज्झइ बुज्झइ जुज्झइ सिज्झइ मुज्झइ।

दी० गृधेति। गृधादि के अन्त्य को ज्झ होता है। गि (=गृ १, ३, २६) कु (=क्रु २, ३, ६८) जु (=१, ४, २८ यु) बु (=बु २, १, ४२) प्र. सू. ध=ह=ज्झ् ३, ४, ३० अ (क्त)—इ गिज्झइ कुज्झइ इत्यादि।

रुधोन्धम्भौवा। ३, ४, १०।

कौ० रुधोऽन्त्य स्येतौ वा स्तः। रुन्धइ रुम्भइ। पक्षे रुज्झइ। रुणद्धीत्यर्थः।

दी० रुधइति। रुध के अन्त्य को न्ध तथा म्भ ये दो आदेश होते हैं। रुध्=न्ध्—म्भ—अ—इ=रुन्धइ रुम्भइ।

पतसदोर्डःया। ३, ४, ११।

कौ० अनयोरन्त्यस्य डः स्यात्। पडइ। सीदति=सडइ।

दी० पतेति। पत्—सद्—के अन्त्य को ड होता है। पत्—अ—इ सद्—अ—इ—प्र.सू. त्—द्—ड्=पडइ सडइ।

भिदि च्छिदो न्द च्। ३, ४, १६।

कौ० अनयोरन्त्यस्यन्दच्स्यात्। भिन्दइ। भविष्यति। भेच्छिइ छच्छिइ पक्षे भेच्छिहिइ छच्छिहिइ।

दी० भिदीति। भिद्—छिद् के अन्त्य को न्द होता है। भिन्द—छिन्द—अ—इ=भिन्दइ छिन्दइ। भेच्छिइ छेच्छिइ ३, ३, ३२ द्र.।

नमिरुदोवः। ३, ४, १७।

कौ० अनयोरन्त्यस्य वः स्यात्। रोदिति—रुवइ रोवइ।

दी० नमीति। नम—रुद् के अन्त्य को व होता है। नम—अ—इ=म्=व्—अ—इ नवइ। रुव (=द) २८ गुण=रोवइ, रुवइ।

विजेरुदः। ३, ४, १८।

कौ० उदः उपरस्य विजेरन्त्यस्य वः स्यात्। उद्विजति=उव्विवइ मुणीकम्म बन्धाओ।

दी० विजेरिति । उद् से पर विज् के अन्त्य को व होता है । उद्—विज्—व्=अ—इ २, ३, ६८, ७४ द्वि = व्वि = उव्विवइ ।

सृजे रः । ३, ४, १९ ।

कौ० सृजेरन्त्यस्य रः स्यात् । वोसिरामि कसाये । व्युत्सृजामि कषायान् । निसृजति—निसिरइ ।

दी० सृजेरिति । सृज् के अन्त्य को र होता है । वो (=व्युत २, ३, ४१) सृज्—अ—सि—नि—सृज्—अइ=प्र० सू० ज=र् १, ३, २७ सृ=सि=निसि रइ । ३, ३, १७ अ=आ=वोसरामि ।

द्वित्वं शकादेः । ३, ४, २१ ।

कौ० शकादेरन्त्यस्य द्वित्वं स्यात् । शक्नोति सक्कइ । जिम्मइ शक्—पारइ तरइ तीरइ चयइ ४, १ ।

दी० द्वित्वमिति । शकादि के अन्त्य को द्वित्व होता है । शक्—अ—इ—१, ४, ३६ श=स प्र० सू० क्क= सक्कइ, ४, १, २८ द्र० ।

ओर वः । ३, ४, २४ ।

कौ० धातोरन्त्ययोर्वर्णस्य स्थानेऽवच् स्यात् । जुहोति=हवइ । च्यवतो । चवइ ।

दी० ओरिति । धातु के अन्त्य उ—को अव आदेश होता है । हु—अ—इ=चु (=च्यु २, ३, ६७) अ—इ=हवइ चवइ ।

उररच । ३, ४, २५ ।

कौ० धातोरन्त्यस्य ऋकारस्य स्थानेऽरस्यात् । कृ—करइ । हृ—हरइ ।

दी० उरिति । धातु के अन्त्य ऋ को अर होता है । कृ—अ=इ प्र० सू० करइ । एवं धृ हृ—तृ—जृ—तृ इत्यादयः ।

अरिच्कृषादेः । ३, ४, २६ ।

कौ० अन्त्यस्येति निवृत्तम् । कृषादीनां ऋवर्णस्य स्थानेऽरिच्स्यात् । कर्षति—करिसइ । एवं मृष् हृष् वृष इत्यादीनाम् । येषां धातुनामरिज्दृश्यते तेऽत्र कृषादयो बोध्याः ।

दी० अरीति । कृषादि के ऋ को अरि आदेश होता है । कृष्—अ—इ=प्र० सू० कृ=करि १, ४, ३६ ष=स= करिसइ । एवं मृश्—मरिसइ वृष्=वरिसइ—हृष्= हरिसइ इत्यादि । जिन धातुओं के ऋ को अरिच् होता है वे यहाँ कृषादि हैं ।

दीर्घस्तुषादेरचः । ३, ४, २७ ।

कौ० तुषादीनामचो दीर्घत्वं स्यात् । तुष्यति=तुसइ । दुसइ । एवं रुष शुषादीनाम् । येषां दीर्घो दृश्यते तेऽत्र—तुषादयो बोध्याः ।

दी० दीर्घ इति । तुषादि के अच् को दीर्घ होता है । तुष् —दुष्—सष्—शष्—अ—इ=प्र० सू० उ=ऊ १, ४, ३६ श=ष=स=तुसइ आदि ।

क्ङित्यपिच्वोर्गुणः । ३, ३, २८ ।

कौ० धातोरिदुतोर्गुणः स्यात् क्ङित्यक्ङिति च प्रत्यये परे । जयति—जेइ । जेन्ति । नी—नेइ नेन्ति । श्रुत्वा=सोऊणा ।

दी० क्ङितीति । धातु के इकार—उकार को गुण होता है क्ङित या अ क्ङित पर होने पर । जि—इ—न्ति, नी— इ—न्ति—प्र० सू० जि—जे, नी=ने=जेइ, नेइ । श्रु— त्वा=प्र० सू० श्रु=श्रो २, ३, ६८, १, ४, ३६ श्रो =सो ३, ३, ४३ त्वा=तूण=२, २, १ तू=ऊ १, १, २६ असंधि=सोऊण ४७ चन्द्र=सोऊणं ।

अचामचः । ३, ३, २९ ।

कौ० धातुष्वचामचो बहुलं स्युः । हवइ हिवइ । चिणइ चुणइ इत्यादि ।

दी० अचेति । धातुओं में अच् को बहुल प्रकार से अस् होता है । भू=हव्—अ—इ प्र० सू० ह—हि=हिवइ पक्षे हवइ । चि—३, ४, ३२ ण—इ=प्र० सू० चि= चु=चुणइ चिणइ । एवं धावइ धुवइ । रुद्=रोवइ रुवइ आदि ।

हलोऽगनीओं । ३, ४, ३० ।

कौ० हलन्ताद्धातोः परोऽगागमः स्यादी अ परे तु न । हसइ हसए । ई अे तु—हसीअ ।

दी० ह्ल इति । हलन्त धातु से पर अकार आगम होता है। हस्—अ—ति=इ=ए=हसइ। हसए। हस्—३, ३, २४ ई—अ=हसीअ।

णक् चिजि हुस्तृ श्रुधु पूल्भ्यो ह्रस्वश्च

। ३, ३, ३२।

कौ० एभ्यः परो णागमः स्याद्ध्रस्वश्चैषां यथासम्भवम्। चिणइ जिणइ हुणइ थुणइ सुणइ धुणइ पुणइ लुणइ। । इति धात्वावयवादेशागमः।

दी० णगिति। च्यादि से पर ण आगम होता है तथा ह्रु पू भू को ह्रस्व होता है। चि० जि० ण—इ=चिणइ २, ३, ४२ स्तु=थु ६८ श्रु=शु १, ४, ३६ शु=सु शेषं चिवत्।

॥ अथ धात्वादेशाः ॥

इदितां धातूनां वाऽऽदेशाः। ४, १, १।

कौ० सूत्रे ये धातव इदितो निर्देक्ष्यन्ते तेषामादेशा वा स्युः। तत्रैवादा—हरिष्यन्ते।

दी० इदीति। सूत्र में जो धातु इदित् कहेंगे उन धातुओं के आदेश विकल्प से होंगे। उन सूत्रों में ही उदाहरण दिखायेंगे।

होहुवहुवा भुवेः। ४, १, २।[1]

भूधातोरेते त्रयो वा स्युः। होइ। हुवइ। हुवइ। पक्षे—भवइ।

कृञः कुणः। ४, १, ७।

करोतेः कुणो वा स्यात्। करोति, कुरुते वा=कुणइ कुणए। पक्षे उररच्। ३, ४, २५। करइ करए।

कोक्क पोक्को व्याहरेः। ४, १, १६।

व्याहरे रिमौ वा स्तः। व्याहरति=कोक्कइ पोक्कइ। पक्षे वाहरइ (=व्या=२, ३, ६७ वा—हृं=हर—अ—इ)।

प्रसरे रुव्वेल पयल्लौ। ४, १, १७।

प्र—सरतेरेतौ वा स्तः। उव्वेलइ पयल्लइ। पक्षे पसरइ (=प्र २, ३, ६८ प—सृ=सर—अ—इ)।

गन्धे महमहः। ४, १, १८।

प्रसरेर्गन्धविषये महमहो वा स्यात्। कमल गन्धो प्रसरति। महमहइ कमल गन्धो।

स्मरेः सुमर—भर—झूर—पयर—भर—पम्हुह—भल—लढ—विम्हराः। ४, १, २०।

स्मरेतेन वा देशा वा स्युः। सुमरइ। स्मृ=सुमर—अ—इ=पक्षे स्मृ=२, ३, ६७ सृ=सर्=सुमरइ सरइ।

विस्मु विम्हर—वीसर—पम्हुसाः। ४, १, २१।

वि—स्मरेते त्रयो नित्यं स्युः। विस्मरति=विम्हरइ, वीसरइ, पम्हुसइ (=वि—स्मृ=विम्हर—वीसर्—पम्हुस् अ—इ=)

शकेः पार—तर—तीर—चयाः। ४, १, २८।

शक्नोतेरेते चत्वार आदेशा वा स्युः। पारइ तरइ तीरइ चयइ। सक्कइ ३, ४, २१ द्वः।

मुञ्चेर्मेल्लावहे डोस्सिक्क छड्ड णिलुञ्छ धंसाडरेअवाः। ४, १, २९।

मुञ्चतेरेते सप्तादेशा वा स्युः। मेल्लइ अवहेडइ उस्सिक्कइ छड्डइ णिलुञ्छइ धंसाडइ रेअवइ। मुच्—अ—इ २, २, १ च्—लुप् १, १, २२ अस मुअइ।

---

१. सूत्र ४, १, २ से सूत्र ४, ४, ३४ धात्वादेश समाप्ति तक दीपिका नहीं है।

राजेश्छ ज्जासहरीर रेह सहाः । ४, १, ४२ ।

राजतेरेते पञ्चादेशा वा स्युः । छज्जइ अग्घइ रीरइ रेहइ । पक्षे रायइ (=राज्—अ=ज ३, २ १, ३ य—इ)

विढवोऽर्ज्जः । ४, १, ४५ ।

अर्जते विढवादेशो वा स्यात् । विढवइ विढवेइ (३, ३, २१ वा— एत्व) पक्षे अज्ज् (र्ज् २, ३, ६८, ७४) अ—इ)=अज्जइ अज्जेइ ।

घूर्णो—घुम्म—घुल—घोल—पहल्लाः । ४, १, ४६ ।

घूर्णधातोरेते चत्वार आदेशा नित्यं स्युः । घुम्मइ घुलइ घोलइ पहल्लइ ।

भुजो भुञ्जाण्ह कम्म चड्ड जिम जेम चमढ सामणाः । ४, १, ५० ।

भञ्जतेरेतेऽष्टादेशा नित्यं स्युः । भुञ्जइ अण्हइ कम्मइ चड्डइ जिम्मइ (३, ४, २१ द्र०) जेमइ चमढइ समाणइ भुक्ते इत्यर्थः ।

उपेन कम्मवो वा । ४, १, ५१ ।

उपपूर्वकस्य भुजः स्थाने कम्मवो वा स्यात् । कम्मइ । पक्षे उवभुञ्जइ । उप भुनक्तीत्यर्थः ।

युजो जुञ्ज जुज्ज जुप्पाः । ४, १, ५२ ।

युज धातोरेते त्रय आदेशा नित्यं स्युः । जुज्जइ जुञ्जइ जुप्पइ । युक्तो भवतीत्यर्थः ।

तने स्तड्—तड्ड—तड्डव—विरल्लाः । ४, २, १ ।

तनोतरते चत्वार आदेशा वा स्युः । तनोति तनुते वा=तडइ, तड्डइ, तड्डवइ, विरल्लइ । तणइ ।

विवृति क्वथ्यो ढंसाट्टौ । ४, २, ३ ।

अनयोः कमादेतौ वास्तः । विवर्तते=ढंसइ विवट्टइ । अट्टइ कठइ ३, ४, १२ क्वाथं करोतीत्यर्थः ।

घुसल विरोलौ मन्थेः । ४, २, ४ ।

मथ्नातेरेतौ वास्तः । घुसलइ विरोलइ मन्थइ । मथ्नातीत्यर्थः ।

छि दे लूर—णिल्लूर—णिव्वर—णिच्छल—णिज्झोर—दुहावाः । ४, १, ५ ।

छिदेरेते षडादेशा वा स्युः । लुरइ णिल्लुरइ णिव्वरइ णिच्छलेइ णिज्झोरइ दुहावइ छिन्दइ (३, ४, १६) छिनत्ति ।

क्रुधि रुध्यो जूरोत्थङ्घौ । ४, २, ६ ।

अनयोरेतौ क्रमा द्वास्तः । क्रुध्यति=जूरइ । कुज्झइ । रुणद्धि=उत्थङ्घइ, रुन्धइ (३, ४, ६, १० द्र.) ।

खिदेर्जूर विसूरौ । ४, २, ११ ।

खिदेरेतौ वास्तः । जूरइ विसूरइ । पक्षे खिज्जइ (३, ४, २१) । खेदं करोतीत्यर्थः ।

व्यापि समाप्योरो अग्गसमाणौ । ४, २, १३ ।

अनयोः क्रमादेतौ वास्तः । व्याप्नोति=ओअग्गइ वावेइ । समाप्नोति=समाणइ समावइ ।

निःश्वसि संतप्योर्झङ्खः । ४, २, १४ ।

अनयोर्झङ्खा देशो वा स्यात् । झङ्खइ । निःश्वसिति संतपते वेत्यर्थः ।

विलपे वडवडझङ्खौ । ४, २, १५ ।

वि—लपेरेतौ वडवड झङ्खौ वास्तः । विलपति=वडवडइ झङ्खइ विलवइ ।

उपालम्भे झङ्खवेलव पच्चाराः । ४, ३, १६ ।

उपालम्भेरेते त्रय आदेशा वा स्युः । झङ्खइ वेलवइ पच्चारइ उवालम्भइ । उपालभते ।

ह्वरम्भौ रभेराङः । ४, २, २८ ।

आङः परस्य रभेरेतौ वास्तः आढवइ आरम्भइ आरभइ (आरम्भते)

लुभेः सम्भावः । ४, २, २६ ।

लुभेः सम्भावो वा स्यात् । सम्भावइ लुब्भइ (३, ४, २१) लुभ्यतीत्यर्थः ।

प्रदीपेरब्भुत्तते अव सन्धु मकसन्दुमाः । ४, २, ३० ।

प्रदीप्यतेरेरे चत्वार आदेशा वा स्युः । प्रदीप्यते—अब्भुत्तइ ते अवइ संधुकइ सन्दुमइ । पलीवइ (१, ४, २२ द्र.)

वेपरयज्झायम्बौ । ४, २, ३२ ।

वेपतेरेतौ वास्तः । वेपते=आयज्झइ आयम्बइ । वेवइ ।

स्वपेर्लिस लेट्ट कम्वसाः । ४, २, ३३ ।

स्वपेरेते त्रय आदेशा वा स्युः । स्वपिति=लिसइ लेट्टइ कम्वसइ । पक्षे सुवइ (१, २, २८. २, ३, ६८. २, ४२, ३, ४, ३०)

गमेरई—णी—णीण—रम्म—बोल—पदअ—णिवह—णीलुक्क—णिम्मइच्छावज्जसा वक्कु सोक्कु साणुवज्ज पच्चड्ड पच्छन्द—परिअल—परिअल्लावहरावसेहर्णिरिसाः । ४, २, ३५ ।

गमेरेतेऽईणीत्यादयः एकविंशतिरादेशा वा स्युः । गच्छति—अईइ । णीइ, णीणेइ, रम्मइ, बोलइ, पदअइ, णिवहइ, णीलुक्कइ, णिम्मइइ, अइच्छइ, अवज्जसइ, अक्कुसइ, उक्कसइ, अणुवज्जइ, पच्चड्डइ, पच्छन्दइ, परिअलइ, परिअल्लइ, अवहरइ, अवसेहइ, णिरिणासइ । पक्षे—गच्छइ (३, ४, ६ द्र.) ।

प्रविशिहसि संदिशीनां रिअ गुञ्जा प्पाहा । ४, ३, १ ।

क्रमादेषामेते आदेशा वा स्युः । प्रविशति=रिअइ । हसति—गुञ्जइ । संदिशति=अप्पाहइ । पक्षे पविसइ हसइ संदिसइ ।

भषिचलि दलि भ्रक्षीणां भुक्कवम्फविसट्ट—चोपडाः । ४, ३, २ ।

एतेषां क्रमादेते वा स्युः । भुक्कइ वम्फइ विसट्टइ चप्पडइ । पक्षे भसइ बलइ दलइ । भ्रक्ष्—अ—इ=२, ३, ६. ७५—क्ष=क्ख ६८ म्र=मक्खइ ।

नशेः सेहावसेहावहरपडिसाणिवह णिर णासाः । ४, ३, ४ ।

नश्यतेरेते षडादेशा वा स्युः । नश्यति=सेहइ अवसेहइ अवहरइ पडिसाइ णिवहइ णिरणासइ । पक्षे नस्सइ (३, ४, २१)

भ्रंशेश्चुक्क भुल्लफिट्टफुट्ट फिडफुडाः । ४, ३, ६ ।

भ्रंशेरेते षडादेशा वा स्युः । भ्रश्यति । चुक्कइ भुल्लइ फिट्टइ फुट्टइ फिडइ फडइ । पक्षे भंसइ ।

काङ्क्षेराह—मह—सिह—वच्च—वम्फ—विलुम्पा अहिलङ्खाहिलङ्घाः । ४, ३, १३ ।

कांक्षेरेतेऽष्टादेशा वा स्युः । कांक्षति—आहइ महइ सिहइ वच्चइ वम्फइ विलुम्पइ अहिलङ्खइ अहिलङ्घइ कङ्खइ=(=कास्—अ—इ=१, २, ३६ क्ष=क २, ३, ९ क्ष=ख=)

कृषेरञ्च कड्ढाणच्छाइञ्छायञ्छ सायड्ढाः । ४, ३, १४ ।

कृषेरेते षडादेशा वा स्युः । कर्षति=अञ्चइ कड्ढइ अणच्छइ अइञ्छइ आयञ्छइ सायड्ढइ । पक्षे करिसइ (३, ४, २६ द्र.)

स्पृशश्छिव—छिह—फंस—फास—फरिसा अलिहालुङ्खा । ४, ३, १६ ।

स्पृशतेरेते सप्तादेशा वा स्युः । स्पृशति=छिवइ छिहइ फंसइ फासइ फरिसइ आलिहइ आलुङ्खइ ।

दृशो निअ—देक्ख—पेच्छ—पास—वज्ज—पुलअ पुलोअ सव्वव—निअच्छा वयच्छा वयज्झा वक्खावअक्खौ अवक्खा । ४, ३, १७ ।

दृश धातोरेते पञ्चादेशा वा स्युः । पश्यति=निअइ देक्खइ पेच्छइ पासइ पुलअइ । वज्जइ वयासाः पुलोअइ सव्वइ निअच्छइ अवयच्छइ अवयज्झइ अवक्खइ अवयक्खइ ओअक्खइ, अवयासइ ।

ग्रहो गेण्ह—हर—पङ्ग—बल—निरुवाराहि पच्चुआः । ४, ३, २४ ।

ग्रहो गेण्हादयः षडादेशा वा स्युः । गृह्णाति । गेण्हइ हरइ पङ्गइ बलइ निरुवारइ अहि पच्चुअइ ।

त्रसे डरवज्ज—बोज्जाः । ४, ३, २५ ।

त्रस्यतेरेते त्रय आदेशा वा स्युः । त्रस्यति= डरइ वज्जइ बोज्जइ । पक्षे तसइ ।

दहेरालुङ्ख हिऊलौ । ४, ३, २६ ।

दहेरेतौ वास्तः । दहति =आलुङ्खइ अहिऊलइ । पक्षे डहइ (१, ४, १९ द=ड) ।

मुहे गुंम गुम्मडौ । ४, ३, २७ ।

मुह्यतेरेतौ वास्तः । मुह्यति=गुमइ गुम्मडइ । मुज्झइ । ३, ४, ६, द्र. ।

स्थष्ठा—थक्क—चिट्ठ—निरप्पाः । ४, ३, ३६ ।

तिष्ठतेरेते चत्वार आदेशा स्युः । ठाइ । ठाअइ (३, ४, ३१) अ । थक्कइ चिट्ठइ—निरप्पइ । विशेषः प्रा. कौ. द्र. ।

जाणमुणौज्ञ । ४, ३, ३७ ।

जानातेरेतौ स्तः । जानाति=जाणइ मुणइ ।

गैध्ययोर्गाझौ । ४, ३, ३९ ।

अनयोः क्रमादेतौ स्तः । गायति=गाइ । अलतोऽचोवा । ३, ४, ३१ । इति वा अक् । गाअइ । एवं ध्यायति=झाइ झाअइ ।

श्रद्धः सद्दहः । ४, ३, ४० ।

श्रद्धधातेः सद्दह आदेशः स्यात् । श्रद्धाति= सद्दहइ । श्रद्धानम्=सद्दहाणं ।

पिबेः पट्ट—डल्ल—पिज्ज—घोट्टाः । ४, ४, १ ।

पिबतेरेते चत्वार आदेशाः वा स्युः । पिबति= पट्टइ डल्लइ पिज्जइ घोट्टइ पक्षे पिअइ ।

कथेश्चव—जम्प—संघ—वोल्ल—साह—सीसोप्पाल —पिसुण—पज्जर—वज्जराः । ४, ४, २ ।

कथ धातोरेते दशा देशा वा स्युः । कथयति= चवइ जम्पइ संघइ बोल्लइ साहइ सीसइ उप्पालइ पिसुणइ पज्जरइ वज्जरइ । पक्षे कहइ ।

जुगुप्सेर्झुण दुगुच्छ दुगुञ्छाः । ४, ४, ८ ।

जुगुप्सतेरेते त्रय आदेशा वा स्युः । जुगुप्सते= झुणइ दुगुच्छइ दुगुञ्छइ ।

क्षये णिज्झरः । ४, ४, १२ ।

क्षिक्षये इत्यस्य णिज्झर आदेशो वा स्यात् । क्षीयते=णिज्झरिज्जइ । णिज्झरीअइ । पक्षे झिज्जइ । २, ३, ६, क्षि=झि—३, ४, ४८ इज्ज—ईअ=झिज्जइ ।

[अथ ण्यन्त धात्वादेशाः]

णेश्छदे ढक्क—णुम—नूम—सन्नुम—पव्वालोम्वालाः । ४, ४, १३ ।

ण्यन्तस्य छदेरेते षडादेशा वा स्युः । छादयति ढक्कइ णुमइ नूमइ सन्नुमइ पव्वालइ ओम्वालइ । पक्षे—छद्—णि=३, ३, ११ अ=आव=२१ वा—ए १६६=छा २, २, १.३ द=य ३, ३, १ ति=क्=छायइ छायेइ । छायावइ छयावेइ ण्यादेशापवादः । एवमग्रेऽपि प्रक्रिया ।

अपर्श्चचुपालिपणामाः । ४, ४, १४ ।

अर्पयतेरेते त्रय आदेशा वा स्युः । अर्पयति= ऋ=णि=अर्पि—चच्चुप—अ—इ=चच्चुपइ । एवं आलिवइ पणामइ । २, ३, ६८, ७४ र्प=प्प—३, ३, ११, २१, अप्पइ अप्पेइ अप्पावइ अप्पावेइ ।

दृशर्दसदाव दक्खवाः । ४, ४, १७ ।

ण्यन्तस्य दृशेरेते त्रय आदेशा वा स्युः । दर्शयति =दंसइ दावइ दक्खवइ । पक्षे—३, ४, २६ दृ= दरि=दरिसइ दरिसेइ दरिसावइ दरिसावेइ ।

प्रस्थापेः पेण्डव पट्ठवौ । ४, ४, २३ ।

प्रस्थापयतेरेतौ वास्तः । प्रस्थापयति =पण्डवइ अट्ठवइ । पक्षे पट्ठावइ पट्ठावेइ पट्ठवावेइ ।

विज्ञपेर्वोक्काबुक्कौ । ४, ४, ३२ ।

विज्ञपयतेरेता वा देशौ वास्तः । विज्ञयति= वोक्कइ अवुक्कइ । पक्षे ३, २, ३६. ७४ ज्ञ=ण्ण= विण्णवइ विण्णावइ ।

अन्यार्थेष्वपि धातुः । ४, ४, ३४ ।

उक्तादर्थादन्येष्वप्यर्थेषु धातवोवर्तन्ते । संख्याने पठितः कलिः संज्ञानेऽप्यस्ति । कलइ, जानाति संख्यानं करोति वा । वलिः प्राणने खादनेऽपि । वलइ । प्राणिति खादति वा । काङ्क्षेर्वम्फ आदेशः इच्छायां खादनेऽपि । वम्फइ । इच्छति खादति वा । कैश्चिदुपसर्गैः सह योगे केचिद्धातवो नित्यमन्यार्थे । अणुहरइ=सदृशो भवति । विहरइ क्रीडति । आहरइ । खादति । परिहरइ त्यजति इत्यादि ।

॥ इति धात्वादेशाः ॥

॥ अथ कृदन्त प्रक्रिया ॥

क्त्वोऽस्तुं तूणतुआणाः । ३, ३, ४३ ।

कौ० क्त्वा प्रत्ययस्यैते चत्वार आदेशा स्युः । भविस्यत्तव्यक्त्वा तुम्येच्च । ३, ३, २० । चादित्वम् । हसितव्यं=हसिअव्वं हसेअव्वं । हसित्वा=हसिअ हसेअ । हसिउं हसेउं । हसिऊण—णं हसेऊण—णं । हसिउआण—णं हसेउआण—णं । हसितुं=हसिउं हसेउं । वन्दित्तु इति चन्द्रलुप् । वन्दित्ता इति सिद्धावस्थामपेक्ष्य ।

दी० क्त्वोऽस्तुमिति । क्त्वा के स्थान में अ—तुं—तूण—तुआण ये चार आदेश होते हैं । हस्—त्वा=प्र० सू० अ—तुं—तूण—तुआण—३, ४, ३० अ (क्)=३, ३, २० इ—ए २, २, १ त्—लुप् १, १, २२, २६ असंधि ४७ वा—ण=णं=हसिअ आदि····णं । हस्—अ—तव्य—सु=२, ३, ६८, ७४ व्य=व्वं ३, १, २६=शेष पूर्ववत्=हसिअव्वं हसेअव्वं । हस्—अं—तुं=हसिसेउं ।

तुम्क्त्वातव्ये ग्रहो घेत् । ३, ४, १ ।

कौ० तुमादौ परे ग्रहो घेत्स्यात् । ग्रहीतुं=घेत्तुं । गृहीत्वा=घेत्तुं घेत्तूण—णं घेत्तुआण—णं । क्वचिन्न । गेण्हिअ । ग्रहीतव्यं=घेत्तव्वं ।

दी० तुमिति । तुम्—क्त्वा—तव्य से पूर्व ग्रह को घेत् आदेश होता है । ग्रह्—तुम्=१, १, ४२ चन्द्र, ग्रह=घेत्तुं । ग्रह्—त्वा=अ में बाहुलकात् घेत् नहीं । किन्तु ४, ३, २४ ग्रह=गेण्ह—३, ४, ३० अ—अ (=त्वा) ३, ३, २० अ—इ=गेण्हिअ । बाकी=घेत्तुं घेत्तूण १, १, ४७ घेत्तूणं घेत्तुआण—णं । ग्रह्—घेत्—तव्य (=व्य २, ३, ६७, ७४) ३, १, २६ स्वा० घेत्तव्वं ।

भुजमुचरुदवचामचाऽन्त्यस्यौत् । ३, ४, २ ।

कौ० तुमादौ भुजादीनां चतुर्णामचा सहान्त्यस्य—ओत्स्यात् । भोक्तुं=भोत्तुं । मोक्तुं=मोत्तुं । रोदितुं=रोत्तुं । वक्तुं=वोत्तुं । भुक्त्वा=भोत्तुं भोत्तुण भोत्तुआण । मुक्त्वा=मोत्तुं तूण, तुआण । रुदित्वा=रोत्तुं रोत्तूण रोत्तुआण । वच्=उक्त्वा=वोत्तुं वोत्तुण वोत्तूआण । भोक्तव्यं=भोत्तव्वं । मोक्तव्यं=मोत्तव्वं । रोदितव्यं=रोत्तव्वं । वक्तव्यं=वोत्तव्वं ।

दी० भुजेति । तुमादि से पूर्व भुजादि के अच् सहित अन्त्य को ओत् होता है । भुज्—मुच्—रुद्—वच्—तुं क्त्वा—तव्य=प्र० सू० अज्—उच्—उद्—अच्=ओत्=मोत्—भोत्—रोत्—वोत्—शेष पूर्ववत्=भोत्तुं भोत्तुण भोत्तव्व इत्यादि ।

श्रुवो वा । ३, ४, ३ ।

कौ० तुमादौ श्रुवोऽचाऽन्त्यस्य—आद्वास्यात् । श्रोतुं=सोत्तुं सोउं । श्रुत्वा=सोत्तूण सोऊण । सोत्तुआण सोउआण । श्रोतव्यं=सोत्तव्वं सोअव्वं ।

दी० श्रुव इति । तुमादौ परे श्रु के अच् सहित अन्त्य को ओत् आदेश विकल्प से होता है । श्रु—तुं=प्र. सू. श्रु—रु=वा—ओ १, ४, ३६ शोत्=सोत्—तुं=सोत्तु

सोत्तूण-सोत्तुआण सोत्तव्वं । पक्षे ओदभावे ३, ४, २८ गुण २, ३, ६८ र—लुप्—शो=सो २, २, १, त्—लुप् १, १, २६ असंधि=सोउं सोऊण सोउआण सोअव्वं ।

तत्तेन दृशोऽदृठ्च् । ३, ४, ३ ।

कौ० तत्तेन=तुमादेस्तकारेण दृशोऽचासहान्त्यस्य=ऋशोऽदृठच् स्यात् । चित्वान्नित्यम् । द्रष्टुं=दट्ठुं । दृष्ट्वा=दट्ठं दट्ठूण दट्ठुआण । द्रष्टव्यं=दट्ठव्वं । 'आच्कृञोऽतीतानागतयोश्च—५ । चात्तुमादौ । कर्तुं=काउं । कृत्वा=काउं काउण—काऊण कर्तव्यं=कायव्वं ।

दी० तत्तेनेति । तुम्—त्वादेश—तव्य तकार सहित दृश के अच् सहित अन्त्य=ऋश् को अट्ठच् आदेश नित्य होता है । दृश्—तु=तुं—तूण—तुआण—तव्वं (=व्वं) प्र. सू. ऋ शृत्=अट्ठ=दट्ठं आदि । कृ के अन्त्य ऋ को आ होता है । कृ=तु—लुप् ३ त—अ=य कायव्वं । शेष में १, १, २६ असंधि=काउं काऊण का उआण ४७ ण=णं—काऊणं काउआणं ।

शतृशानचोः । ३, ४, ४१ ।

कौ० प्रत्येकमनयोर्माण—न्तावादेशौ स्तः । शतृ—हसन्='वावर्तमान—विध्यादिशतृषु' (३, ३, २१) इति वा—एत्वे=हसेमाणो हसेन्तो । एत्वाभाव—हसन्तो हसमाणो । शतृ—इति किम् शानचिमाभूत्=वेपमानः वेवमाणो वेवन्तो ।

दी० शत्रिति । धातु से पर शतृ—तथा शानच् प्रत्येक के स्थान में माण तथा न्त आदेश होते हैं । हस्—अ—शतृ प्र. सू. माण—न्त—सु=३, ३, २१ अ=वा=ए ३, १, १४ स्वा० हसेमाणो, न्तो आदि । शतृ कहने से शानच् में ए नहीं वेप्—अ—शानच् २, १, ४२ प=व=वेवमाणो—न्तो ।

स्त्रियामीच । ३, ४, ४२ ।

कौ० स्त्रियां शतृ शानचोः स्थाने—ई—मण—न्ताः स्युः । हसन्ती=हसई हसेमाणी णा—सहसमाणी—णा हसेन्ती—न्ता हसन्ती—न्ता वेपमाना—वेवई वेवमाणां वेवमाणा वेवन्ती वेवन्ता ।

दी० स्त्रियामिति । स्त्रीलिंग में शतृ शानच् को ई—माण—न ये तीन आदेश होते हैं । हस् अ—शतृ=प्र. सू. ई—माण—न्त=हसई । १, १, २२ अपदे असंधि ॥ ३, १, ३४ वा—ङीप् पक्षे टाप्=१, १, २७ अ—लुप् ३, १, १२ सु—लुप्=हसेमाणां हसमाणा आदि ।

क्ते वित् । ३, ३, १६ ।

कौ० क्त प्रत्यये परेऽत इत्स्यात् । हसित=हसिअं । णिचि । "वावकर्मक्तेषु ल्लुपाविचौ" अचेल्लु-प्युपान्त्य स्यात आः । ३, ३, १५, १६ । हासितं=हासिअं हसाविअं । पाठितं=पाढिअं=पढाविअं । नामितं=नाविअं नावविअं ।

दी० क्ते विदिति । क्त से पूर्व अ को इ नित्य होता है । हस्—अ (३, ४, ३०) तु पढ (=ठ २, १, १७) तं—नव (=म ३, ४, १७) त—प्र. सू. अ=इ २, २, १, १, १, २६ लुप्—असंधि ३, १, २६ स्वा०=हसिअं पढिअं नविअं । णिच् में—हस्—पठ (=ठ)—नव (=म)—णिच्=त=३, ३, १५ णिच्=ल्लुप् १६ ह=हा, प—पा—न=हा १६ स—ठ—व—अ=इ=शेष पूर्ववत्=नासिअं पाढिअ हाविअं । १५ णि=आवि=हस्—अ—आवि—अं (=तं)= हसाविअं एवं पढ—आवि—अं=पढाविअं । यहाँ ल्लुप्—तथा त में पूर्व अ के अभाव से आ—इ नहीं होते हैं ।

दीर्घादिरविः । ३, ३, १४ ।

कौ० दीर्घा देर्ण्यन्तस्य णेः स्थानेऽवि र्वा स्यात् । तुष्—तोसेविअं तोसिअं । शुष—सोसविअं सोसिअं ।

दी० दीर्घेति । जिसका आदि दीर्घ है उस ण्यन्त के णि को विकल्प से अवि आदेश होता है । तुष्=शुष्=३, ४, २८ तोष्—शोष्—णि—वा—अवि—अं (=त) १, ४, ३६ ष्=ष्=स्=तोसविअं सोसविअं । पक्षे—३, ३, ११ णि=अ—१६ इ=तोसिअं सोसिअं ।

आक्रान्तावीनामप्फुणादयः । ४, ४, ३५ ।

कौ० क्रान्तान्ता क्रमादि धातूनां स्थानेऽप्फुणादयो वा निपात्यन्ते । आक्रान्तः = अप्फुणो । वोल्लिणो । उत्कृष्टम् = उक्किट्ठं । आस्वादितम् = चक्खिअं । स्थापितं = निमिअं । रुग्णः = लुक्को । अजितं = विढत्तं । प्रलपितम् = ओमिसं । उद्विग्नः = उच्चुलो । मुण्डितः = उड्मत्तो इत्यादि । प्रा. कौ. द्र. ।

वी० आक्रेति । क्रान्त—आ—क्रमादि धातुओं के स्थान में अप्फुण आदि शब्द का निपातन होता है । ३, १, १४. २६ आदि सूत्रों से स्वादिकार्य आदि स्वयं समझ लें । विशेष रूप में प्राकृत कौमुदी में देखें ।

।। इति प्राकृत भाषा समाप्ता ।।

॥ अथ शौरसेनी भाषा प्रारभ्यते ॥

शौरसेन्यामनादावसंयुक्त स्यतोद: । ५, १, १ ।

कौ० शौरसेन्यामनादौ स्थितस्यासंयुक्तस्य तकारस्य द: स्यात् । एतस्मात्=एदाहि । ततो विहिता समितिर्यतिना=तदो विहिदा समिदी जदिणा । अनादौ किम् । तदो । असंयुक्तस्येति किम् । शकुन्तः =सउन्तो ।

दी० शौरेति । शौरसेनी भाषा में अनादि—अयुक्त त को द होता है । एता (=द १, १, २८) हि=(ङसि—३, १, १६, ८) प्र० सू० ता=दा=एदाहि । ३, १, १४८ ओड् तदो । २६ सु—लुप् १, १, १४ दीर्घ= समिदी । १, ४, २८ य=ज ३, १, २५ टा=णा= जदिणा । अनादौ क्यों ? तदो में आदि को नहीं हुआ । शकुन्तः—सु=१, ४, ३६ श—स २, २, १, १, २६ कु=३, ३, १, १४ सु=ओड्=सउन्तो यहाँ संयुक्त त को द नहीं होता है ।

क्वाप्यध: । ५, १, २ ।

कौ० शौरसेन्यां क्वापि संयुक्तेऽध: स्थितस्य तस्य द: स्यात् । महान्तो=महन्दो । निश्चिन्तो= निच्चिन्दो ।

दी० क्वेति । शौरसेनी में संयुक्त में अध: स्थित त को द होता है । महान्तः निश्चिन्त—सु=प्र० सू० न्तः=न्द १, २, ३६—सु=ओड्—टिलोप २, ३, ६७. ७४ श्चि =च्चि महन्दो निच्चिन्दो इत्यादि ।

वातावत्यादे: । ५, १, ३ ।

कौ० शौरसेन्यां तावत्या देस्तो दो वा स्यात् । तावत्=दाव न सुहं जाव अप्पाणम्मि न रमइ तावन्न सुखं यावदात्मनि न रमते । पक्षे—ताव ।

दी० वेति । शौरसेनी में तावत में आदि त को द विकल्प से होता है । तावत्—१, १, २८ अन्त्य—लुप्—प्र० सू० त=वा—द=दाव, ताव ।

धस्थस्य । ५, १, ४ ।

कौ० शौरसेन्यां थस्य धो वा स्यात् । नाथ:=णाधो नाहो । कध कहं । अनादेरेव=स्थूणा=थूणा ।

दी० धस्येति । शौरसेनी में अनादि थ को ध विकल्प से होता है । कथम्—नाथ—सु=प्र० सू० थ=ध—पक्षे २, १, ७ ह १, १, ४२ म्=चन्द्र ३, १, १४ सु=ओड् —टिलोप १, ४, २३ न=वा—ण=कहं कधं । णाधो नाहो ।

ह्रस्येहह्पो: । ५, १, ५ ।

कौ० शौरसेन्यामिह—ह्पो ह्रस्य धो वा स्यात् । इध इह । होध होह ।

दी० ह्रस्येति । शौरसेनी में इह के तथा २, ३, ४ से विहित ह्प् के ह को विकल्प से ध होता है । इदम्—ङि =३, १, ७८ इह प्र० सू० ह=ध=इध—पक्षे इह । भू—थ=३, ३, ४ थ=ह=प्र० सू० वा—ध ४, १, २ भू=हो=होध होह ।

भुवो भ: । ५, १, ६ ।

कौ० शौरसेन्यां भूधातो र्हस्य भो वा स्यात् । भवति=होदि—भोदि ।

दी० भुवो इति । शौरसेनी में भू को आदेश के ह—को भ विकल्प से होता है । भू=४, १, २, हो=प्र० सू० भो=२१ ति=दि=भोदि पक्षे होदि ।

र्यस्य य्य: । ५, १, ७ ।

कौ० शौरसेन्यां र्यस्य य्यो वा स्यात् । आर्य:= अय्यो । सूर्य=सुय्यो । पक्षे अज्जो सुज्जो ।

वी० येति । शौरसेनी में र्य को य्य विकल्प से होता है। आर्य—सूर्य—सु=१, २, ३६ ह्रस्व=आ=अ सु—सु—प्र० सू० र्य=य=य्य पक्षे ३, २, २१. ७४ ज्ज ३, १, १४ सु=ओ—टिलोप=अय्यो अज्जो सुय्यो सुज्जो।

सौभवावेनोर्मस् ५, १, ८ ।

कौ० शौरसेन्यां भवदादे नो नित्यं मः स्यात्सौ । एदु एदु भवं (एत्वे तु भवान्) समणे भगवं वीरे कल्लाणं संदिसेउ मे (श्रमणो भगवान् वीरः कल्याणं संदिशतु मे)। एवं कृतवान्=कयवं। मघवान्=महवं। आकृतिगणत्वात् संपाइअवं इत्यादि।

वी० साविति। शौरसेनी में भवद् भगवत् आदि शब्दों से सिद्ध भवान् भगवान् आदि के ओ न को म होता है। भवान् भगवान् मघवान् कृतवान् में प्र० सू० आन्—म्=१, १, ४२ चन्द्र २, १, ७ घ=ह १, ३, २७ कृ=क २, २, १, ३ त=य=भवं भगवं महवं कयवं इत्यादि। आकृतिगण होने से संपादितवान्=आन्=म् चन्द्र २, २, १ वित=१ अ १, १, २६ असंधि=संपाइ अवं इत्यादि शब्द की सिद्धि होती है।

सम्बुद्धौ वा। ५, १, ६।

कौ० एकवचनं संबुद्धिः। शौरसेन्यां संबुद्धौ सौ नो मो वा स्यात्। भो राजन्=भो रायं। भो राय।

वी० एकवचन को संबुद्धि संज्ञा होती है। संबुद्धि सु से पूर्व न को म विकल्प से होता है। राजन्=प्र० सू० न्=म् चन्द्र पक्षे १, १, २८ लुप् २, २, १, ३ ज=य=रायं राय।

आदिनः। ५, १, १०।

कौ० शौरसेन्यामिन्तो न आद्वा स्यात् संबुद्धौ सौ। करेसु सददं—धम्मं भोमणस्सि तवस्सि आ। पारंभव समुद्दस्स गच्छित्था जेण निच्चिअं। कुरुष्व-सततं धर्मं भोमनस्विन् तपस्विन्। पारंभवसमुद्रस्य गच्छथ येन निश्चितम्।

वी० आदीति। शौरसेनी में संबुद्धि से पर इन को न् आ विकल्प से होता है। मनस्विन्—सु—तपस्विन्=सु=प्र० सू० न—आ पक्ष में १, १, २८ न्=लुप् २, १, ३२ न=ण ४२ प=व २, ३, ६८, ७४ स्वि=स्सि १, १, २२ अपदे असंधि=३, १, १२ सु=लुप् भो तवास्सिआ। पक्षे भो मणस्सि।

पूर्वेरावग्ह्रस्वश्च। ५, १, ११।

कौ० शौरसेन्यां पूर्वे रेफात्परोऽगाम मो वा स्यात् ह्रस्वश्च। अपूर्वं भवनाटकम्=अपुरव भवनाडयं। पक्षे अपुव्वं।

वी० पूर्व इति। शौरसेनी में रेफ से पर अ—आगम होता है तथा ऊ को ह्रस्व होता है। अपूर्वं—सु—प्र० सू० पूर्वं—पुरव पक्षे १, २, ३६ पू=ह्रस्व २, ३, ६८, ७४ र्व=व्व ३, १, २७ स्वा०=अपुरवं अपुव्वं।

णगन्त्यान्माविवेतोः। ५, १, १२।

कौ० शौरसेन्यामिदेतोः प्रागन्त्यान्मात्परो णग्वा स्यात्। युक्तमिदं=जुत्तणिणं जुत्तमिणं! एवमेतद्=एवंणेदं एवमेदं।

वी० णगिति। शौरसेनी में इ तथा ए से पूर्व अन्त्य म से पर ण आगम होता है। युक्तम्—इदम्—अम्=प्र० सू० म्—ण्—इ० ३, १, ७८ इदम्—अम्=इणं १, ४, २८ यु=जु २, ३, ६७, ७४ क्त=त्त=युत्तम्=१, १, ४२ म्=चन्द्र=जुत्तंणिणं। पक्षे—जुत्तमिणं। एवं—एदं (=एतद्—सु ५, १, १, त=द १, १, २८ द्—लुप् ३, १, २७ स्वा०) प्र० सू० ए० म्—ण्—ए०=एवं (=म्) णेदं। पक्षे एवमदं।

तस्मात्तस्ताच्च। ५, १, १३।

कौ० शौरसेन्यां तस्मादित्यस्य ताच्स्यात्। चित्वान्नित्यम्। जदो तुमं भव्वोसित्ता तुवं सियावाय रहस्सं सुण। यतस्त्व भव्योऽसितस्मात्वं स्याद्वादरहस्यं शृणु।

वी० तस्मेति। शौरसेनी में तस्मात् को ता आदेश नित्य होता है। तस्मात्=ता।

अतोङसेर्दुदोदौ। ५, १, १४।

कौ० शौरसेन्यामतः परस्यङसेर्दु द—दोदौ स्तः। दित्वात्पूर्वं दीर्घ। जिनात्=जिणदु जिणादो।

दी० अत इति । शौरसेनी में अत् से पर ङसि को दु—दो होते हैं । जिन—ङसि = प्र० सू० दुद—दोद् १, १, १४ शाब्दीर्घ २, १, ३२ ना = णा = जिणादु जिणादो ।

[अथाव्यय प्रकरणम्]

दाणिमिदानीमः । ५, १, १५ ।

कौ० शौरसेन्यामिदानीमोदाणिं स्यात् । दाणिं पडिक्कमणकालो (इदानीं प्रतिक्रमणकाल:) ।

दी० दाणिति । शौरसेनी में इदानीम् को दाणि होता है । उदाहरण स्पष्ट है ।

हर्षेऽम्महे । ५, १, १६ ।

कौ० शौरसेन्यां हर्षे—अम्महे प्रयुज्यते । अम्महे भगवं मुणी समागयो (भगवान् मुनिः समागतो हृष्टोऽस्मि ।

दी० हर्षइति । शौरसेनी में हर्ष अर्थ में अम्महे निपात प्रयुक्त होता है ।

ही ही वैदूषके । ५, १, १७ ।

कौ० शौरसेन्यां विदूषकस्य हर्षे ही ही इति निपातः प्रयुज्यते । ही ही भोः सम्पन्ना मणोरधा पिय वयस्सस्स । (हन्त । भोः सम्पन्ना मनोरथाः प्रिय-वयस्यस्य ।)

दी० हीति । शौरसेनी में विदूषक के हर्ष में ही ही निपात प्रयुक्त होता है ।

एवार्थे य्येवंव्वो । ५, १, १८ ।

कौ० शौरसेन्यामेवार्थे य्येव—एव्वेत्येतौ प्रयुज्यते । तुमं य्येव मज्झं जिणधम्मं देसु (त्वमेव मह्यं जिन-धर्मं देहि)

दी० एवेति । शौरसेनी में एव—अर्थ में य्येव तथा एव्व ये दो निपात प्रयुक्त होते हैं ।

णं नन्वर्थे वाक्यालङ्कारे । ५, १, १९ ।

कौ० शौरसेन्यां नन्वर्थे वाक्यालङ्कारे च णं प्रयुज्यते । नन्वर्थे । णं भगवं को मुत्तिमग्गो (ननु भगवन् ! को मुक्तिमार्गः) । वाक्यालंकारे । नमोऽत्थु णं ।

दी० णमिति । शौरसेनी में नन्वर्थ तथा वाक्यालंकार में णं प्रयुक्त होता है ।

चेट्याह्वाने हञ्जे । ५, १, २० ।

कौ० शौरसेन्यां चेट्या आह्वाने हञ्जे प्रयुज्यते । हञ्जे चदुरिके (अयि चतुरिके) ।

दी० चेट्येति । शौरसेनी में चेटी के आह्वान में हञ्जे प्रयोग होता है ।

निर्वेद विस्मये हीमाणहे । ५, १, २१ ।

कौ० शौरसेन्यामनयोरर्थयोर्हीमाणहे प्रयुज्यते । हीमाणहे दाणिं वि न छड्डिज्जइ विसयासत्ती । (हा हा) हन्त इदानीमपि—न मुच्यते विषयासक्तिः) । विस्मये । हीमाण हे जीवन्तवच्छा मे जणणी । (अहो जीवद्वत्सा मे जननी) ।

दी० निर्वेदेति । शौरसेनी में निर्वेदित तथा विस्मय अर्थ में हीमाण प्रयोग होता है ।

। इति अव्यय प्रकरणम् ।

।। अथाख्यात प्रकरणम् ।।

इपेपोर्दिः । ५, १, २२ ।

कौ० शौरसेन्यां तिङादेश यो रिपेयोः स्थाने दिः स्यात् । भवति = भोदि होदि । भवदि हुवदि । ५, १, ६, प्रक्रिया द्र. ।

दी० इपेपोरिति । शौरसेनी में ३, ३, १ सूत्र से विहित तिङादेश इप्—एप् को दि आदेश होता है ।

अतो दे च । ५, १, २३ ।

कौ० शौरसेन्यामतः परयोरिपेपोर्दे चाद दि चेत्येतौ स्तः । रमते = रमदि रमदे ।

दी० अत इति । शौरसेनी में अ से पर इप्—एप् को दे एवं बाद—दि ये दोनों होते हैं । रम्—अ (३, ४, ३०) ति=३, ३, १, इप्—एप् प्र० सू० दि—दे=रमदे रमदि ।

एष्यति हे: स्सिः । ५, १, २४ ।

कौ० शौरसेन्या भविष्यदर्थस्य हे: स्सिः स्यात् । भविष्यति=होहिइ=होस्सिदि ।

। अथ तिङन्त प्रक्रिया ।

दी० एष्यति । शौरसेनी में भविष्यदर्थ में ३, ३, २७ से विहित हि को स्सि होता है । भू=हो—हि, प्र० सू० स्सि—इ=दि=होस्सिदि । एवं ठाहिइ=ठास्सिदि इत्यादि ।

[अथकृदन्त प्रक्रिया]

इयदूणौक्त्वो वा । ५, १, २५ ।

कौ० शौरसेन्यां क्त्वा प्रत्ययस्य स्थाने एतौ वास्तः । भूत्वा=भविय हविय । भोदूण । पक्षे भोत्ता होत्ता ।

दी० इयेति । शौरसेनी में क्त्वा को इय—दूण ये दो आदेश होते हैं । भू=हो=हव=भव ६ वा—भो—त्वा—दूण =भोदूण, होदूण भविय हविय । पक्षे—त्वा २, ३, ६८, ७४ त्ता । भोत्ता होत्ता ।

कृगमो कडुअ डुअओ । ५, १, २६ ।

कौ० शौरसेन्यामाभ्यां क्त्वः स्थाने प्रत्येकमेतौ वा स्तः । कृत्वा=कडुअ कदुअ । करिय करिदूण । गत्वा=गच्छिअ गच्छिदूण ।

दी० कृगेति । शौरसेनी में कृ—गम् से पर क्त्वा के स्थान में कडुअ—अदुअ प्रत्येक आदेश होता है । कृ—त्वा= प्र० सू० त्वा=अडुअ—अदुअ—टिलोप=कडुअ कदुअ । गम्=३, ४, ६, ३० गच्छ=त्वा=अडुअ अदुअ अदुअ =गडुअ गदुअ । पक्षे पू० सू० त्वा=इय—दूण=३, ४, २५ कृ ऋ=करिय करि (३, ४, ३, अ=३, ३, २० इ) दूण एवं गच्छिय गच्छिदूण ।

सिद्धमनुक्तं प्राकृतवत् । ५, १, २७ ।

कौ० शौरसेन्यामनुक्तं कार्यं प्राकृतवत् स्यात् । सिद्ध शब्दो—मङ्गलार्थः । तित्थयरो किवा आदि ।

दी० सिद्धेति । शौरसेनी में अनुक्त कार्य प्राकृतवत् होता है । यथा—कृपा=१, २, २६ कृ=कि २, १, ४२ पा= वा=किवा । तीर्थंकर—स्=१, २, ३६ ती=ति २, ३, ६८. ७५ र्थ=त्थ २, २, १, ३ क=य ३, १, १४ सु= ओइ्=तित्थयरो आदि ।

। इति शौरसेनी भाषा समाप्ता ।

॥ अथ मागधी भाषा प्रारभ्यते ॥

[आदेश विधिः]

मागध्यामनादेः क्षः ᳵकः । ५, २, १ ।

कौ० मागध्यामनादेः क्षस्य ᳵकः स्यात् । शुक्ल-पक्षः = सुक्कपᳵके । भिक्षति = भिᳵकदिभिᳵकदे । आदेस्तु क्षयः खयो ।

दी० मागध्येति । मागधी में अनादि क्ष को ᳵक = जिह्वामूलीय होता है । सुक्क (= शुक्ल १, ४, ३६, २, ३, ६८, ७४) पक्ष—सु = प्र० सु० क्ष ᳵक = ११ के ३, १, १२ सुलुप् ᳵसुक्क पᳵके । भिक्ष् = ᳵक्—अ—इ = ५, १, २२ दि—दे = भि—ᳵक दि भिᳵकदे । आदि क्ष को २, ३, ९ क्षय = खय—३, १, १४ ओ = खयो ।

प्राङ्क्ष्यामीक्षचक्षोः स्कः । ५, २, २ ।

कौ० मागध्यां प्राङ्भ्यां क्रमादीक्षचक्षोर्धात्वोः क्षस्य स्कः स्यात् । ᳵकापवादः । प्रेक्षते = पेस्कदि । आचष्टे = आचस्कदे ।

दी० प्राङिति । मागधी में प्र—ईक्ष—आ—चक्ष में क्ष को ᳵकापवाद स्क होता है । प्रे = २, ३, ६८ पे—क्ष्—स्क्—३, ४, ३० अ—ते = १ ई—ए = ५, १, २२. २३ दि—दे पेस्कदि पेस्कदे । आ = चक्ष—अ—दि—दे—क्ष स्क = अचस्कदि, दे ।

छःश्चः । ५, २, ३ ।

कौ० मागध्यामस्केः छस्यश्चः स्यात् । गच्छ गच्छ तन्तु मुनीन् = गश्च गश्चनविय मुणिणो । आदेस्तु छागे = छाले ।

दी० छइति । मागधी में अनादि छ को श्च होता है । छाग—सु = २, १, १० ग = ल ५, २, ११ ले ३, १, १२ सु—लुप् = छाले में आदि को नहीं ।

व्रजो ञ्जः । ५, २, ४ ।

कौ० मागध्यां व्रजते जस्यञ्ञः स्यात् । यादेशा-पवादः । व्रजति = वञ्ञदि वञ्ञदे ।

ञ्ञण्यन्याम् । ५, २, ५ ।

कौ० मागध्यामेषांञ्ञः स्यात् । अवज्ञा = अवञ्ञा । अञ्जलिः = अञ्ञली । पुण्यं = पुञ्ञं । कन्या = कञ्ञा ।

दी० ज्ञेति । मागधी ज—ञ्ज—ण्य—न्य को ञ्ञ होता है । उदाहरण स्पष्ट है ।

जद्यो र्यय्यौ । ५, २, ६ ।

कौ० मागध्यां जकार द्यकारयोः क्रमाद—य—य्यौ स्तः । जनो = यणे । यदि = जइ = यइ । विद्या = विय्या ।

दी० जेति । मागधी में ज—को य तथा द्य को य्य होता है । जन—सु = प्र० सु० ज = य ११ न = ने २, १, ३२ णे ३, १, १२ सुलुप् = यणो । यदि = १, ४, २८ य = ज = प्र० सु० य २, २, १ दि = इ १, १, २६ असंधि = यइ । विद्या = प्र० सु० द्य = य्य = विय्या ।

सरोशलौ । ५, २, ७ ।

कौ० मागध्यां क्रमात् सरो शलौ स्तः । सुरेशः = सुलेशे ।

दी० सराविति । मागधी में स को श—र को ल होता है । सुरेश—सु = १, ४, ३६ श = स = सु = प्र० सु० श—सु रे = ले ५, २, ११ सुलुप् सुलेशे शुलेशे ।

स्कोषसोरग्नीष्मे सः । ५, २, २८ ।

कौ० मागध्यां संयुक्ते स्थितयोः सषोः सः स्यान्नतु ग्रीष्मे । ऊर्ध्व—लुबाद्यपवादः । उष्मा = उस्मा ।

हस्तो = हस्ते । ग्रीष्मे तु गिम्हे । असंयुक्ते तु षष्ठः = छस्टे ।

टी० स्कावित्ति । मागधी में संयुक्त में स—ष को स होता है ग्रीष्म शब्द में नहीं । ऊर्ध्व लुप् आदि का अपवाद है । २, ३, ६७ से प्राप्त ष्मा—ष—लुप् तथा ४२ स्त = थ = को बाधकर प्र० सू० स = स्वा = उस्मा हस्ते । षष्ठ = सु—में प्र० सू० असंयुक्त ष को स नहीं किन्तु १, ४, ३५ छ ५, २, ६ ष्ठ = स्ट = ११ स्टे ३, १, १२ सु—लुप्—छस्टे ।

ष्ठट्टयोःस्टः । ५, २, ६ ।

कौ० मागध्यामनयोः स्टः स्यात् । सुष्ठ = शुस्टु । षष्ठः = छस्टे । भट्टारकः भस्टालके ।

टी० ष्ठेति । मागधी में ष्ठ—ट्ट को स्ट होता है । सुष्ठु —प्र० सू० स्टु ७ सु = शु = शुस्टु । छस्टे = द्र० । भट्टारक —सु = प्र० सू० ट्टा—स्टा = र = ल २, २, १. ३ क = ग ५, २, ११ सुप् = भस्टालके ।

स्तः स्थर्थयोः । ५, २, १० ।

कौ० मागध्यां स्थर्थयोः स्तः स्यात् । ऊर्ध्वलुबाद्यपवादः । उपस्थितिः । पदार्थ सार्थं = पदस्तशस्ते ।

टी० स्त इति । मागधी में स्थ—र्थ को स्त होता है । उपस्थिति = सु, पदार्थसार्थं—सु = प्र० सू० १, २, ३६ ह्रस्व २, १, ४२ उप = उव ३, १, २६ सु = दलुप्—दीर्घ = ५, १, ती = दी = उवस्तिदी । पदस्त शस्त = सु = ७ सस्त = शस्त = १, १, शस्ते ३, १, १२ सुलुप् = पदस्त शस्ते ।

पुंस्यतएत्सौ । ५, २, ११ ।

कौ० मागध्यामत एत्वं स्यात्सौ पुंसि । श्रमणो भगवान् महावीरः = समणे भगवं महावीरे । अतः किम् । मुणी ।

टी० पुंसीति । मागधी में अ को ए होता है पुल्लिंग में । श्रमण—सु = प्र० सू० ण = रे ५, १, ८ आन् = मन् = १, १, ४२ चन्द्र = ३, १, १२ सुलुप् २, ३, ६८ श्र = श = १, ४, ३६ स = समणे भगवं महावीरे । मुणी ३, १, २६ द्र० ।

वाऽवर्णान्ङसो डाहः । ५, २, १२ ।

कौ० मागध्यामवर्णात्परस्य ङसेः स्थाने वा डाहः स्यात् । डित्वाट्टिलोपः । एलिशाह् कम्माह् कलणे नय्येव समस्ते हगे । ईदृशस्य कर्मणः करणे नैव समर्थोऽहम् । पक्षे एलिशस्स कमलस्स । हिडिम्बाह् । हिडिम्बायाः । पक्षे हिडिम्बाए ।

टी० वेति । मागधी में अवर्ण से पर ङस् को डित् आह विकल्प से होता है । ईदृश—ङस् = कर्मन्—ङस् = प्र० सू० डाह—टिलोप १, ३, ८. ४३ ईदृ = एरि = १, ४, २६ शा = सा = ५, २, ७ रिसा = लिसा = एलिशाह् ५, ३, ६८, ७४ मं = म्मा = कम्माह् । पक्षे ३, १, ९ ङस् = स्स १, १, १५ स्स = एलिशस्स कम्मस्स । हिडिम्बा —ङस् = प्र० सू० डाह—टिलोप = हिडिम्बाह । पक्षे ३, १, ३२ ए = हिडिम्बाए । ५, १, १८ न—एव = नय्येव २, ७ र = ल ३, १, १५ ङि—एद् टिलोप णे = कलणे ५, २, १०, ११ र्थ = स्त—सुलुप् (३, १, १२) = समस्ते ५, २, २४ अहं = हगे ।

आमोडाहँ । ५, २, १३ ।

कौ० मागध्यामवर्णादोमो डाहँ वा स्यात् । जिनानां = जिणाहँ । पक्षे जिणाणं ।

टी० आम इति । मागधी में अवर्ण से पर आम् को डाहँ विकल्प से होता है । डित्वाट्टिलोप होता है । जिन्—आम् = प्र० सू० डाहँ—टिलोप २, १, ३२ ना = णा = जिणाहँ । जिणाणं ३, १, १४ द्र० ।

अहंवयमोर्हगेच् । ५, २, १४ ।

मागध्यामनयोर्हगेच्स्यात् । चित्वान्नित्यम् । हगे मुणिं वन्दामि वन्दिमो वा । अहं वयं वा वन्दे वन्दामहे वा ।

टी० अहमिति । मागधी में अहं वयं को नित्य हगे आदेश होता है । स्पष्टम् ।

तिष्ठस्य चिष्ठः । ५, २, १५ ।

कौ० मागध्यां तिष्ठस्य स्थाने चिष्ठः आदेशः स्यात् ।

अनुक्तं शौरसेनीवत् । ५, २, १६ ।

कौ० मागध्यामनुक्तं कार्यं शौरसेनीवत्स्यात् । तदो पूरिद पदिज्जेण मारुदिणामन्तिदो पदस्त शस्ते शामि हिदाह् । ततः पूरित प्रतिज्ञेन मारुतिनामन्त्रितः पदार्थसार्थः स्वामिहिताय ।

बी० अन्विति । मागधी में अनुक्त कार्य शौरसेनीवत् होता है । यथा उक्त वाक्य में ५, २, ५ श=ञ्ञ १० ष=स्त =११ स्ते १२ हित—ङस्=हिदाह् इत्यादि कार्य मागधी तथा ५, १, १ से त को शौरसेनीवद् होता है । एवं ५, १, २ से २७ तक कार्य स्वयं ऊह करें । विशेष प्राकृत कौमुदी में देखें ।

। इति मागधी भाषा समाप्ता ।

। अथ पैशाचीभाषा ।

पैशाच्यांटोस्तु र्वा । ५, २, १७ ।

कौ० पैशाच्यां टोः स्थाने तुः स्यात् । कुटुम्बकं कुटुम्बकं ।

बी० पैशेति । पैशाची भाषा में टु को तु होता है ।

णोनच् । ५, २, १८ ।

कौ० पैशाच्यां णस्य नित्यं नः स्यात् । गुण गणः=गुनगनो ।

बी० णो इति । पैशाची में ण को नित्य न होता है । गुण गण—सु=प्र० सू० ण=न ३, १, १४ सु=अड्=टिलोप=गुनगनो ।

सस्तदोः । ५, २, १६ ।

कौ० पैशाच्यां तकार दकारयोः तः स्यात् । गुनवती भगवती । सदनं सतनं । तस्य त—विधानमन्यादेशबाधकम् । तेन पतकेत्यादौ न डत्वादि ।

बी० तइति । पैशाची में त—द को त होता है । त को त विधान से पताकेत्यादि में त को डत्व नहीं होता है ।

पो यस्य हृदये । ५, २, २० ।

कौ० पैशाच्यां हृदये पः स्यात् । हृदयमन्दिरेवसति विवेकः=हितपमन्तिरेवसदि विवेको ।

बी० पइति । पैशाची में हृदय में य को प होता है । हृदयः=प्र० सू० य=प ६ द—न्द=त ५, १, २२ ति =द=दि=३, १, १४=हि (=हृ १, ३, २६) तप-मन्दिरे वसदि—विवेको ।

लो लस्य । ५, २, २१ ।

कौ० पैशाच्यां लस्य लः स्यात् । जलं=जलं ।

सः शषोः । ५, २, २२ ।

कौ० पैशाच्यां शषोः सः स्यात् । शोभनं=सोभनं । विषाणं=विसानं । न कोलेत्यादे (५, २, ३७) र्बाधकमिदम् ।

बी० स इति । पैशाची में श—ष को स होता है । शोभन—विषाण में प्राप्त १, ४, ३६ श—ष=स २, १, ७ भ=ह् ३२ न=ण का बाधक ५, २, ३७ को बाधकर प्र० सू० श—ष=स ३, १, २७ स्वा० का० सोभनं विसा ५, २, १८ नं ।

ज्ञ—ण्य—न्याञ्ञ राज्ञे चिञ् च । ५, २, २३ ।

कौ० पैशाच्यामेषां ञ्ञः स्यात् । राज्ञे तु चिञ् चाद् —ञ्ञः । सव्वञ्ञो । पुञ्ञो । धञ्ञो । राज्ञा=राचिञा रञ्ञा ।

बी० ज्ञेति । पैशाची में ज्ञ—ण्य—न्य को ञ्ञ होता है तथा राज्ञ शब्द में ज्ञ को चिञ् तथा ञ्ञ दोनों होते हैं । सर्वज्ञ—पुण्य—धन्य—सु=प्र० सू० ज्ञ—ण्य—न्य=ञ्ञ ३, १, १४, २७ स्वा० २, ३, ६८, ७४ र्व=व्व= सव्वञ्ञो पुञ्ञ धञ्ञो । राज्ञा=ज्ञ—चिञ्—ञ्ञ= राचिञा १, २, ३६ रा=र=रञ्ञा ।

क्वचित्स्नष्टयोः सि—सट—रियाः । ५, २, २४ ।

कौ० पैशाच्यामेषां क्रमादेते स्युः । स्नानं=सिनानं ।

कष्टं = कसटं । कार्यं = कारियं । क्वचित्युक्तो नेह—स्नुषा = सुण्हा । दृष्टः = तिट्ठो । सूर्यः = सुज्जो ।

बी० क्वचिदिति । पैशाची में स्न—ष्ट—र्य को—क्रम से सिन—सट—रिय आदेश होते हैं । उदाहरण स्पष्ट है । स्नुषा = २, ३, ६८ स्नु = सु २, १, ५३ षा = ण्हा—सुण्हा । दृष्ट—सु सूर्य—सु = ४, २, २६ दृ = ति १, २, ३६ सू = सु २, ३, २८. ७५ ष्ट = ट्ठ २, १, ७५ र्य = ज्ज ३, १, १४ स्वा० = तिट्ठो सुज्जो ।

अतोङसेस्तुत्तोदौ । ५, २, २५ ।

कौ० पैशाच्यामदन्तान्ङसेरेतौ स्तः । दित्वा-त्प्राग्दीर्घः । जिनात् = जिणातु, जिणातो ।

बी० अत इति । पैशाची में अत् से पर ङसि को तुद्—तोद् ये दो आदेश होते हैं । जिन—ङसि = प्र० सू० तुद् तोद् १, १, १४ न = ना २, १, ३२ ना = णा = जिणातु जिणातो ।

टान्तेदंतदोर्नेन । ५, २, २६ ।

कौ० पैशाच्यां टान्तयोरिदंतदोः स्थाने नेन आदेश स्यात् । नेन मुणीवन्दियो । अनेन तेन वा मुनिर्वन्दितः ।

बी० टेति । पैशाची में अनेन को नेन आदेश होता है । इदम्—टा—तद्—टा = प्र० सू० नेन ।

स्त्रियां नाए । ५, २, २७ ।

कौ० पैशाच्यां स्त्रियां टान्तेदन्तदोर्नाए स्यात् । नाए वन्दी अइ मुणी । तयाऽनया वा वन्द्यते मुनिः ।

बी० स्त्रीति । पैशाची में स्त्रीलिंग में टान्त—इदं—तद्—को नाए होता है । तया = अनया = नाए ।

याद्दृशादौ दुस्तिः । ५, २, २८ ।

कौ० पैशाच्यां याद्दृशादौ दृ—इत्यस्य तिः स्यात् । जातिसो नातिसो । येषु दुस्तिर्दृश्यते ते याद्दृशा-दयस्तेन दृष्टः = ति = ट्ठो इत्यादि ।

बी० येति । पैशाची में यादृश तादृश आदि में दृ को ति होता है । या = १, ४, २८ जा दृ = प्र० सू० ति श = ५, २, २२ स ३, १, १४ स्वा० = जातिसो नातिसो । जिन शब्दों में दृ को ति दीखता है वे याद्दृशादि हैं । अतः दृष्ट = तिट्ठो इत्यादि होता है । ५, २, १६ द्र० ।

इपेपोः । ५, २, २९ ।

कौ० पैशाच्यामिपेपोस्तिः स्यात् । (तिष्ठति) होति (भवति) ।

बी० इपेपोरिति । पैशाची में इप्—एप् को ति होता है । स्था = ४, ३, ३७ ठा ४, १, २ भू = हो हुव्—अ—हुव्—अ ३, ४, ३०, ३, ३, १ ति—इ, हुव—हुव—ति—इप् = एप् प्र० सू० ति = ठाति होति हुवति हुवति ५, १, ५ नु = भ = भोति भवति भुवति ।

अतस्तेच । ५, २, ३० ।

कौ० पैशाच्यामतः परयोरिपेपोस्ते चात् ति—इती-मौस्तः । रमति रमते । अत इत्येव ठाति ।

बी० अत इति । पैशाची में अत् से पर इप्—एप् को ते—ति ये दो आदेश होते हैं । रम्—३, ४, ३० अ—ति = ३, ३, १, ३५ इप्—एप् = प्र० सू० ति—ते = रमति रमते । अनतस्तु ठाति होति प्र० सू० द्र० ।

एय्यति केवलमेय्य । ५, २, ३१ ।

कौ० पैशाच्यां भाविष्यति इपेपोः स्थाने एय्य एव ननु स्सिरादि । कथं ञ्जानं लभेय्या । कथं ज्ञान-लप्स्यते ।

बी० एय्यति । भविष्यत्काल में इप्—एप् = को केवल एय्य होता है । आदिस्सि नहीं । लभ—अ—इप्—एप् = प्र० सू० एय्य = १, १, २७ अ = लुप् २, १, ७ प्राप्त भ = ह ५, २, ३७ निषेध—लभेय्य ।

तूनः क्त्वः । ५, २, ३२ ।

कौ० पैशाच्यां क्त्वः स्थाने तूनः स्यात् । हसितून (हसित्वा) गन्तून (गत्वा) ।

बी० तून इति । पैशाची में क्त्वा को तून आदेश होता है । हस्—अ—त्वा = प्र० सू० तून ३, ३, २० अ—इ = हसितून । बाहुलका इत्वाभाव गन्तून ।

१. त्रिव्या ३, २, ६१ द्र० ।
२. हे० ८, ४, ३१३ द्र० ।

ट्ठूनत्थूनद्धूनाः । ५, २, ३३ ।

कौ० पैशाच्यां ष्ट्वा—इत्येस्यैते स्युः । पृष्ट्वा= पट्ठून पत्थून पद्धून । तूनापवादाः ।

वी० ट्ठूनेति । पैशाची में ष्ट्वा को ये तीन आदेश होते हैं । प्रच्छ=त्व=पृष्ट्वा=प्र० सू० ष्ट्वा=ट्ठून—त्थून—द्धू १, २, २७ पृ=पट्ठून ३ ।

इय्यः यक । ५, २, ३४ ।

कौ० पैशाच्यां यकः स्थाने इय्य स्यात् । रमिय्यति रमिय्यते मुनिनाऽञ्ञानम्मि । रम्यते मुनिना ज्ञाने ।

वी० यक इति । पैशाची में भावकर्म में यक् को इय्य होता है । रम्—यक्=प्र० सू० इय्य २६, ३० इप्=एप्=ति=ते=रमिय्यति—ते ।

कृञोडीरः । ५, २, ३५ ।

कौ० पैशाच्यां कृञः परस्य य को डीर आदेशः स्यादित्वाट्टिलोपः । इय्यापवादः । क्रियते= कीरते ।

वी० कृञ इति । पैशाची में कृ धातु से यक् को डीर होता है डित्वाट्टिलोप होता है । इय्य का बाधक है । कृ—य=ते=कीरते ।

अनुक्तं शौरसेनीवत् । ५, २, ३६ ।

कौ० पैशाच्यामनुक्तं कार्यं शौरसेनीवत् स्यात् । अध एतिसस्स जनस्स भगवं धम्मो य्येव सरणं हुवेय्य । अथेदृशस्य जनस्य भगवान्धर्म एव शरणं भविष्यति इत्यादि । अत्र शौरसेनीवत् थस्य धः । एवस्य य्येवः । भगवान्=भगवं ।

वी० अनिवति । पैशाची में अनुक्तकार्य शौरसेनीवत् होता है । अथ=५, १, ४ थ=ध । भगवान्=८ भगवं । १८ एव=य्येव २७ प्राकृतवत् मं---२, ३, ६८. ७५ म्म ३. १, १४ आदि स्यादिकार्यं । ईदृश—ङस्=१. ३. ८ ई=ए ४, ३६ श=स ३, १, ६ १, १, १५ ङस्=स्स ४, १, २ भ=हुव् ३, १, १, ति=इप्=५, २, ३१ एय्येव एदृस=२८ दृ=ति मागधीवत् कार्य ऊह करें ।

न कीलकपरेत्यादि विभाषाऽतिमुक्तेऽन्तसूत्रोक्तम् । ५, २, ३७ ।

कौ० पैशाच्यां 'कीलकपरे खेः (१, ४, १३) त्यारभ्य 'विभाषाऽतिमुक्त' (२, २, ५) इत्यन्तः प्राकृत सूत्रैर्विहितानि कार्याणि न भवन्ति । तथाहि—कीलं=कीलं । केन्दुको । मकरकेतू मदनं=मतनं इत्यादौ क—ख—लुबादिकार्यं न भवति ।

वी० नेति । पैशाची में १, ४, १३ से २, २, ५ पर्यंत सूत्र विहित कार्य नहीं होता है । कीलं=क=ख १, ४, १५ कन्दु=क=म २, २, १ क्—लुप् २, १, ७ न=ण आदि का प्र० सू० निषेध होता है ।

। इति पैशाची भाषा समाप्ता ।

। अथ चूलिका पैशाची प्रारभ्यते ।

चूलिका पैशाच्यां तृतीय चतुर्थयो किखौ

। ५, २, ३८ ।

कौ० चूलिका पैशाच्यां तृतीय चतुर्थयोः प्रथम द्वितीयौस्तः । नगरं=नकरं । मेघः=मेखो । राजा =राचा । तडागः=तटाको ।।

बी० चूलीति । चूलिका पैशाची में वर्ग के तृतीय चतुर्थ को क्रम से प्रथम—द्वितीय होता है । उदाहरण स्पष्ट है ।

वा पदादि युज्योः । ५, २, ३९ ।

कौ० चूलिका पैशाच्यां पदादौ युजि धातौ च तृतीय चतुर्थयोः प्रथम—द्वितीयौ वास्तः । कती गती । घर्मः=खम्मो घम्मो । जीमूतो चीमूतो । छच्छरो झच्छरो । टमरुको डमरुको । तामोतरो दामोतरो। थूली धूली । पन्धवो बन्धवो पालको बालको। फकवती भगवती । नियोचितं नियोजितं ।

बी० वेति । चूलिका पैशाची में पदादि तथा युजधातु में तृतीय चतुर्थ को क्रम से प्रथम द्वितीय विकल्प से होता है। गति—धूली—भगवती—सु=प्र० सू० वा—ग=क—धू=थू—भ=फ पू० सू० ग=क ३, १, २६ सु दलुप्= दीर्घ=कती—गती । १२ सुलुप्=थूली—धूली । फकवती ।। जीमूत—म च्छ (=र्म=५, २, ३८ र्छ= २, ३, ६८. ७६) र—डमरुक—दामोदर—वा=१, २, ३६ बन्धव—बालक—सु=प्र० सू० वा—जी=ची, झ =छ—ड=ट—दा=ता—बा=पा—व=प—३, १, १४ सु=ओइ—टिलोप=तामोत (=द. ५, २, ३८) रो चीमूतो आदि पक्षे जीमूतो आदि । नियाजित—सु= प्र० सू० जि=वा—चि=३, १, २७ स्वा०=नियोचितं नियोजितं ।

रोलः । ५, २, ४० ।

कौ० चूलिका पैशाच्यां रेफस्य लो वा स्यात् । सुललाचो वि चिनवलं वन्दति सुरराजोऽपि जिनवरं वन्दते ।

बी० रोलः । चूलिका पैशाची में रेफ को ल विकल्प से होता है । सुरराज—सु, जिनवर—सु=प्र० सू० र=ल —पू, २, ३८, ३९ ज=च—जि=वा—चि=सुललाचो आदि । पक्षे सुरराजो आदि ।

अनुक्तं पैशाचीवत् । ५, २, ४१ ।

कौ० चूलिका पैशाच्यां कार्यं पैशाचीवत्स्यात् । नकरं अत्र लोणः २, १, ३२ इति णत्वं न । मार्गणः= मक्कनो अत्र तु णस्य नत्वं भवति । एवमन्यदपि कार्यं स्वयमूहनीयम् ।

। इति चूलिका पैशाची समाप्ता ।

बी० अन्विति । चूलिका पैशाची में अनुक्त कार्य पैशाचीवत् होता है । यथा—नगर—मर्गण—सु=५, २, ३८ ग= क १, २, ३९ मा=म २, ३, ६८. ७५ र्ग=क्क स्वा० नगरं मक्कणो यहाँ ५, २, १८ पैशाचीवत् ण=न= मक्कनो । ३७ निषेध से नगरं २, १, ३२ न=ण नहीं होता है ।

। इति चूलिका पैशाची भाषा समाप्ता ।

॥ अथापभ्रंश प्रकरणम् ॥

अथामच:प्रायोऽपभ्रंशे । ५, ३, १ ।

कौ० अपभ्रंशेऽचां स्थानेऽच: स्यु: प्राय: । कच्चित् =कच्चु कच्चा । तृणं=तणु तिणु इत्यादि आसमाप्ते रयमधिकार: । अतोऽस्य सूत्रस्य सर्वत्र 'सुपिदीर्घ ह्रस्वा' वित्यस्य च सुबन्ते प्रयोगानुसारं प्रवर्तनादपभ्रंशे प्राय: सर्वे प्रयोगा अव्यवस्थिता एव भवन्ति ।

दी० अथामिति । अचों के स्थान में प्राय: अच् होता है । कच्चित्=१, १, २८ त्=लुप्—प्र० सू० क=का—च्चि=च्च=काच्च, च्चु=कच्चु । तृण—सु=तृ=त ति ५, ३, ६ ण=णु ३, सु=लुप्=तणु तिणु । समाप्ति तक इस सूत्र का अधिकार है । अत: सर्वत्र इस सूत्र तथा सुबन्त में उत्तर सूत्र की प्रयोगानुसार प्रवृत्ति होने से अपभ्रंश में सभी प्रयोग प्राय: अव्यवस्थित ही होता है ।

सुपिदीर्घ ह्रस्वौ । ५, ३, २ ।

कौ० अपभ्रंशे सुपि परे नाम्नोऽच: प्रायोदीर्घ ह्रस्वौस्त: ।

दी० सुपीति । अपभ्रंश में नाम के अच् को प्राय: दीर्घ तथा ह्रस्व होता है ।

स्वम्जश्शस्ङसामां लुप् । ५, ३, ३ ।

कौ० अपभ्रंशेविभक्तीनामासां लुप्स्यात् ।

दी० स्वमिति । अपभ्रंश में सु—अम्—जस्—शस्—ङस्—आम् को लुप् होता है ।

सम्बोधने जसो हो: । ५, ३, ४ ।

कौ० अपभ्रंशे संबोधने नाम्न: परस्य जसो हो स्यात् ।

दी० समिति । अपभ्रंशे संबोधन में नाम से पर जस् के स्थान में हो होता है ।

हि भिस्सुप: । ५, ३, ५ ।

कौ० अपभ्रंशे भिस्सुपोर्हि स्यात् ।

दी० हिमिति । अपभ्रंश में नाम से पर भिस्—सुप् के स्थान में हि होता है ।

अत: स्वमोरुत् । ५, ३, ६ ।

कौ० अपभ्रंशे स्वमोरुत् उत्वं स्यात् । जिणु । जिनो जिनं वेत्यर्थ: ।

दी० अत इति । अपभ्रंश में सु तथा अम् से पूर्व अ को उ होता है । जिन—सु=अम्=प्र० सू० न=नु ३ सु= अम् लुप् २, १, ३२ नु=णु=जिणु ।

वा पुंस्योत्सौ । ५, ३, ७ ।

कौ० अपभ्रंशे पुंस्यत ओद्वा स्यात् । जिणो । अपुंसि तु जलु फलु । जश्शसो:—जिणो । जिना जिनान्वा । हे जिणो हे जिणु हे जिणहो ।

दी० वेति । अपभ्रंश में पूर्व अ को उ विकल्प से होता है । जिण—सु=प्र० सू० ण=णो ३ सु=लुप्= जिणो । पुंसि कथन से नपुंसक में नहीं होता है—जल= फल—सु=जलु फलु । जिण— जस्=शस् २ सू० ण= णा ३ जस्—शस्—लुप्=जिणा । हे जिणा—सु= पूर्ववत्=जिणो जिणु । हे जिण—जस=हो=हे जिणहो ।

टायामेच्चटश्चणचन्द्रौ । ५, ३, ८ ।

कौ० अपभ्रंशे टायामत एत्स्यात्ट्टायास्तु णानुस्वारौ । जिनेन=जिणेण जिणें ।

दी० अपभ्रंश में टा से पूर्व अ को ए तथा टा को ण और चन्द्र ये दो आदेश होते हैं । जिण—टा=प्र० सू० ण= णे—टा=ण=जिणेण । चन्द्र=जिणें ।

भिसि वा । ५, ३, ९ ।

कौ० अपभ्रंशे भिसि परेऽत एद्वा स्यात् । जिणेहिं । पक्षे जिणहिं ।

वी० भिसिति । अपभ्रंश में भिस् से पूर्व अ को ए विकल्प से होता है । जिण—भिस्=प्र० सू० ण=वा—णं भिस्=हिं=जिणेहिं एत्वाभावे—जिणहिं ।

ङसेर्हेहू । ५, ३, १० ।

कौ० अपभ्रंशेऽतः परस्य ङसेः स्थाने नित्यौ हे—हू स्तः । नित्यत्वं नित्यम् । जिनात्—जिणेहे जिणहु ।

वी० ङसेरिति । अपभ्रंश के ङसि को नित्य हे तथा हु आदेश होते हैं । जिण—ङसि=हे—हु=जिणहे जिणहु ।

हुंभ्यसः । ५, ३, ११ ।

कौ० अपभ्रंशेऽतः परस्य पञ्चमीभ्यसो हुं स्यात् । जिनेभ्यः=जिणहुं ।

वी० हुं इति । अपभ्रंश में अत् से पर पंचमी—भ्यस् को हुं होता है । जिण—भ्यस्=प्र. सू. हुं=जिणहुं ।

सु—स्सु—हवो ङसः । ५, ३, १२ ।

कौ० अपभ्रंशेऽतः परस्य ङसः स्थाने 'सु—स्सु—हो' इतो मे स्युः । जिनस्य=जिणसु जिणस्सु जिणहो ।

वी० स्विति । अपभ्रंश में अत् से पर ङस् के स्थान में सु—स्सु—हो ये तीन आदेश होते हैं । जिण—ङस्=जिणसु—स्सु—हो ।

हुमामः । ५, ३, १३ ।

कौ० अपभ्रंशेऽतः परस्य—आमो हं स्यात् । जिनानाम्=जिणहं ।

वी० हं इति । अपभ्रंश में अत् से पर आम को हं होता है । जिण—आम=प्र. सू. हं=जिणहं ।

इदेतौ ङिना । ५, ३, १४ ।

कौ० अपभ्रंशेऽतो ङिना सहेदेतौ स्तः । जिने=जिणि जिणे । सुपि—जिणहिं । एवं गणधर मुनिवर सुरनरादयः ।

वी० इदेताविति । अपभ्रंश में ङि सहित अ को इ—ए ये दो आदेश होते हैं । जिण—ङि=प्र. सू. जिणि—जिणे । जिण—सु (प)=५, ३, ५ भिस्=हिं=जिणहिं । एवं गणधर—मुनिवर—सुर—नर—देव—आदि के रूप जिनवत् होते हैं ।

इदुद्भ्यांटाया एंणचन्द्राः । ५, ३, १५ ।

कौ० अपभ्रंशे इदुदन्ताभ्यां परस्याष्टाया इमे स्युः । मुनिना=मुणिएं मुणिण मुणि । गुरुणा=गुरुएं गुरुण गुरुं । भिसि—मुणिहिं गुरुहिं—५, २, ५ ।

वी० इदिति । अपभ्रंश में इदन्त तथा उदन्त से पर टा को एं—ण—चन्द्र ये तीन आदेश होते हैं । मुणि—टा=मुणिएं ३ । गुरु—टा=गुरुएं ३ ।

ङसिङ्योर्हेहो । ५, २, १६ ।

कौ० अपभ्रंशे इदुद्भ्यां परयोरनयोः क्रमादितौ स्तः । मुनेः मुणिहे । गुरोः=गुरुहे ।

वी० ङसीति । अपभ्रंश में इद्—उत् से पर ङसि को हे ङि को हु होता है । मुणि—ङसि=मुणिहे । गुरु—ङसि=गुरुहे ।

भ्यसो हुं । ५, २, १७ ।

कौ० अपभ्रंशे इदुद्भ्यां परस्य भ्यसो हुं स्यात् । मुणिभ्यः=मुणिहुं । गुरुभ्यः=गुरुहुं । मुनेः=मुणिस्स । गुरोः=गुरुस्स ।

वी० भ्येति । अपभ्रंश में इत्—उत् से पर भ्यस् को हुं होता है । मुणि—भ्यस्=मुणिहुं । गुरु=भ्यस्=गुरुहुं । मुणि—गुरु—ङस्=३, १, ९—१, १, १५ मुणिस्स गुरुस्स ।

हं चामः । ५, २, १८ ।

कौ० अपभ्रंशे इदुद्भ्यामामो हं हुं चेत्येतौ स्तः । मुनीनां=मुणिहं मुणिहुं । गुरूणां=गुरुहं गुरुहुं ।

वी० हंइति । अपभ्रंश में इत्—उत्—से पर आम् को हं—हुं ये दो आदेश होते हैं । मुणि—आम=हं—हुं=मुणिहं—मुणिहुं । गुरु=आम्=गुरुहं गुरुहुं ।

[अथ स्त्रीलिंग शब्दाः]

कौ० स्वमोर्लुप् वया । सुपि दीर्घ ह्रस्वोदय । एवं बुद्धि-बुद्धी । लक्ष्मी=२, ३, १८. ७६ लच्छी, लच्छि । जश्शसोः—

जश्शसो रुदोत्स्त्रियाम् । ५, ३, १९ ।

कौ० वचनभेदान्न यथासंख्यम् । अपभ्रंशे स्त्रियां जश्शसोः प्रत्येकमुदोतौ स्तः । दयाउ दयाओ दयाउ दयाओ । एवं बुद्धिउ बुद्धिओ । दीर्घे—बुद्धीउ बुद्धीओ । एवं लच्छीउ, ओ लच्छिउ, लच्छिओ ।

बी० जशिति । अपभ्रंश में स्त्रीलिंग नाम से पर जस्—शस् को उ तथा ए दोनों आदेश होते हैं । दया—जस्—शस् = ५, ३, ३ लुप् को बाधक प्र. सू. उ—ओ = दयाउ, ओ । ५, ३, २ ह्रस्व = दयउ—ओ । एवं बुद्धि—लच्छी ।

टाया ए । ५, ३, २० ।

कौ० अपभ्रंशे स्त्रियां टाया ए स्यात् । दयए बुद्धिए लच्छीए कयं । भिसि—५ ३, ५ दयहिं बुद्धिहिं लच्छीहिं ।

बी० टेति । अपभ्रंश में स्त्रीलिंग से पर टा को ए होता है । दया—टा = प्र. सू. ए = ह्रस्व = दयए । एवं बुद्धि लच्छी—

हेङ्सिङसोः । ५, ३, २१ ।

कौ० अपभ्रंशे स्त्रियामनयो हें स्यात् । दयाहे बुद्धिहे लच्छीहे । दीर्घ ह्रस्वौ = दयहे बुद्धिहे लच्छिहे ।

बी० हुरिति । अपभ्रंश में स्त्रीलिंग नाम से पर भ्यस् तथा आम् को हु होता है । दया—भ्यस्—आम् = दयाहु ।

हिङः । ५, ३, २३ ।

कौ० अपभ्रंशे स्त्रिया ङे हिः स्यात् । दयाहि बुद्धिहि लच्छीहि । एवं प्रतिमा अहिंसा गुप्ति समित्यादयः ।

बी० हिरिति । अपभ्रंश में स्त्रीलिंग नाम से पर ङि को हि होता है । दया—बुद्धि—लच्छी—ङि = हि = दयाहि ।

। इति स्त्रीलिंगा ।

[अथ नपुंसकाः]

जश्शसोरिं क्लीबे । ५, ३, २४ ।

कौ० अपभ्रंशे नपुंसके जश्शसोरिं स्यात् । ज्ञानानि = णाणइं । वारीणि = वारिइं मधु = २, १, ७ महुइं । शेषं पुंवत् ।

बी० जसिति । अपभ्रंश में नपुंसक से पर जस्—शस् को इं होता है । ज्ञान = २, ३, ३६. २, १, ३२ णाण = जस् = शस् =

अतः स्वमोरुं स्वार्थिके । ५, ३, २५ ।

कौ० अपभ्रंशे स्वार्थिक प्रत्ययान्ते क्लीबेऽतः परयोः स्वमोः स्थाने उं स्यात् । लुपपवादः । जलकं = जलउं । फलउं ।

बी० अत इति । अपभ्रंश में स्वार्थिक प्रत्ययान्त नपुंसक नाम में स्थित अत् से पर सु—अम् को उं होता है । लुप् का अपवाद है । जलक—सु = अम् = प्र. सू. उं २, २, १ क् = लुप् १, १, १६ असंधि = जलउं । शेष सभी रूप पुंल्लिंगवत् । एवं धन वन फल आदि अदन्त—इदन्त—उदन्त आदि जानना चाहिये । **। इति नपुंसकाः ।**

[अथ सर्वनाम पुंल्लिंगाः]

किं सर्वयोर्वा कवणसाहौ । ५, ३, ३६ ।

कौ० अपभ्रंशेऽनयोः क्रमादेतौ वा स्तः सुपि । साहु साहो—साहा । हे साहु साहो साहहो । पक्षे—सव्वु सव्वो इत्यादि ।

बी० किमिति । अपभ्रंश में किं को कवण सर्व को साह विकल्प से होता है । सर्व—सु = प्र० सू० सर्व = साह पक्षे २, ३, ६८. ७५ र्व = व्व = सव्व ५, ३, ७ सौ आ—अ = ओ = पक्षे अमि वे ६ = उ ३ सु—अम् = लुप् साहो साहु सव्वो सव्वु । जश्शसो २, दीर्घ—प्रायोग्रहण से अदीर्घ ३ से लुप् = साहा साह सव्वा । हे साहो साहु सव्वो सव्वु पूर्ववत् । हे सर्व = साह—सव्व = जस् = ५, ३, ४ हो = हे साहो सव्वहो ।

सर्वा देङसिङ्या हांहिमौ । ५, ३, २६ ।

कौ० अपभ्रंशेऽदन्तात्सर्वादेः क्रमान्ङसि ङ्योर्हां हिमौ स्तः । सर्वस्मात् = साहहां । सव्वहां । सर्वस्मिन् = साहहिं सव्वहिं । शेषं जिनवत् । एवं विश्वा—दयोऽदन्ताः ।

बी० सर्वेति । अपभ्रंश में अदन्त सर्वादि पर ङसि को हां ङि को हिं होता है । शेष जिनवत् । एवं विश्वादि का रूप

होता है। किम्=कवण् कवणो—कवणा। स्यदादेः सम्बोधनं नास्तीत्युत्सर्गः। पक्षे कु को—का।

किमो ङसेर्वाडिहे। ५, ३, २७।

कौ० अपभ्रंशेऽदन्तात्किमोङसेर्डिहे वा स्यात्। डित्वाट्टिलोपः। कस्मात्=कवणिहे कवणाहां किहे कहां।

वी० किम इति। अपभ्रंश में अदन्त किम् से पर ङसि को डिहे विकल्प से होता है। किम्=सु=जस् आदि ५, ३, ३६ वा—कवण=पक्षे ३, १, ७४ क=ङसि=प्र० सू० डिहे—टिलोप पक्षे हां=कवणिहे—हां, किहे—हां।

कियत्तदभ्योऽङसो डासुः। ५, ३, २८।

कौ० अपभ्रंशेऽदन्तेभ्यः एभ्यः ङसो डासु र्वा स्यात्। कवणासु कवणसु कवणस्सु कवणहो। कासु—कसु स्सु हो शेषं सर्ववत्।

वी० किमिति। अपभ्रंश में अदन्त—किम्—यद्—तद् से पर ङस् को डासु विकल्प से होता है। कवण—ङस्=प्र० सू० या=डासु—टिलोप पक्षे ५, ३, १२ सु—स्सु—हो=कवणासु—कवणसु—स्सु—हो। क—ङस्=कासु—कसु—कस्सु कहो। शेष रूप सर्ववत्।

स्वमियत्तदो ध्रुंत्रमौ। ५, ३, ३०।

कौ० अपभ्रंशे स्वमोः परयो र्यत्तदोः क्रमादेतौ वा स्तः। यः=यं=ध्रुं। सः=तं=त्रं। पक्षे—जु, सु 'वा पुंस्योत्सौ' ५, ३, ६ सौ—जो, सो। स्वमीत्येक वचनान्न यथासंख्यम्। यस्य=जासु जसु। तस्य=तासु तसु।

वी० स्वमीति। अपभ्रंश में सु—अम् से पर यद् को ध्रुं तद् को त्रं आदेश विकल्प से होता है। यद्=तद्=१, १, २९ द्—लुप्=१, ४, २८ य=ज—त—सु=अम्=प्र० सू० य=ध्रुं त=त्रं। पक्षे ५, ३, ६ अ=३, ७ सौ—ओ २ सु—अम्—लुप्=जु—जो। २, १, ८५ त=स=सु—सो। अमि—जु—तु। स्वमि एकवचन निर्देश से—स्थान—आदेश के साथ यथासंख्य नहीं होता है। य—ङस्=जासु जसु जस्सु जहो। त—ङस्=तासु तसु तस्सु तहो किंवत्। शेष सर्ववत्।

एतदः पुंस्त्रीक्लीबेष्वेहो एह एहुचः। ५, ३, ३१।

कौ० चत्रयमसन्देहार्थम्। अपभ्रंशे स्वमोः पुं—स्त्रीनपुंसकेषु क्रमादेतद् एतेस्युः। एषः—एतम्=एहो।

वी० एतद इति। सु—अम् से पूर्व एतद् को पुल्लिङ्ग में एहो स्त्रीलिंग में एह नपुंसक में एहु आदेश होता है।

जश्शसो रेइः। ५, ३, ३३।

कौ० अपभ्रंशे जश्शसोरेतदः स्थाने एइः स्यात्। एते एतान्=एइ। शेषं सर्ववत्।

वी० जसिति। अपभ्रंश में जस्—शस् से पूर्व एतद् को एइ आदेश होता है। शेषं सर्ववत्।

ओइरदसः। ५, ३, ३४।

कौ० अपभ्रंशे जश्शसोरदस आइः स्यात्। अमू अमून् वा=ओइ। शेषं प्राकृतवत्।

वी० ओईति। अपभ्रंश में जस्—शस् से पूर्व अदस् को ओइ आदेश होता है। शेष सुप् में प्राकृतवत् रूप होता है।

इदमः सुप्यायः। ५, ३, ३५।

कौ० अपभ्रंशे सुप्सु परेस्विदम् आयः स्यात्। स्वमोरः=आयु। साबोत—आयो। जश्शसोः—आय। इत्यादि सर्ववत्।

वी० इदेति। अपभ्रंश से सुप् से पूर्व इदम् को आय होता है। आय—सु आदि—सर्ववत् रूप होता है।

। इति पुंल्लिगाः।

[अथ स्त्रीलिंगाः सर्वादयः]

डहे स्त्रियाम्। ५, ३, ३६।

कौ० अपभ्रंशे स्त्रियां कियत्तदभ्योऽङसः स्थाने डहे वा स्यात्। सर्वा=साहा—सव्वा 'अचामचः' 'सुपिदीर्घं' (५, ३, १. २) इति सूत्राभ्यां साह—सव्व इत्यादि च लक्ष्यानुसारेण ज्ञेयावत्। कियत्तदभ्यः=कवणा—का(का—का वा) यदः=ध्रुं—या (या—यां वा)। तदः—त्रं—सा ता (सा. तां वा)।

ङसि—कस्याः=कवणहे कहे। यस्याः=जहे। तस्याः—तहे। पक्षे काहे जाहे ताहे। शेष सर्वावत्। एतदः—एषा=एह किदा। एताः=एइ। शेषं सर्वावत्। अदसः—जश्शसोः—ओइ। शेषं अम् इत्यादि धेनुवत्। इदमः—आया इत्यादि सर्वावत्।

। इति स्त्रियां सर्वादयः।

दी० डहे इति। अपभ्रंश में स्त्रीलिंग किम्—यद्—तद् से पर ङस् को डहे आदेश विकल्प से होता है। सर्वा=५, ३, ३६ साहा पक्षे २, २, ६८, ७५ वों=व्वः=सव्वा इत्यादि दयावत्। किम्—५, ३, ३६ कवणा। ३, १, ७४ का यद्=सु—अम्=तद्—सु=अम्=५, ३, ३० ध्रुं—त्रं। पक्षे जा—सा—ता। कवणा—का—जा—ता—ङस् प्र० सू० डहे—टिलोप=कवणहे कहे जहे तहे। पक्षे ५, ३, २१ कवणाहे काहे जाहे ताहे शेष सर्वावत्। ५, ३, ३२ एता—सु—अम्=एह। एता—जस्=शस्=५, ३, ३३ ओइ। शेष सर्वावत्। ५, ३, ३४ अदस्—जस्—शस्=ओइ। शेषे सुपि—३, १, ८७ अमु—धेनुवत्। ५, ३, ३५ इदम्—सुजसादि=आया (=टाप्) इत्यादि सर्वावत्। । इति स्त्रीलिंगाः।

[अथ नपुंसके सर्वादयः]

इदम् इमुक्लीबे। ५, ३, ३१।

कौ० अपभ्रंशे स्वमोः परयोरिदमः स्थाने इमु स्यात्क्लीबे। सर्व=साह—सव्व—सु—अम्—जस्—शस्—५, ३, २४, २३ साहउं सव्वउं साहइं सव्वइं शेषं पुंल्लिंगवत्। किम्=कवणु कवणउं कवणइं क क उं कइं इत्यादि पुंवत्। यद्—सु—अम्=तद्—सु—अम्—५, ३, ३० ध्रुं—त्रं। पक्षे जु जउं तु—तउं जइं तइं शेषं पुंवत्। एतद्—सु=अम्=५, ३, ३२ एहु। एतद्—जस्=शस्=५, ३, ३३ एइ। शेष पुंवत्। अदसु—अमु—जस्=शस्=ओइ शेषं पुंवत्। इदम्—सु=अम्—प्र० सू० इमु—शेष पुंवत्।

। इति नपुंसके सर्वादयः।

[अथ युष्मदस्मत्प्रकरणम्]

सुनायुष्मदस्तुहुं[1]**। ५, ३, ३७।**

अपभ्रंशे सुना सहितस्य युष्मदः स्थाने तुहुं स्यात्। त्वम्=तुहुं।

जश्शसा तुम्हे तुम्हइं। ५, ३, ३८।

अपभ्रंशे जस् शस्भ्यां सहयुष्मदः प्रत्येकं तुम्हे तुम्हइं स्तः। यूयं युष्मान् वा=तुम्हे तुम्हइं।

अम्टाङिना तइं पइं। ५, ३, ३९।

अपभ्रंशे अम्—टा—ङिभिः सह युष्मद इमौ स्तः। त्वाम्—त्वया—त्वयि वा=तइं पइं।

भिसा तुम्हेहिं। ५, ३, ४०।

अपभ्रंशे भिसा सह युष्मदोऽयमादेशः स्यात्। युष्माभिः=तुम्हेहिं।

ङसिङसा तउतुज्झतुध्राः। ५, ३, ४१।

अपभ्रंशे ङसिङस्भ्यां सह युष्मदः स्थाने तउ—तुज्झ—तुध्र आदेशा स्युः। त्वत्—तव वा=तउ—तुज्झ—तुध्र।

भ्यसाऽमा तुम्हइं। ५, ३, ४२।

अपभ्रंशे भ्यसाम्भ्यां सह युष्मदस्तुम्हइं स्यात्। युष्मभ्यं युष्माकं वा=तुम्हइं।

सुपा तुम्हासु। ५, ३, ४३।

अपभ्रंशे सुपा सह युष्मदः स्थाने तुम्हासु आदेशः स्यात्। युष्मासु=तुम्हासु।

सुनाऽस्मदो हउं। ५, ३, ४४।

अपभ्रंशेऽस्मदः सुनासह हउं आदेशः स्यात्। अहं=हउं।

जश्शसाऽम्हेऽम्हइं। ५, ३, ४५।

अपभ्रंशे जस्शस्भ्यां सहास्मदः स्थाने प्रत्येक—मम्हेऽम्हइं चेतौ स्तः। वयं=अस्मान् वा—अम्हे अम्हइं।

---

१. सूत्र ५, ३, ३७ से सूत्र ५, ३, ५० तक सिर्फ कौमुदी है, दीपिका नहीं है।

अस्टाङिना मइं । ५, ३, ४६ ।

अपभ्रंशेऽस्टाङिभिः सहास्मदः स्थाने मइं स्यात् । माम्‌ मया मयि वा = मइं ।

भिसाऽम्हेहिं । ५, ३, ४७ ।

अपभ्रंशे भिसा सहास्मदः स्थाने ऽम्हेहिं स्यात् । अस्माभिः = अम्हेहिं ।

ङसिङसामहुमज्झु । ५, ३, ४८ ।

अपभ्रंशे ङसिङस्भ्यां सहास्मदः प्रत्येक मिमौ स्तः । मत् मम वा = महु मज्झु ।

भ्यसाऽमाऽम्हहं । ५, ३, ४९ ।

अपभ्रंशे भ्यसाम्भ्यां सहास्मदः स्थानेऽम्हहं स्यात् । अस्माकम् = अम्हहं ।

सुपाऽस्मासु । ५, ३, ५० ।

अपभ्रंशे सुपा सहास्मदः स्थाने ऽम्हासु स्यात् । अस्मासु = अम्हासु । **इति युष्मदस्मत्प्रकरणम् ।**

[अथ तिङन्त प्रकरणम्]

वा तिबादेः प्रथमस्य बहोर्हिं । ५, ३, ५१ ।

कौ० अपभ्रंशे प्रथम पुरुषस्य तिबादे बहुवचनस्य स्थाने हिं वा स्यात् । भवन्ति = होहिं । पक्षे होन्ति होन्ते ।

बी० वेति । अपभ्रंश में तिबादि के प्रथम पुरुष—बहुवचन को हिं आदेश विकल्प से होता है । भू = ४, १, २ हो— ३, १, १, ति = इ = होइ । प्र० सू० झि = वा— हिं पक्षे न्ति—न्ते—इरे = होहिं, होन्ति होन्ते होइरे ।

मध्यमस्यैक बहुवोर्हिहु । ५, ३, ५२ ।

कौ० अपभ्रंशे मध्यम पुरुषस्यैकवचन बहुवचनयोः स्थाने क्रमादेतौ वा स्तः । भवसि = होहि होसि । भवथ = होहु होइत्था होह ।

बी० मध्येति । अपभ्रंश में मध्यम पुरुष के एकवचन को हि बहुवचन को हु आदेश विकल्प से होता है । हो = सिप् = प्र० सू० हि० पक्षे ३, ३, ३ सि = होहि होसि । हो—थ = प्र० सू० हु पक्षे ३, ३, ४ इत्था—हप् = होहु होइत्था होह ।

उंहुमावुत्तमस्य । ५, ३, ५३ ।

कौ० अपभ्रंशे तिबादेरुत्तमपुरुषैकवचन बहुवचनयोः क्रमादेतौ वा स्तः । भवामि = होउं होमि । भवाम = होहुं । होमु होमो होम ।

बी० उहमिति । अपभ्रंश में तिबादि के उत्तमपुरुष के एकवचन को उं बहुवचन को हुं आदेश विकल्प से होता है । हो—मिप् = प्र० सू० उं पक्षे ३, ३, ५ मि = होउं होमि । हो—मस् = प्र० सू० हुं पक्षे ३, ३, ६ मु—मो —म = होहुं होमु होमो होम ।

हिस्वयोरिदुदेतः । ५, ३, ५४ ।

कौ० अपभ्रंशे लोडादेशयोर्हि स्वयोः स्थाने इ—उ —ए एते त्रयो वा स्युः । कुरु कुरुष्व वा = करि करु करे । पक्षे—करहि करसु ।

बी० हीति । अपभ्रंश में लोडादेश हि स्व को इ—उ—ए ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं । कृ = ३, ४, २५ कर —हि—स्व = प्र० सू० इ—उ—ए = करि, करु, करे । पक्षे ३, ३, ३४, ३५ सु—हि = करसु । करहि ।

भविष्यति सः स्यस्य । ५, ३, ५५ ।

कौ० अपभ्रंशे भविष्यति स्यस्य सो वा स्यात् । भविष्यति = होसइ । होसन्ति ।

बी० भवी० अपभ्रंश में भविष्यत्काल में स्य को स आदेश विकल्प से होता है । हो—स्य—इ = प्र० सू० स्य = स = होसइ ।

कुर्वेकरोम्योः कीसु । ५, ३, ५६ ।

कौ० अपभ्रंशे कृ धातोः कर्तृप्रत्ययान्तयोरनयोः स्थाने कीसु इत्यादेशो वा स्यात् । सन्ता भोग जु परिहरइ तसु कन्त हो बलिकीसु । तसु दइवेणवि मुण्डियउं जसु खल्लिहडउं सीसु ।

छाया—सतो भोगान् यः परिहरति तस्य कान्तस्य (प्रा० कौ० ७६) । बलिं करोमि (कुर्वे वा) [क्रिये—हे० त्रि० व्या०] तस्य दैवेनैव मुण्डितं यस्य खल्वाटं शीर्षम् । ७६ । अर्थात् यस्य नास्ति सामग्री तेन त्यक्तैव सा

यास्यति तेन चेत्यक्ता तदा तस्य महत्त्व—मिति । पक्षे साध्यमानावस्थामपेक्ष्य किज्जउं करउं वा । यथा—बलि किज्जउं सुअणस्सु (प्रा० कौ० ५, ४, १०) । [क्रियेः कीसु । हे० ८, ४, ३८६ ।। त्रि० व्या० ३, ४, ६२] विशेषः प्राकृत कौमुद्यां द्रष्टव्यः ।

। इति तिङन्ताः ।

वी० कुर्वे इति । अपभ्रंश में कुर्वे—करोमि के स्थान में कीसु आदेश होता है । पक्ष में साध्यमान संस्कृतापेक्षया कृ—इ, कृ मि=१, ३, २७ कृ=क ३, ३, ३८ ज्ज ३३ वा=कि ५, ३, ५३ इ—मि=उं=किज्जउं । ३, ४, २५, ३ कृ=कर ५, ३, ५३ इ—मि=करउं ।। पद्यार्थ—भोग सामग्री रहने पर त्यागी पतिदेव की मैं पूजा करती हूँ, भोग सामग्री न रहने पर त्याग करने वाला तो स्वयं सिर पर बाल जन्म से ही नहीं हैं उस खल्वाट के समान है । विशेष प्राकृत कौमुदी में देखें ।

।। इति तिङन्त प्रकरणम् ।।

[अथ कृदन्त प्रकरणम्]

तृनोणयच् । ५, ३, ५७ ।

कौ० अपभ्रंशे तृन्प्रत्ययस्य स्थाने णयत्स्यात् । चित्वान्नविकल्पः । मारयिता=मारणउ ।

वी० तृनइति । अपभ्रंश मे तृन् के स्थान मे ण य आदेश होता है । मृ—णि—तृन्=प्र० सू० णय ३, ३, ११ णि=अ ३, ४, २५ मर=३, ३, १६ मार=मारणय ० सु=५, ३, ६ य=उ ३, सु=लुप २, २, १, १, १, १६ मारणउ ।

। इति कृदन्त ।

[अथ धात्वादेशाः]

दृशग्रहव्रजप्रभूणां प्रस्स गृण्हवुज पहुच्चाः । ५, ३, ५८ ।

कौ० अपभ्रंशे क्रमादेषामिते आदेशा स्युः । द्रक्ष्यति=प्रस्सइ । गृह्णाति=गृण्हइ । व्रजति=वुज्जइ । प्रभवति=पहुच्चइ ।

वी० दृशेति । अपभ्रंश में दृश को प्रस्स ग्रह को गृण्ह व्रज को वुज प्र० सू० को पहुच्च आदेश होता है ।

ब्रुञो वा ब्रुवः । ५, ३, ५९ ।

कौ० अपभ्रंशे ब्रू धातो ब्रुवो वा स्यात् । ब्रवीति ब्रुते वा=ब्रुवह । पक्षे इत्तउं ब्रोप्पिणु (इयदुक्त्वा) ६७ । प्रा० कौ० द्र० ।

वी० ब्रुञ इति । अपभ्रंश में ब्रू धातु के स्थान में ब्रुव आदेश विकल्प से होता है । ब्रू=प्र० सू० ब्रुव=ति ३, ३, १ इ=ब्रुवह । पक्षे ब्रू=त्वा ५, ४, ४२ एप्पिणु ५, ३, १ ए=ओ २, १, २७ ब्रू=ब्र लुप्=ब्रोप्पिणु ।

। इति धात्वादेशाः ।

[अथ गुरुवर्णस्य लघूच्चारण प्रकरणम्]

हरचः स्को लघुरुच्चारः । ५, ४, १ ।

कौ० अपभ्रंशे संयुक्ते स्थितयो हकाररेफयोः परयोरचां प्रायो लघुरुच्चारो भवति । बहिणि अम्हारा कन्तु । जइसो घडइ प्रयावदी (भगिनि अस्माकं कान्तः । यदि स घटयति—प्रजापतिः) ।

वी० ह्रोरिति । अपभ्रंश में संयुक्त में स्थित हकार रेफ से पूर्व अच् को प्रायः लघु उच्चार होता है । यथा—अम्हारा में अ को बहिणि में प्र० से पूर्व दि में इ को लघुरुच्चार होता है ।

कादिस्थेदेतोः । ५, ४, २ ।

कौ० अपभ्रंशे कादिव्यञ्जनेषु स्थितयोरेदेतोः प्रायोः लघुरुच्चारः स्यात् । एतः— सुधें चिन्तिज्जइ (सुखेन चिन्त्यते) । ओतः—तसिहउँ कलि जुगि दुल्लहहो (तस्याहं कलियुगे दुर्लभस्य) ।

वी० कादीति । अपभ्रंश में कादि व्यञ्जन में स्थित ए—ओ को प्रायः लघूच्चारण होता है । सुधें में एं दुल्लहहो में ओ को ।

पदान्ते चन्द्रस्य । ५, ४, ३ ।

कौ० अपभ्रंशे पदान्तेऽनुस्वारस्य लघुरुच्चारः स्यात् । तणहं (तृणानाम्) । इति लघूच्चारणम् ।

[अथादेश प्रकरणम्]

अचोऽकावस्कीनां कखतथपफां गघदधबभाः । ५, ४, ४ ।

कौ० अपभ्रंशेऽनादौस्थितानामसंयुक्तानामचः परेषां

कादीनां क्रमाद्गादयः प्रायः स्युः। विक्षोभकरः= विच्छोहगरु। सुखेन=सुघें। कथितं=कधिदु। शपथं=सवधु। सफलं=सभलु। आदौ तु न। कृत्वा=करेप्पिणु। संयुक्तस्य न। एकस्मिन्—एक्कहिं।

वी० अपभ्रंश में अच् से पर अनादि—असंयुक्त क—ख—ग—थ—त—प—प—फ को क्रम से ग—घ—द—ध—ब—भ होते हैं। विक्षोभकर—सु—प्र० सू० क=ग २, १, ७ भ=ह २, ३, १८, ७६ क्षो=च्छो ५, ३, ३, ६=स्वा०=विकोहगरु। सुख—टा=प्र० सू० ख=घ ५, ३, ८ घ=घें=सुघें। कथित—शपथ—सफल—सु=प्र० सू० त=द—थ=ध—स=व फ=भ १, ४, ३६ स्वा०=कधिदु सवधु सभलु। कृ=३, ४, २५ कर्—त्वा=५, ४, ४२ एप्पिणु—करेप्पिणु में आदि क को ग संयुक्त प=का ब नहीं होता है।

वा मो वञ्।५, ४, ५।

कौ० अपभ्रंशेऽनादावस्केर्मस्य वञ् वा स्यात्। जिरवात्सानुनासिकः। कमलं=कवँलु कमलु। अनादावित्येव। मदनः=मयणु। अस्केरित्येव। जन्म=जम्मु।

वी० वेति। अपभ्रंश में अनादि असंयुक्त म को विकल्प से ञिद् व होता है। कमल—सु=प्र० सू० न=व १, १, १३ वँ=५, ३, २, ६ स्वा०=कवँलु कमलु। मदन—सु=२, २, १ द=य २, १, ३२ न=ण स्वा०=मयणु आदि मक वँ नहीं हुआ। जन्मन्—सु=१, १, २८ न्—लुप् २, ३, ३६, ७५ न्म=म्म—स्वा०=जम्मु में संयुक्त म को वँ नहीं होता है।

म्हो म्भः।५, ४, ६।

कौ० अपभ्रंशे म्हस्य म्भः वा स्यात्। ग्रीष्मः=गिम्भु गिम्हु।

वी० म्ह इति। अपभ्रंश में म्ह को म्भ विकल्प से होता है। ग्रीष्म—सु=२, ३, ५३ ष्म=म्ह=प्र० सू० वा—म्भ ५, ३, ३, ६ उत्व—सुलुप्=गिम्भु गिम्हु।

इप् संपद्विपदापदांदः।५, ४, १०।

कौ० अपभ्रंशे एषां दः इः स्यान्नित्यम्। संपइ। विवइ। आवइ।

वी० इजिति। अपभ्रंश में संपद्—विपद्—आपद्—में द को इ होता है। संपद्=सपइ। विव (=प २, १, ४२) इ। आवइ।

यथा तथा कथमामथामोरिघेहेमैमाः

।५, ४, ११।

कौ० अपभ्रंशे यथादीनामथाथमोरेते स्युः। यथा—जिध जिह जिम जेम। तथा=तिध तिह तिम तेम। कथं=किध किह किम केम।

वी० यथेति। अपभ्रंश में यथा तथा में अथा को कथं में अथं को इध—इह—इम—एम ये चार आदेश होते हैं।

कीदृगीदृग्यादृक्तादृशामीदृशादृशोरेहः

।५, ४, १२।

कौ० अपभ्रंशे कीदृशादीनामीदृशादृशोरेह आदेशः स्यात्। कीदृक्=केहु। ईदृक्=एहु। यादृक्=जेहु। तादृक्=तेहु।

वी० कीदृगीति। अपभ्रंश में कीदृश्—ईदृश को यादृश—तादृश् में आदृश को एह आदेश होता है। १, ४, २८ या=जा=जादृश=आदृश=ईदृश्=एह—केह—एह जेह—तेह—सु=५, ३, ३६ स्वा०=केहु एहु जेहु तेहु।

अइसोऽताम्।५, ४, १३।

कौ० अपभ्रंशेऽदन्तानामेषामनयोरइसः स्यात्। कीदृशः=कइसो। ईदृशः=अइसो। यादृशः=जइसो। तादृशः तइसो।

वी० अईति। अपभ्रंश में अदन्त कीदृश—ईदृश में ईदृश को यादृश—तादृश में आदृश को अइस आदेश होता है।

एतावत एत्तुलः।५, ४, १४।

कौ० अपभ्रंशेऽस्य स्थानेऽयं स्यात्। एतावन्=एत्तुलु—एत्तुलो।

वी० एतेति। अपभ्रंश में एतावद् एत्तुल आदेश होता है। एत्तुल—सु=५, ३, ३, ६, ७=एत्तुलु एत्तुलो।

कियदियद्यावत्तावतामियदावतोरेवडश्च
। ५, ४, १५ ।

कौ० अपभ्रंशे कियदादीनामियदावतोः स्थाने एवडश्चा देत्तुलश्च भवतः। कियान्=केवड़ केत्तुलु। इयान्=एवड्डु एत्तुलु। यावान्=जेवड्डु जेत्तुलु। तावान्=तेवड्डु तेत्तुलु।

दी० कियदिति। अपभ्रंश में कियत्—इयत् में इयत् को यावत् तावत् में आवत् को एवड—एत्तुल ये दो आदेश होते हैं।

अलन्तानामेत्तहे अलोऽत्रा । ५, ४, १६ ।

कौ० अपभ्रंशे अलन्तानां सर्वादीनां प्रागत्रा सह अलः स्थाने एत्तहे स्यात्। सर्वत्र=सव्वहे। यत्र=जेत्तहे।

दी० अलेति। अपभ्रंश में अलन्त सर्वादि के पूर्व अत्र सहित अल को एत्तहे आदेश होता है।

एत्थु वाऽत्र—कुत्रे । ५, ४, १७ ।

कौ० अपभ्रंशेऽत्र—कुत्रयो त्रयो रेत्थु वा स्यात्। अत्र=एत्थु एत्तहे। कुत्र=केत्थु केत्तहे।

दी० एत्थिवति। अपभ्रंश में अत्र कुत्र मे क्रम से अत्र उत्र को एत्थु विकल्प से होता है। पक्ष में एत्तहे।

यत्रतत्रेऽत्तु च । ५, ४, १८ ।

कौ० अपभ्रंशेऽनयोरत्रस्य स्थानेऽत्तु—एत्थु इतीमौ वा स्तः। यत्र=जत्तु जेत्थु। तत्र=तत्तु तेत्थु। पक्षे जेत्तहे तेत्तहे।

दी० यत्रेति। अपभ्रंश में यत्र तत्र में अत्र को अत्तु—एत्थु ये दो आदेश विकल्प से होते हैं। पक्ष में एत्तहे।

त्वतलोः प्पणच् । ५, ४, १९ ।

कौ० अपभ्रंशेऽनयोर्नित्यं प्पणच् स्यात्। महत्वं=वड्डप्पणु।

दी० त्वेति। अपभ्रंश में त्व—तल् को प्पण आदेश नित्य होता है।

युष्मदादेश्छस्यडार: । ५, ४, २० ।

कौ० अपभ्रंशे युष्मदादेः परस्य छस्य डार आदेश स्यात्। डित्वाट्टिलोपः। युष्मदीयः=तुम्हारु तुम्हारो।

दी० युष्मेति। अपभ्रंश में युष्मदादि से पर छ प्रत्यय को डार आदेश होता है। डित्वाट्टिलोप होता है। युष्मद्-छ प्र० सू० डार—टिलोप २, ३, ५२ ष्म=म्ह १, ४, २९ यु=तु ५, ३, ३, ६, ७ स्वा०=तुम्हारु तुम्हारो।

अन्यादृशोऽवराइसान्नाइसौ । ५, ४, २१ ।

कौ० अपभ्रंशेऽस्यतौ स्तः। अन्यादृशः=अवराइसु अवराइसो। अन्नाइसु अन्नाइसो।

दी० अन्येति। अपभ्रंश में अन्यादृश को ये दो आदेश होते हैं। ५, ३, ३, ६, ७ अवराइसु—सो।

वर्त्मोक्त विषण्णानां विच्च वुत्त वुन्नाः
। ५, ४, २२ ।

कौ० अपभ्रंशे क्रमादेषामेते स्युः। वर्त्म=विच्चु। वुत्तु। विषण्णः=वुन्नु वुन्नो।

दी० वर्त्मेति। अपभ्रंश में वर्त्मन् को विच्च उक्त को वुत्त विषण्ण को वुन्न आदेश होता है।

आत्मीयादीनामप्पणादयः । ५, ४, २३ ।

कौ० अपभ्रंशे यथा दर्शनमात्मीयादीनामप्पाणादयः स्युः। आत्मीयम्=अप्पणु।

दी० आत्मीति। अपभ्रंश मे आत्मीयादि के स्थान म अप्पणादि आदेश होता है।

[अथाव्यय प्रकरणम्]

अव्ययस्य यावत्तावतोर्वत उं महिं मा: । ५, ४, २४ ।

कौ० अपभ्रंशेऽव्ययस्यानयोर्वतः स्थाने उं—महिं म इत्येते त्रय आदेशाः स्युः। यावत्=जाउं जामहिं जाम। तावत्=ताउं तामहिं ताम।

दी० अव्येति। अपभ्रंश में अव्यय—यावत्—तावत् के वत् को उं—महिं—म ये तीन आदेश होते हैं।

अथवैवमेवेतसिदानीमामहवइ एम्वइ एत्तहे एम्वहि
। ५, ४, २५ ।

कौ० अपभ्रंशे क्रमादेशामेते स्युः। अथवा = अहवइ। एवमेव = एम्वइ। इतः = एत्तहे। इदानीं = एम्वहि।

दी० अथेति। अपभ्रंश में क्रम से अथवा—एवमेव—इतस्—इदानीं को अहवइ एम्वइ एत्तहे एम्वहि दो आदेश होते हैं।

अवश्यमोऽवसेमवसो। ५, ४, २६।

कौ० अपभ्रंशेऽस्यैतौ स्तः।

दी० अवश्यमिति। अवश्यम् की अवसे तथा अवस ये दो आदेश होते हैं।

किमेवं ध्रुवं समं परमां काइमेम्व ध्रुवु समाणुपराः
। ५, ४, २७ ।

कौ० अपभ्रंशे किमादीनां क्रमादेते स्युः। किम् = काइं। एवं = एम्व। ध्रुवं = ध्रुवु। समं = समाणु। परं = पर।

दी० किमिति। अपभ्रंश में किम्—एवं ध्रुवं—समं—परं को क्रम से काइं—एम्व—ध्रुवु—समाणु—पर आदेश होते हैं।

प्रत्युपश्चादेव किलानां पच्चलिउपच्छइ जिकिराः
। ५, ४, २८ ।

कौ० अपभ्रंशे क्रमादेशामेतेस्युः। प्रत्युत = पच्चलिउ। पश्चात् = पच्छइ। एव = जि। किल = किर।

दी० प्रेति। अपभ्रंश में प्रत्युत—पश्चात्—एव—किल को क्रम से पच्चलिउ—पच्छइ—जि—किर आदेश होते हैं।

एकशोविनापुनरामेक्कसि विणुपुणवः। ५, ४, २९।

कौ० अपभ्रंशे क्रमादेषां त्रयाणामेते त्रयः। एकशः = एक्कसि। विना = विणु। पुनः = पुणु।

दी० एकेति। अपभ्रंश में एक शस्—विना—पुनर को क्रम से एक्कसि—विणु—पुणु आदेश होते हैं।

कुतसः कउ कहन्तिहु। ५, ४, ३०।

कौ० अपभ्रंशे कुतसः कहु—कहन्तिहु स्तः। कुतः = कउ। कहन्तिहु।

दी० कुतेति। अपभ्रंश में कुतः को कहु—कहन्तिहु ये दो आदेश होते हैं।

तदाततसोस्तो। ५, ३, ३१।

कौ० अपभ्रंशेऽनयोः स्थाने तो स्यात्। तदा = तो। ततः = तो।

दी० तदेति। अपभ्रंश में तदा—ततस इन दोनों के स्थान में तो आदेश होते हैं।

प्रायसः प्राउ—प्राइव—प्राइम्व—पगिम्वाः
। ५, ४, ३२ ।

कौ० अपभ्रंशे प्रायस एते आदेशाः स्युः। प्रायः = प्राउ, प्राइव, प्राइम्व, पगिम्व।

दी० प्रायेति। अपभ्रंश में प्रायस् के स्थान में प्राउ—प्राइव—प्राइम्व—पगिम्व ये चार आदेश होते हैं।

मा—मनाग्—दिवा—नहि—सहानां मं—मणाउ—दिवे—नाहि सहुवः। ५, ४, ३३।

कौ० अपभ्रंशे क्रमादेषां पंचानामेते पंचादेशाः स्युः। मा = मं मनाक = मणाउ। दिवा = दिवे। नहि = नाहि। सह सहुं।

दी० मेति। अपभ्रंश में मा को मं, मनाक् को मणाउ, दिवा को दिवे, नहि को नाहि, सह को सहुं आदेश होते हैं।

अनुरन्यथो वा। ५, ४, ३४।

कौ० अपभ्रंशेऽन्यथा स्थाने अनुरादेशो वा स्यात्। अन्यथा = अनु अन्नह अन्नाह।

दी० अन्विति। अपभ्रंश में अन्यथा को अनु आदेश विकल्प से होता है। पक्ष में अन्यथा = १, २, ३३ था = था = हा—अ २, १, ७ ह २, ३, ६८, ७५ न्य = न्न = अन्नह अन्नाह।

इवार्थे नं—नाइ—नावइ—नउ—जणु—जणिवः
। ५, ४, ३५ ।

कौ० अपभ्रंशे इवार्थे औपम्येनं—नाइ—नावइ—नउ—जणु—जणि इत्येते पंच प्रयुज्यन्ते।

दी० इवेति। अपभ्रंश में उपमा में नं—नाइ नउ जणु तथा जणि ये पांच प्रयुक्त होते हैं।

तादर्थ्ये तणेण केहिं तेहिं रेसिं रेसयः । ५, ४, ३६ ।

कौ० अपभ्रंशे तादर्थ्ये द्योत्ये एते पंच प्रयुज्यन्ते । बहुत्तणहो तणेण (महत्वार्थम्) एवं केहि तेहि रेसि रेसि ।

दी० तदेति । अपभ्रंश में तादर्थ्य द्योतन के लिए तणेण—केहि—तेहि रेसि—रेसि ये पांच प्रयुक्त होते हैं ।

चेष्टा—शब्दानुकरणयो र्घुग्घ हुहुर्वादयः । ५, ४, ३७ ।

कौ० अपभ्रंशे चेष्टानुकरणे घुग्घादयः शब्दानुकरणे च हुहुरु इत्यादयश्च प्रयुज्यन्ते ।

घइमादयोऽर्थशून्याः । ५, ४, ३८ ।

कौ० अपभ्रंशेऽर्थशून्या घइं इत्यादयः प्रयुज्यन्ते । घइं विवरीरीबुद्धडी (घइं विपरीता बुद्धिः) ।

दी० घइमिति । अपभ्रंश में अर्थरहित घइं आदि का प्रयोग होता है ।

तव्यस्य एवा—एव्वउं—इएव्वउं । ५, ४, ३९ ।

कौ० अपभ्रंशे तव्यस्यैते त्रय आदेशाः स्युः । कर्तव्यं =करिएवा करिएव्वउं करिइएव्वउं ।

दी० तव्येति । अपभ्रंश में तव्य को ये तीन आदेश होते हैं । कृ—तव्य=प्र० सू० एवा ३, ४, २५. ३० कृ=कर ३, ३, र=रि—रे=करिएवा करेएवा १, १, २७ लुप् =करेवा । एवं करिएव्वउं आदि ।

इ—इउ—इवि—अवयः क्त्वः । ५, ४, ४० ।

कौ० अपभ्रंशे क्त्वा प्रत्ययस्यैते चत्वार आदेशाः स्युः । कृत्वा=करि, करिउ करिवि करवि ।

दी० इइति । अपभ्रंश में क्त्वा को ये चार आदेश होते हैं । कृ=त्वा=प्र० सू० इ ३, ४, २५ कृ=कर्=करि ।

एवमण हुमण हिमणास्तुमुनः ५, ४, ४१ ।

कौ० अपभ्रंशे तुमुनः स्थाने एते चत्वार अदेशा स्युः । कर्तुं=करेवं करणं करणहिं करण ।

दी० एवमिति । अपभ्रंशे तुमुन् के स्थान में एवं—अणं—अणहिं—अण ये चार आदेश होते हैं । कृ=कर्—तुम्= एवं=करेवं । अणं=करणं । अणहिं=करणहिं । अण= करण ।

उभयोरेप्प्येप्पि प्वेप्वे विणुवः । ५, ४, ४२ ।

कौ० अपभ्रंशे क्त्वा तुमुनोः स्थाने एते चत्वार आदेशाः स्युः । कृत्वा कर्तुं वा=करेप्पि करेप्पिणु करेवि करेविणु ।

दी० उभेति । अपभ्रंश में क्त्वा—तुमुन् के स्थान में एप्पि —एप्पिणु—एवि—एविणु ये चार आदेश होते हैं ।

गमे र्वा पि—पिणु । ५, ४, ४३ ।

कौ० अपभ्रंशे क्त्वा तुमुनोरतौ वा स्तः । गत्वा गन्तुं वा=गम्पि, गम्पिणु । पक्षे—गमेप्पि गमेप्पिणु गमेवि गमेविणु । पक्षे गत्वा=गमि गमिउ गमिवि गमवि । गन्तुं=गमेवं गमणं गमणहुं गमण ।

। इत्यव्यय प्रकरणम् ।

दी० गमेरिति । अपभ्रंश में गम् से पर क्त्वा—तुमुन् के स्थान में पि—पिणु ये दो आदेश विकल्प से होते हैं ।

[अथ स्वार्थिकाः प्रत्ययाः]

अ—डड—डुल्ला योगजाश्च स्वार्थे । ५, ४, ४४ ।

कौ० अपभ्रंशे नाम्नः परेस्वार्थे इमे त्रयो यथासम्भवं परस्पर मिलिताश्च प्रत्यया भवन्ति ।

दी० अडडेति । अपभ्रंश में नाम से पर अ- डड—डुल्ल तथा यथासम्भव इन तीनों के परस्पर योग से प्रत्यय स्वार्थ में होते हैं ।

स्त्रियामेतदन्ताड्डीप् । ५, ४, ४५ ।

कौ० अपभ्रंशे स्त्रियां पूर्वोक्त स्वार्थिक प्रत्ययान्तात्परो डीप् स्यात् । डित्वाट्टिलोपः । एक कुडुल्ली पंचहिरुद्धी (एकाकुटी पचमी रुद्धा) ।

दी० स्त्रियामिति । अपभ्रंश में पूर्वोक्त स्वार्थिक प्रत्ययान्त स्त्रीलिंग पर डीप् प्रत्यय होता है । डित्वाट्टिलोप होता है । कुटी=पू० सू० डुल्ल—टिलोप प्र० सू० डीप्—टिलोप २, १, १७ ट—ड=कुडुल्ली ।

आन्तान्ताड्डाप् । ५, ४, ४६ ।

कौ० अ—प्रत्ययान्तान्तात्स्त्रीलिंगात्परोडाप् स्यात् । ङीपोऽपवादः । डडअ—डुल्लअ—डुल्लडडअ—डड डुल्लअ इत्यादयो योगजा आन्तान्ताः प्रत्ययाः । धूलिः=धूलिडिआ । आन्तान्तात्किम् । वार्ता= वत्तडी । स्त्रियामित्येव । कर्ण—कन्नडइ ।

दी० आन्तेति । अ—प्रत्ययान्त है अन्त में जिसके ऐसे योगज अ-प्रत्ययान्त नाम से पर स्त्रीलिंग में डाप् प्रत्यय होता है । धूलि—५, ४, ४४ डडअ टिलोप=पूर्व सूत्र से प्राप्त ङीप बाधकर प्र० सू० डाप्—टिलोप= धूलडआ=उ० सू० ईत्व=धूलडिआ । वार्ता १, २, ३६ र्ता=२, ३, ६६, ७५ र्ता—ता ५, ४, ४४ डड टिलोप ४५ ङीप्—टिलोप=वत्तडी आन्तन्तत्वाभाव से डाप् नहीं होता है । स्त्रियाम् कथन से कर्ण—२, ३, ६६, ७५ र्ण=ण्ण बाहुलकात् नत्व—५, ४, ४४ डडअ—टिलोप= कन्नडअ—में डाप् का अभाव—सि सहित पूर्व अ को ५, ३, १४ इ=कन्नडइ ।

डाप्यत इत् । ५, ४, ४७ ।

कौ० अपभ्रंशे स्त्रियां डापि परेऽत इत्वं स्यात् । धूलडिआ । । इति स्वार्थिक प्रत्यय व्यवस्था ।

दी० डापीति । अपभ्रंश में स्त्री प्रत्यय डाप से पूर्व अ को इकार होता है ।

[अथ लिंग व्यवस्था]

लिंगमव्यवस्थितम् । ५, ४, ४८ ।

कौ० अपभ्रंशे प्रायो लिङ्गं व्यवस्थितं न भवति । गय—कुम्भइं दारन्तु (गजकुम्भान् दारयन्तम्) ५, ३, २ । अत्र कुम्भइं पुंसो नपुंसकत्वम् । अब्भाणि=अब्भा । अत्र नपुंसकस्य पुंस्त्वम् । अन्त्रकं=अन्तडी । अत्र नपुंसकस्य स्त्रीत्वम् ।

दी० लिङ्गेति । अपभ्रंश में प्रायः लिङ्ग व्यवस्थित नहीं होता है । कुम्भ—शस्=प्र० सू० नपुंसकत्व ५, ४, २४ इं=कुम्भइं । अभ्र—जस्=२, ३, ६६, ७६ भ्र=ब्भ प्र० सू० पुंस्त्व ५, ३, २ दीर्घ ३ जस्=लुप्=अब्भा । अन्त्र—५, ४, ४४ डड—टिलोप २, ३, ६६ न्त्र=न्त प्र० सू० स्त्रीत्व ५, ४, ४५ ङीप्—टिलोप=अन्तडी ।

अनुक्तं शौरसेनीवत् । ५, ४, ४९ ।

कौ० अपभ्रंशेऽनुक्तं कार्यं शौरसेनी वत्स्यात् । कृतः= किदु । विहितः=विहिदुदु इत्यादि ।

दी० अन्विति । अपभ्रंश में अनुक्त कार्य शौरसेनी भाषावत् होता है । कृत=विहित—सु=१, ३, २६ कृ=कि २, २, १ प्राप्त त्—लुप् को शौरसेनीवत् ५, १, १ से बाधकर द० ५, ३, ६, ३ स्वा०=किदु । विहिदु । इत्यादि ।

व्यत्ययोऽप्येषाम् । ५, ४, ५० ।

कौ० एषां पूर्वोक्तानां प्राकृतादि भाषा विहितानां कार्याणां परस्परं व्यत्ययोऽपि स्यात् । यथाऽपभ्रंशे विहितं 'लुबधोरः ५, ४, ७ इति मागध्यामपि भवति । 'शदमाणु शमंशभालके कुम्भसहश्श वशाहे शंचिदे' इत्यादि । मागध्यामुक्तं 'तिष्ठस्य चिष्ठः' ५, २, १५ प्राकृत पैशाची शौरसेनीष्वपि स्यात् । तिष्ठति=चिष्ठति । वर्तमान काले प्रसिद्धाः प्रत्यया भूतेऽपि भवन्ति । अथपेच्छइ रहुतनयो (अथ प्रेक्षाञ्चके इत्यर्थः) । आभासइ रयणीअरे आभाषे रजनीचरानित्यर्थः । भूते प्रसिद्धा वर्तमानेऽपि । सोहीउ एष वण्ठो । शृणोतीत्यर्थः ।

दी० व्यत्येति । पूर्वोक्त प्राकृतादि सूत्र विहित कार्य का परस्पर में व्यत्यय भी होता है । जैसे अपभ्रंश में अधो वर्तमान रेफ का विकल्प से लुप् होता है । वैसे मागधी में भी होता है । मागधी में तिष्ठ को चिष्ठ आदेश प्राकृत-पैशाची तथा शौरसेनी में भी होता है । वर्तमानकाल में प्रसिद्ध प्रत्ययादेश भूतकाल में भी होता है । भूतकाल में प्रसिद्ध वर्तमान में भी होता है । इत्यादि स्वयं ऊह करें ।

सिद्धमनुक्तं संस्कृतवत् । ५, ४, ५१ ।

कौ० प्राकृतादिषुषड्भाषास्वनुक्तं कार्यं संस्कृतवदेव भवति । हेट्ठट्ठिय—सूर निवारणाय छत्तं इव अहो वहन्ती । जयइ ससेसा वराहसास दुरुक्खमा पुहवी । ८९ । हे० ४४८ ।

छाया

अधः स्थित सूर्यं निवारणायच्छत्रमिवाधो वहन्ती।
जयति सशेषा वराहश्वास–दूरोत्क्षिप्ता पृथिवी ॥

अत्र पद्ये प्राकृत पंचाध्याय्यामनुक्तश्चतुर्थ्यादेशः संस्कृत वदेव भवति। क्वचिदुक्तमपि संस्कृतं भवति। यद्यपि—प्राकृते उरशिरस्सरशब्दाना-मुक्ता अपि सप्तम्या एकवचने उरे उरम्मि सिरे सिरम्मि सरे सरम्मि इत्यादि प्रयोगास्तथाऽपि क्वचिद्—उरसि शिरसि सरसि—इत्यादयोऽपि संस्कृतवद् भवन्ति। शास्त्रान्ते प्रयुक्तः सिद्धशब्दः मंगलाय कल्पते इति सिद्धमित्युक्तम्। ततो वाचकानामिदंशास्त्रमभ्युदयकारि स्यादिति।

। समाप्तोऽयं ग्रन्थः।

टी० सिद्धमिति। प्राकृतादि ६ भाषाओं में अनुक्त कार्य संस्कृतवत् ही होता है। यथा उक्त पद्य में अनुक्त चतुर्थ्यादेश संस्कृतवत् हुआ है। क्वचित् उक्त कार्य संस्कृतवत् ही होता है। यथा उरसि आदि। शास्त्र के अन्त में सिद्ध शब्द का प्रयोग मंगल के लिए किया गया है।

। प्राकृत चिन्तामणि ग्रन्थ समाप्त ।

अथ प्राकृत चिन्तामणिस्थ सूत्र सूची

[पूर्वार्द्धम्]

१. अथ प्राकृतम् । १, १, १
२. सिद्धिः स्याद्वादाद् लोकाच्च । १, १, २
३. अनुक्तमन्यव्याकरणवत् । १, १, ३
४. बहुलम् १, १, ४
५. आर्षम् । १, १, ५
६. आदिद्वितीयौ किखी । १, १, ६
७. संयुक्तं स्किः । १, १, ७
८. चन्द्रोऽनुस्वारः । १, १, ८
९. इदुपलब्धः शास्त्रे । १, १, ९
१०. लुप् तस्य १, १, १०
११. उपलब्धादर्शनं लुप् । १, १, ११
१२. वा निवर्तकं चित् । १, १, १२
१३. सानुनासिकं जित् । १, १, १३
१४. दीर्घो दिति । १, १, १४
१५. ठितो द्वित्वं १, १, १५
१६. वृत्तौ परस्परं दीर्घ ह्रस्वौ । १, १, १६
१७. पुंसिस्नान्त शरत्तरणि प्रावृड्द्दामादि । १, १, १७
१८. वा वचनादिलोचनार्थाः । १, १, १८
१९. क्लीबे गुणादिः । १, १, १९
२०. स्त्रियामञ्जल्यादीमान्तौ । १, १, २०
२१. बाहोरात् । १, १, २१
२२. वा सन्धिरपदे । १, १, २२
२३. इवोर्मयण । १, १, २३
२४. एङोऽचि । १, १, २४
२५. तिङोऽचः । १, १, २५
२६. मोपे । १, १, २६
२७. लुप् । १, १, २७
२८. हलोऽन्त्यस्याश्रुदुदी । १, १, २८
२९. वा दुर्निरोः । १, १, २९
३०. नाऽभ्यन्तरश्च । १, १, ३०
३१. उपरौ इलुप् । १, १, ३१
३२ पुनर्न पुनरोर्वा दिच । १, १, ३२
३३. आच् स्त्रिया मविद्यु तः । १, १, ३३
३४. रान्तेरा । १, १, ३४
३५. क्षुत् ककुभो हः । १, १, ३५
३६. वा धनुषि । १, १, ३६
३७. आयुरप्सरसो सः । १, १, ३७
३८. दिक् प्रावृषोः सच् । १, १, ३८
३९. वा सदाशिषः । १, १, ३९
४०. गरदादेरच् । १, १, ४०
४१. मश्चन्द्रच् । १, १, ४२
[अचिरा । १, १, ४३]
४२. हल्यमोवर्गान्तियस्य चित् । १, १, ४५
[दर्शनारिष्वचः । ४६ । क्त्वा सुपो-र्णाणसूस्याम् । ४७ । सुप्तस्य कांस्यादौ । ४८ । तदन्त्यो वर्णे । ५० । विंशत्यादौत्या इलुप् च । ५२ ।]
४३. आदेः । १, २, १
४४. अव्ययमन्यदास्तदचो वा लुप् १, २, २
[आरण्यालाब्वो : । १, २, ३]
४५. पदादपेः । १, २, ४
४६. इतश्चित् । १, २, ५
[अचस्तः । १, २, ६]
४७. दीर्घोलुप्तयवरशषिशारि १, २, ७
[दक्षिणे टे । १, २, ८]
४८. वा समृद्ध्यादौ । १, २, ९

४९. मृदङ्गादावस्येच् । १, २, १०
[वा पक्वललाटाङ्गार वेतसो । १, २, ११ खेः सप्तपर्णे । १, २, १२ । निलहम्मस्याने १, २, १३]

५०. प्रथमे पथोरुत । १, २, १६
[ध्वनिसस्नास्तावकयोश्चित् । १, २, १८ श्विवगवयेव: । १, २, १९]

५१. सर्वज्ञादौ णे । १, २, २०

५२. कन्दुकादावेच् । १, २, २३
[चे ब्रह्मचर्ये । १, २, २४ । खेरन्त-र्यस्वात्कर्म पुराकर्माश्चर्य पारावते । १, २, २५]

५३. पद्मे म्योत् । १, १, २६
[खेः परस्पर नमस्कारे । १, २, ३१ अर्पो वा । १, २, ३२]

५४. आलोऽव्ययचामरादिषत्रन्तेऽत् । १, २, ३३

५५. चन्द्रेऽच् कांस्यादौ । १, २, ३४
[श्यामाक महाराष्ट्रे म्होः । १, २, ३५]

५६. वा सदावित् । १, २, ३६

५७. चेऽजिचा वा चार्ये । १, २, ३७

५८. स्त्यान खल्वाट योरीच् । १, २, ३८

५९. स्कौह्रस्वः । १, २, ३९

६०. एद्वितो वा । १, २, ४०

६१. मत्पृथि पृथिवी प्रतिश्रुन्मूषिकविभीतके । १, २, ४२
[तेरितौ वाक्यादौ । १, २, ४३]

६२. वा हरिद्रे ङ्ग् दशिथिले । १, २, ४५

६३. लुपिसिह निरोश्चन्द्ररेफयोरीच् । १, १, ४६
[हे जिह्वायाम् । १, २, ४७]

६४. उद्वा युधिष्ठिरे । १, १, ४८
[द्विन्योः । १, २, ४९]

६५. इक्षु प्रवासिनोश्चित् । १, १, ५०

६६. औच्च द्विधाकृञ् द्विवचने । १, २, ५१

६७. हरीतकी कश्मीर योरीतोऽजाचौ १, ३, १
[गभीरादावित् । १, ३, २ । वा पानीयादौ । १, ३, ३ । जीर्णेऽत् । १, ३, ४ । द्यून्वीर्थे । १, ३, ५ । वा हीन-विहीनयोः । १, ३, ६]

६८. नीडपीठयोरेत् । १, ३, ७
[कीदृशे दृशापीडविभीतकेष्वेच् । १, ३, ८]

६९. अतोऽमुकरादौ । १, ३, ९
[वा गुडकोपरौ । १, ३, १० । आज्विद्रुते । १, ३, ११]

७०. रः पुरुष भ्रुकुटाविच् । १, ३, १२
[ईच् क्षुते । १, ३, १३]

७१. त्सच्छो रुदनुत्सन्नोत्साहे । १, ३, १४
[वा मुसल-सुभगयोः । १, ३, १५ । दुरिर्लुपि । १, ३, १६]

७२. ओच् स्कौ । १, ३, १७
[वा कुतूहलेह्रस्वश्चोतः । १, ३, १८]

७३. आद्रुतः सूक्ष्म दुकूलेलश्चद्विः । १, ३, १९
[ईदुद्व्यू । १, ३, २०]

७४. वातुलकण्डूयहनूमत्स्थूच् । १, ३, २१
[वा मधूके । १, ३, २२ । इदेतौ नूपुरे । १, ३, २३]

७५. ओत्स्थूणातूणे । १, ३, २४
[चित्कूर्परतूणीण—कुष्माण्डीगुडूची मूल्य स्थूल ताम्बूले । १, ३, २५]

७६. ऋतोऽत् । १, ३, २६
[आद्वा कृशा मृदुत्वमृदुके । १, ३, २७]

७७. ऋष्यादा विच् । १, ३, २८
[वा धृष्ट मृत्यु शृङ्ग मसृणा मृगाङ्के १, ३, २९ । अभिवृत्त वृन्दारके वृषभेतु वुः । १, ३, ३०]

७८. ऋज्वादावुच् । १, ३, ३२
[गौणे १, ३, ३३ । इदुतौमातरि । १, ३, ३४ क्वचिदगौणेऽपि १, ३, ३५]

७९. [पृथग्वृष्टिवृष्टनप्तृ मृदङ्गे ऽ]। १, ३, ३६
[बृहस्पतौ वा १, ३, ३७ इजेद्चौ-
वृत्ते १, ३, ३८ | मृष्यु जू जोचः।
१, ३, ३९। ऋपोऽरिहृ'प्ते १, ३, ४०]

८०. इशिं विवन्कन्कसेरिः। १, ३, ४२
[केवलस्य १, ३, ४३।
ऋषिऋणऋजु—ऋतुऋषभे वा
१, ३, ४४]

८१. इलिच् क्लृन्न क्लृप्ते लृतः १, ३, ४५

८२. इदेतो वा चपेटा वेदना देवर केसरे। १, ३, ४५
[उत् स्तेने १, ३, ४७]

८३. एर्जैतः। १, ३, ४८
[सैन्धव शनैश्चरयोरित् १, ३, ४९।
दैत्या—दौचाइच् १, ३, ५१।
वा दैववैरादौ। १, ३, ५२।
धैर्येईच् १, ३, ५४]

८४. वाऽस्योन्याऽतोद्यप्रकोष्ठ मनोहरसरो-
रुहशिरो वेदनास्वदोतस्तकोर्वश्च। १, ३, ५६
[गव्यउआ अनाइचः १, ३, ५७।
ऊत्सोच्छ्वासे छश्च सः १, ३, ५८]

८५. औत्। १, ३, ६३
[औतो ना व्या वा। १, ३, ५८
आदौर वे। १, ३, ५९
अउमौनादीच। १, ३, ६०
उच वा कौ क्षयके। १, ३, ६१
अच् सौन्दर्यादौ १, ३, ६२]

८६. उमो निषण्णे वा साज्ज्ञलाऽचः। १, ४, १
[कदल विचकिमयोरेत्। १, ४, २।
ले: कर्णिकारे। १, ४, ३।
स्थविरायस्कारत्रयोदशादौचित् १, ४, ४।
ऐद्यौ वा। १, ४, ५]

८७. लवणमयूर–मयूखोलूखलोदूखल कुतूहल
चतुर्थचतुर्दश चतुर्गुण-- चतुर्वार
सुकुमारेष्वत्। १, ४, ६
[अपावौतेषु। १, ४, ७।
ऊदप्यूपे। १, ४, ८]

८८. हलोऽस्के रायाधतः।

८९. कील कर्परे खः कुब्जे त्वपुष्पे। १, ४, १३
[कसित कासितयोरार्थे। १, ४, १४
कन्दुके गः। १, ४, १५।
जातौ किराते चः। १, ४, १६
ओवा जटिले। १, ४, १७।
च छौतुच्छे। १, ४, १८।
तूवर तगर—त्रसरेटच्। १, ४, १९
दंशदहोर्डः। १, ४, २०।
धो दोप्यतौ। १, ४, २३]

९०. नोणः १, ४, २४।
[लाण्हो नापितयोः। १, ४, २५]

९१. फच्पाटि पनस परिखा परिघ
पारिभद्रे। १, ४, २६
[वः प्रभूत मन्मथे। १, ४, २७।
भो बिसि—न्यास्। १, ४, २८]

९२. योजः। १, ४, २९
[तोऽर्थवाचि युष्मदि। १, ४, ३०
लोयष्टौ। १, ४, ३१
णो ललाटे। १, ४, ३२
वा लाङ्गूल लाङ्गूल लाहल
लोहले। १, ४, ३३।
भो विह्वले मे। १, ४, ३४
छः शिरायाम्। १, ४, ३५
षट्सुधाशावशमी सप्तपर्णे १, ४, ३६]

९३. सर्वत्र शषोः स.। १, ४, ३७

९४. अचोऽकेरायाबतः। २, १, १

९५. कोगौ मरकत मदकले। २, १, २
[वा स्थानकवास्यादौ। २, १, ३।
महौषीकरे। २, १, ४।
मच्चन्द्रिकायाम्। २, १, ५।
हश्चिकुर निकष स्फटिके २, १, ६]

९६. खघथध भाम् । २, १, ७

[छोवा पृथकि । २, १, ८ ।
भागिनी पुन्नागे गोमच् । २, १, ९ ।
लश्छागे । २, १, १० ।
वः सुभग दुर्भगयोरुत्वे । २, १, ११]

९७. वा सल्लौ क्वचित पिशाचयोश्च: । २, १, १२

९८. कैटभ शकट सटासु टो ढंच् । २, १, १३

[स्फटिकाङ्को ठयोर्लल्लौ । २, १, १४
लो वा पाटि चपेटा वेणु वडिशादौ ।
२, १, १५ । पिठरे होरदचङः ।
२, १, १६]

९९. टठडा डठलाश्चिन्तः । २, १, १७

१००. प्रत्यादौ डस्तोर प्रतिज्ञादावित्वे तु वेतसे । २, १, १८

[गर्भितेणः । २, १, १९ ।
वाऽति मुक्तके । २, १, २० ।
रुदिते सदेर्णच् । २, १, २१]

१०१. रः सप्तत्यादावतारौकदल्याम् । २, १, २२

[प्रदीपि दोहदातसीशात वाहने लः
२, १, २३ वापलित नितम्ब कदम्बे ।
२, १, २४ ।
ले पीते वः । २, १, २५ ।
भरत वसतौ हः । २, १, २६ ।
ककुद कातर वितस्तिमातुलिङ्गे
चित् । २, १, २७ ।
ढो निषध प्रथममेथि शिथिर
शिथिले । २, १, २८ ।
वौषध पृथिवी निशीथे । २, १, २९ ।
कदन वैदूर्येडः । २, १, ३० ।
दोवच्कदर्थिते । २, १, ३१]

१०२. नस्यणः । २, १, ३२

१०३. पोः पापर्द्धौ रः । २, १, ३३

[वमौ कबन्धे । २, १, ३४ ।
शवरेमः । २, १, ३५ ।
वा नीपापीडे । २, १, ३६]

१०४. कोभहौ । २, १, ३७

[विषम भ्रमरयोर्ढसौ । २, १, ३८ ।
मोऽभिमन्यौवः । २, १, ३९ ।
कैटभेचित् । २, १, ४०]

१०५. प्रायः यक्षमयोः । २, १, ४१

१०६. वा कृद्यतीयानीये यणोज्जः केरुत्त-
रीये । २, १, ४२

[छायायामद्युतौहः । २, १, ४३ ।
कतिपयेद्-वचौ । २, १, ४४ ।
वेरमेर किरौडः । २, १, ४४ ।
केः वीरेणः । २, १, ४५]

१०७. लोवरुणादौ । २, १, ४६

[वा वठर जठर निष्ठेर । २, १, ४७
भ्रमरचरणयोःसल्वपादयोश्चित् ।
२, १, ४८ । स्थूलेरः । २, १, ४९ ।
वानीवी स्वप्ने । २, १, ५०]

१०८. दशदिवस पाषाण प्रत्यूषे सरोहः । २, १, ५१

[स्नुषायांण्हः । २, १, ५२ ।
चन्द्राच्चहोच । २, १, ५३]

१०९. प्रायोलुप् कचतपगजदपवाम् २, २, १

[नावर्णात्पः । २, २, २ ।
यश्रवणोऽवर्णः । २, २, ३]

११०. मोऽन्त्रिकामुकचामुण्डा यमुनासु । २, २, ४

[अतिमुक्तके वा २, २, ५]

१११. सान्तोर्गकोरागत प्राकार व्याकरणे । २, २, ६

[जो दनुज भाजन राजकुले । २, २, ७
यो हृदय किसलय कालायसे । २, २, ८
दो दुर्गा देवी पादपीठ पादपतनो
दुम्बरे । २, २, ९ ।
यावदा वर्तमानावट जीवितताव-
द्देव कुल प्रावारके वः केस्त्वेवमेवे
२, ३, १०]

११२. धृति दुहितृ भगनी वनितानां दिहि-
धुआ बहिणी विलया: । २, २, १४
[धरो गृहस्या पतौ । २, २, १५
बृहस्पतौ भय: । २, २, ११]

११३. मातुपितु: स्वसुरछासिओ । २, २, २०
[दाढा दंष्ट्राया: । २, २, २१]

११४. वा वृक्षपूर्वयो रुक्खपुरिमौ । २, २, २२
[क्षिप्तवैदुर्ययोश्छूढवेरुलिओ ।
२, २, २३]

११५. स्के: । २, ३, १

११६. वा क्ष्ण मृदुत्व मुक्त शक्तेक: । २, ३, २
[स्वस्तीक्ष्ण-शुष्के-स्कन्दे तुक: ।
२, ३, ३ । टिकादौ । २, ३, ७ ।
संज्ञायां ष्क स्को: । २, ३, ८ ।
क्षस्य क्वापि छझावापि । २, ३, ९ ।
वा रक्त शुल्कयोर्गङ्गौ । २, ३, १० ।
शृङ्खलेङ्खः । २, २, ११]

११७. त्यश्चत्वर कृत्तौ । २, २, १२
[त्योऽचैत्ये । २, २, १३]

११८. प्रायस्त्वथ्वद्वध्वां च छ ज झा: । २, २, १४
[क्षोत्सवोत्सुक सामर्थ्ये छ: ।
२, २, १७]

११९. लक्ष्म्यादौ चित् । २, २, १७
[क्षमाक्षणयोरिलामथो: । २, २,
१८ । ह्रस्वाद निश्चलेत्सप्सक्ष्य-
थ्याम् २, २, १९]

१२०. जोऽद्यय्यर्याम् । २, २ २०
[वाज्जश्चाभिमन्यौ । २, २, २१ ।
ञ्ञो ध्वजे । २, २, २२ ।
ध्यह्योश्चित् । २, २, २३]

१२१. टोऽवार्तादौर्त: । २, २, २५
[वृत्त प्रवृत्त पत्तन मृत्तिका
कदर्थितो ट्टोसंदष्टे । २, २, २६]

१२२. ष्टस्यठ: । २, ३, २७
[अस्थिविसं स्थूलार्थेऽख्ने । २, ३,
२८ । वा चतुर्थस्त्याने । २, ३, २९]

१२३. गर्त वितर्दिच्छर्दि विच्छर्दि सम्मर्द-
मर्दित कपर्दे खेड्ंच् वातु गर्दभे । २, ३, ३०
[मूर्द्धार्ध श्रद्धयो ढो वा । २, ३, ३१ ।
वृद्ध वृद्धि दग्ध विदग्धे चित् ।
२, ३, ३२]

१२४. दसपञ्चदश पञ्चाशतिण: । २, ३, ३५
[सम्नयो: । २, ३, ३६ । ण्टो वृन्ते ।
२, ३, ३७ ण्डःकन्दरिकाभिन्दिपाले ।
२, ३, ३९]

१२५. क्ष्णश्नष्णस्न ह्णह्नो ण्ह: । २, ३, ३९
[सूक्ष्मे क्ष्म क्षो ण्ह—ह्नौ ।
२, ३, ४०]

१२६. स्तश्चित् । २, ३, ४१
[थावा स्पवारसाहे थेरी ह्रश्व ।
२, ३, ४२ । मन्युचिह्नयोवन्तिन्धौ ।
२, ३, ४३]

१२७. पो भस्मात्मनि । २, ३, ४४
[क्मङ्मोश्चित् । २, ३, ४५ ।
भीष्म ष्प स्पां फ: । २, ३, ४६ ।
खेर्वाश्लेष्मणि । २, ३, ४७ ।
ह्वोर्भ्वेभ: । २, ३, ४८ ।
न्मोम: । २, ३, ४९ ।
ग्मोमच् । २, ३, ५० ।
खेर्वाम्भ: श्लेष्मकश्मीर ब्राह्मण ब्रह्मचर्ये ।
२, ३, ५१ ।
आम्र ताम्रे म्वच । २ ३, ५२]

१२८. म्हत् पक्ष्म क्ष्म श्म ष्म स्म ह्मामर
विस्मरे । २, ३, ५३
[रोदशार्हे । २, ३, ५४ ।
र्यस्तुर्य शौण्डीर्य सौन्दर्य ब्रह्मचर्ये
धैर्ये तु वा एत: पर्यन्ते । २, २, ५५]

१२९. आश्चर्येऽत्तोऽररिपरीअरिज्जाश्च । २, ३, ५७
[पर्यस्त सौकुमार्ये ल: स्तस्तु
टो वा । २, ३, ५८]

१३०. हलोल्हच् । २, ३, ५६
[वनस्पतिवृहस्पतौ सोवा ।
२, ३, ६० ।
तीर्थं दीर्घं दुःख दक्षिण बाष्पेहः ।
२, ३, ६१ ।
कुष्माण्डी कार्षापणे केः । २, ३, ६२]

१३१. निस्प्रभनिस्पृह-परस्परस्तम्ब समस्ते पसोर्लुप् । २, ३, ६६

१३२. कटतपगजद ⁀क⁀ पशरामूर्ध्वं मदे । २, ३, ६७

१३३. नमयामश्मश्रुश्मशानेऽघः । २, ३, ६८

१३४. रलवामुभपेषामवन्दे । २, ३, ६९

१३५. मध्याह्न-सर्वज्ञोपमयो र्नविज्ञाने हृत्रोर्वा । २, ३, ७१

१३६. द्वित्वमदीर्घादचोऽकावस्वयोः शेष देशयोरहोः । २, ३, ७५

१३७. युम्माभ्यां प्राक्पूर्वौ । २, ३, ७६

१३८. मूकादौ २, ३, ७९

१३९. प्रभूतादौ चित् । २, ३, ८०

१४०. क्ष्माश्लाघारत्नेऽन्त्यहलः । २, ३, ८३
[वाङ्ग्नौ । २, ३, ८४]

१४१. र्शर्षतप्तवज्र क्रियास्वित् । २, ३, ८५
[श्री ह्रीर्हदिष्ट्या कृत्स्नहर्षामर्षं परामर्शं चित् । २, ३, ८६]

१४२. यास्त्यास्त्वैत्य मध्यवीर्यं तुल्ये । २, ३, ८७
[लादवलमतुल्ये । २, ३, ८८ ।
नात्स्वप्ने । २, ३, ८९ ।
उत्सूक्ष्म ल ध्नेऽश्रात् । २, ३, ९३ ।
पृथ्व्या वा । २, ३, ९६
छद्म पद्म द्वार मूर्खे । २, ३, ९७
अजिचौ चार्हति । २, ३, ९८]

१४३. व्यत्ययो दह—हर—मन—चलां ह्रदमहाराष्ट्रालानाचलपुरेषु । २, ४, १
[वाराणसी करेण्वां रणोः । २, ४, २]

१४४. हय—लह—लउ—रसां ह्र—लघुक —ललाट हरतालेषु वा । २, ४, ३
[निवहद्वर्वीकारोर्वहकरोः । २, ३, ४]

१४५. इदमर्थे केरच् । २, ३, ५
[आत्मनो णयं । २, ४, ७
युष्मदस्मदोरणोडंच्चयः । २, ४, ८]

१४६. मतुपो मामणाल्वा लेल्लोल्ले रेत्तेत्तमन्त—वन्ता । २, ४, १३

१४७. त्रसो ह—हि—त्थाः । २, ४, १७
[वा तसो दो त्तो । २, ४, १८]

१४८. डिमात्तणौत्वस्य । २, ४, २०

१४९. वा स्वार्थकश्च । २, ४, २२
[विद्युदन्द्र पीतपत्रात्लः । २, ४, २३ ।
डिअशनैसः । २, ४, २६ ।
डय च वा मनाकः । २, ४, २७ ।
डालियोमिश्रात् । २, ४, २८ ।
दीर्घाद्रः । २, ४, २९]

१५०. अव्ययम् । २, ४, ३२

१५१. प्रश्न विमर्शयोः किणोमणे । २, ४, ३३

१५२. निश्चय निर्धारणयो र्वं ले । २, ४, ३५

१५३. केवले णवर णवरं । २, ४, ४६

१५४. स्वयमोऽर्थेऽप्पणे । २, ४, ६७

१५५. एवार्थे णइच्च चिअ चेअ । २, ४, ५४

१५७. सिद्धा इवार्थे पिव—मिव—वव्व विअ विव । २, ४, ७०

१५८. आहणात्सुपो नाम्नः । ३, १, १

१५९. चिद् विसर्गस्य चाक्लीबे । ३, १, १४

१६०. जश्शसो र्लुप् । ३, १, ४

१६१. वा र्लुवोडौ । ३, १, ४२

१६२. अमोमच् । ३, १, ३

१६३. वाऽदुदोत्तो भ्यसृङसोरेत् । ३, १, १८

१६४. टायाङेणजातस्तु णः । ३, १, १७

१६५. हि हिं हिँ भिसः । ३, १, ५

१६६. सिस्सुपि चित् । ३, १, १९

१६७. सर्वत्र चतुर्थ्यन्ते । ३, १, ३८
[वा ङसन्तं तादर्थ्ये ङेन्ते । ३,१,३९]

१६८. ङि ङस्योरेद् दलुपौ । ३, १, १५
१६९. पञ्चम्याहि: । ३, १, १६
१७०. अणोत्तो पञ्चभ्यामभो दीर्घः । ३, १, ८
१७१. हिन्तो दुदो त्तो ङसेः । ३, १, ६
१७२. सुन्तो च भ्यसः । ३, १, ७
१७३. ङिङसोर्मिठसठो । ३, १, ९
१७४. आर्येङ् सि: सपूर्वचन्द्रः । ३, १, १०
१७५. णदामः । ३, १, ११
१७६. अक्लीबत्सो दलुप् । ३, १, २६
१७७. पुंसो जसो डउडओडवोऽप्लुतस्तु । ३, १, २७
१७८. शसश्च णो । ३, १, २३
१७९. टाया णाच् । ३, १, २५
१८०. इदुतो दीर्घः । ३, १, २०
१८१. क्लोबाच्चङसिङसोः । ३, १, २४
१८२. ईदूतोः क्विपः । ३, १, ४०
१८३. सावात् । ३, १, ५१
१८४. ऋतोङ् । ३, १, ४४
१८५. वाऽस्वमाम्पुत् संज्ञायान्तु यथा-
दर्शनम् । ३, १, ५०
१८६. आच् संज्ञायाम् । ३, १, ४९
१८७. डरं संज्ञायाम् । ३, १, ४५
१८८. वा स्त्रियामुदोदौ । ३, १, ३९
१८९. एङापः क्वचिदोऽपि । ३, १, ४३
१९०. अमि ह्रस्वः । ३, १, ३९
१९१. टाङिङसां चित् । ३, १, ३२
१९२. आन्नानः । ३, १, ३३
१९३. ङसेरदादि देदः । ३, १, ३१
१९४. ईतः सोश्चात् । ३, १, ३०
१९५. संबुद्धेः । ३, १, ४१
१९६. मातरि जनन्यामाच् । ३, १, ४७
१९७. देवतायां मराच् । ३, १, ४८
१९८. स्वस्रादेर्डाच् । ३, १, ३८
१९९. क्लीबा दचोऽसंबुद्धे मंल्लुपौ । ३, १, २७
२००. जश्शसोर्दिर्दिणिदः । ३, १, ३०
२०१. राज्ञोऽनः । ३, १, ५२
२०२. आणोऽनः पुंसिराजवत्पक्षे । ३, १, ५९
२०३. जश्शस्ङसिङसांणोद् । ३, १, ५३
२०४. जनो णो णाङि ण्वित् । ३, १, ५५
२०५. अमाभेणं । ३, १, ५६
२०६. टापाणा । ३, १, ५४
२०७. टाङम्ङिङसां णाणवोडंण् । ३, १, ५८
२०८. भिस्भ्य साम्सुप्स्वीत् । ३, १, ५७
२०९. आत्मनष्टायाणिआणइआ । ३, १, ६०
२१०. सर्वादेरतो जसोडेन् । ३, १, ६१
२११. डेस्सिम्मामः । ३, १, ६४
२१२. ङेर्म्मिस्सिंत्थाः । ३, १, ६२
२१३. हिमनेतदिदमोवा कियत्तदश्च-
स्त्रियामपि । ३, १, ६३
२१४. यत्तदेतदिदंकिंभ्योङिणाटया: । ३, १, ७२
२१५. म्हा ङसेः । ३, १, ६९
२१६. यत्तत्किमोङसः ३, १, ६६
२१७. काले ङेरिआहेल्लादः । ३, १, ६८
२१८. सौतदश्चा क्लीबेतः सच् । ३, १, ८७
२१९. ओउतस्तदेतदो वां । ३, १, १३
२२०. सुपित्वच्चित्तदोणः । ३, १, ७२
२२१. डोस्तदः । ३, १, ७०
२२२. तदेतदिदमा वा ङसाम्भ्यां सेसिमौ ।
३, १, ८१
२२३. तत्किमः सद् । ३, १, ६५
२२४. एतदः सुनेणमिणमवेसा । ३, १, ८४
२२५. ङसिनात्वेत्तो एत्ताहे । ३, १, ८५
२२६. अयमियम्मोम्मिनेतदश्च । ३, १, ९०
२२७. एत्थच्येन । ३, १, ८६
२२८. पुंस्त्रियामयामिमिया सुनावा । ३, १, ७६
२२९. इम ङदमः । ३, १, ७५
२३०. अम्ङिभ्यामिणमिहौ । ३, १, ७८
२३१ हिस्सस्सि सुप्स्वत् । ३, १, ७७
२३२. न त्थः । ३, १, ७९
२३३. भतसोण्च किमः कच् । ३, १, ७४
२३४. किमोङिणोडीसौ । ३, १, ७१
२३५. सुप्यमुरदसः । ३, १, ८८
२३६. अहसुना त्रिलिग्यां वा । ३, १, ८९

२३७. सुना युष्मदस्तं तुं तुह तुमं तुवं । ३, २, १
२३८. जसा भे तु ब्हो ब्ह तुब्भा तुज्झे । ३, २, २
२३९. वा ब्भा ज्झ म्हौ । ३, २, १४
२४०. अमा तं तुं तुए तुमे तुमं तुहं तुवं । ३, २, ३
२४१. शसा भेवो तुज्झो ब्हे तुम्हे तुब्भे । ३, २, ४
२४२. टा तइ तए तुइ तुए तुमइ तुमाइ तुमए तुमं तुमे तेदिदे भे । ३, २, ५
२४३. भिसा भे उय्हेहिं उज्झेहिं उम्हेहिं तुय्हेहिं तुम्हेहिं । ३, २, ६
२४४. ङसौतइ तुहु तुम तुव तुब्भं । ३, २, ७
२४५. ङसिना तुय्ह तहिन्तो तुब्भ । ३, २, ८
२४६. भ्यस्युम्होय्ह तुय्ह तुब्भा । ३, २, ९
२४७. ङसादिदे इए तुं ते तइ तुम तुमे तुव तुह तुहं तुम्ह तुमो तुमाइ । ३, २, १०
२४८. ङिना तह तए तुमे तुमाइ तुमए । ३, २, ११
[आमा भे वो तु तुमाण तुवाण तुम्हाणो--म्हाण--तुब्भ तुब्भं तुब्भाणाः । ३, २, १२]
२४९. ङिसुपोस्तु तुमतुव तुह तुब्भाः । ३, २, १३
२५० सुनाऽस्मदोहमहम हयं मम्म म्हिम्मयः । ३, २, १५
२५१. जसा मेऽम्हाऽम्हे ऽम्हो मो वयं । ३, २, १६
२५२. अमाऽहमम्हाम्हि मम्हणं णे मि मं ममं मिमं । ३, २, १७
२५३. शसा णेऽम्हेऽम्होऽम्हाः । ३, २, १८
२५४. टा णे मि मे मइ मए ममाइ मयाइ ममं ममए । ३, २, १९
२५५. भिसा णे अम्ह अम्हाहि अम्हेहि अम्हे । ३, २, २०
२५६. ङसौ मइ मज्झ मम महा । ३, २, २१
२५७. भ्यस्म्ह ममौ । ३, २, २२
२५८. ङसाऽम्हऽम्हं मइ मे मज्झ मज्झं महं मम महा । ३, २, २३
२५९. आमा णे णो ऽम्हे ऽम्हो ऽम्हाम्हं मज्झ मज्झाणाम्हाणममाण-महाणाः । ३, २, २४
२६०. ङिना मि मे मइ ममाइ मए । ३, २, २५
२६१. सप्तम्या मज्झाम्ह ममहाः । ३, २, २६
२६२. द्वे च दो दुवे वोण्णि दोण्णि । ३, २, २८
२६३. भिसादौ वे दो । ३, २, २९
२६४. अविंशत्यादेः संख्याया आमो ण्ह ण्हं । ३, २, ३२
२६५. जश्शसा तिण्णि । ३, २, ३१
२६६. त्रेस्तिः । ३, २, ३०
२६७. जश्शस्भ्यां चतुरश्चउरो चत्तारि चत्तारो । ३, २, ३३
२६८. वा चतुरोभ्यसिच । ३, २, २९
२६९. यत्तदिदमेतत्किमोऽस्त्वमामि । ३, १, ३७
२७०. सेसाठाडी ट्ठ्यः । ३, १, ६७
२७१. नित्यं क्लीबे स्वमेदमिणमिणमो । ३, १, ८१
२७२. किं किमः । ३, १, ८२
२७३. सर्वत्र चतुर्थ्यन्ते । ३, २, ३७
२७४. वा तादर्थ्यङेन्ते । ३, २, ३९
२७५. बहुवचनान्तं द्विवचनान्ते । ३, २, ३३
२७६. अजातेः पुंसोवाङीप् । ३, १, ३४
२७७. प्रत्ययान्तात् । ३, १, ३५
२७८. छाया हरिद्राभ्याम् । ३, १, ३६

।। उत्तरार्द्धम् ।।

२७९. तिबादेरेकत्वे प्रथम स्यै पेपौ । ३, ३, १
२८०. वा वर्तमान विध्यादिशतृषु । ३, ३, २१
२८१. बहुत्वे न्ति न्ते इरे । ३, ३, ८
२८२. मध्यमस्यैकत्वे । ३, ३, ३
२८३. इत्थाहचौ बहुत्वे । ३, ३, ४
२८४. मिरुत्तमस्यैकत्वे । ३, ३, ५
२८५. वा मौ । ३, ३, १७
२८६. बहुत्वे मुमोमाः । ३, ३, ६
२८७. मुमोमेष्विच्च । ३, ३, १८
२८८. वर्तमान भविष्यतोश्चज्जाज्जौ । ३, ३, ३७

२८९. ज्ज ज्जा ज्जे ज्जहि ज्ज सुप्सुचित् । ३, ३, २२
२९०. वा विध्या देज्जादित् । ३, ३, २३
२९१. विध्यादावेकत्वे प्रथमादीनांदुसुमु
बहुत्वे न्तु ह मो । ३, ३, ३४
२९२. मोर्वा हिः । ३, ३, ३५
२९३. अतो ज्जे ज्जहि ज्ज सुलुपः । ३, ३, ३६
२९४. भूतार्थे व्यञ्जना दीअच । ३, ३, २४
२९५. भविष्यति हिरादिरिवादे रार्थेतु
स्सः । ३, ३, २५
२९६. भविष्यत्तव्य क्त्वा तुम्येच्च । ३, ३, २०
२९७. मेर्हिना स्सं । ३, ३, ३०
२९८. हेरुत्तमस्य हा स्सा वा । ३, ३, २८
२९९ मुमोमानां स्थास्सा । ३, ३, २९
३००. क्रियातिपत्तौ । ३, ३, ३९
३०१. अतएव सयेपौ । ३, ३, ७
३०२. हुरपिति । ४, १, ३
३०३. प्रागिवादेश्चाजन्तात् । ३, ३, ३८
३०४. अन्ततोऽच्चो वा । ३, ३, ३१
३०५. अचः सो हो हीआः । ३, ३, २५
३०६. करेः कुणः । ४, १, ६
३०७. आच् कृञोऽतीतानागतयोश्च । ३, ४, ५
३०८. कृदाभ्यां हं । ३, ३, ३१
३०९. इष्वादौ गमि दृशिच्छिदभिदि विदि
छेच्छ मेच्छ वेच्छ रोच्छ भोच्छ
मोच्छ वोच्छ सोच्छा हेश्च वा
लुप् । ३, ३, ३२
३१०. वाम्यन्तानां गच्छमादयः । ३, ३, ३३
३११. तिङाऽस्तेरत्थिः । ३, ३, ८
३१२. सिना सिः । ३, ३, ९
३१३. वा मिमोमें म्हि म्होम्हाः । ३, ३, १०
३१४. तदन्तस्यास्तेरस्य हेसो । ३, ३, २६
३१५. णेरच्चावचौ । ३, ३, ११
३१६. अजेऽलुप्युपान्त्य स्यात आ । ३, ३, १६
३१७. एचावेचौ च भूते । ३, ३, १२
३१८. वा भ्रमेराडः । ३, ३, १३
३१९. वा ब्यक्कर्मभावयोर्लुब्यकश्च । ३, ३, ३३
३२०. चेर्म्मक् । ३, ४, ३४
३२१. ग्रहृव्या हृओर्घे प्पवाहिप्पौ । ३, ४, ३५
३२२. अर्ज्या रमो विढप्पानप्पौ । ३, ४, ३६
३२३. स्पृशे च्छिप्पः । ३, ४, ३७
३२४. ज्ञो णज्ज णप्प णव्वाः । ३, ४, ३८
३२५. सिचिस्निहोः सिप्पच् । ३, ४, ३९
३२६. वचि दृशोर्वुच्च दीसौ । ३, ४, ४०
३२७. वा द्वित्वं गमादेरन्त्यस्य । ३, ४, ४१
३२८. कृ हृ जृ आमीरः । ३, ४, ४२
३२९. दहेज्झः । ३, ४, ४३
३३०. अनूप समे रुधः । ३, ४, ४४
३३१. बन्धोन्धः । ३, ४, ४५
३३२. दुह रुह रुध लिहवहांभोऽन उच्च ।
३, ४, ४६
३३३. खनहनोर्म्मः । ३, ४, ४७
३३४. शेषादिज्ज मीअन्वौ । ३, ४, ४८
३३५. भावकर्मक्तेषु च्लु पाविचो । ३, ३, १५
३३६. गमयमाशिषां छः । ३, ४, ६
३३७. नृतमदघ्रजां च्चः । ३, ४, ७
३३८. गृध क्षुध रुध बुध युध सिध मुह्यां-
ज्झः । ३, ४, ९
३३९. रुधोन्ध म्भौ वा । ३, ४, १०
३४०. पतसदोड्च् । ३, ४, ११
३४१. भिदिच्छिदोन्दच् । ३, ४, १६
३४२. नमिरदो मः । ३, ४, १७
३४३. विजेरुद्दः । ३, ४, १८
३४४. सुजेर । ३, ४, १९
३४५. द्वित्वं शकादेः । ३, ४, २१
३४६. ओर वच् । ३, ४, २४
३४७. उररच् । ३, ४, २५
३४८. अरिच् कृषादेः । ३, ४, २६
३४९. दीर्घास्तुषा देरचः । ३, ४, २७
३५०. क्ङित्यपि टवोर्गुणः । ३, ४, २८
३५१. अचामचः । ३, ४, २९
३५२. हलोऽगनोअे । ३, ४, ३०
३५३. णक् चि जि हुस्तु श्रुधू पूल् भ्यो
ह्रस्वश्च । ३, ४, ३२

३५४. इदितां धातूनां वाक्कादेशाः । ४, १, १

३५५. हो हवहु वा भुवेः । ४, १, २

३५६. कृञेः कुणः । ४, १, ७

३५७. को क्व णो क्को व्याहरेः । ४, १, १६

३५८. प्रसरे उव्वेल पयल्लो । ४, १, १७

३५९. गन्धे महमहः । ४, १, १८

३६०. स्मरेः सुमर झर झूर पयर भर पम्हुहः-भलअढ विम्हराः । ४, १, २०

३६१. विस्मु विम्हर—वीसर—पम्हुसाः । ४, १, २१

३६२. शकेः पार—तर—तीर—चयाः । ४, १, २८

३६३. मुञ्चे मेल्लाव हेडो सिमक्कछड्डुणि लुञ्छ धंसाउ—रेअवाः । ४, १, २९

३६४. राजेश्चग्घजाग्घरीररे हसहाः । ४, १, ४२

३६५. विद्ध्योऽर्जेः । ४, १, ४५

३६६. घूर्णो घुम्म घुल घोल पहल्लाः । ४, १, ४९

३६७. भुजो भुञ्जाण्ह कम्म च हु जिम-जेम चमढ समाणाः । ४, १, ५०

३६८. उपेन कम्मवो वा । ४, १, ५१

३६९. युजो जुज्ज जुञ्ज जुप्पाः । ४, १, ५२

३७०. तनेस्तड तड्ड तड्डव विरल्लाः । ४, २, १

३७१. विबुसिवव्यधोर्धं साहो । ४, २, ३

३७२ घुसल विरोली मन्थेः । ४, २, ४

३७३. छिदेर्लूर णिल्लूर णिव्वर-णिच्छल णिज्झोर दुहावाः । ४, २, ५

३७४. क्रुधि रुध्यो जूरो रुच्छो । ४, २, ६

३७५. खिदर्जूर विसूरौ । ४, २, ११

३७६. व्यापिसमाप्योरोअग्ग समाणौ । ४, २, १३

३७७. निःश्वसि ससप्योर्झङ्खः । ४, २, १४

३७८. विलपेवडवडश्च । ४, २, १५

३७९. उपालम्भेश्झङ्खवेलव पच्चाराः । ४, २, १६

३८०. रुवरम्भोरसे राडः । ४, २, २८

३८१. लुभेः सम्भावः । ४, २, २९

३८२. प्रदीपेरुत्तेअ सं अवसंधुक्क संदुमाः । ४, २, ३०

३८३. वेपेरयज्झायम्मौ । ४, २, ३२

३८४. स्वपेलिसलेट्ट कम्वसाः । ४, २, ३३

३८५. गमेरई-णो—णाण—रम्म-वोल पदअ-णिवह—णीलुक्क-णिम्महा-हुच्छा वज्जसा—क्कुसोक्कुसाणु वज्ज उपच्चड्ड पच्छन्द—परिअल परिअल्लावहरावसेह-णिरिणासाः । ४, २, ३५

३८६. प्रविशि हुसि संदिशोनो रिअ गुज्जाप्पाहाः । ४, ३, १

३८७. भषि वलिदलिभ्रशाणां भुक्क वम्फ—विसट्ट चोप्पडाः । ४, ३, २

३८८. नशेः सेहावसेहावह पडिसा णिनहु णिरि णासाः । ४, ३, ४

३८९. भ्रंशेश्चुक्क भुल्ल फिट्ट फुट्ट—फिड फुडाः । ४, ३, ३

३९०. काङ्क्षे एह मह सिह वच्च वम्फ विलुम्पा हिलङ्खाहि लङ्खाः । ४, ३, १३

३९१. कुषे रुञ्च कड्ढाण चस्राइ ञ्छाय ञ्छ साअड्ढाः । ४, ३, १४

३९२. स्पृशश्छिप छिह फंस फास परि साहिलुङ्खाः । ४, ३, १६

३९३. दृशो निअ देक्ख पेच्छ पास वज्ज पुलअ—पुलोअ सव्वव नियच्छा वग्रच्छा वयज्झा वरुवखाव अवक्खो अवक्खावयासाः । ४, ३, १७

३९४. ग्रहो गेण्ह हर पङ्ग वल निरुवा राहि पच्चुआ । ४, ३, २४

३९५. त्रसेडर वज्जवोज्जाः । ४, ३, २५

३९६. दहेरालङ्खाहि ऊलौ । ४, ३, २६

३९७. मुहेर्गुम्म गुम्मडौ । ४, ३, २७

३९८. स्थ ठा थक्क चिट्ठ निरप्पाः । ४, ३, २९

३९९. जाणमुणो ज्ञः । ४, ३, ३७

४००. गैध्ययो गाझौ । ४, ३, ३९

४०१. श्रद्धः सद्दही । ४, ३, ४०

४०२. पिबेः पट्ट—डल्ल—पिज्ज-घोट्टाः । ४, ३, १

४०३. कथेश्चव जम्प संघ बोल्ल सोहसो प्याल पिसुण—वज्जर वज्जराः । ४, ४, २

४०४. जगुप्से झुण दुगुच्छ दुगुच्छाः । ४, ४, ८

४०५. क्षये णिज्झरः । ४, ४, १२

४०६. णेश्छ दे छंवक णुमनूम सन्नुमपव्वा लोम्वालाः । ४, ४, १३

४०७. अर्पेश्चच्चु पालिब पणामाः । ४, ४, १४

४०८. दर्शेदंस दावदक्ख वाः । ४, ४, १७

४०९. प्रस्थापेः पण्ठव पट्ठवौ । ४, ४, २३

४१०. विज्ञपेर्वोक्का वुक्कौ । ४, ४, ३२

४११. अन्यार्थे स्वपि धातुः । ४, ४, ३४

४१२. क्त्वोऽत्त तुं तूण तुआणाः । ३, ३, ४३

४१३. तुम् क्त्वा तव्ये ग्रहो घेत् । ३, ४, १

४१४. भुजभुच रुद वचां मचाऽन्त्य स्पीत । ३, ४, २

४१५. भुवो वा । ३, ४, ३

४१६. तत्तेन हशोऽट्ठुष् । ३, ४, ४

४१७. शतृशानचोः । ३, ४, ४१

४१८. स्त्रियामीच । ३, ४, ४२

४१९. क्तो चित् । ३, ३, १६

४२०. दीर्घे देरविः । ३, ३, १४

४२१. आक्रान्तादीनामप्फुणादयः । ४, ४, ३५

॥ अथ शौरसेनी भाषा सूत्राणि ॥

४२२. शौरसेन्यामनादावसंयुक्तस्य तो दः ।	५, १, १
४२३. क्वाप्यधः ।	५, १, २
४२४. वाणावस्यादेः ।	५, १, ३
४२५. धस्थस्य ।	५, १, ४
४२६. हस्येहहपोः ।	५, १, ५
४२७. भुवो भः ।	५, १, ६
४२८. र्यस्य य्यः ।	५, १, ७
४२९. सोमवदादे नोर्मच् ।	५, १, ८
४३०. सम्बुद्धौ वा ।	५, १, ९
४३१. आदिनः ।	५, १, १०
४३२. पूर्वेदादरधस्वश्च ।	५, १, ११
४३३. णमस्यान्मादिदेतोः ।	५, १, १२
४३४. तस्मात स्ताच् ।	५, १, १३
४३५. अतोङसे दुद्दादो ।	५, १, १४
४३६. दाणिमिदानीमः ।	५, १, १५
४३७. हर्षेऽम्हेहे ।	५, १, १६
४३८. ही ही वैदुषके ।	५, १, १७
४३९. एवार्थे य्येवेव्वौ ।	५, १, १८
४४०. णं नन्वर्थे वाक्यालङ्कारे ।	५, १, १९
४४१. चेट्याह्वाने हञ्जे ।	५, १, २०
४४२. निर्वेद विस्मये हीमाणहे ।	५, १, २१
४४३. इचेचोर्दिः ।	५, १, २२
४४४. अतो देच ।	५, १, २३
४४५. एष्यति हेः स्सिः ।	५, १, २४
४४६. इयदूणौ क्त्वो वा ।	५, १, २५
४४७. सिद्धमनुक्तं प्राकृतवत् ।	५, १, २६

॥ अथ मागधी भाषा सूत्राणि ॥

४४८. मागध्यामनादेः क्षः ᳵकः ।	५, २, १
४४९. प्राङ्भ्यामीक्षचक्षोः स्कः ।	५, २, २
४५०. छः श्चः ।	५, २, ३
४५१. चजोजोञ्ञः ।	५, २, ४
४५२. ञ्ञजण्यन्याम् ।	५, २, ५
४५३. जद्योर्य्यौ ।	५, २, ६
४५४. सरोः शलौ ।	५, २, ७
४५५. स्कोषसोरग्रीष्मे सः ।	५, २, ८
४५६. ष्ठट्ठयोस्टः ।	५, २, ९
४५७. स्तः स्थर्थयोः ।	५, २, १०
४५८. पुंस्यत एत्सौ ।	५, २, ११
४५९. वाडवर्णान्ङसोडाहः ।	५, २, १२
४६०. आमोडाहँ ।	५, २, १३
४६१. अहंवयमोर्हगेच् ।	५, २, १४
४६२. तिष्ठस्य चिष्ठः ।	५, २, १५
४६३. अनुक्तं शौरसेनीवत् ।	५, २, १६

।। अथ पैशाची भाषा सूत्राणि ।।

४६७. पैशाच्यां टोस्तुर्वा । ५, २, १७

४६८. णो नः । ५, २, १८

४६९. तस्तदोः । ५, २, १९

४७०. पो यस्य हृदये । ५, २, २०

४७१. लो लस्य । ५, २, २१

४७२. सः शषोः । ५, २, २२

४७३. ञण्यन्यांञ्जोराज्ञे चिञ्ञः । ५, २, २३

४७४. क्वचिरस्नष्टयींसिनसटरियाः । ५, २, २४

४७५. अतो ङसेस्तुत्तोदौ । ५, २, २५

४७६. टान्तेदंतदो नेंन । ५, २, २६

४७७. स्त्रियां नाए । ५, २, २७

४७८. याद्दशादौ दुस्तिः । ५, २, २८

४७९. इयेपोः । ५, २, २९

४८०. असस्ते च । ५, २, ३०

४८१. एय्यति केवलमेय्य । ५, २, ३१

४८२. तूनः त्तून । ५, २, ३२

४८३. ट्टून त्थून द्धूना: ष्ट्वः । ५, २, ३३

४८४. इय्योयकः । ५, २, ३४

४८५. कृञोडीरः । ५, २, ३५

४८६. अनुक्तं शौरसेनीवत् । ५, २, ३६

४८७. न कोल कर्पत्यादि विभाषाऽति—
मुक्तकेऽन्त सूत्रोक्तम् । ५, २, ३७

।। अथ चूलिका पैशाची सूत्राणि ।।

४८८. चूलिका पैशाच्यां तृतीय चतुर्थयोः
किखी । ५, २, ३८

४८९. वा पदादियुज्योः ५, २, ३९

४९०. रोलः । ५, २, ४०

४९१. अनुक्तं पैशाचीवत् । ५, २, ४१

।। अथापभ्रंश भाषा सूत्राणि ।।

४९२. अत्रामन्त्र: प्रायोऽपभ्रंशे । ५, ३, १
४९३. सुपि दीर्घ ह्रस्वौ । ५, ३, २
४९४. स्वम्जश्शस्ङ सामां लुप् । ५, ३, ३
४९५. सम्बोधन जसो होः । ५, ३, ४
४९६. हि भिस्सुप. । ५, ३, ५
४९७. अत: स्वमोरुत् । ५, ३, ६
४९८. वा पुंस्योल्सौ । ५, ३, ७
४९९. टाया मेच्टश्चणचन्द्रौ । ५, ३, ८
५००. भिसिवा । ५, ३, ९
५०१. ङसेश्चितोहेहू । ५, ३, १०
५०२. हुं भ्यस: । ५, ३, ११
५०३. सुस्सुहवो ङस: । ५, ३, १२
५०४. हुमाम: । ५, ३, १३
५०५. इदेलो ङिना । ५, ३, १४
५०६. इदुद्भ्यां टाया एं णचन्द्रा । ५, ३, १५
५०७. ङसिङ्योर्हें ही । ५, ३, १६
५०८. भ्यसोहुं । ५, ३, १७
५०९. हुंचाम: । ५, ३, १८
५१०. जश्शसोरुदोत्स्त्रियाम् । ५, ३, १९
५११. टाया ए । ५, ३, २०
५१२. हे ङ सि ङसोः । ५, ३, २१
५१३. हुभ्यं सामोः । ५, ३, २२
५१४. हि ङेः । ५, ३, २३
५१५. जश्शसोरिं क्लीबे । ५, ३, २४
५१६. अत: स्वमोरुं स्वाधिकस्य । ५, ३, २५
५१७. किं सर्वयो र्वा कवण साहौ । ५, ३, २६
५१८. सर्वादेर्ङसि ङ्यो र्हां हिमौ । ५, ३, २६
५१९. किमोङसेर्वाडिहे । ५, ३, २७
५२०. कि यत्तदभ्यो ङसोडासु: । ५, ३, २८
५२१. स्वमियत्तदोध्रुंत्रमौ ।
५२२. एतद: पुंस्त्रीक्लीबेष्वेहो जेह जेहुन्त: । ५, ३, ३२
५२३. जश्शसोरेइ: । ५, ३, ३३
५२४. ओइर दस: । ५, ३, ३४
५२५. इदम: सुप्याय: । ५, ३, ३५
५२६. इहे स्त्रियाम् । ५, ३, ३६
५२७. इदम इमुच् क्लीबे । ५, ३, ३१
५२८. मुना युष्मदस्तुहुं । ५, ३, ३७
५२९. जश्शसा तुम्हे तुम्हइ । ५, ३, ३८
५३०. अम्टाङिना तइं पइं । ५, ३, ३९
५३१. भिसा तुम्हेहिं । ५, ३, ४०
५३२. ङसिङसा तउतुज्झतुध्रा: । ५, ३, ४१
५३३. भ्यसामा तुम्हइं । ५, ३, ४२
५३४. सुपा तुम्हासु । ५, ३, ४३
५३५. सुनाऽस्मदो हउं । ५, ३, ४४
५३६. जश्शसाऽम्हेऽम्हइं । ५, ३, ४५
५३७. अम्टाङिना मइं । ५, ३, ४६
५३८. भिसाऽम्हेहिं । ५, ३, ४७
५३९. ङसिङसामहुमज्झू । ५, ३, ४८
५४०. भ्यसामाऽऽम्हहं । ५, ३, ४९
५४१. सुपाऽस्मासु । ५, ३, ५०
५४२. वा तिवादे: प्रथमस्य बहो हिं । ५, ३, ५१
५४३. मध्यमस्यैक बहवोर्हि हू । ५, ३, ५२
५४४. उं हु मावुत्तमस्य । ५, ३, ५३
५४५. हिस्वयो रिदुदेत: । ५, ३, ५४
५४६. भविष्यति स: स्यस्य । ५, ३, ५५
५४७. कुर्वे करोभ्यो: कीसु । ५, ३, ५६
५४८. तनो णयच् । ५, ३, ५७

५४९. दृश ग्रह व्रज प्रसु वां प्रस्स गृण्ह वुञ पहुच्चाः। ५, ३, ५८
५५०. ब्रूञो ब्रुवः। ५, ३, ५९
५५१. ह्रोरचः स्कौलघुरुच्चारः। ५, ४, १
५५२. कादिष्वेतेतोः। ५, ४, २
५५३. पदान्ते चन्द्रस्स। ५, ४, ३
५५४. अघोऽकावस्कीनां कखतथपफांगधब भाः। ५, ४, ४
५५५. वा मोवत्र्। ५, ४, ५
५५६. म्हो म्भः। ५, ४, ६
५५७. इच् संपाद्व पदापदां दः। ५, ४, १०
५५८. यथा तथाकथमामथा थमो रिथे हेसेमाः। ५, ४, ११
५५९. कीदृगी दृग्या दृक्ता दृशामोदृशा दृशोरेहः। ५, ४, १२
५६०. अइसोऽताम्। ५, ४, १३
५६१. एतावत एत्तुलः। ५, ४, १४
५६२. कियदिय द्यावत्तावता मियदावतो रेवश्च। ५, ३, १५
५६३. त्रलन्तानामेत्तेहे त्रलोऽत्था। ५, ४, १६
५६४. एत्थु वाऽत्र कुत्रे। ५, ४, १७
५६५. यत्रतत्रे ऽत्तुच। ५, ४, १८
५६६. त्वतलोः प्पणच्। ५, ४, १९
५६७. युष्मदादेरछस्य डारः। ५, ४, २०
५६८. अन्यादृशोऽवराइ साऽन्नाइसौ। ५, ४, २१
५६९. वत्र्मोक्त विषण्णानां विच्च वुत्त वुन्नाः। ५, ४, २२
५७०. आत्मीयादीनामप्पणादयः। ५, ४, २३
५७१. अव्ययस्य यावत्ता वतोर्वत उंमहिमाः। ५, ४, २४
५७२. अथवैवमेवंतासिदानीमाम हवइ एम्बइ एत्तहे एम्वहिं। ५, ४, २५
५७३. अवश्यमोऽवसेमवसौ। ५, ४, २६
५७४. किमेवं ध्रुवं समं परमां काइमेम्व ध्रुवु समाणु पराः। ५, ४, २७
५७५. प्रत्युत पश्चादेव किलानां पच्चलि-उपच्छइ—चि—किराः। ५, ४, २८
५७६. एकशो विना पुनरामे वकसि विणु पुणवः। ५, ४, २९
५७७. कुतसः कउ कहन्तिहु। ५, ४, ३०
५७८. तदारुतसोस्तो। ५, ४, ३१
५७९. प्रायसः प्राउ—प्राइव—प्राइम्व—पगिम्वाः। ५, ४, ३२
५८०. मामनागदिवा नहि सहानां मं—मणाउ—दिवे—नाहि—सहुम। ५, ४, ३३
५८१. अनुरन्ययो वा। ५, ४, ३४
५८२. इवार्थे नं—नाइ—नावइ—नउ—जणु—जणिच। ५, ४, ३५
५८३. तादर्थ्ये तणेण—केहि—तेहि रेसि—रेसयः। ५, ४, ३६
५८४. चेष्टा शब्दानुकरणयोर्गुंघ हुहुर्वादयः। ५, ४, ३७
५८५. घइमादयोऽर्थशून्याः। ५, ४, ३८
५८६. तव्यस्य एवा एव्वउं इएव्वउ। ५, ४, ३९
५८७. इ—इउ—इवि—अवय क्त्व। ५, ४, ४०
५८८. एवमणहमणहिमणास्तुमुनः। ५, ४, ४१
५८९. उभयो रेव्व्येप्पिण्वेव्येविणवः। ५, ४, ४२
५९०. गमेर्वापिणू। ५, ४, ४३
५९१. अ—उ—डुल्लायोगजाश्च स्वार्थे। ५, ४, ४४
९२. स्त्रियामेतदन्ताड्डाप्। ५, ४, ४५
५९३. आम्लान्ताड्डाप्। ५, ४, ४६
५९४. डाप्यत इत्। ५, ४, ४७
५९५. लिङ्गमव्यवस्थितम्। ५, ४, ४८
५९६. अनुक्तं शौरसनीवत्। ५, ४, ४९
५९७. व्यत्ययोऽप्येषाम्। ५, ४, ५०
५९८. सिद्धमनुक्तं संस्कृतवत्। ५, ४, ५१

———

॥ प्राकृतचिन्तामणि-ग्रन्थकर्तुः प्रशस्तिः ॥

श्री वर्द्धमानं हृदये निधाय श्री गौतमं जैनसरस्वतीं च।
वदाम्यहं प्राकृतसूत्रपञ्चाध्यायी विनिर्माणप्रवृत्तिहेतुम् ॥ १ ॥

सन्तो विजानन्तु विवेकबुद्ध्या विचारयन्तो हृदयेन सम्यक्।
हितं कियद्वाऽप्यहितं कियद्वा लोकेऽथवाऽस्त्यत्र परत्रलोके ॥ २ ॥

जगत्यनन्ते विलसन्त्यनन्ताः पदार्थसार्था न परन्तु सर्वे।
भवन्त्युपादेयतमा जनानां परं पुमर्थस्त्वभिवाञ्छनीयः ॥ ३ ॥

धर्मार्थकामा - विषयप्रधाना ददत्यवश्यं विषयेषु सौख्यम्।
परन्तु लोकोत्तरसौख्यदाता त्राता च मोक्षो दृढकर्मबन्धात् ॥ ४ ॥

मोक्षस्यमार्गस्तु समस्ति सम्यग् ज्ञानं तथा दर्शनक तपश्च।
चारित्रमेतन्मिलितं समस्तं ज्ञानं प्रधानं परमं तु तत्र ॥ ५ ॥

ज्ञानस्य तस्यापि प्रधानहेतुः समस्ति शास्त्रं द्विविधं हितं च।
स्यात्संस्कृतं प्राकृतमेव तस्माद् द्वयं जनानां समपेक्षणीयम् ॥ ६ ॥

तत्रापि धीमज्जनतोपकृत्यै प्रकल्पते संस्कृतशास्त्रदीपः।
परन्त्वयं प्राकृतशास्त्रदीपः प्रकल्पते प्राकृतमानवेऽपि ॥ ७ ॥

तत्त्वं विजानन्तु सुखादवश्यं स्त्रीबाल - लोका - अपि मन्दमूढाः।
यस्मादहो प्राकृतशास्त्रदीपात् तस्मादहं प्राकृतमातनोमि ॥ ८ ॥

यथैवलोकेष्वखिलेषु बोध-प्रदीपमाला वितता समन्तात्।
प्रकाशयन्ती सकलान्पदार्थान् भवेत्तथा स्यान्महती प्रवृत्तिः ॥ ९ ॥

इत्येव हेतोस्त्रिपदीं जिनेन्द्रा उपादिशन् प्राकृतभाषयैव।
दयासुधार्द्रं गणनायकैश्च व्यधापि तत्प्राकृतशास्त्रजातम् ॥ १० ॥

तथा नवीनैरपि तत्वविज्ञैः कवीन्द्रवर्यैश्च मुनीन्द्रवर्यैः।
आविष्कृताः प्राकृतशास्त्रदीपा विनाशयन्त्यन्धतमोजगत्याम् ॥ ११ ॥

महत्तमं व्याकरणं च प्राकृतं प्रसिद्धमेवादिकविर्महर्षिः।
वाल्मीकिरेवास्ति यदीय कर्त्ता प्रसिद्धरामायणजन्मदाता ॥ १२ ॥

अत्र प्रमाणं तु गवेष्यते चेद् गवेष्यतां प्राकृतरत्नदीपैः।
प्रस्तावनायां प्रतिपादितस्त न्न कोऽपि शंकावसरः कदाचित् ॥ १३ ॥

कोवैं विनिन्देति[1] पद्यखण्डादारभ्य वै प्राकृत एव स स्यात् ।
इत्येतदन्तं तु महत्वपूर्णं प्रमाणयत्येव हि प्राकृतं वै ॥ १४ ॥

पुरातनं वाररुचं च तूलं श्री हेमचन्द्रैरपि प्राकृतेऽस्मिन् ।
अन्यैश्च विद्वद्भिरपि प्रणीतं विराजते व्याकरणं प्रसिद्धम् ॥ १५ ॥

नवीन - प्राचीन - मनीषिशास्त्राण्यधित्यघासीमुनिना नितान्तम् ।
विनिर्मिता प्राकृतसूत्रपञ्चाध्यायी नवीना जनतोपकृत्यै ॥ १६ ॥

अतेदिदं प्राकृतमानवानामवश्यमत्यन्तसुखाववोधा ।
बुद्ध्यानवैवात्रममप्रवृत्तिर्न कारणं किञ्चिदतोऽन्यदस्ति ॥ १७ ॥

अस्यां च प्राक्प्राकृतमस्ति पश्चान्निवेशमास्ते किल शौरसेनी ।
ततोनिविष्टा मगधस्य भाषा पिशाचभाषा च ततोऽपि पश्चात् ॥ १८ ॥

अनन्तरं चूलिकया विशिष्टा पिशाचभाषैव तु सन्निविष्टा ।
पश्चादपभ्रंशमयी च भाषा निविश्यमाना नितरां विभाति ॥ १९ ॥

टीका तदीया द्विविधा सुबोधा कृता मया बालहिताय सम्यक् ।
या कौमुदी सा बृहती तदन्या लघुस्तु चिन्तामणि नामिका च ॥ २० ॥
तयोर्द्वयोस्तत्वप्रदीपिकाऽपि प्रदीपिकावत्पुरतो व्यधायि ।
सदाभृशं या विनिहन्त्यवश्यं मोहंतमः प्राकृतमानवानाम् ॥ २१ ॥
निमज्जतां प्राकृतशास्त्रसिन्धौ या प्राणिनां नौरुपकारिणीवत् ।
आरुह्य यास्यन्ति जनाः सुखात्तां पारम्परं शास्त्रमहार्णवस्य ॥ २२ ॥
मात्सर्यमुत्सार्य विवेकदृष्ट्या लोका मदीयां कृतिमाकलय्य ।
शुभाशिषैर्मामभिनन्दयन्तो भवन्त्यवश्यं मुदिता नितान्तम् ॥ २३ ॥
श्री वर्द्धमानस्य तदीयवाचः श्री गौतमस्याऽपि मनीषिणां च ।
कृपार्द्र दृष्ट्या नितरां मदोया कृतिर्जगत्यां जयतात् समन्तात् ॥ २४ ॥
वीरप्रसादादियमद्यलब्ध्वा प्रकाश्यते लोकहिताय सम्यक् ।
प्रकाशितैषा सुखमातनोतु जिज्ञासु लोकेष्वपिप्राकृतेषु ॥ २५ ॥
न केवलं प्राकृतमानवानामपीह धीमद्विदुषां जनानाम् ।
अवश्यमेवोपकरिष्यतीयं वीरप्रसादादनिशं नितान्तम् ॥ २६ ॥
इमां कृतिं श्री मुनि घासीलालः समर्प्य वीरे सुखमादधानः ।
भवन्तु लोकाः सुखिनो जगत्यामित्येव वाञ्छामनिशं करोति ॥ २७ ॥

॥ इति ग्रन्थ कर्तुः प्रशस्तिः ॥

---

१ –कोवैंविनिन्देदिमाभाषां भारती मुखभाषिताम् । यस्याः प्रचेतसः पुत्रोव्याकर्ता भगवानृषिः ॥१॥
गार्ग्य - गालव - शाकल्य - पाणिन्याद्या यथर्षयः । शब्दराशे-संस्कृतस्य व्याकर्तारो महत्तमाः ॥२॥
तथैव प्राकृतादीनां षड्भाषाणां महामुनिः । आदिकाव्यकृदाचार्यो व्याकर्ता लोकविश्रुतः ॥३॥
यथैव रामचरितं संस्कृतं तेन निर्मितम् । तथैव प्राकृतेनाऽपि निर्मितं हि सतांमुदे ॥४॥
पाणिन्याद्यैः शिक्षितः स्यात् सांस्कृतीस्याद्यथोत्तमाम् । प्राचेतसः व्याकृतत्वात्प्राकृत्यपि तथोत्तमा ॥५॥
प्राकृतं चार्षमेवेदं यद्धि वाल्मीकिशिक्षितम् । तदनार्षं वदेद्यावै प्राकृतः स्यात्स एव हि ॥६॥

प्राकृत चिन्तामणि ग्रन्थकार कृत प्रशस्ति

भगवान श्री वर्द्धमान स्वामी एवं गणधर गौतम स्वामी को तथा जिनवाणी (सरस्वती) को नमस्कार करके प्राकृत सूत्र पंचाध्यायी के निर्माण का हेतु बताना चाहता हूँ। (१)

सन्त जन सम्यक् विवेक बुद्धि से यह जानते हैं, कि जगत में हित क्या है, अहित क्या है? इस लोक-परलोक में कल्याणकारी क्या है? (२)

इस जग में अनन्त-अनन्त पदार्थ हैं, किन्तु सभी उपादेय नहीं है। जिससे पुरुषार्थ-आत्मार्थ-सिद्ध होता है वही वांछनीय है। (३)

संसार में धर्म, अर्थ, काम रूप पुरुषार्थ=भौतिक सुख अवश्य प्रदान करता है, किन्तु लोकोत्तर सुखों का दाता और कर्म बन्धन से मुक्ति प्रदाता तो 'मोक्ष' नामक चतुर्थ पुरुषार्थ ही है। (४)

इनमें मोक्ष का मार्ग है—सम्यग् ज्ञान-दर्शन-तप एवं चारित्र। ये चारों सम्मिलित रूप में ही मोक्ष मार्ग है। सम्यग् ज्ञान इनमें प्रधान—प्रमुख है। (५)

ज्ञान प्राप्ति का प्रधान कारण है—शास्त्र! शास्त्र प्रायः संस्कृत एवं प्राकृत भाषा-निबद्ध है। अतः जिज्ञासु जनों को दोनों भाषाओं का अध्ययन अपेक्षणीय है। (६)

बुद्धिमान जनों के लिए प्रायः संस्कृत भाषा में शास्त्र लिखे जाते हैं। परन्तु सामान्य मानवों को बोध देने के लिए प्राकृत भाषा में शास्त्र-प्रकाशन भी जरूरी है। (७)

प्राकृत भाषा रूप शास्त्र-दीपक के प्रकाश में स्त्री-बालक-मन्दज्ञानी आदि सामान्य जन भी सुखपूर्वक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। अतः मैं प्राकृत भाषा में व्याकरण का विस्तार करता हूँ। (८)

जिस प्रकार दीपक माला समूचे लोक में चारों तरफ प्रकाश फैलाती है, उसी प्रकार जिनेन्द्रदेव द्वारा उपदिष्ट त्रिपदी—जोकि प्राकृत भाषा में है, समस्त जगत में ज्ञान का प्रकाश फैलाती है। (९-१०)

प्राकृत भाषा का ज्ञान कराने के लिए अनेक कृपालु आचार्यों ने प्राकृत व्याकरण आदि का निर्माण किया है। अनेक नवीन विद्वान तत्त्व विज्ञों ने भी प्राकृत-दीप का प्रकाशकर जगत का अज्ञानान्धकार दूर करने का प्रयास किया है। (११)

सुप्रसिद्ध आदि कवि महर्षि वाल्मीकि जो रामायण के जन्मदाता (सर्जक) थे उन्होंने प्राकृत भाषा का महान व्याकरण बनाया। उसका यदि कोई प्रमाण देखना चाहें तो प्राकृतरत्नदीपिका की प्रस्तावना में देख सकते हैं। (टिप्पणगत श्लोक पृष्ठ १०६ पर देखें।) (१२-१३)

प्राकृत भाषा के अनेक खण्ड काव्य, व्याकरण आदि भी प्रसिद्ध हैं। वररुचिकृतप्राचीन प्राकृत व्याकरण तथा आचार्य श्री हेमचन्द्र रचित नवीन प्राकृत व्याकरण भी प्रसिद्ध है। (१४-१५)

प्राचीन एवं नवीन मनीषियों द्वारा रचित शास्त्रों का अध्ययन कर घासी मुनि (मैंने) प्राकृत सूत्र पंचाध्यायी (नवीन कृति) का जनता के उपकार हेतु निर्माण किया है। (१६)

यह प्राकृत—सामान्य मानवों के लिए सरलता से समझी जा सकेगी—ऐसी मेरी कामना है, इसी कारण मैंने यह प्रयत्न किया है। (१७)

इसमें सर्वप्रथम—प्राकृत भाषा व फिर शौरसेनी, उसके पश्चात मागधीभाषा, पैशाची भाषा उसके पश्चात् चूलिका पैशाची पश्चात् अपभ्रंश भाषा का वर्णन किया गया है। (१८-१९)

इसमें दो प्रकार की सुबोध टीका मैंने बनाई है—१. प्राकृतकौमुदी—यह बृहद् टीका है। २. प्राकृत चिन्तामणि—यह लघु टीका है । (२०)

इन दोनों में प्रदीपिका (दीपक) की तरह प्रकाश करने वाली दीपिका बनाई है—जो पाठकों के अज्ञान मोह रूप अन्धकार को दूर करती रहेगी । (२१)

यह प्राकृत चिन्तामणि तत्वदीपिका प्राकृत-भाषा रूप महासमुद्र में उतरने वालों के लिए नौका के समान उपकार कारिणी है। इस पर आरूढ़ होकर सुखपूर्वक प्राकृत भाषा सागर को पार कर सकेंगे। (२२)

विद्वद्गण मत्सरता त्यागकर गुणज्ञ दृष्टि से मेरी इस कृति का आकलन करेंगे तो अवश्य ही वे शुभाशीषों द्वारा अभिनन्दन कर प्रमोद भाव का अनुभव कर सकेंगे। (२३)

भगवान श्री वर्द्धमान स्वामी गणधर गौतम जैसे मनीषी के कृपा प्रसाद से मेरी यह लघु कृति जगत में विजयी बने। (२४)

भगवान वीर की कृपा का प्रसाद प्राप्त कर मैंने लोकहित के लिए इसका विस्तार=प्रकाश किया है। यह सभी जिज्ञासु लोगों एवं प्राकृत भाषा के पाठकों को सुख प्रदान करें । (२५)

यह कृति न केवल प्राकृत मानव (सामान्य मानव); किन्तु बुद्धिमान जनों के लिए भी अवश्यमेव उपकारिणी सिद्ध होगी। (२६)

इस कृति-पुष्प को प्रभु के चरणों में समर्पित कर आनन्द अनुभव करता हूँ। और जगत के समस्त लोक सुखी होवे, यही हार्दिक भावना करता हूँ। (२७)

॥ प्रशस्ति समाप्त ॥